श्री रामप्रकाश छन्दावली

विविध विषय वेदान्त के, भक्ति ज्ञान वर ध्यान।
रामप्रकाश छन्दावली, पढ़ते हो विद्वान।।

पूज्य स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज 'अच्युत'
श्रीमहन्त - उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ), जोधपुर-६

निर्गुण हरि हर देह अज मन्त्रराज निज प्रान।
रामप्रकाश तत जीव बिन शून्य विश्व तप दान।।

सौजन्य - उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ), कागातीर्थ मार्ग, जोधपुर-३४२००६
फोन : ०२९१-२५४७०२४ email : uttamashram@gmail.com

।।श्री जानकी वल्लभो विजय तेतराम।।

श्री रामप्रकाश छन्दावली

रचियता :

श्री वैष्णव विरक्त गूदड़ गद्दी जोधपुर के आद्यपीठाधीश्वर अनन्त श्री स्वामी हरिराम जी वैरागी की शिष्यानुगत परम्परा में वेदान्त विद श्री श्री १०८ श्री स्वामी उतमराम जी महाराज के कृपापात्र शताधिक्य सत्साहित्यक ग्रंथों के रचियता, यशस्वी टीकाकार, एवं सम्पादक

तत्वज्ञ स्वामी श्री रामप्रकाशाचार्य जी महाराज "अच्युत"

श्रीमहन्त - उत्तमआश्रम (आचार्यपीठ) , जोधपुर

संकलनकर्ता - जेठूदास वेदान्ती(ग्रंथ कर्ता के पौत्र शिष्य)

प्रकाशक- उत्तमआश्रम (आचार्यपीठ)

कागातीर्थमार्ग, जोधपुर-३४२००६

फोन : ०२९१ २५४७०२४

मोबाइल नम्बर- ९४१४४१८१५५

Email: uttamashram@gmail.com

तृतीय संस्करण विक्रम सम्वत २०७६

॥श्री हरिगुरु सच्चिदानन्दाय नमः॥

श्लोकार्धेन प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ग्रंथ कोटिभः।
ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः॥

अर्थात् -जो अनेक ग्रंथों में लिखा है, उसे मैं आधे श्लोक में यहां कह रहा हूं।

ब्रह्म सत्य है, जगत मिथ्या है तथा जीव ब्रह्म ही है, कोई अन्य नहीं।
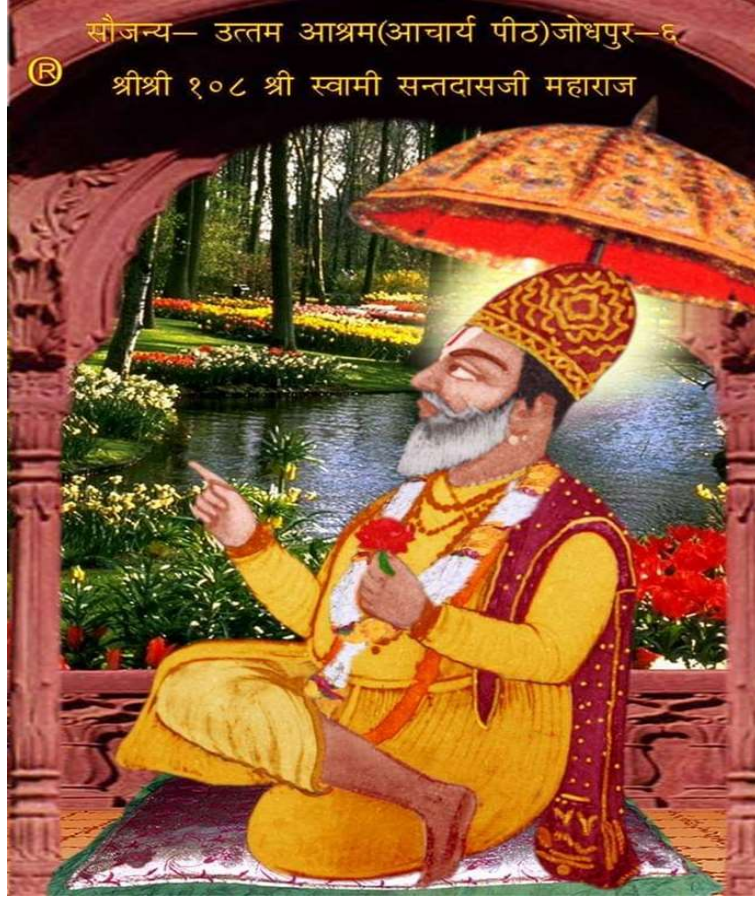
श्री सँतदास जी ने जीवन शैली में गुदड़ी धारण
करके कुँभ मेले में जमात को भँडारा
दिया था तब से पहिचान है
गूदड़ गद्दी

रामप्रकाश छन्दावली

के रचयिता
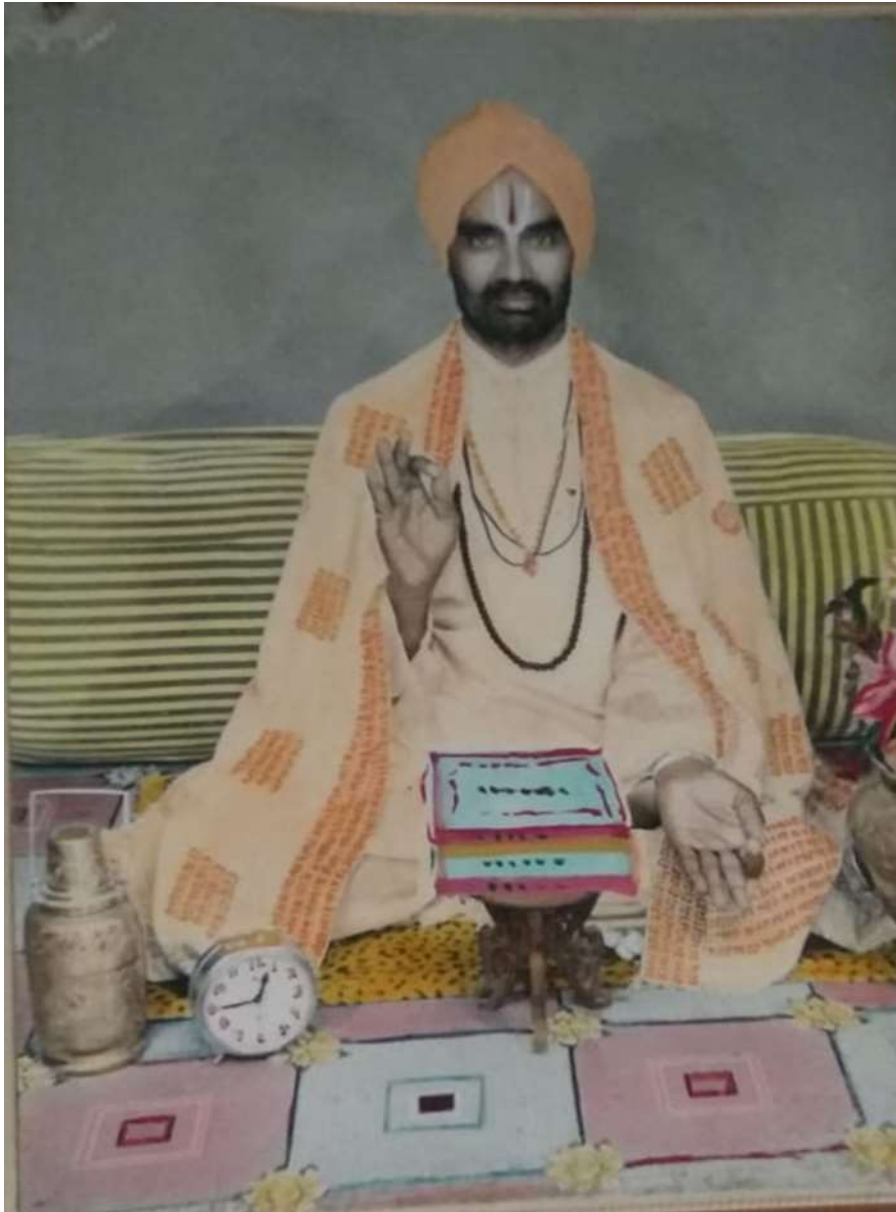
श्री वैष्णव विरक्त गूदड़ गद्दी जोधपुर के आद्यपीठाधीश्वर अनन्त श्री स्वामी हरिराम जी वैरागी की शिष्यानुगत परम्परा में वेदान्त विद श्री श्री १०८ श्री स्वामी उतमराम जी महाराज के कृपापात्र शताधिक्य सत्साहित्यक ग्रंथों के रचियता,यशस्वी टीकाकार, सम्पादक एवं लेखक

श्री श्री १०८ श्रीस्वामी श्री रामप्रकाशाचार्य जी महाराज अच्युत

संपादक की लेखनी से

इस ब्रह्माण्ड में जगत पिता ब्रह्मा से लेकर चिंटी पर्यन्त सभी प्राणी त्रिविध दुख कि निवृत्ति और परम सुख कि प्राप्ति कि इच्छा करते हैं, परन्तु इस अत्यन्त दुख कि निवृत्ति ज्ञान के बिना संभव नहीं हैं।

।।दोहा छन्द।।

ना सुख धन अरू धाम में, ना सुख भूप भये ।
सर्व सुखी या जगत में, आत्मज्ञान भये ।।१।।
लियो न निज सुख ब्रहम को, धरयो न दिल बिच ध्यान ।
घर का रहा न घाट का, ज्यों धोबी का स्वान ।।२।।
ब्रह्म ज्ञान जान्यो नहीं, कर्म दिए छिटकाय ।
तुलसी ऐसी आत्मा, सहज नर्क महँ जाय ।।३।।

(तुलसीदास जी कृत)

शास्त्र भी कहते हैं-

"ज्ञानादेव तु कैवल्यम् "

अर्थात आत्म ज्ञान से ही कैवल्य कि प्राप्ति होती है ।

।। दोहा छन्द।।

सम सन्तोष न और सुख न, तप न क्षमा सम जान ।
ब्रह्म ज्ञान सम ज्ञान नहीं, धर्म न दया समान ।।४।।

सारुक्तावलि से उदघृत

गीता में भी भगवान श्री कृष्ण कहतें हैं

-"सर्व ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं सन्तरिष्यसि"

(गीता,४/३६)

अर्थात हे अर्जुन तुम ज्ञान रूपी नौका से ही दुख सागर से पार हो सकते हो।

"ज्ञानाग्नि सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरूते तथा।।"

(गीता,४/३७)

अर्थात ज्ञान रूपी अग्नि समस्त कर्मों को भस्म कर देती है।

आत्म ज्ञान के विषय में स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी ने कहा -

।। सवैया छन्द।।

आतम ज्ञान अनूप अगोचर, भाग सँयोग उदय उर थावे ।
साधन सतगुरू श्रद्धा विश्वास ते, ब्रह्म ज्ञानी सत ब्रह्म कहावे ।।
सचिदानन्द माहि समावत है पद, परम यथार्थ केवल थावे ।
रामप्रकाश नही भावाभाव है, तुरिय स्वरूप हो तत्व समावे ।।१।।
व्यापक माहि वृति नित व्यापत, व्याप्य स्वरूप सदा थिर थानी ।
है नित निष्प्रह निसँग असँग ही, सो निर्लेप निर्द्वन्द निरवानी ।।
आप अनूप अरूप अखण्डित, ज्ञेय रु ज्ञान में ज्ञाता विलानी ।
रामप्रकाश सो एक अद्वय, तुरिय में नाम रु रूप थकानी ।।२।।

तीर्थ व्रत हजार करो यज्ञ, कल्पवास करो कुम्भ जाई।
सूर्यभेदी कर चन्द्रभेदी भर, अर्ध उर्ध प्राणायाम कर भाई।।
कोटिक दान करो घर लुटा, और करो शुभ सर्व कमाई।
ब्रह्मज्ञान समान नहि सर्व मिल, रामप्रकाश यह खोल बताई।।३।।
हर्ष न शोक कछु द्वन्द कर दूर सब, निर्भय रहे नित निश्चय पाई।
अष्ठपुरी युत वासना सर्व, ज्ञान अग्नि कर सँग जलाई।।
जन्म रु मरण को भय नही कछु, ब्रह्मज्ञान की मस्ती छाई।
रामप्रकाश सच्चिदानन्द सोई, आप मे आप सो व्यापक थाई।।४।।
कोई वज्रोली साधन साधत, जल दूध घृत धार खिंचाई।
शिश्न इन्द्रिय से पारा को खेंचत, अमर होवन की राह बनाई।।
श्वासोश्वास की साधन साधत, असँप्रज्ञात समाधि चढाई।
रामप्रकाश उपाय अनेक ही, तत्वज्ञान बिन मुक्ति न भाई।।५।।

आचार्य शंकर विवेक-: चूडामणि में कहते हैं-

वदन्तु शास्त्राणि यजन्तु देवान् कुर्वन्तु कर्माणि भजन्तु देवताः।
आत्मैक्यबोधेन विना विमुक्तिनं सिद्ध्यति ब्रह्मशतान्तरेऽपि।।

भावार्थ-भले ही कोई शास्त्रों की व्याख्या करे। देवों को प्रसन्न करने के लिए भजन करे। नाना शुभ -कर्म करे। तथापि जब तक ब्रह्म, आत्मा की एकता का बोध नहीं होता तब तक सौ ब्रह्माओं (सौ कल्प) के बीत जाने पर भी मुक्ति नहीं हो सकती।

बोधोऽन्यसाधनेभ्यो हि साक्षान्मोक्षैक साधनम्
पाकस्य बह्नि वज्ज्ञानं बिना मोक्षोन सिद्धद्यति ।।
- आत्मबोध

भावार्थ जो जो जप तप कर्म योगादि मोक्ष के साधन हैं उसमें - मोक्ष का मुख्य साधन रूप बोध अर्थात आत्म ज्ञान ही है जैसे पाक बनाने में बर्तन, लकड़ी,जल इत्यादि की आवश्यकता पड़ती है किन्तु पाक में मुख्य कारण अग्नि ही है और जो अन्य कारण हैं वे सहकारी कारण है अतः एवं ज्ञान के बिना मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती है। वेदान्त शास्त्र के अभ्यास बिना आत्मा का ज्ञान दुस्तर है जहाँ पर सम्पूर्ण ज्ञान का अंत हो जाय इस प्रकार के कल्याणकारी ज्ञान को वेदान्त कहते हैं।

आत्म ज्ञान कि दुर्लभता पर किसी विद्वान् संत ने कहा -

विद्या, बल, धन, रूप, यश, कुल, सुत, वनिता, मान ।
सभी सुलभ संसार में, दुर्लभ आत्म ज्ञान ।।५।।

अतः वह आत्म ज्ञान भी अधिकतर ऋषियों मुनियों के बनाये संस्कृत ग्रंथों में हैं परन्तु वे ग्रंथ संस्कृत में होने के कारण आत्म तत्व के गुढ रहस्य को समझने में मंद बुद्धि व्यक्ति प्रायः असफल हि रहतें है।

इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत ग्रंथ "श्री रामप्रकाश छन्दावली" जो भक्ति ज्ञान नीति रीति इत्यादि जन साधारण बोद्धिक सामग्री का कथन सरल सवैया छन्द में स्वामी श्री रामप्रकाशाचार्य जी महाराज ने आम जिज्ञासु जनों के हितार्थ बनाया है।

एक से एक सारा इधक, सवैया सब मे ज्ञान ।
आत्म ज्ञान कल्याण हित, रचना रची महान ।।६।।

आशा है आत्म कल्याण के रास्ते पर चलने वाले ज्ञानी जन इस ग्रंथ को पढकर अवश्य लाभ उठायेंगे।

वयोवृद्ध में लकवाग्रस्त हो मन, जीवन अनुभव छन्द बनायो ।
दूरभाष यन्त्रणा टँकित नित, बहु भक्तन हित मन को भायो ।।
जेठूदास वेदान्ती ने वह, सँकलित करके ग्रन्थ बनायो ।
शुखदेव शिष विधि युत सँयुत, रामप्रकाश विनोद छपायो ।।६।।

गुरुदेव स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज ने अपनी वयोवृद्धावस्था के औषधीय जीवन के अमूल्य क्षणों में केवल परमार्थ मय चिन्तन करते हुए दूरभाष टँकित वाणी तीव्रगामी प्रसारण (मोबाईल) द्वारा समय के सदुपयोग में स्वयँ बोद्ध स्थिरीकरण लिये लोक हितार्थ विचारों को रचनात्मक छन्द शैली मे निरन्तर शब्दों को पारमार्थिक एवँ व्यवहारिक किम्वदन्तियों, शास्त्रीय अमृतकणों को प्रबन्धित करते हुए सतसँग प्रेमी जनो को सँप्रेषित करते रहते है। उन्ही रचनात्मक काव्य का सँकलन करते हुए यह भक्ति, ज्ञान, आध्यात्मिक अनुबन्धों एवँ समय का चित्रण, चाणक, जन कल्याणकारी दूर्लभ एवँ सरल भाषा भाव में अनेक विषयों का सार गर्भित यह ग्रन्थ तैयार किया गया है जो जिज्ञासु जनो को अत्यंत हितकर होगा । ऐसी मँगलमय आशा के साथ जनता को समर्पित करता हूँ ।
संकलन, सम्पादन, संशोधन कार्य में दृष्टिदोष वश जहां कहीं भी त्रुटि मिले तो पाठकवृन्द सुचना देकर अनुगृहीत करें ताकि अगले संस्करण में उसको सुधार दिया जायेगा।

जीवों के कल्याण हित, छन्दावली सू छन्द ।
ज्ञानप्रद उर आत्म हित, हरत संशय दूख द्वन्द्व ।।७।।

गुरू चरणानुरागी
जेठू दास वेदान्ती
बारनी खुर्द, भोपालगढ़ (जोधपुर)

वेदान्त महिमा

प्रेत रु पितर भोमिया देवल, तामस देवी रु देव पुजावे।
तीर्थ यज्ञ रू मन्दिर जावत, राजस पूजा में समय गमावे।।
सतसँग जागरण रात जगावत, सात्विक पूजा जप तप को ध्यावे।
रामप्रकाश मतान्तर वनचर, शार्दुल वेदान्त सो भ्रम मिटावे।।१।।

कुण्डलिया छन्द

वेदान्त गर्जन सिह की, भागज भेड़ रु श्वान।
ज्ञानी की गम रहस्य मे, भ्रम कर्म नाश अज्ञान।।
भ्रम कर्म नाश अज्ञान, आन देव भैरव भूता।
अज्ञानी ईर्षालु द्वैष में, दम्भी भ्रम तम सूता।।
निर्भय गर्जना सन्त की, अभत्र निश्चय सिद्धान्त।
रामप्रकाश विद्वज्जन लखे, उपनीषद् वेदान्त।।२।।
दोहा- रामप्रकाश गुरु मुख पढा, धर्म ग्रन्थ वेदान्त।
सिंह अद्वैत सिद्धान्त सें, भागे भेड़ सिद्धान्त।।३।।

गुरुदेव के चरणार्विन्द में -------

राघवनन्दाचार्य जी, मठ वाराणसी धाम।
तिन शिष्य रामानन्द जी, द्वादश शिष्य निष्काम।।१।।
रामानन्द गुरुदेव के, शिष्य सु अनन्तानन्द।
कृष्णपयहारी शिष्य भये, त्याग जगत सुख फन्द।।२।।
स्वामी अग्रदासजी, विमल रेवासा धाम।
नाभा (नारायण) बड़े, भक्तमाल ललाम।।३।।
स्वामी नरहरी राम जी, गिरिनार बड़ धाम।
प्रेमपहाड़ी महाराज के, रामदास शिष्य नाम।।४।।
नारायणदास (छोटे) भये, भक्ति अविचल होय।
सन्तदास तिन शिष्य हैं, धाम दान्तड़ा जोय।।५।।
कृपाराम, केवल, चतुर, दौलत, गंग, हरिराम।
जीयाराम, सुखराम जी, अचल उतमराम।।६।।
उतमराम गुरुदेव के, रामप्रकाश रणजीत।
रणछाराम रणजीत जी, युगल शिष्य प्रतीत।।७।।
रणछाराम रणजीत के, शिष्य सु सीताराम।
प्रमा स्वरूप गुरुदेव को, जेठूदास प्रणाम।।८।।
ज्ञान वित गुरू देत नित, लेत जिज्ञासु सुजान।
रामप्रकाश गुरूदेव घन, बरसे पय ब्रह्मज्ञान।।९।।

जेठू दास वेदान्ती कृत

श्री रामप्रकाश छन्दावली

विषयानुक्रमणिका

	शक्ति की महिमा का अंग,देश काल के अनुसार शब्द के अर्थ अलग हो जातें है,नाम के अनुसार काम नहीं, काम से नाम, समय की महत्ता का अंग, हाव भाव क्रिया से अज्ञात का ज्ञान,माया का अंग,मन काअंग,विचार का अंग,सुख और दूख का स्वरूप, कृतघ्नता का अंग,किसान की महिमा, पापार्जित धन,प्राकृतिक आपदा/महामारी का अंग,प्राण का ज्ञान, तुलसी का पौधा, यज्ञोपवीत धारित की पहचान, मिश्रित अंग, हमारा सिद्धांत, भक्तों हित मंगल कामना, होली दीपावली के परिप्रेक्ष्य में, अलग अलग प्रयोजन से स्वामी जी के पास लोगों का आना,पिंगल ज्ञान, ज्योतिष, आदि का सुन्दर विषद वर्णन है।		
०३	"वेदान्त सिद्धान्त का विनोद" नामक तृतीय खण्ड - इस खण्ड के अन्तर्गत वेदान्त की स्थूल प्रक्रियाओं का बहुत सुन्दर वर्णन है, ओम् की व्याख्या, क्षर अक्षर व निरक्षर का निरूपण, अकारादि वंश कला, वेदान्त क्या है? सत चित आनन्द का अर्थ, सृष्टि उत्पत्ति क्रम, अनुबंध का कथन, ज्ञान के साधन वर्णन, संख्यावाचक वेदान्त प्रक्रिया इसमेँ बहुत सुन्दर दुर्लभ प्रक्रियाओं का समावेश किया गया है,आध्यात्मिक प्रश्न उतर, गुढार्थ सवैया, विपर्यय का अंग टीका सहित, आरती का विधान और महत्व, गायत्री मंत्र अर्थ सहित, कर्म योग विधि वर्णन, दृष्टान्त सिद्धांत वाटिका, ग्रंथ रचियता का अनुसंधान, आदि विषयों को बहुत रोचक और विलक्षण ढंग से वर्णन। अन्त में "श्री रामप्रकाश दोहा संग्रह" और वर्णाक्षर उपदेश दोहा,मानक कहानी (कपि और सिंह की), वेदान्त सबन्धित दोहे और भजन सरिता । उत्तम प्रकाशन -सूची पत्र	स-७४२ दो-१९ चौ-०३	१६८ से २६३ तक

कुल सवैया- २१०८
दोहा-२९०
चौपाई-०३
कुण्डलिया-०४
घनाक्षरी छन्द -०५
कवित-०४
झुलना छन्द -०१
भजन-३३

संकेताक्षर- स-सवैया, कु-कुण्डलिया, दो- दोहा, क-कवित,

घ-घनक्षरी छन्द, झ- झुलना छन्द

।। श्री गुरू सम्प्रदाय परम्परा का दर्शन।।

।। सवैया छन्द ।।

विशिष्टाऽद्वैत गुरू परम्परा, आद्याचार्य सतगुरू मनाऊँ ।
परमाचार्य श्री रामचन्द्र वर, रामानन्दाचार्य ज्ञान सजाऊँ ।।
सम्प्रदायाचार्य परिवाराचार्य, हरिराम वैरागी ध्याऊँ ।
रामप्रकाश परम गुरू सतगुरू, अचलोत्तमराम को शीश नमाऊँ ।।१।।
परिवाराचार्य वैष्णव हरिरामजी, पर परम गुरू सुखराम मनाऊँ ।
परम गुरू अचलराम ब्रह्मविद्वर, सतगूरू उतमराम को ध्याऊँ ।।
उतम आश्रम आचार्यपीठ वर, कागा पथ जोधपुर रहाऊँ ।
रामप्रकाश निज नाम परिचय, राघवप्रसाद उपनाम कहाऊँ ।।२।।
परम गुरू अचलराम ब्रह्मवेता वर, वरिष्ठ श्री फूलरामजी ध्याऊँ ।
सतगूरू उतमराम वरियान सु, अचलनारायणपर गुरु सराऊँ ।।
दयाराम जी पर गुरू मानत, सब ही को धरशीश नमाऊँ ।
रामप्रकाश नमो पद वन्दन, श्री वैष्णव के सदा गुण गाऊँ ।।३।।
परम गुरू श्री अचलरामजी, चार शिष्य तिनके वर ज्ञानी ।
ज्येष्ठ है श्री फूलराम जी, सतगुरू उतमराम सुजानी ।।
पर गुरू अचलनारायण, दयाराम सुख आनन्द खानी ।
रामप्रकाश पद वन्दन, आशिर्वाद शिष्य पर आनी ।।४।।

हृदय मे हरिरराम के रूप में, साक्षी जीयाराम बिराजे ।
जीवन के सरताज स्वरूप मे, श्री सुखराम अचल साजे ।।
अचलराम ही उतमराम है, सच्चिदानन्द अनूप सुराजे ।
रामप्रकाश है ताहि शरण में, साक्षी राम स्वरूप अगाजे ।।१।।
पाप हरण मे हरिराम समर्थ, रमणीय जीयाराम हमारे ।
सुख स्वरूप सुखराम विराजत, अटल अचलराम अपारे ।।
उतमराम को देव मनावत, चार पदार्थ दायक सारे ।
रामप्रकाश के पावन पद पँकज, ध्यावत कुग्रह सँकट टारे ।।२।।

भारतदेश एवं भारतीय वसुन्धरा को

शत शत नमन

हिमालयं समारभ्य यावत् इंदु सरोवरम् |
तं देव निर्मितं देशं हिंदुस्थानं प्रचक्षते ||

हिमालय पर्वत से शुरू होकर भारतीय महासागर तक फैला हुआ ईश्वर निर्मित देश है "हिंदुस्तान", यही वह देश है जहाँ ईश्वर समय - समय पर जन्म लेते हैं और सामाजिक सभ्यता की स्थापना करते हैं ।

।। सवैया छन्द ।।

भारत भूमि यह देव धरा धन, ऋषि मुनि अवतार है पाये ।
शूर सती अरु सन्त यहाँ सब, धनी दानी कर्मवीर सुहाये ।।
ज्ञान विज्ञान से पूर भण्डार है, वेद स्मृति महावाक्य भनाये ।
रामप्रकाश ये धन्य है मानव, आर्यावर्त में सहज ही आये ।।१।।
आर्यावृत भारत भूमि शुभ, ऋषि मुनि अवतार ही ध्यावे ।
वेद मन्त्र सँस्कार साधना, आध्यात्मिक गुण ज्ञान बतावे ।।
ईश्वर अराधन वीर्य रक्षण, वेदाध्ययन ब्रह्मचर्य सधावे ।
रामप्रकाश मातृभूमि धन्य है, महापुरुष चलि यहाँ पर आवे ।।२।।
राम कृष्ण महापुरुष लोमस से, हरिश्चन्द्र शूरवीर ही पावे ।
कर्मवीर रु धर्मवीर बहु, दानवीर शिबी धरा सुहावे ।।
धर्म रक्षक रामानन्द शँकर, दयानन्द विवेक ही आवे ।
रामप्रकाश धन भारत भूमि वर, नमन करे वर शीश नमावे ।।३।।
भास्कराचार्य कणाद ऋषिवर, विश्वामित्र भारद्वाज गणावे ।
गर्ग सुश्रुत चरक अगस्त्य, बोद्धायन दधीचि ब्रह्मदेव कहावे ।।
कपिल शौनक वशिष्ठ कण्व, ऋषियन को यह देश सुहावे ।
रामप्रकाश विविध विज्ञान को, शोद्ध कियो जन ज्ञान फेलावे ।।४।।
दुष्ट निकन्दन भव भय भँजन, ज्ञान ध्यान के रक्षक आये ।
वीर धीर गुण सती साधना, यति सन्त विद्वान सुहाये ।।
आर्यावर्त सनातन भूमि, वैदिक धर्म अध्यात्म पाये ।
रामप्रकाश धरा धन राष्ट्र, अखण्ड भारत गुण सिन्धु समाये ।।५।।
सप्त सिन्धु मेखला बिच मे, मेरु हिमालय कैलाश सुहावे ।
कन्याकुमारी कश्मीर बीच मे, आर्यवृत का राष्ट्र कहावे ।।
धन धान्य की शस्यश्यामला, महिमन्नस्तोत्र गान सुनावे ।
रामप्रकाश वन्दे भू मातृत्व, साधु सति जहाँ शूर ही आवे ।।६।।

हिन्दू धर्म महिमा

।। सवैया छन्द ।।

यह भरत खण्ड अखण्ड है भारत, आर्यावर्त है भूमि हमारी ।
ऋषि मुनि अवतार साधु सन्त, सती सूर वृत नियम भण्डारी ।।
देवरम्य है परम रम्य वर, ज्ञान विज्ञान के शोध हुई यहाँ भारी ।
रामप्रकाश गुरू भूमि सदा शुद्ध, हिन्दु धर्म को देवनहारी ।।१।।
है बुद्धि मान सुजान सत्यवृत, रचना रु वास्तु के ज्ञान भण्डारी ।
वेद पुराण स्मृति श्रुति वाचक, मधुर ध्वनि रव वाचन वारी ।।
वीर रु धीर शुचीर समीर के धारक, साधक सिद्ध उपावनवारी ।
रामप्रकाश गुरू भूमि सदा शुद्ध, हिन्दु धर्म को देवनहारी ।।२।।
नारद शारद शैष गणेश रु, सन्त महेश हरि अवतारी ।
साधक सिद्ध सिद्धि धन धारक, व्यास कणाद वशिष्ठ विचारी ।।
सीता कुन्ती रु तारा मन्दोदरी, अनुसूया आदि सति अपारी ।
रामप्रकाश गुरू भूमि सदा शुद्ध, हिन्दु धर्म को देवनहारी ।।३।।
सद् ग्रँथ रु पन्थ सो मत मतान्तर, विविध शास्त्र शस्त्र अपारी ।
व्याकरण ज्योतिष पिंगल डिंगल, शिल्प कला पँच भेद प्रचारी ।।
उतमराम सिद्धांत के उज्जवल, राघवप्रसाद से भक्त विचारी ।
रामप्रकाश गुरू भूमि सदा शुद्ध, हिन्दु धर्म को देवनहारी ।।४।।
भारत में बहु वीर भये जग, धर्म की वीरता हृदय धारी ।
दानवीरता कर्ण से धारक, महावीर बल शक्ति अपारी ।।
शिवा प्रताप से वीर अनन्त ही, रिद्धि सिद्धि की विद्धि उचारी ।
रामप्रकाश गुरू भूमि सदा शुद्ध, हिन्दु धर्म को देवनहारी ।।५।।
आर्यावर्त की धरा अति सुन्दर, भावन है मन मौद अपारी ।
सिद्ध सिद्धि सिद्धार्थ कारज, वेद वेदान्त के सिरजनहारी ।।
चौदह विद्या रु कला अनन्त ही, बोध के बोधक गुरू घनारी ।
रामप्रकाश गुरू भूमि सदा शुद्ध, हिन्दु धर्म को देवनहारी ।।६।।

॥श्री हरिगुरु सच्चिदानन्दाय नमः॥

अमृत कण

अकृत्यं नैव कर्तव्यं प्राणत्यागेऽप्युपस्थिते ।
न च कृत्यं परित्याज्यं एष धर्मः सनातनः ॥

भावार्थ : प्राण त्याग करने की परिस्थिति आ जाय, तो भी अयोग्य काम नहीं करना; और करने योग्य काम नहीं छोडना – यह सनातन धर्म है ।

पूर्णे तटाके तृषितः सदैव भूतेऽपि गेहे क्षुधितः स मूढः ।
कल्पद्रुमे सत्यपि वै दरिद्रः गुर्वादियोगेऽपि हि यः प्रमादी ॥

भावार्थ : जो इन्सान गुरु मिलने के बावजुद प्रमादी रहे, वह मूर्ख पानी से भरे हुए सरोवर के पास होते हुए भी प्यासा, घर में अनाज होते हुए भी भूखा, और कल्पवृक्ष के पास रहते हुए भी दरिद्र है ।

दुर्लभं त्रयमेवैतत् देवानुग्रहहेतुकम् ।
मनुष्यत्वं मुमुक्षुत्वं महापुरूषसंश्रयः ॥

भावार्थ : मनुष्य जन्म, मुक्ति की इच्छा तथा महापुरूषों का सहवास यह तीन चीजें परमेश्वर की कृपा पर निर्भर रहते है

क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थं च साधयेत् ।
क्षणे नष्टे कुतो विद्या कणे नष्टे कुतो धनम् ॥

अर्थ- एक-एक क्षण गवाये बिना विद्या सीखनी चाहिए; और एक-एक कण बचाकर धन ईकट्ठा करना चाहिए। क्षण गवानेवाले को विद्या और कण को क्षुद्र समझनेवाले को धन कहाँ मिलता है?

विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम् ।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनात् धर्मं ततः सुखम् ॥

अर्थ- विद्या से विनय (नम्रता) आती है, विनय से पात्रता (सजनता) आती है पात्रता से धन की प्राप्ति होती है, धन से धर्म और धर्म से सुख की प्राप्ति होती है।

रूपयौवनसंपन्ना विशाल कुलसम्भवाः ।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः ॥

अर्थ- रुपसंपन्न, यौवनसंपन्नऔर चाहे विशाल कुल में पैदा क्यों न हुए हों, पर जो विद्याहीन हों, तो वे सुगंधरहित केसुडे के फूल की भाँति शोभा नहीं देते।

तं पुस्तकवाद्ये च नाटकेषु च सक्तिता ।
स्त्रियस्तन्द्रा च निन्द्रा च विद्याविघ्नकराणि षट् ॥

अर्थ- जुआ, वाद्य, नाट्य (कथा/फिल्म) में आसक्ति, स्त्री (या पुरुष), तंद्रा, और निंद्रा– ये छः विद्या में विघ्नरुप होते हैं।

विद्या वितर्को विज्ञानं स्मृतिः तत्परता क्रिया ।
यस्यैते षड्गुणास्तस्य नासाध्यमतिवर्तते ॥

अर्थ- विद्या, तर्कशक्ति, विज्ञान, स्मृतिशक्ति, तत्परताऔर कार्यशीलता, ये छः जिसके पास हैं, उसके लिए कुछ भी असाध्य नहीं।

अक्षरार्थ(शैक्षणिक मंगल) कुण्डलिया

हरदम हरि से हेत कर, जीवन की गति जान ।
रिश्वत चोर्यादि दोष तज, या विधि जपले ज्ञान ।।
राविधि जपले ज्ञान, राम में प्रणब धुनि लावे ।
महरम जाने गुरू कृपा, मरजीवा मुक्ति समावे ।।
"हरिराम" "जीयाराम जी", महाराज प्रसाद कर ।
सतगुरु कृपा केवली, " रामप्रकाश" नवाज हर ।।१।।

सुख केवल निज ज्ञान में, अदभुत लखे अवधूत ।
खटपट प्रपंच खोय कर, चले चतुर पथ सूत ।।
-चले चतुर पथ सूत, लक्ष्मण रेखा धारे ।
राज योग लय चिंतन कर, राम में रमत विचारे ।।
महरम करे " सुखराम जी ", मतिधर अचलराम ।
सौम्य मूर्ति गुरूदेव की "रामप्रकाश" सुखधाम ।।२।।

उतम भाग्य मानव भयो, राम भये कृपाल ।
तन मन उज्जवल भाव कर, मद विद्या धन टाल ।।
मद विद्या धन टाल, प्रवृत्ति सकल निवारो ।
राम हृदय हरदम जपो, काम शुभ सतसंग सारो ।।
महर होय गुरू उतम की, शमन होय भव गम ।
"उतमरामप्रकाश" की, लखो रमझ उतम ।।३।।

श्री वैष्णव रामानन्दी, अग्रद्वारा सो जान ।
सन्तदास गुरू पीढी ते, शाखा परम्परा ज्ञान ।।
शाखा परम्परा ज्ञान, अग्रावत रसिक पहिचानों ।
आचार्य पीठ सो जोधपुर, वैरागी मत को जानो ।।
आद्य गुरू हरिराम जी, श्री सम्प्रदाय संत वन्द ।
रामप्रकाश वन्दन करे, श्री वैष्णव रामानन्द ।।४।।

- दोहा छन्द -

उत्तम गुरू हरि सतगुरु, हरि हर संत कृपाल ।
"रामप्रकाश" वन्दन करे, द्रवहुं परम दयाल ।।५।।

आरती (सवैया छन्द)

आरती आर्तभाव से होवत, थाल में पुष्प रु कुँमकुम राजे ।
जल कलश रु अक्षत धूपसु, श्रद्धा विश्वास भक्ति मन साजे ।।
हरि नाम सुमिरण स्वर पूरण, इष्ट सतगुरू मन्त्र शुद्धि काजे ।
रामप्रकाश आरती मन भावन, ईश्वर प्रसन्नता पावत गाजे ।।१।।

आचार्य पीठ की नित्य प्रातः समय आरती

आरती ! गुरू की सदा सुख दाता ।
महिमा अगम वेद यों(नित) गाता।।टेर।।
आपा मेट आपको लखता ।
सतगुरू सोई सत का बकता ।।१।।
ब्रह्म स्वरुप ब्रह्म का वेता ।
ज्ञान विज्ञान दान नित देता ।।२।।
सतगुरु अगम निगम का ज्ञाता ।
भिन्न भिन्न अर्थ सेन समझाता।।३।।
दे उपदेश रु भर्म मिटाता ।
भव सागर से पार पठाता ।।४।।
"उतमराम" सन्त उलट समाता ।
उलट समाय परम पद पाता ।।५।।

दोहा छन्द-

उतम जोगी ऊगतो, राम भजन भरपूर ।
"उतमराम"की एकता, हरदम राम हजुर ।।

(सवैया छन्द)

आरती आरत भाव मन से अर्चन, नित्य कर्म स्वभाव से कीजे।
ब्रह्म रु सन्तज्ञानी सतगुरु वर, सर्वस्व समर्पण नित ही दीजे।।
कायक वाचक मानसिकता पूरक, श्रद्धा विश्वास भाव पद बीजे।
रामप्रकाश नमो पद वन्दन, वारम्वार सतदेव पतीजे।।१।।
विश्व रूप में हे विश्वेश्वर, कैसे पूजा करूँ तुम्हारी।
जो जो शुभ करूँ वह पूजन, बोलूँ शब्द वह स्तुति सारी।।
लम्बा पाँव शयन करूँ जब ही, वही दण्डवत नमन हमारी।
रामप्रकाश श्वासा में सुमिरण, आपही हमरे सिरजणहारी।।२।।

।। श्री सतगुरु परम्परा उत्तम आरती ।।

।। सम्प्रदाय परिचयात्मक श्री आरती ।।

ओउम् जय गुरुदेव हरे, स्वामी जय गुरूदेव हरे ।
आर्त जिज्ञासु ध्यावे (हित से), संकट दूर करे ।।टेर।।
"संतदास" संशय को काटे, समता रुप धरे ।
"कृपा राम" कृपा के सागर, प्याला ज्ञान भरे ।।१।।
"केवलराम" केवल मतपुर्ण, भ्रांति भ्रम हरे ।
"चतुरराम" चतुर मति शोधन, निर्मल बोध झरे ।।२।।
"दौलतराम" विश्व की दौलत, अखण्ड भण्डार सरे ।
"गंगाराम" गंगवत निर्मल, पाप अरू ताप चरे ।।३।।
"हरिराम" हरे अघ सारा, शिव के रूप खरे ।
"जीयाराम" जीवन गति मुक्ति, सांख्य वेदान्त गरे ।।४।।
सो "सुखराम" सर्व सुख सुखसागर, सत चित आनन्द अरे ।
"अचलराम" अचल अज आत्म, अनन्त अखण्ड छरे ।।५।।
"उत्तमराम" उतम सत केवल, अपना आप परे ।
गुदड़ ज्ञान वैराग्य साधना, भूमि अवतरे ।।६।।
रामानन्द स्वामी की गद्दी, सत अवधूत जरे ।
धीरज धारणा राघव प्रेम को, विशिष्ठाद्वैत करे ।।७।।
गुरू प्रणाली योग अनादि, जानत मुक्ति तरे ।
"रामप्रकाश" प्रणाम प्रेम से, हरदम ध्यान वरे ।।८।।

दोहा छन्द

उत्तम हरि गुरू सतगुरु, नमो त्रिकाल सुजान ।
"रामप्रकाश" प्रणाम सो, निर्गुण सर्गुण प्रमान ।।

।। स्वामी उत्तम राम जी महाराज के चौदह शिष्य रत्न ।।

रणछाराम भये बलराम सु, कालूराम रु पूरणाबाई।
हरिदास जी किसनाराम रु, पहलादराम जोधाराम बताई।।
मूलाराम जयरामदास रु, अँजनाबाई, लाडूराम सुहाई।
सतगुरू उतमराम शरणागत, रामप्रकाश गुरू भ्रात गनाई।।

श्री रामप्रकाश छन्दावली

"मंगलमय वन्दना" नामक

प्रथम खण्ड प्रारम्भ

।। मंगलाचरण ।।

।। दोहा छन्द ।।

कर पद घुटने नयन उर, मन वाणी शिर याम ।
रामप्रकाश गुरुदेव को, करूँ साष्टांग प्रणाम ।।

।। सवैया छन्द ।।

शीश, चक्षु, उर, पाँव युगल वर, मन, वाणी, कर जोड़ पुकारूँ ।
जानू दोहू युत अष्ठ अँग कर, दण्डवत साष्टांग प्रणाम उचारूँ ।।
हरि गुरु सन्त पूर्वाचार्य तहिँ, चरणाम्बुज रज मो शीश में ढारूँ ।
सतगुरू उतमराम नमन कर, रामप्रकाश न्योछावर वारूँ ।।१।।
तन मन वाणी सहित विधि कर, दण्ड समान हो भूतल डारूँ ।
अष्ट अँग युत दण्डवत वार के, गुरू चरण न्योछावर वारूँ ।।
तन मन वाणी सर्वस्व युत हो, मँगल भाव से आरती उतारूँ ।
रामप्रकाश वन्दे गुरू उतम, सन्तन को प्रणाम उचारूँ ।।२।।
मँगल स्वरूप है सत चित आनन्द, व्यापक ब्रह्म अथाह अपारा ।
केवल ज्योति के एक हि अँश ते उत्पन, कोटिक रवि शशि हर सारा ।।
जिनके प्रभाव से द्रश्य अद्रश्य हरि, चेतत सब ब्रह्मण्ड हजारा ।
रामप्रकाश है स्वयँ स्वरूप को, निज को निज प्रणाम हमारा ।।३।।
उतम को गण देव मनावत, ध्यावत है फल पावत सारे ।
ब्रह्म सिन्धु की बहु तरँग है, शेष गणेश रु हरि हर प्यारे ।।
नारद शारद इन्द्र चन्द्र, अँग अनँग रु सूरज तारे ।
उतमराम अत्युत्तम सत चित, रामप्रकाश नमो रूप हमारे ।।४।।
ब्रह्म सनातन सिन्धु अथाह में, तरँग रु बुद बुद देव अपारा ।
हरि अज रु शिव सनकादिक, नारद शारद अनन्त अवतारा ।।
सृष्टि समुह खण्ड ब्रह्मण्ड सो, बूँद समान है सर्व दीदारा ।
रामप्रकाश है स्वयँ स्वरूप को, अपने आप को प्रणाम हमारा ।।५।।
तुरियातीत निज सत चित आनन्द, गया आया नही सदा अविकारी ।
तीन शरीर त्रिगुण नही प्रपँच, ज्ञान अज्ञान नही द्वँद विकारी ।।
है नही निरापेक्ष नित निरन्तर, जीव ईश माया परिहारी ।

रामप्रकाश व्यापक ब्रह्म एक ही, आपनो वन्दन आप अपारी ।।६।।
वाणी से अरज कहा करूँ वन्दन, वाणी रु पाणी रचावन हारे।
अन्तर्यामी रु अन्तर्जोति हो वर, विश्वपति हो विश्वम्भर न्यारे ।।
तन मन वाणी से अर्पित है वह, हृदय की सब जाणणवारे।
रामप्रकाश है सर्व न्योछावर, आप की रचना भेंट तुम्हारे ।।७।।
ऋषियों मुनियो अरू साधु संतों संग, पूर्वाचार्यो प्रणाम हमारा।
आद्याशक्ति युत आद्याचार्य गण, परमाचार्य गुरू गद्दी विचारा ।।
परम गुरू सतगुरू देवादिक, सब को है दण्डवत हजारा।
रामप्रकाश नमो पद वंदन, हरदम हरि को वारम्वारा ।।८।।
शिव के नन्दन उमा सुत वन्दन, रिद्धि सिद्धि दो नारी बधावे।
शुभ लाभ सुत सुता सँतोषी है रु, तुष्टि अरु पुष्टि पतोहु कहावे ।।
आनन्द प्रमोद दो पौत्र बखान हु, गणपति को परिवार सुहावे।
रामप्रकाश वन्दन नित भावत, शुद्ध बुद्धि मन मौद बढावे ।।९।।
तरुण भगत गीत रु बालक, शक्ति सिद्धि सो लक्ष्मी कहावे।
उच्छिष्ट विघ्न रु विजय हेरम्ब, महा विजय एकाक्षर भावे ।।
ऊर्ध्व वर त्रयक्षर हरिद्रा सु, क्षिप्र प्रसाद इकदन्त सुहावे।
रामप्रकाश यह गणपति के गुण, एकदन्त गज वदन को गावे ।।१०।।
द्विमुख त्रिमुख सिंह योग कहै तिंहि, संकट हरण स्वस्तिक सुहावे।
दुर्गा मोरिया रूप अनेक में, रिद्धि सिद्धि दोई नारि को लावे ।।
शुभ लाभ दो पूत है साथ में, मूषक वाहन तर्क कहावे।
रामप्रकाश यह गणपति के गुण, गावत है शुद्ध बुद्धि को पावे ।।११।।
श्री पति युत श्री निद्धि पति ही, श्री सिद्धि युत श्रीनाथ हमारे।
गिरिपति गणपति सुरपति ही, शिष्यपति रतिपति साथ सहारे ।।
दीनदयाल हे दीनबन्धु तुम, शरण पड़े हम आप के द्वारे।
रामप्रकाश है सतगुरु ओट में, देव सभी तकदीर सुधारे ।।१२।।
यति सती ऋषि मुनि सन्त जन, साधक सिद्ध रु गुरू जन सारे।
आद्याचार्य रु परमाचार्य वर, सियाराम मय जीव विचारे ।।
सच्चिदानन्द स्वरूप सँभारत, परमार्थ रूप अनूप सुधारे।
रामप्रकाश व्यवहारिक सता मय, दोहू भाति प्रणाम हमारे ।।१३।।
नशे व्यसन विकार के रोधक, सत्य के बोधक सन्त जन सारे।
अद्वय विचारक ज्ञान के धारक, सतगुरू वन्दन योग विचारे ।।
वेद वेदान्त सिद्धान्त के शोद्धक, श्री सम्प्रदाय के महन्त अपारे।
रामप्रकाश प्रणाम करे नित, सन्त सदा शिर मोर हमारे ।।१४।।
ज्ञान के बोधक बुद्धि के शोधक, सन्त सभी शिरमोर हमारे।
इष्ट अद्रश्य या द्रश्य विराजित, ताहि की वाणी हमें निस्तारे ।।
श्री गुरूदेव सदा शिर ऊपर, सोई जीवन को भव से तारे।
रामप्रकाश करूँ पद वन्दन, उपकार उन के नैन निहारे ।।१५।।

।। ईश्वर वंदना ।।

जय विश्वेश्वर विश्व बन्धु वर, विश्वकर्मा विश्व रूप सुहावा ।
विश्वजन मे विश्व रूप में, विश्वपति विश्वम्भर भावा ।।
विश्व में विश्वेश हो व्यापक, विश्व पिता अरु मातु मनावा ।
रामप्रकाश के विश्वरूप में, वन्दन भाति अनेक सुनावा ।।१।।
हे प्रभु त्रिकाल में त्रयलोक के रक्षक, त्रिगुण रचयिता त्रिगुण से न्यारे ।
चार हूँ वेद रु सन्त सिद्धान्त में, भेद अभेद है वर्णत सारे ।।
वारम्वार कथे कथनी कर वह, नेति नेति सब कहत ही हारे ।
रामप्रकाश अनन्त नमाम है, अनन्त को अनन्त प्रणाम हमारे ।।२।।
हे हरि ! आप पुरुषोत्तम पूरण, समर्थ आप हो खेवनहारा ।
भवसागर बिच उलझ रहा बहु, दीखत ना भव तरँग किनारा ।।
काम क्रोधादिक ग्राह घने वह, घात करे अन चाहत धारा ।
रामप्रकाश यों अरज करे नित, कोई सहायक नही हमारा ।।३।।
थाप उत्थापन आप ही सामर्थ, आप बिना जग कौन है मेरो ।
जो कछु काज हुए है बाधित, आप सुमति दे आप निवेरो ।।
सामर्थ सब विधि आप हो केवल, आपने काम को आप ही हेरो ।
निर्बल रामप्रकाश के समर्थ, आप ही हैं हरि सहायक घनेरो ।।४।।
हे करुणाकर निर्बल के बल, हम है सब विधि शरण तुम्हारे ।
निर्धन के धन आप ही रक्षक, आप बिना अब कौन हमारे ।।
भक्त वत्सल सब काज सुधारक, अनुचर सब ही आप सहारे ।
रामप्रकाश अधूरे कारज, आप बिना अब कौन सुधारे ।।५।।
शाररिक कष्ट को भोगत भोगत, मानसिक पीड़ बढी अति आई ।
आर्थिक हानि के कारण दुष्टन, कष्ट दियो मत भीड़ बढाई ।।
आपन स्वार्थ काज से लागत, काज परमार्थ रोकत लाई ।
रामप्रकाश दीयो प्रभु आप को, आप मिटाओ पीर सवाई ।।६।।

।। कुण्डलिया ।।

दाता सब के आप हो, सब के सिरजणहार ।
कीड़ी कुञ्जर एक से, प्रारब्ध के अनुसार ।।
प्रारब्ध के अनुसार, सब को समय पर देवे ।
पृकृति को आगे धरी, पुरुषार्थ कर सब ही लेवे ।।
रामप्रकाश वन्दन करे, समर्थ सर्व विधाता ।
कर्म लेखा सब का रखे, खाता वत हो दाता ।।१।।

।। श्री गुरु परम्परा वंदना ।।

श्री वैष्णव रामानन्द परम्परा, अग्रदेव द्वाराचार्य पधारे ।
आद्याचार्य श्री हरिराम जी, गूदड़ भेष जीयाराम जी धारे ।।
सुखरामजी अचलराम जी, उतमराम जी सतगुरू हमारे ।
रामप्रकाश अच्युत गुरूजन, वन्दनीय नित साँझ सवारे ।।१।।
श्री रामानन्द के अनन्तानन्दजी, कृष्णपयोहरी शिष्य ता जानो ।

अग्रदेवाचार्य समर्थ महा, द्वाराचार्य प्रधान ताको मानो ।।
पन्द्रह नाभादास युत द्वारे में, हरिराम जी गूदड़ आनो ।
रामप्रकाश अच्युत करे वन्दन, गुरू पीढि गण छानो ।।२।।
श्री वैष्णव श्री वँश दिवाकर, रामानन्दाचार्य श्री आद्य हमारे ।
अग्रावत श्री नाभादासजी, परिवाराचार्य हरिराम विचारे ।।
परमगुरू वर अचलराम जी, उतमराम सतगुरु सुधारे ।
गुरु परम्परा सँक्षेप परिचय, रामप्रकाश प्रणाम उचारे ।।३।।
आद्य रामानन्द अनन्तानन्द जी, कृष्णपयोहारी सिद्ध श्री गामी ।
अग्रदास जी नाभादास रु, सन्तदास हरिराम जी स्वामी ।।
जीयाराम जी सुखराम जी, अचलोत्तमराम अन्तर्यामी ।
रामप्रकाश श्री वैष्णव द्वार को, वारम्वार अनन्त नमामी ।।४।।
श्री वैष्णव अग्रावत अच्युत, गूदड़ गद्दी जोधपुर वारे ।
कृपापात्र श्री गँगाराम के, आद्याचार्य हरिरामजी प्यारे ।।
जीयारामजी सुखरामजी, अचलरामजी परम गुरू सारे ।
उतमराम जी ब्रह्मनिष्ठ सतगुरू, रामप्रकाश प्रणाम हमारे ।।५।।
श्री् वैष्णव विरक्त गुदड़ गदी वर, हरिराम वैरागी है आद्य हमारे ।
श्री जीयाराम रु श्री सुखराम जु, अचलराम है परम विचारे ।।
उतम गुरू परम्परा बीच में, फूल नारायण दयाल सुधारे ।
ब्रह्मवेता सब उतमराम गुरू, रामप्रकाश प्रणाम पुकारे ।।६।।
हृदय मे हरिराम विराजत, जीवन मे जीयाराम हमारे ।
सुख रूपक में सुखराम सदावृत, वृति में अचलराम उधारे ।।
कर्तव्य उतमराम बतावत, परमेश्वर पूरण सो निस्तारे ।
रामप्रकाश नमो पद वन्दन, हरदम कारज आप सुधारे ।।७।।

।। श्री राम वन्दना ।।

हे राघव हे राम रमापति, विश्वपति सीतापति प्यारे ।
मात पिता सतगुरु परमेश्वर, सर्व प्रकार से इष्ट हमारे ।।
पार करो भवसागर से प्रभु, आप ही हो नित हम रे रखवारे ।
रामप्रकाश की लाज रखो अब, शरणागत है सब दास तुम्हारे ।।१।।
जड रु चेतन जीव जिते जग भीतर, देवत्व जाति को जानत सारे ।
दैत्य गँधर्व देव रु किन्नर, पक्षी दनुज नर राम हमारे ।।
प्रेत रु पितर आकर चार हूँ, लाख चौरासी जीव जुहारे ।
रामप्रकाश मय सीयाराम सब, जान करूँ प्रणाम सुधारे ।।२।।

।। श्री कृष्ण वंदना ।।

हे सर्वेश्वर मोहन माधव, कृपा सागर कृपा करिये ।
हम तो शरण पड़े करुणा कर, भवसागर भव पीड़ा हरिये ।।
दीन अनाथ दुर्बल शरणागत, ज्ञान ध्यान झोली भरिये ।
रामप्रकाश अभ्यागत है अब, कृपा का हाथ सदा शिर धरिये ।।१।।

हे नटवर नटनागर नटखट, गिरिधर मुरलीधर नाम तुम्हारे ।
सष्टि के कारण और निवारण, विश्वपति विश्वम्भर प्यारे ।।
जल में थल में तेज गगन में, व्याप रहे कणकण सारे ।
रामप्रकाश प्रणाम करे नित, भव से पार करो नखरारे ।।२।।
हे कृष्णचन्द्र गिरधर मुरलीधर, घनश्याम सुनो दुःख दरद निवारी ।
हेराम रमापति रघुवर तुम हो, दीनबन्धु दीनन के हितकारी ।।
दास शरणापन्न आय गयो अब, रक्षा करो प्रभु आप हमारी ।
रामप्रकाश की अरज सुनो हरि, पापी को आप करो भवपारी ।।३।।
माधव मोहन चिद् घन चेतन, राम नारायण गोविन्द गावे ।
केशव कृष्ण मदन राघव, सिरजणहार को चित मनावे ।।
परम ब्रह्म सच्चिदानन्द केवल, हरि हर अजन्मा को नित ध्यावे ।
रामप्रकाश अच्युत भव भेषज, सेवन ते भव रोग नसावे ।।४।।

।। श्री शिव वंदना ।।

हे शिव शँकर शिवा सँग हो, शम्भु विभूत रमावन हारे ।
कैलाश वास है सर्प पास अरु, नन्दी वाहन सँग भ्रमण वारे ।।
कार्तिक गणेश के पिता परमेश्वर, ऋद्धि सिद्धि पतोहू धारे ।
रामप्रकाश शरणापन्न केवल, सतगुरु समर्थ मतवारे ।।१।।
शिव ही सत्य रु शिव अनन्त है, शिव है आदि अनादि अपारा ।
हरि रूप में शिवोहँ शिव है, भगवन्त आप ओंकार अधारा ।।
शिव ही सत चित आनन्द एक है, शिव का दृश्य सृष्टी विस्तारा ।
रामप्रकाश भगवान है व्यापक, सन्त लखे कोई जाणणहारा ।।२।।
शिव ही शक्ति रु भक्ति की युक्ति है, शिव ही है हरि हर उदारा ।
परम दयाल कृपाल अनूप है, सृष्टि लय उपावन हारा ।।
पँच तत्व को शिव उपावत, सार सभार रु प्रलय वारा ।
रामप्रकाश महिमा शिव शँकर, सन्त लखे कोई जाणणहारा ।।३।।
तामस सृष्टि में तामस दृष्टि है, तामस जन्तु अकार विकारा ।
शिव शिवा सँग राजत है नित, भूत भभूत रु प्रेत परिवारा ।।
उत्पन्न पालन करे अज हरि, शिव शेखर वह करत सँहारा ।
रामप्रकाश यह सृष्टि के कारण, वन्दन ताहि ते वारम्वारा ।।४।।
महा कालेश्वर काल काली सँग, मृत्युंजय मन्त्र मृत्यु को टारे ।
काल काली मिल चौंसर खेलत, कहीं की गोटी को कहीँ पर डारे ।।
रोग समूह है मृत्यु मण्डल में, अनन्त रूप को जाल पसारे ।
रामप्रकाश उमापति वन्दन, वही है रक्षक देव हमारे ।।५।।
काल काली सँग खेल रचावत, रूप अनन्त ही आप बनावे ।
मृत्यु अकाल को टारत है भव, सँग भवानी के आप रहावे ।।
मृत्युदंड सब जीवन को कर, स्वर्ग नर्क ताहि पठावे ।
रामप्रकाश प्रणाम करे तिँहि, त्रिलोचन तिहिँ नाम कहावे ।।६।।
महादेव शँकर शिव सामर्थ, मृत्युञ्जय बल आप बचावे ।

रोग भयँकर टारत है भव, नाथ त्रिलोक में आप कहावे।।
रोग भगावत भक्त बचावत, शिव शिवा सँग आप ही आवे।
रामप्रकाश प्रणाम करे तिँहि, सतगुरू रक्षक ताहि पठावे।।७।।
मख्खी मच्छर जीव जन्तु सब, विषधर की सृष्टि है सारी।
दैविक भौतिक ईति भीति भय, जितनी जग बीमारी भारी।।
फोज यही सब है भोले शिव की, भूत पिशाच प्रेत की सेना न्यारी।
रामप्रकाश वन्दन महा मृत्युञ्जय, शिव कृपा हो सुरक्षा हमारी।।८।।

।। श्री हनुमत वन्दना ।।

सँकट मोचन मारुति नन्दन, बजरँग बली महावीर पुकारे।
सीता शोक रु लँक जलावन, पवन पुञ्ज हनुमान हमारे।।
बाला जी हो रामदूत तुम, भक्तन के प्रतिपालक भारे।
रामप्रकाश सुख पावत है वह, महाप्रभु के नाम उचारे।।१।।
बजरँगबली हनुमान यतिवर, मारुति नँदन महावीर कहावे।
सँकट मोचन पवनपुत्र वर, रामदूत अँजनी सुत भावे।।
नाम यही दुःख भँजन सामर्थ, प्रात शाम जप कष्ट मिटावे।
रामप्रकाश भक्तन अरि नाशक, राम है इष्ट सो आनन्द लावे।।२।।
हे हनुमान सुनो अरि हान सु, भक्त भक्ति जन के रखवारे।
शत्रुन आनके घेर लियो जन, ग्रह प्रभाव कुचक्र के वारे।।
जीवन अर्पित राम शरण में, याविधि पीड़ित होय हमारे।
रामप्रकाश शरणागत वत्सल, कैसे हो? अब अरि बिगारे।।३।।
राम भक्त हनुमान अँजनी सुत, भक्तन रक्षक महा बलवाले।
कौनसो काज अहै जग भीतर, जो ना होय सके कल माने।।
नवग्रह भूत पिशाच रु राक्षस, दुष्ट समूह दल मूल मिटाने।
रामप्रकाश पे भीर परी अब, रक्षक आप के नाम अयाने।।४।।
मात न तात न भ्रात नही बल, कुल कुटुम्ब को नाहि सहारो।
नौकर चाकर सेवक भी नही जो, पीड़ की भीड़ में होय हमारो।।
बाल की आस शरणागत रक्षक, एक ही नाम है यति तुम्हारो।
रामप्रकाश पुकार करे यह, हनुमन्त सुनों अब बेग उभारो।।५।।
लोग कहे अरदास में बल है, शास्त्र में प्रार्थना बतावत भारी।
भक्ति की शक्ति को लोक कहै यह, अरज करो स्वीकार हमारी।।
रोगन आय के घेर लियो अब, वैरी कुग्रह की पीर अपारी।
रामप्रकाश की वेर बली अब, दूर करो यह पीड़ जो सारी।।६।।
आप ही सतगुरू आप ही इष्ट हो, आप ही राम के सेवक भारी।
आप बली हो अँजनी लाल जु, वरदायक हरो पीर हमारी।।
हनुमान हठी महावीर महा, प्रभु समान है शक्ति तुम्हारी।
रामप्रकाश पुकारत आरत, कहाँ रहे निज शक्ति बिसारी।।७।।
बहुत पुकार करि हनुमन्त से, किंहि कारण आवन में कर देरी।
उलझ गये भक्तन की भीड़ में, कि थाक गये मम पाप को हेरी।।

आय सहाय करो बलवन्त हो, निज शक्ति में अति भूल घनेरी।
रामप्रकाश अरदास है आरत, अरज सुनो महावीर ये मेरी।।८।।
क्या गुणहीन भई सब औषधि, क्या अति मन्द तकदीर हमारी।
क्या अति रोग भये अति प्रबल, क्या रही अरज में चूक अपारी।।
क्या इष्टदेव भी रूठ गये तब, कौन की आश रहूँ मन धारी।
रामप्रकाश हो तारण मारण, आश बड़ी हनुमन्त तुम्हारी।।९।।
हनुमन्त बली अब करो भली, सब रोग रु दोष को दूर करो।
सँकट टारक दुष्ट सँहारक, भक्तन की प्रतिपाल करो।।
राम के काज किये बड़ साज, मेरी बेर क्यों देर करो।
रामप्रकाश भरोस अप्रबल, सीया आशिस को सफल करो।।१०।।

।। हनुमानाष्टक ।।

सीता शोक मिटावन हार हो रु, भक्तन के दुःख निवारण हारे।
भीर परी अब दास पे आयके, कुग्रह भूत पिशाच अपारे।।
डाकनि शाकनि भैरव आयके, सब उत्पात मचावन हारे।
रामप्रकाश है शरण हनुमान की, कौन बली तकदीर बिगारे।।१।।
लक्ष्मण प्राण के रक्षक हो तुम, लँक सशँक जलावन हारे।
वीर बली गुण सागर आप ही, भक्तन प्राण बचावन वारे।।
सुग्रीव विभिषण के तुम पालक, राम रु राज मिलावन सारे।
रामप्रकाश की वेर दयानिधि, प्राण के त्राण रखो बल सारे।।२।।
उतमराम समान बनो अब रक्षक, हे गुरूदेव सदा रखवारे।
हे पिँगाक्ष बली हनुमन्त हो, रावण शोक बढावन वारे।।
लाय सीया सुधि काज किये तुम, सुग्रीव शोक मिटावन हारे।
रामप्रकाश की वेर दयानिधि, काहे की देर भयी मतवारे।।३।।
रोग अनेकन घेर लियो तन, कष्ट साध्य रु असाध्य अपारे।
कौन जन्म के पाप रू ताप ते, आय परयो भव सिन्धु मँझारे।।
आप बिना अब कौन सहायंक, ताहि गुहार करूँ मन हारे।
रामप्रकाश हनुमन्त बिना अब, कौन सहायक होहि हमारे।।४।।
हनुमान बली अब करो भली सब, कष्ट हरो सब होहि हमारे।
लाज रखो अरु काज करो सब, शरण पड़े के रक्षण वारे।।
दैविक भौतिक ताप हरो सब, दैहिक कष्ट जो है तन सारे।
रामप्रकाश नही आप बिना कोई, जाहि पुकार करूँ जाय द्वारे।।५।।
मँगल रूप हो मँगल मूर्ति, आय करो अब मँगल हमारे।
मँगल भवन हो मँगल कारण, दूर करो अमँगल सारे।।
रोग रु दोष कुग्रह भैरव, पिशाच निशाचर होय जो सारे।
रामप्रकाश के कौन सहायक, आप बिना नही कोई सहारे।।६।।
बजरँगबली अब करो भली सब, दूर करो अमँगल सारे।
ज्ञात अज्ञात किये या हुए अपकर्म जो, आप बिना अब कौन निवारे।।
समर्थ की शरण मैं आय गही, अब छोड़ के जाऊँ क्या और के द्वारे।

रामप्रकाश के आप ही रक्षक, लाज रु काज सुधारण हारे ।।७।।
अष्ठ छन्द मति मँद की आरत, दूर करे अमँगल सारे ।
समर्थ शरण हनुमान की आयके, कौन के द्वार पे जाय पुकारे ।।
लँक जलाय सीया सुधि लायहू, लक्ष्मण प्राण बचावन हारे ।
रामप्रकाश पुकार थके अब, मौन गही अब हनु रखवारे ।।८।।

।।शक्तिमय मातृ वंदना।।

हे माता महिमन्त्र शक्ति मय, देवी स्वरूप है आप के सारे ।
नाना रूप में वैभव शाली हो तुम, किस किस नाम पुकारन वारे ।।
ऋषि मुनी अवतार सन्त गण, गुण गावत बहु महिमा पसारे ।
रामप्रकाश शक्ति मय वन्दन, वारम्वार प्रणाम हमारे ।।१।।
पृकृति महामाया महाप्रबल तुम, माया अविद्या सब माया तुम्हारी ।
त्रिगुणात्मक गुण अवगुण मय हो, जीवन को भव भय डारन हारी ।।
भक्ति शक्ति भुक्ति मय मुक्ति, तेरे काम की है बलिहारी ।
रामप्रकाश वन्दन बहु वन्दन, परम ब्रह्माश्रित देह तुम्हारी ।।२।।
महतत्व पृकृति त्रिगुण मयी तुम, माया अविद्या रूप तुम्हारे ।
परा अपरा वाणी कर शक्ति सो, नाना स्वरूप मे बहु पसारे ।।
शारद लक्ष्मी रु देवी कहावत, ब्रह्माणी के अवतार अपारे ।
रामप्रकाश वन्दे नित वन्दन, मातृभूमि है राष्ट्र हमारे ।।३।।
शक्ति स्वरूप माया कृत नारी है, शिवा सती अजा महतारी ।
सन्त महन्त पुरुषोत्तम कारण, पूरण अवतार की जननी सारी ।।
नारी पूज्य जहाँ देव रमण करे, शास्त्र कहत सब महत्व पुकारी ।
रामप्रकाश मातृत्व शक्ति, नमन योग्य है भूमि हमारी ।।४।।

।। गंगा महिमा ।।

अस्थि प्रवाह पितृ हित साधक, हाड़ द्वार तहि नाम पुकारे ।
बद्रीनाथ को मार्ग जावत, ताहि ते हरिद्वार उचारे ।।
केदारनाथ को पथ सुधारत, तहिं कर के हरद्वार प्रचारे ।
रामप्रकाश अनुकूल त्रय यह, नाम कहै सुख अर्थ हमारे ।।१।।
सगर राज के पुत्र गति हित, पौत्र तपे अँशुमान सुधारे ।
दिलीप राज तपे तब वह, जान्हु ऋषि अच जान्हवी वारे ।।
ताहि के पूत भागीरथ तप के, नाम भागीरथी नाम उचारे ।
वृहत परिश्रम गँगजल उतम, रामप्रकाश बहु रोग निवारे ।।२।।
गँग में न्हावत, पाप नशावत, पूण्य बढावत, नाम उचारे ।
भागीरथी रु गंगा प्रभावती, महादेवी मन्दाकनी वारे ।।
त्रिपथ गामनी जान्हवी गोमुख, सुखद परमा गति नाम पुकारे ।
रामप्रकाश जपे नित पाठक, सो यमलोक को नाहि निहारे ।।३।।

।। धन्वन्तरि वन्दना ।।

जिन्होंने ने औषधि गुण दरसा कर, वनस्पति पँचाँग बताये ।
जिन्होंने आरोग्य विधि बतावत, अनुपान युत गुण दोष दिखाये ।।

समस्त रोग निवृति कारण, विधि स्वरूप अनेक ही लाये।
रामप्रकाश प्रणाम करे पद, धन्वन्तरि भगवान ही आये।।१।।
सिन्धु पिता मुक्ता चँद बान्धव, कामधेनु ऐरावत सारे।
लक्ष्मी बहिन अवतार धन्वन्तरी, अमृत कलश वर हाथ तुम्हारे।।
स्थावर पँचाँग सो गुण अवगुण को, हाथ छुवत ही बोल उचारे।
रामप्रकाश प्रणाम करे नित, दूर करो सब रोग हमारे।।२।।
सुवर्ण कलश चढे बहु मन्दिर, शीश नमावत कोई नही प्यारे।
सुन्दर सुहावन दूर दृश्य भले, शीश झुकावत सीढी पर सारे।।
पत्थर पर आवत शीश झुके वर, हरि मन्दिर पर जाय पुकारे।
रामप्रकाश धनतेरस तिथि वर, धन्वन्तरि अवतरण वैद्य जुहारे।।३।।
नमो धन्वन्तरी देव करूँ वर, सब का स्वास्थ्य हाथ तुम्हारे।
हाथ लगावत बोलत है सब, जड़ी बूटी पँचाँग ही सारे।।
तुम जानत हो मम रोग सतावत, क्यों तुम औषधि लावत हारे।
रामप्रकाश सब जानत हो वर, औषधीय गुण दोष को प्यारे।।४।।
कार्तिक त्रयोदशी जन्म दिवस है, नमन करो मै शीश झुकाई।
लक्ष्मी भ्रात हो अमृत पास में, सृष्टी की औषधि पास रखाई।।
हाथ छुवत ही बोलत है सब, स्थावर पँचाँग गुण दोष बताई।
रामप्रकाश बलिहारी जावत, आय करो मम देह सहाई।।५।।
सिन्धु पिता रु चन्द्र सखा वर, अमृत कलश है हाथ तुम्हारे।
विष्णु से देव है बहिन पति वर, क्यों नही आवत काम हमारे।।
देह के रक्षक आप सहायक, औषधीय ज्ञान बताय दो सारे।
रामप्रकाश प्रणाम करे नित, वैद्यनाथ तुम सृष्टि के भारे।।६।।
औषधीय ज्ञान वृक्ष पँचाँग को, घटक और अनुपान भी सारो।
जड़ी बूटी रु विधि विज्ञान को, आप ही खूब रचावन हारो।।
आप ही इष्ट अवतार रूप में, रोग रु औषधि बतवन वारो।
रामप्रकाश पुकार करे यह, सब रोग से ग्रस्त देह सुधारो।।७।।

।। महापुरुषों को वन्दना ।।

नमन करूँ नित उन ऋषियों को, अद्वैताचार्य गुरुवर जानी।
श्री गुरू जन पद रज पारस, शीश धरूँ चरणामृत मानी।।
ज्ञान ध्यान के लेखन ग्रन्थन, भरे भण्डार यथार्थ बानी।
रामप्रकाश उतम जन जीवन, पथ पर्दशक पावन ज्ञानी।।१।।
साधु सन्यासी रु ज्ञानी अज्ञानी हो, नागा त्यागी वेदान्ति पुजारी।
सन्त पीठाधीश्वर रसिक साधक, गुरू मठाधीश्वर और भण्डारी।।
वैरागी वियोगी प्यारे दुलारे जु, श्रीयुत जगद्गुरू भक्त कोठारी।
रामप्रकाश नमो वर पण्डित, वारम्वार दण्डवत हमारी।।२।।
कवि सन्त जन मुनि ऋषिगण, श्री आचार्य गुरूवर सारे।
परम पुरुषार्थ साधक वृन्द जो, नित्य अद्वय सिद्धान्त विचारे।।
कष्ट साध्य रु गोप्य रहस्य जिन, जिज्ञासु हितार्थ बोध सँभारे।

रामप्रकाश अष्टांग युक्ति युत, वारम्वार प्रणाम हमारे ।।३।।
धर्म प्रचारक रु राष्ट्र रक्षक जो है, समाज सेवक और पर उपकारी।
जीवन रक्षक ज्ञान के दीक्षक, वेद अध्यापक है ब्रह्मचारी ।।
सन्तरु सतगूरू त्रिकाल माहीँ, भवतारण हेतु देह को धारी।
रामप्रकाश नमो नित वन्दन, महापुरुषों प्रणाम हमारी ।।४।।
तन स्थिर हो मन भी थिर हो, वाणी सँयम युत शब्द विचारे।
सुरत निरत जब सतगुरू मार्ग, श्वासोश्वास का पन्थ सुधारे ।।
पाँच मिले जब षष्ठम सँग में, एक कलप सम पलक सँभारे।
रामप्रकाश कह ऐसे साधक को, वन्दन वारम्वार हमारे ।।५।।
ध्रुव प्रहलाद रु बाल्मीकि नारद, बड़े ऋषि मुनी हूवे अवतारी।
गँगा यमुना त्रिवेणी सरस्वती, सब माताऐं पूज्य हमारी ।।
गीता गँगोत्री गौ शारदा, उन की सँता नैं हम है सारी।
जो माताऐं हुई धरती पर, रामप्रकाश तिन पे बलिहारी ।।६।।
महापुरुषों का जनम हुआ इन, माताओं की हूँ बलिहारी।
महिला नारी शक्ति स्वरूपा, जासे जन्मे ऋषि अवतारी ।।
पृकृति रचना निराली अद्‌भुत, माया अविद्या नाम हजारी।
रामप्रकाश यह अजब गजब है, महिमा नारी की वेद पुकारी ।।७।।
मात पिता करुणामय सतगुरू, वन्दन योग्य है नित्य सवारे।
सतगुरू सिद्धि प्रद विमल मतिवर, अमल काव्य निर्मल है सारे ।।
वन्दे सतगुरू नमन करूँ वर, दण्डवत साष्टांग है वारम्वारे।
सर्वस्व है सतगुरू परिपूरण, रामप्रकाश प्रणाम हमारे ।।८।।
ऋषि मुनि अवतार अवलिए, साधु सन्त महापुरुष जो सारे।
धर्माचार्य विश्व जो वैराट में, पूर्वाचार्य गण देव अपारे ।।
है अरु हुए जो मानव समाज मे, रीति नीति दरशावन वारे।
रामप्रकाश जो पढे गुणे गुण, रामप्रकाश प्रणाम हमारे ।।९।।
सन्त सनातन धर्म के रक्षक, ऋषि मुनी गण पूज्य है सारे।
कर्मवीर रु धर्मवीर सब, दानवीर ओ शूर समारे ।।
ज्ञानी ध्यानी साधक मानव, हम सभी के सभी हमारे।
रामप्रकाश सब अँश ब्रह्ममय, ताही ते शुभ काम सुधारे ।।१०।।
कोई ज्ञान में कोई ध्यान में, कोई धन सँस्कार में आवे।
कोई बल में कोई कल में, कोई सेवा में श्रेष्ठ कहावे ।।
कोई काम में कोई धाम में, हम से भी अति श्रेष्ठ कहावे।
रामप्रकाश है ईश्वर अँश वह, ताहि ते नित प्रणाम सुनावे ।।११।।

।। प्रभु शरणागत ।।

नमोस्तु हे सतगुरु परमेश्वर, समर्थ आप हो दीनदयाला।
कृपासागर अनाथ के नाथ हो, केवल ज्ञान सुनावत आला ।।
प्रबल सेतु भव पार पठावन, हेतु है ज्ञान जहाज कृपाला।

रामप्रकाश शरणागत आयो हुँ, आप सदा हो प्रणव पाला ।।१।।
गला पसार कहूँ कहा मालिक, नही बुद्धि बल ज्ञान आचारा ।
कर्म पँगु रु बुद्धि पँगु हम, वाणी पँगु नही बोल उचारा ।।
सामर्थ हरि की शरण में आयके, टूँटा ताल बजाय पुकारा ।
मूक वाचाल पँगु गिरि लाँघत, रामप्रकाश के वही रखवारा ।।२।।
जाहि कृपा पँगु गिरि लाँघत, गूँगे के मुख वेद उचारा ।
टूँटा मृदँग ताल बजावत, सो समर्थ जग पोषणहारा ।।
बुद्धि रु कर्म के पँगुल दास में, चतुर्वाणी मुख मूक विचारा ।
रामप्रकाश है दास शरणागत, निर्भय आप करो भव पारा ।।३।।
हे ईश्वर सतगुरु परमेश्वर, सन्त सुनो अरदास हमारी ।
मैं हूँ कामी कुटिल पापी अपद्रोही, हूँ गुणचोर कृतघ्नी व्यभिचारी ।।
गुरु आज्ञा घातक अपराधी सो, शरण आयो मैं हूँ दुराचारी ।
दोषागार ये रामप्रकाश है, अब आयो तकि शरण तुम्हारी ।।४।।
हे प्रभु दीनदयाल दया सिन्धु, दीनन के बन्धु हो रखवारे ।
भक्त रु भक्ति की पत के राखन, कर्म की रेख मिटावन वारे ।।
समर्थ आप सनातन पूरण, शरणागत रक्षक हो सुख वारे ।
रामप्रकाश है दास समर्पित, आप ही रक्षक होय हमारे ।।५।।
हे प्रभु दीनबन्धु दुःखहारक, सब विधि अर्पित हम तुम्हारे ।
जो कुछ हुआ कृपाघन कारण, बाकी रहे कुछ काज विचारे ।।
आप के चरण में आप करो अब, जैसे भक्तों के काज सुधारे ।
रामप्रकाश शरणापन्न केवल, केवल हरि गुरू आप हमारे ।।६।।
हे विश्वपति भक्तन के रक्षक, अशरण शरण निभावन हारे ।
निर्बल के बल निर्धन के धन, दया निधान अकारण वारे ।।
निर्बल दीन अनाथ शरणागत, दासनदास हूँ द्वार तुम्हारे ।
रामप्रकाश के आप बिना अब, कौन है आन जो मोहि निहारे ।।७।।
हे प्रभु आप अनादि सनातन, निर्गुण सर्गुण अनूप अपारा ।
भक्त अनेक आये शरणागत, पाप सन्ताप ते किये भव पारा ।।
मोहि गरीब अनाथ की आरत, गरीब नवाज सुनो पतवारा ।
रामप्रकाश है दास समर्पित, आप ही हों अब लाज रखवारा ।।८।।
हे प्रभु परमेश्वर सतगूरू, आय पड़ा अब शरण तुम्हारे ।
कर्म कलेश रु काल के कँटक, कौन है प्रबल भाग बिगारे ।।
प्राकृतिक देव ओ गुरू जन सामर्थ, सब ही सहायक होय हमारे ।
रामप्रकाश है समर्थ शरणापन्न, प्रारब्ध को वो बदलन हारे ।।९।।
हे प्रभु दीनदयाल कृपाघन, भक्ति कर विरद निभावन हारे ।
कौन सी चूक परी इस दास ते, रूठ गये करतार हमारे ।।
तन मन धन बल आप के अर्पित, आप बिना अब कौन सुधारे ।
रामप्रकाश शरणागत आपके, भक्त विरद अब हाथ तुम्हारे ।।१०।।
त्राहिमाम पाहिमाम हूँ शरणागत, रक्षमाम प्रभु आप हमारे ।

आरत दीन दुःखी कर वन्दन, स्वीकार करो हे विरद सँभारे।।
सँकट मोचन आप हो सामर्थ, आय पड़ा अब द्वार तुम्हारे।
रामप्रकाश भव भीड़ पड़ी तब, कोई सहायक नाही रहारे।।११।।
मात पिता गुरु बन्धु सखा सब, भ्राता स्वामी कुल मीत सहारे।
अन्तर्यामी परब्रह्म वह ईश्वर, सब कुछ है सत इष्ठ महारे।।
सतगुरु समर्थ है भवतारक, रक्षक पोषक मोक्ष हमारे।
रामप्रकाश श्री शरण मे आयके, जीवन समर्पित किया तुम्हारे।।१२।।
शरणागत दास की अरज सुनो प्रभु, मै हूँ दीन अनाथ भिखारी।
गुरु आज्ञा अपराधी कृतघ्न पापी, दोषागार गुण चोर व्यभिचारी।।
दीनबन्धु सुन चरण की ओट में, आय गही गुरू शरण तुम्हारी।
रामप्रकाश पुकारत है प्रभु, रक्षा करो अब आप हमारी।।१३।।
काम रु क्रोधादिक अन्तर, भौतिक शत्रुन आय दियो घेरो।
दीनदयाल दीनबन्धु हो तुम, दीनन हितकर प्रण है तेरो।।
बन्धु रु मित्र शिष्य सखा जन, और सहायक नाहि है नेरो।
"रामप्रकाश" शरणागत आप के, आप बिना अब कोई ना मेरो।।१४।।
ताप सन्ताप है भौतिक दारुण, शत्रुन आय दियो बहु घेरो।
आय सहाय करो अब बेग ही, रक्षक दीनदयाल है मेरो।।
लाज शरणागत की अब जावत, प्रणतपाल वृत जात है तेरो।
रामप्रकाश पुकारत आरत, कष्ट परयो अब आय घनेरो।।१५।।
अवगुण भण्डार है सब कुछ पूरण, कामी क्रोधी छल व्यभिचारी।
व्यशन दोष भरे जन्मान्तर, चँचल आवर्ण सेहूँ दुराचारी।।
कथा श्रवण कर आयो शरणागत, प्रणतपालरु भक्त हितकारी।
अवगुण क्षमा भव पार उतार हूँ, रामप्रकाश है शरण तुम्हारी।।१६।।
दीन दयाल कृपा घन माधव, मैं शरणापन्न दीन तुम्हारो।
दासन दास अनुचर सेवक, भक्ति सतसँग दो भाव बधारो।।
सन्तन के दर्शन हो निशिदिन, ज्ञान सहित हो सुमिरण प्यारो।
रामप्रकाश है शिष्य शरणागत, कृपापात्र की ओर निहारो।।१७।।
जान अजान में बुरो कियो नही, चाह सदा हित काम कमायो।
साधु असाधु जन सँसार के, परख बिना सब निन्दा को गायो।।
आपने पराये बन्धू शिष्य गण, सब से मन उदास अघायो।
रामप्रकाश प्रभु शरणागत, भ्रमण एकान्त को मन बनायो।।१८।।
भाव अभाव कुभाव भये जग, द्रष्टि त्रिकोण स्वभाव भुलायो।
सम वरिष्ठ मर्याद मिटी सब, लापर चापर में चित लायो।।
साधन के बिन सिद्ध बने रहे, बातन में ब्रह्मज्ञान बतायो।
रामप्रकाश प्रभु शरणागत, भ्रमण एकान्त को मन बनायो।।१९।।
हे गुरू वृन्द दयावृत आनन्द, कृपासिन्धु दयाल हो सारे।
शरण गही अब पार करो भव, रोग विहीन करो काज हमारे।।
सतगुरू पर परम गुरू आप ही, कौन से देव रह्यो इष्ट लारे।

रामप्रकाश है आरत वाचन, चरण शरण में अरज पुकारे ।।२०।।
सतगुरु कृपा हुई हम ऊपर, जिनकी सेन ने काज सुधारा ।
साधन सहित मुमुक्षुता पाकर, पूर्ण ज्ञान का भेद विचारा ।।
भक्ति रु मुक्ति की युक्ति को देकर, ज्ञान जहाज किया भव पारा ।
रामप्रकाश सतगुरु शरणागत, उतम पाया मोक्ष का द्वारा ।।२१।।
सतगुरु श्याम सदा सुखदायक, भव तारक जीवन सुखदाता ।
दे उपदेश शरणागत लेवत, परमार्थ व्यवहारिक पाता ।।
साधन सहित परमपद देवत, भ्रम अज्ञान मिटावत गाता ।
रामप्रकाश शरण में जावत, सो ब्रह्मानन्द जाय समाता ।।२२।।
गुरू का नाम रटे निशिवासर, पाप रु ताप कटे दुःख सारा ।
ले चरणोदक चरण पखारत, तीर्थागमन पावे फल भारा ।।
सेवा करे तन मन धन अर्पित, ता घर यम न जोर लिगारा ।
रामप्रकाश सतगूरू शरणागत, सो जन पावत मोक्ष दुवारा ।।२३।।
हे प्रभु! आप ही समर्थ हो मेरे, जीवन सहायक और न कोई ।
मात पिता कुल बान्धव आदिक, स्वार्थ भरे सब मोह घनोई ।।
डूब रहा भव धार तरँग में, निर्बल के बल और न होई ।
रामप्रकाश पुकारत आरत, कृपा करो शरणागत जोई ।।२४।।
हे प्रभु! दीन अनाथ शरणागत, आय पर्यो हूँ आप के द्वारे ।
जग का मोह जँजाल दुखारत, सूझ परी दरबार तुम्हारे ।।
आप दयाल कृपानिधि पूरण, रक्षा करो अब खेवन हारे ।
रामप्रकाश गुरु राह गही अब, और न रक्षक कोई हमारे ।।२५।।
सतगुरु स्वामी समर्थ हो प्रबल, दीनबन्धु गुण धाम उदारे ।
इन्द्रिय लोलुप अघ धाम हूँ पूरण, भवसागर भय होय हमारे ।।
मीत सखा कोई पास न आवत, दास आयो अब शरण तुम्हारे ।
रामप्रकाश है दास शरणागत, आप बिना मोहि कौन उभारे ।।२६।।
सतगुरु श्याम सदा सुखदायक, भव तारक जीवन सुखदाता ।
दे उपदेश शरणागत लेवत, परमार्थ व्यवहारिक पाता ।।
साधन सहित परमपद देवत, भ्रम अज्ञान मिटावत गाता ।
रामप्रकाश शरण में जावत, सो ब्रह्मानन्द जाय समाता ।।२७।।
पृवृति मार्ग में छोकरा छोकरी, परिवार बहु प्रपँच पसारे ।
निवृति मार्ग में हरि उपासन, और नही कोई काम हमारे ।।
हे प्रभु अरदास सुनो अब, आप बिना हमें कौन उभारे ।
रामप्रकाश सतगूरू शरणागत, प्रारब्ध हरि आप सँभारे ।।२८।।
कामी कुटिल कृतघ्नता धारक, दीन हीन हू चोर धूतारो ।
अवगुण धाम रु व्यशन पूरक, भक्ति के भाव से शून्य हूँ सारो ।।
सतसँग प्रेम रु सतगुरु सानिध्य, सन्त दर्शन दो चित में प्यारो ।
रामप्रकाश है दास शरणागत, कृपा करो भव पार उतारो ।।२९।।
पाँच तत्व के तत्वावधान में, राच रह्यो अभिनय कर प्राणी ।

सम्पति कुल परिवार को देखत, भूल गयो हरि आप अजाणी ।।
भव में भटकत आयो है आदम, जावत आवत चार ही खाणी ।
रामप्रकाश को जान शरणागत, सर्व कटे भव आवन जाणी ।।३०।।
शरणगत रक्षक रु भक्त वत्सल प्रभु, आय खड़ो अब द्वार तुम्हारे ।
पाप पिटारी से पूरण हैं हम, रक्षा करो प्रभु आप हमारे ।।
और अनेक किये भव पार ही, भक्त रु दास को अनन्त उभारे ।
रामप्रकाश है चरण की ओट में, और कौन तकदीर सुधारे ।।३१।।
शारीरिक व्यवस्था प्रारब्ध के शिर, राम के अर्पित तन मन सारे ।
आस भरोस उनही पर निर्भर, जैसे करे स्वीकार हमारे ।।
विश्वपति विश्वम्भर समर्थ, वही प्रति पालक देव जुहारे ।
रामप्रकाश शरणागत होवत, कौने अब तकदीर बिगारे ।।३२।।
प्रारब्ध आप की शरण बने अरु, सतगूरू शरण में आयु अटेगी ।
हरि सन्तन को सँग रह्यो नित, आज खटी अब कैसे खटेगी ।।
मान सम्मान रह्यो अति भावुक, आप भरोसे से ठीक पटेगी ।
रामप्रकाश अब लाज रखो प्रभु, मेरी घटी तब तेरी घटेगी ।।३३।।
जनम से अद्य लो जैसो रह्यो प्रभु, लियो शरणागत कियो हित भारी ।
सतगूरू हरि महि श्रद्धा रही अरु, सतसँग सन्तन में रुचि सुधारी ।।
अब ही निभे हरि ऐसी सदा बन, मेरी घटी तो घट जाय तुम्हारी ।
रामप्रकाश सम्मान रह्यो तब, लाज तेरे सँग रहे हमारी ।।३४।।
हरि कृपा सब काम हुए सिद्ध, पुरुषार्थ हीन भयो तन हेरो ।
असहाय जान के दुष्टन कियो यह, काज रुकावट सब विधि हेरो ।।
हरि के काज में हानिकारक हो, हरि ही जाने शत्रुन को डेरो ।
रामप्रकाश हरि शरणागत है हम, हरि ही करेगो आप निबेरो ।।३५।।
दीनबन्धु हो विरद निभावत, हो भक्तन के सहायक भारे ।
भक्त अनेक पुकार करी जब, दारिद दोष रु दुःख निवारे ।।
भीड़ पड़ी अब दास पुकारत, शरण पड़ी अब कौन उभारे ।
रामप्रकाश शरणागत आयके, जाऊँ कहाँ चल कौन के द्वारे ।।३६।।
नवग्रह गोचर पितर भूत रु, तामसिक शक्तिन दियो है घेरो ।
अयाचित आय अचानक गुप्त में, दुष्कर्म दुष्टन डाल्यो है डेरो ।।
सब विधि से अनजानत हूँ अब, ऐसे कष्ट मे कौन है मेरो ।
रामप्रकाश शरणागत आय के, एक ही आस में आप निबेरो ।।३७।।
अमृतक पितर जीवित दुष्टन, ग्रह प्रभाविक कष्ट दे डेरो ।
अनैतिक तामस भौतिक ताप ने, निर्बल को आ दीयो है घेरो ।।
कौन सहाय करे अब आयके, आप बिना नही कोई है मेरो ।
रामप्रकाश यों हरि शरणागत, सोंप दियो सब काम निबेरो ।।३८।।
अप्राकृतिक आपदा भौतिक ताप रु, प्राकृतिक रोग ने आय के घेरो ।
सभी उपाय थके कर पाय हूँ, कौन उपाय रह्यो नही केरो ।।
आप को काम है आप सँभाल हूँ, कौन निहोर हूँ कौन है नेरो ।

रामप्रकाश हरि शरणागत, आप के काम में ना कछु मेरो ।।३९।।
प्राकृतिक तन रु मन जीवात्म, सर्वाधिक जो कुछ साथ अचारे ।
स्थूल रु शूक्ष्म कारण के सँग, अर्पित सब कुछ गुरू तुम्हारे ।।
जप तप नही भजन नही होवत, बल नही कोई पास हमारे ।
रामप्रकाश शरणापन्न केवल, हरि आप भवसागर तारे ।।४०।।
शरण प्रभु तेरी शरण नित हूँ, दीनदयाल तुम जानत सारी ।
वाणी ते कछु कहत बनत नाहिन, सब के अन्तर्यामी भारी ।।
आप सर्वोपरि सब के भीतर, मम हृदय के आप विहारी ।
रामप्रकाश शरणागत है यह, पार करो प्रभु नाव हमारी ।।४१।।
भव में भ्रमत आय परयो भव, सूझत नाहि भवसागर भारी ।
साधु के सँग ते जान परी कछु, आय गही प्रभु शरण तुम्हारी ।।
दुःखसागर से पार करो अब, और उपाय न लागत कारी ।
सतगुरू दीनदयाल कृपा कर, रामप्रकाश सुनो अरज हमारी ।।४२।।
कर्म रु धर्म की साधना सतसँग, करी नही कछु शुभ कमाई ।
ना अब होय रही कछु फिर, ना होवन की आश बनाई ।।
हरि गुरू की शरणागत होवत, जीवन उन्ही के समर्पण थाई ।
रामप्रकाश अब भलो बुरो सब, विरद उन्ही को लाजत जाई ।।४३।।
बाल अजान आयु के भीतर, शरण गही सतगुरू की आई ।
मात पिता गुरू भक्त भक्ति वश, कियो शरणागत भेंट चढाई ।।
नाही विद्या बल कल छल तप भी, जप विधि कछु नहि चतुराई ।
रामप्रकाश निश्चिन्त रह्यो नित, हरि के अर्पण तन मन भाई ।।४४।।
बाल अजान शरणागत निर्बल, आश्रम प्राँगण खेलत भाई ।
सतगुरू शरण रह्यो अति निर्भय, हरि मन्दिर की सेवा सफाई ।।
तरुण भयो तब तरण हुओ नही, जप तप साधन चित न भाई ।
रामप्रकाश अब वृद्धन माँहि हो, अशक्त भयो अब होवत नाई ।।४५।।
गुरू शब्द विश्वास धरयो इक, तन मन वाणी से मौन हो भाई ।
सतसँग सन्तन की साधत, सतगुरू चरण की ओट भलाई ।।
श्रवण मनन कियो द्रढ निश्चय, निदिध्यासन सहज से आई ।
रामप्रकाश के शरण भयो तब, रामप्रकाश भयो उर माई ।।४६।।
जहाँ समर्पण भाव श्रद्धा युत, वहाँ अन्तःकरण शुद्ध ही होवे ।
जितना समर्पण बढता जावत, जीवन सौम्यता सरलता बोवे ।।
शुद्धता निर्मल भाव बढे नित, कृपा नित परमात्मा जोवे ।
रामप्रकाश सतगुरू शरणागत, अनन्त जन्म के पाप को खोवे ।।४७।।
दीनदयाल समर्थ प्रभू उतम, हरदम तुम सब के रखवारे ।
खावत पीवत बोलत चालत, सोवत हैं हम शरण तुम्हारे ।।
विश्व के पालक रक्षक हो तुम, आप ही रक्षक नित्य हमारे ।
रामप्रकाश शरणागत है अब, मारो तारो तो हाथ सहारे ।।४८।।
हे हरि समर्थ हम शरणागत, तन मन अर्पित देह हमारी ।

पाँव धरूँ वह हो प्रदक्षिण, कर्म करूँ वह पूजा तुम्हारी ।।
वाक्य भनूँ सोई स्तुति होवत, आप रमे सब ठाँव मुरारी ।
रामप्रकाश की दृष्टी भई अब, श्रावण अँध सी दृष्टि विचारी ।।४९।।
हरि गुरू समर्थ प्रभु स्वामी, तुम ही अब भव पार करो ।
हम शरणागत पाँव परे सब, आगे के सब पाप हरो ।।
जैसी रखी आब तक लाज खरी, फिर भी लाज की लाज धरो ।
कोई और सहायक नाही अबे गुरू, रामप्रकाश है शरण परो ।।५०।।
कर्म अकर्म रु विकर्म किये बहु, जनम अनेक मे थी सृष्टि हमारी ।
काम निकाम लिये बहू जीवन, अज्ञान भरी हुई सृष्टि तुम्हारी ।।
भव मे नाचत जनम बीते कई, अबतो लाज रखो गिरिधारी ।
रामप्रकाश शरणागत आयो है, क्षमा करो सब करम की कारी ।।५१।।
दीन हूँ हीन हूँ करम को कीट हूँ, वेद रु सन्त से रह्यो अभिमानी ।
पूर्व पाप से भोगत त्रिस्त, लाख चौरासी भोगी चव खानी ।।
अब तो आय परो शरणागत तव, कृपा करो प्रभू निरवानी ।
रामप्रकाश की वेर दयानिधि, कैसे करी है आना रु कानी ।।५२।।
बात बनाय कही बहू भाँति न, शास्त्र सार कही बहु बानी ।
वेदान्त सिद्धान्त अनूप कथ्यो हम, वृति एक हुई अधिष्ठनी ।।
रोग आयो तन भीतर में यह, प्रारब्ध वश में स्तूति ठानी ।
रामप्रकाश यह टेर पुकारत, ईश उपासन नही बचकानी ।।५३।।
दुःख पीड़ित सँकट जूँझ रहा भय, त्राहिमाम महा भीड़ मचाई ।
शरणागत हूँ तव चरण की ओट में, पाहिमाम हूँ तेरी शरणाई ।।
सँरक्षण रक्षा योग क्षेम मय, रक्षिमाम प्रभु दास बचाई ।
आप बिना अब कौन है सामर्थ, रामप्रकाश अब कौन सहाई ।।५४।।
हूँ मति हीन रु अज्ञ भण्डार हूँ, नास्तिक वृति हूँ नामी धूतारो ।
बकवृति ध्यान रु निन्दक अघ में, बकवादी कुपोषण हारो ।।
अहार व्यवहार न जानत हूँ शुचि, रोम रोम अपराध पिटारो ।
रामप्रकाश उद्धार करो हरि, शरणागत रक्षक विरद तुम्हारो ।।५५।।
तन मन वाणी ते शरणागत होयके, प्रातः शायँ कर पाठ सुधारों ।
हरि नाम रटे रु पढे स्वछन्द ते, चित शुद्धि कर पाप प्रहारो ।।
सतगुरू सन्मुख सन्तन के ढिग, परम श्रद्धा मन उज्वल वारो ।
रामप्रकाश छन्द चार रटे भव, बन्ध कटे रु हटे भ्रम भारो ।।५६।।
कर्म रु धर्म को जानत ना हम, मन्त्र तन्त्र से अजान हूँ भाई ।
तन मन वाणी समर्पित पूरण, रक्षक सामर्थ हरि हित जोई ।।
बाल अजान मातृ वश वानर, बिल्ली सुत रक्षक होय भलोई ।
रामप्रकाश निर्भय हरि आश्रित, वही प्रतिपालक हमरे होई ।।५७।।
बाल बन्दर है मात भरोस पे, चिपक रहे चित छाती के सोई ।
ऐसे ही भक्त रहे प्रभु आश्रति, वही प्रतिपालक हरदम होई ।।
बिल्ली अपने सुत मुख से झेलत, आँच न लावत रक्षक जोई ।

रामप्रकाश यह भक्त है दो विधि, सब विधि रक्षक हरि स्वयँ तोई ।।५८।।
पथ प्रदर्शक उतम है सब, सतगुरू समर्थ सन्त हमारे ।
ज्ञान सुनावत भ्रम मिटावत, द्वेत अज्ञान को मूल विडारे ।।
सत उपदेश द्दढावत आतम, परम वेदान्त सिद्धान्त सुधारे ।
रायप्रकाश शरणागत हूँ नित, परम दयाल कृपाल उदारे ।।५९।।

।। प्रभु से विनय प्रार्थना।।

हे इष्टतम इष्टदेव हो पूरण, विश्वपति नाना रूप तुम्हारे ।
ऋषि मुनि हो सन्त रु सतगुरू, राम रमापति आप हमारे ।।
कष्ट मे आय परो प्रारब्ध वश, आप बिना अब कौन निवारे ।
रामप्रकाश शरणागत द्वार पे, और की और अब काहे निहारे ।।१।।
दीनबन्धु कृपाल दयानिधि, यह नाम हो किहि कारण धारे ।
अनिष्ट ग्रह अरि घेरि लियो तन, काम न आये यह नाम तुम्हारे ।।
दीन पुकार करे शरणागत, टेरत सूख गये कण्ठ सारे ।
रामप्रकाश पुकार करे यह, आप बिना अब कौन हमारे ।।२।।
गला पसार पुकार करूँ वह, कण्ठ नही है पास हमारे ।
मन हृदय समर्पित चरण में, वह तो है नित पास तुम्हारे ।।
रहा स्थूल शरीर सो भोगत, ग्रह चक्कर अब कौन निवारे ।
रामप्रकाश के रक्षक एक ही, आप बिना अब कौन निहारे ।।३।।
विश्व के पालक अरि जन घालक, विश्व विधान है पास तुम्हारे ।
चाहे करो भव पार भक्त को, चाहे तिन्हे भव बन्धन डारे ।।
कौन सुने फरियाद दास की, चरण की शरण के पड़ा सहारे ।
रामप्रकाश के इष्ट महाप्रभु, आप बिना अब कौन हमारे ।।४।।
जान अजान किये बहु पातक, क्षमा करो प्रभु दीन विचारी ।
विरद रखुवार है प्रभुत्व प्रबल, कौन से कर्म मे चूक हमारी ।।
गुप्त भये या लुप्त भये बल, घट घटवासी है शक्ति तुम्हारी ।
रामप्रकाश की वेर दयानिधि, क्यों अपनी वह टेव बिसारी ।।५।।
विश्वपति हो विश्वम्भर पूरण, धन्वन्तरी देव है पास तुम्हारे ।
आज्ञावर्ती सब देव निरन्तर, मिटते क्यों नही कष्ट हमारे ।।
कौन अपराध अज्ञात हुओ वह, टरे नही जो आप के टारे ।
रामप्रकाश की वेर दयानिधि, क्यों अपने निज नाम बिसारे ।।६।।
वैराट स्वरूप अति है सुन्दर, सहस्त्र आँख रु कान तुम्हारे ।
सहस भुजा किहि काज में आवत, आँख रु कान को बन्द किये सारे ।।
नीन्द लगी किन आलस्य के वश, भूल रहे निज वन्दन हमारे ।
रामप्रकाश की बेर मे देर करी, रोग रु विपति निवारण हारे ।।७।।
द्रोपदी की टेर सुनी तब धायहु, गज राज की बेर मे पैदल धायो ।
ध्रूव प्रहलाद की लाज रखी तब, बाल के हठ को खूब निभायो ।।
नरसी भक्त की टेक रखी घर, और अनन्त भक्तन के आयो ।
रामप्रकाश की बेर दयानिधि, देर करी या आलस लायो ।।८।।

लक्ष्मीकान्त पुकार सुनो मम, पत्नी के भ्रात है पास तुम्हारे।
औषधीय उपाय उपचारक पूरण, धन्वन्तरि देव निरमाणक भारे।।
आज्ञा के वश मे देव समूह जु, देर भई किस दोष हमारे।
रामप्रकाश पुकार थक्यो अब, आप बिना कहो कौन सुधारे।।९।।
हो गुण धाम रु मै गुण हीन हूँ, दीनबन्धु मै दीन तुम्हारो।
पापी उद्धारक मै पाप पिटार हूँ, शरणागत वत्सल दास उभारो।।
कौन अपराध भयो या दीन ते, कियो प्रकोप अतिशय भारो।
रामप्रकाश यों त्राहि करे अब, आप बिना नही कोई हमारो।।१०।।
कामी कुटिल रु अवगुण धाम भी, आय पड़्यो अब तेरे ही द्वारे।
जन्म जन्मान्तर पापी हूँ पूरण, हे हरि विरद निभावण हारे।।
पापी उद्धारक भक्त के रक्षक, दीनदयाल हो एक हमारे।
रामप्रकाश पुकार करे हरि, आप ही कष्ट निवारण वारे।।११।।
दीनबन्धु कृपाल दयानिधि, विरद के रक्षक नाम तुम्हारो।
दया के सागर नाम धरे फिर, दीनदयाल भयो अति न्यारो।।
मोहि की बेर में देर करी तब, कुग्रह रोग सतावन वारो।
रामप्रकाश की लाज रखो अब, दूर करो सब रोग हमारो।।१२।।
दीन उद्धारक, भक्त के पालक, शरणागत रक्षक नाम है तेरो।
हो विरदपाल अनाथ के नाथ हो, आप बिना अब कौन है मेरो।।
कुग्रह भूत पिशाच निशाचर, रोग रु दुष्ट अनेक ने घेरो।
विकट समय पुकार करूँ अब, रामप्रकाश है बालक चेरो।।१३।।
कर्म को कीट रु जप तप हीन हूँ, तामस देह विकार भण्डारो।
अवगुण धाम निकाम रु नास्तिक, जैसो हूँ तैसो दास तुम्हारो।।
महा अपराध किये सब कुकर्म, आप बिना अब कौन हमारो।
रामप्रकाश के आप ही पालक, आप बिना नही और सहारो।।१४।।
कामी कुटिल रु अवगुण धाम भी, आय पड़्यो अब तेरे ही द्वारे।
जन्म जन्मान्तर पापी हूँ पूरण, हे हरि विरद निभावण हारे।।
पापी उद्धारक भक्त के रक्षक, दीनदयाल हो एक हमारे।
रामप्रकाश पुकार करे हरि, आप ही कष्ट निवारण वारे।।१५।।
डोकरा डोकरी न छोकरा छोकरी है, नौकर रु नौकरी कछू नही मेरे।
सेठ शाहू नही ब्याज बटा कछु, इक राम ही सब कुछ दूर रु नेरे।।
और उपाय सो थाक रहे सब, एक सहायक इष्ठ को हेरे।
रामप्रकाश ने शरण गही अब, सब कुछ समर्थ हाथ है तेरे।।१६।।
अवगुण धाम हूँ अपराध को सागर, कुटिल कुपात्र कपूत धूतारो।
हो गुण सागर दीन दयाल हो, काहो दीन रु दास बिसारो।।
टेर सुनी भक्तन हितकारक, आज सुनो कह दास तुम्हारो।
रामप्रकाश की बेर दयानिधि, नींद लगी किन आलस भारो।।१७।।
कौन पुकार सुने करूणा कर, नाम सुन्यो तब अरज गुजारी।
आपनो नाम दयानिधि व्यर्थ, क्यों नही मानत अरज हमारी।।

विरद के रक्षक योंही बने प्रभु, आश लगी अब एक तुम्हारी।
रामप्रकाश की पीड़ हरो अब, आप के नाम लजावन हारी।।१८।।
नियम विरुद्ध चला यह जीवन, चूक भयी कछु बहुत हमारी।
नींद तजी बहु बैठक में निशि, जनहित काज मे महिमा तुम्हारी।।
क्षमादान करो प्रभू मोहि को, प्रारब्ध कर्म सुधारण बारी।
रामप्रकाश पुकार करे यह, रोग हरो कर देह सुधारी।।१९।।
प्रहलाद सी भक्ति रु ध्रूव सो ध्यान ही, शिबरी से बेर न पास हमारे।
पुष्प नहीं गजराज समान ही, साधन और रिझावन हारे।।
विदुरानी को कदली रु सुदामा के तन्दुल, जिन से दोड़ के आवन हारे।
रामप्रकाश को कण्ठ भी नाहिन, जो आवाज जा पास तुम्हारे।।२०।।
नरसी भक्त की ताल नही कर, मीराँ कोसो सँगीत न मेरे।
शिबरी के बैर रु मित्र सखापन, सुदामा के तन्दुल हेरे।।
साधन ध्यान उपाय कछु नही, प्रेम रु नियम नही कुछ नेरे।
रामप्रकाश आ शरण पड्यो अब, विरद निभावण काम है तेरे।।२१।।
धूत कपूत कुपातर हों हम, कामी कुचालक पूत तुम्हारो।
पाप ते पूरण ताप ते तृसित, दम्भ पाखण्ड ते भर्यो पिटारो।।
जैसो हूँ तैसो तेरी शरण में, अर्पित तन मन सर्वस्व हमारो।
रामप्रकाश उद्धार करो नही, लाजहि सब कुछ विरद तुम्हारो।।२२।।
दुर्व्यशन विकार समूह भरे उर, कल्मष प्रमाद रु भ्रम अपारो।
अज्ञान तम तमीचर पूरण, रसास्वाद रु काषाय भण्डारो।।
वृत्ति लय दोष अनन्त अपार हूँ, जन्मान्तर से भव भ्रमण हारो।
रामप्रकाश उद्धार करो नही, लाजहि भक्त कुल विरद तुम्हारो।।२३।।
आरत कष्ट मे दीन दुःखी हिय, चेतनता शुद्ध मूल विसारी।
इष्ट पुकार करी बहूमानस, सुनी नही कछु अरज हमारी।।
आप बिना अब कौन रह्यै जग, भूल गये क्या भक्त की बारी।
रामप्रकाश अब विपत निवारहूँ, अज्ञता वश रही भूल सुधारी।।२४।।
जप तप नियम कियो नही साधन, योग न यज्ञ न ज्ञान आचारा।
भक्ति न शक्ति नही कछु युक्ति है, तीर्थ व्रत न शम दम धारा।।
कुटिल विचार बहु औगुण भण्डार हूँ, भव पार होने का नही आधारा।
रामप्रकाश शरण सामर्थ की, मारो तारो मैं दास तुम्हारा।।२५।।
कूर कपूत हूँ पामर कायर, विषयी व्यशन दोष भण्डारी।
अवगुण धाम रु क्रोधी मोहित, भवसागर को भय लागत भारी।।
दीनदयाल रू गुणसागर हो गुरू, आयो हूँ अब शरण तुम्हारी।
रामप्रकाश क्षमा करो समर्थ, जाण अजाण हुई भूल हमारी।।२६।।
कायर कूर कपूत कुपातर, मै शरणागत ना भक्ति करी को।
विरद निभावण विरद पाल सुन, कहूँ सदा निज बात खरी को।।
जैसो भी हूँ सो आप के लाज पे, लोक कहै यह दास हरी को।
रामप्रकाश निश्चिंत सदा रह, तारणहार है एक श्री को।।२७।।

।। गुरुदेव से प्रार्थना (अर्ज) ।।

दीन अनाथ कुटिल कुपातर, जैसे है सो हम बालक तेरे ।
शरणागत मे आय गयो तब, उर प्रेरक नित आप हो मेरे ।।
और को टेरत लाज आवे उर, राम गुरू बिन नही काहू ही हेरे ।
रामप्रकाश भव रोग बचाव हूँ, लोग हँसाई होवत हेरे ।।१।।
हूँ गुणचोर रु धूर्त महा अति, देव लगी अब आस तुम्हारी ।
सब अपराध क्षमा करो प्रभु, भक्त की टेर को कैसे बिसारी ।।
अरज पुकारत हार गया अब, भूल गये कहा आलस भारी ।
रामप्रकाश शरणागत आरत, अरज सुनो गुरूदेव हमारी ।।२।।
नाहि विद्या बल, यज्ञ न तप है, दान शक्ति नही तीर्थ नहायो ।
ना शास्त्रज्ञ विद्वता भाव है, ना अपनो कुछ और कमायो ।।
कुछ नही मम और पुरुषार्थ, केवल समर्थ हरि शरण मे आयो ।
रामप्रकाश है गुरू शरणागत, मन विश्वास यही ठहरायो ।।३।।
ना हमरे कुछ न्यात न जात है, कुछ ना पहले था ना अब है कोई ।
ना कुछ अब ही होवन है अरु, होवनहार भी भाव ना होई ।।
केवल एक हरि गुरु शरण में, तन मन प्राण है सर्वस वोई ।
रामप्रकाश जब भयो शरणागत, मेरो है रक्षक एक सबोई ।।४।।
ना विद्या बल ना बाहुबल है, ना हमरे कुल गोत न जाती ।
जनबल धनबल और कोई भी, बली छली नही सज्जन बाती ।।
जपबल तपबल राज सताबल, ना कोई हमरे सँग सँगाती ।
रामप्रकाश के एक ही बल है, समर्थ हरि गुरू बल सुहाती ।।५।।
अरज करत बड़ी देर भयी अब, द्वार खड़ो यह दास पुकारे ।
क्या अरजी करन मे देर भयी, अथवा भीड़ लगी बहु कागद भारे ।।
अथवा अनपढ के हाथ लगी किमि, ईर्षा वश किहि कागद फारे ।
सतगुरू उतमराम सुनो यह, रामप्रकाश यों टेर उचारे ।।६।।
हे गुरूदेव बड़े गुरू दरबार में, सुनने में क्यों देर है लाई ।
क्या अनपढ के हाथ लगी किमि, अनपढ शिष्य के हाथ मे आई ।।
अथवा अरजिन की बहुतायत में, दबी रही अब कर्म के काई ।
सतगुरू उतम राम सुनो यह, रामप्रकाश यों टेर लगाई ।।७।।
सुत वित नारि चाह नही कछु, ऋद्धि सिद्धि नही आस हमारे ।
चाह नही कछु लोक प्रशिद्धि की, आतम कल्याण को ज्ञान निहारे ।।
चाह नही कोई भौतिक और की, साधन साध्य नही पास विचारे ।
रामप्रकाश की चाह यही इक, खड़ा रहूँ नित द्वार तुम्हारे ।।८।।
विनयशील विवेक बिना हम, सदाचार सम्पन्न ना हम सारे ।
आप हो आनन्द वैभव पूरण, सबही है गुरू द्वार तुम्हारे ।।
सतगुरू उतमराम हो तुम, सब के मन को जाणण हारे ।
रामप्रकाश अरदास उचारत, चरण की शरण मे आय जुहारे ।।९।।
हम सन्तन के दास सदावृत, सन्त विराजित शीश हमारे ।

हृदय मे सतगुरू विराजत, औरन से नही काम सँवारे ।।
पाखण्डी दम्भी चरण तले रख, कँटक चूर तिंहिं शिर डारे ।
रामप्रकाश नित शीश झुकावत, तन मन गुरू चरण पे वारे ।।१०।।
हे गुरुदेव दया करो उतम, उतमराम है नाम तुम्हारे ।
गुरू परम्परा उतम है नित, अचलराम गुरूदेव सु धारें ।।
हमरे आप ही देव सकल शिर, नमन करू पद वारम्वारे ।
रामप्रकाश है चरण की शरण मे, दूर करो भव रोग हमारे ।।११।।
भौतिक वित पदार्थ सो सब, गुरू सम्पति जन सेवा मे सारे ।
तन मन प्राण सो सब है अर्पित, चरण शरण मे सर्व तुम्हारे ।।
जासे रीझ सको तुम सामर्थ, और कछू नही पास हमारे ।
रामप्रकाश पुकारत है रव, सो शरण मे है पास तिहारे ।।१२।।
चरणाम्बुज सेवा रु नित्य के दर्शन, दीजे सतगुरू दीनदयाला ।
साधु की सतसँग भाव सन्तन से, नित्य हो सतगुरू परम कृपाला ।।
रुचि कथामृत अद्वय ज्ञान में, इष्ट से प्रेम रहे नित आला ।
रामप्रकाश उतम गुरू समर्थ, भव बन्धन का काटो जाला ।।१३।।
हे गुरूदेव सदा परिपूरण, ऋद्धि सिद्धि सब द्वार तुम्हारे ।
सन्त के तप रु तेज गुरू बल, सदा भण्डार भरपूर हमारे ।।
हरि कृपा वश सन्त दया धर, कारज नित ही वही सुधारे ।
रामप्रकाश नमो नित उतम, सतगुरू उतमराम जुहारे ।।१४।।
उतमराम जी सतगुरू देव हो, उतम ध्यान रु ज्ञान तुम्हारो ।
उतम आश्रम उतम धाम है, उतम गुरू को इष्ट विचारों ।।
उतम सतगुरू अचलराम है, उतम पन्थ दिखावन हारो ।
रामप्रकाश है उतम शरणागत, भव को रोग नशावन वारो ।।१५।।
कृतघ्नी रु पामर पापी हूँ गुरू, आज्ञा हत्यारी ये दोष मेरे ।
हूँ गुणचोर रु नमक हराम भी, आय खड़ा अब शरण में तेरे ।।
दीन अनाथ सनाथ करो गुरू, काट देहु सब भव के फेरे ।
रामप्रकाश उतम गुरू पावत, और सिद्धान्त कछु नही हेरे ।।१६।।
पामर हुँ बुदि हीन महा सठ, पाप रु ताप सँताप हैं भारी ।
आप दयाल कृपाल महाबली, राघव रचना सुँदर सारी ।।
राघव कविता कविता राघव, कविता राघव पर बलिहारी ।
रामप्रकाश हैं शरण आपकी, रक्षा करो गुरु कृपाधारी ।।१७।।
कृतध्नी रु पापी हुँ पामर, अवगुण दोष अनन्त हैं मेरे ।
हुँ गुणचोर रु नमक हरामी, आय खड़ा गुरु शरण मे तेरे ।।
दीन अनाथ सनाथ करो अब, काट देवो सभ भव के फेरे ।
रामप्रकाश उतम गुरु केवल, इष्ट आराध्य एक ही हेरे ।।१८।।
हे प्रभु सब को देनहार तुम, मै क्या तुझ को भेंट चढाऊँ ।
सब को सुगन्ध देने वाले को, कैसा तूझ को फूल सुँघाऊँ।।

जल थल पवन अग्नि सब तेरे, कैसा तुझ को दीप दिखाऊँ।
रामप्रकाश तू व्यापक है विश्व में, मैं केवल तुझ को शीश नमाऊँ।।१९।।
दीनदयाल हो विरद उभारण, आप परम पुरूष अवतारी।
भवसागर मे भ्रमत पामर, अब आयो में शरण तुम्हारी।।
राघव कविता कविता राघव, अरस परस पर है बलिहारी।
रामप्रकाश शरण में वाचक, रक्षा करो गुरू आप हमारी।।२०।।
भवसागर को भोगत आया हूँ, कयी युगों का जीव अनारी।
गति मति थी भ्रमित अज्ञानी रु, दीन हीनता में शुद्धि विसारी।।
पाप ताप से पीड़ित होकर, अब आया हूँ शरण तुम्हारी।
रामप्रकाश गुरूदेव सुनो अब, आरत अर्जी यही हमारी।।२१।।
दो कर जोड के शीश नमाऊँ, सुनो प्रभु अरदास हमारी।
मुख खुले तब दर्शन हो तव, मुँह से नाम कीर्तन हो प्यारी।।
हाथ खुले तेरी सेवा खातिर, पाँव चले सतसँग बलिहारी।
कविता रामप्रकाश की राघव, हरदम महिमा गाय तुम्हारी।।२२।।
शरणागत की लाज रखो प्रभु, भवसागर में भटक्यो भारी।
पाप अनेक किये जग भीतर, आप हो समर्थ ताप विडारी।।
कुग्रह दुष्टन घेर लियो अब, त्राहिमाम रक्षक की बलिहारी।
कविता रामप्रकाश की राघव, अरज सुनो गुरू आप हमारी।।२३।।
साधन कर्म विद्या नही हुनर, नही उद्योग कछु पास मे भारे।
बोध प्रबोधन सम्पति सामर्थ, मीत रु भाग्य नही बल सारे।।
धन बाहु परिजन बल नाहि न, केवल सतगुरू साथ हमारे।
फिकर बिना नित रामप्रकाश है, शरणागत हूँ सतगुरू के द्वारे।।२४।।
मूढ अज्ञान अँधेर भरयो उर, और नही कछु है रखुवारी।
महिमा जान सकूँ नही भगवन, गति मति अति तुच्छ हमारी।।
भक्त अनन्त किये भव पार ही, भव भय में सब आश बिसारी।
रामप्रकाश शरणागत है गुरू, मारो तारो अब मौज तुम्हारी।।२५।।
इष्ट गुरू परमेश्वर माधव, सत चित आनन्द कन्द विहारी।
अशुद्ध अबुद्ध अशुचि को मै घर, कृतघ्नी गुणचोर लबारी।।
शरण पड़यो अब द्वार पे आय के, अरज सुणो अब आप हमारी।
रामप्रकाश उद्धार करो भव, सागर पार करो उपकारी।।२६।।
भक्त भय हारक विरद सँभारक, सतगुरू समर्थ देव हमारे।
भव भय हारक कष्ट निवारक, क्या गुण गान सो करहूँ तुम्हारे।।
शरण में आय पड़यो गुण सागर, महिमा श्रवण कर आयो हूँ द्वारे।
रामप्रकाश प्रणाम करे गुरू, हरि हर भी गुण गावत हारे।।२७।।
भक्त जन उद्धार किये बहु, कूर शूर नर नार करी को।
पापी रु सँतापी अधमी बहु, शरण गये वह भव तरी को।।

मोहि को भरोसो पूरो खरो, राम गुरूवर एक हरी को।
रामप्रकाश शरणागत भयो जब, भय नही अब कोई अरी को ।।२८।।

।। श्री गुरु महिमा अंग ।।

सच्चिदानन्द शुद्ध ब्रह्म अनादि हूँ, अस्ति भाति प्रिय रूप अपारो।
प्राकृतिक नियन्ता ईश्वर ने यह, भौतिक रूप में वपु पसारो ।।
ईश्वर स्वयं सतगुरू के रूपक, तारण कारण स्वयं देह धारो।
रामप्रकाश ऐसे गुरू सामर्थ, ताहि ते वन्दन योग उचारो ।।१।।
ब्रह्मा के रूपक सतगुरु पूरण, सात्विक भक्ति की सृष्टी रचावे।
विष्णु के रूप मे सतगुरू आवत, भक्ति के पोषक भाव बढावे ।।
शिव के रूप मे भक्ति विरोधक, दुर्गुण दोष को दूर भगावे।
रामप्रकाश के सतगुरू उतम, परब्रह्म त्रिगुण रूप लखावे ।।२।।
ब्रह्मवेता श्री ब्रह्मनिष्ठ सतगूरू, जो उदार नैष्ठिक ब्रह्मचारी।
त्यागी अनुरागी कृपासिन्धु वह, दयाल नित शिष्य के हितकारी ।।
व्यवहारिक परमार्थ साधक, ज्ञान मूर्ति रु भवभय हारी ।
रामप्रकाश उतम गुरू भावत, वन्दन करते हूँ बलिहारी ।।३।।
हे सतगूरू श्याम मनोहर मूर्ति, परम कृपाल दयालु स्वामी।
ब्रह्मवेता ब्रह्मनिष्ठ अद्वय पद, अभय दाता सत अन्तर्यामी ।।
भव भय टारन ज्ञान प्रदायक, साधन सहित निर्भय पदगामी।
रामप्रकाश ऐसे सतगूरू समर्थ को, वारम्वार नमाम नमामी ।।४।।
सतगूरू आदि अनादि पूरण, ज्ञानमूर्ति बोध स्वरूपा।
सत चित आनन्द केवल आपहि, महत्व पूरण भूपन भूपा ।।
समित्पाणी हो आवत है जन, ताहि लखावत ब्रह्म अनूपा।
रामप्रकाश भव पार पठावत, ब्रह्म आपही स्वयँ अरूपा ।।५।।
सतगुरु ज्ञान स्वरूप परमार्थ, आनन्द कन्द अनूप अपारा।
हरि हर गणपति शारद सूरज, पाँच स्वरूप में एक आधारा ।।
ध्यान का मूल रु मोक्ष प्रसाद है, मन्त्र महौषधि करे भवपारा।
रामप्रकाश साष्टांग दण्डवत, वारम्वार प्रणाम हमारा ।।६।।
वृक्ष के मूल में जल को सींचत, डाल पते फल फूल फुलावे।
वर्षा जलजा सिन्धु समावत, या विधि समझ यथार्थ आवे ।।
देव समूह के मूल स्वरूप में, सतगूरू स्वामी सरताज कहावे।
रामप्रकाश नमो गुरू वन्दन, सादर चरण में शीश नमावे ।।७।।
सत स्वरूप अकाल अरूप है, त्रिकाल अबाध इकसार रहावे।
अजान "गु" कार जो शिष्य है, ताहि को बोध सु "रु" अक्षर जनावे ।।
ज्ञान स्वरूप है सतगुरू सामर्थ, नित्य कल्याणक साधन लावे।
रामप्रकाश प्रणाम करे नित, सतगुरु को हरि ध्यान लगावे ।।८।।
गुरू शब्दाक्षर सर्गुण अर्थ मे, गु अज्ञान अन्धकार कहावे।
रू प्रकाशक ज्ञान रवि सम, शिष्य के ताप रु पाप भगावे ।।
गुरू शब्दाक्षर निर्गुण अर्थ में, गुप्त गुरू गुणातीत सदावे।

रामप्रकाश है रूपातीत गुरू, विरला जिज्ञासु भेद को पावे ।।९।।
सतगुरू स्वरूप लखे नही मानव, मुमुक्षू ही जानत भेद अपारा ।
गुरू स्थूल देह नही मानव, ईश्वर स्वरूप शब्द सत प्यारा ।।
हाड माँस मय गुरू नही किञ्चित, सच्चिदानन्द पर ब्रह्म उदारा ।
रामप्रकाश अमर नित पूरण, जानत छानत पावे भव पारा ।।१०।।
सतगुरु आवत जीव जगावत, शब्द सुनावत ध्यान को ध्यावे ।
ब्रह्म ज्ञान समझावत पावत, जन जिज्ञासु आनन्द लावे ।।
भवसागर से पार पठावत, जनम रु मरण का खेद मिटावे ।
रामप्रकाश नमो गुरु वन्दन, ताहि के चरण में शीश नमावे ।।११।।
सतगूरू परम परमात्म पूरण, सत चित आनन्द आप अपारा ।
निर्गुण से सर्गुण हो आवत, भूमि भार उतारन हारा ।।
नित्य नैमित्तिक रूप नाना कर, भक्त भक्ति जन के रखवारा ।
रामप्रकाश नमो पद वन्दन, उतम गुरू को वारम्वारा ।।१२।।
ब्रह्म रु सतगूरू तादात्म्य सम्बन्ध सु, आप ही ब्रह्म रु लखावन वारा ।
ज्ञान विज्ञान प्रबोधक पूरण, केवल निष्प्रह निःकर्म रहावत सारा ।।
भव से तारत जीव उभारत, आप हरि स्वयँ का अवतारा ।
रामप्रकाश सतगूरू है सामर्थ, तीन हूँ लोक को सिरजण हारा ।।१३।।
प्राथमिक शिक्षा स्तर से बढ कर, अन्ततोगत्वा ज्ञान स्तर को पावे ।
गुरू सतगूरू परम गुरू बिन, शिक्षा दीक्षा बिन ज्ञान न आवे ।।
याहि ते महातम है गुरूगम, ताहि की शरण में ज्ञान बढावे ।
रामप्रकाश गुरू पद महिमन्त्र, याही ते चरण में शीश नमावे ।।१४।।
यन्त्र मन्त्र तन्त्र सिद्ध साधक, ऋषि मुनि अवतार जो सारे ।
सतगूरू परगुरु आद्यचार्य गण, जो सुख शान्ति बढावन हारे ।।
सँकट मोचन विपति निवारक, जो है भव सागर तारण वारे ।
रामप्रकाश करे तिंहिं वन्दन, राम स्वरूप मे इष्ट हमारे ।।१५।।
ज्ञान विज्ञान के दायक है वर, सतगुरू ज्ञान रु ध्यान बतावे ।
जीव रु ईश माया ब्रह्म निर्णय, भिन भिन अर्थ के भेद सिखावे ।।
वाच्यार्थ त्याग लक्ष्यार्थ धारक, ब्रह्म निष्ठा अनुभव विधि पावे ।
रामप्रकाश प्रणाम करे शत, ज्ञानी गुरू पद शीश नमावे ।।१६।।
सतगुरु आप ही परम परमेश्वर, निर्गुण चेतन व्यापक न्यारे ।
ब्रह्मज्ञानी के प्राकृतिक कर्म से, योगमाया वश आवत सारे ।।
भक्त हितार्थ भ्यानक रोचक, परम यथार्थ वचन उचारे ।
रामप्रकाश श्री ज्ञान जहाज से, भवसागर से पार उतारे ।।१७।।
गुरू कृपा बिन मोक्ष न होवत, मन मुखी चाहै ढोल बजावे ।
गुरू गीता प्रमाण बतावत, मन मुखि शास्त्र ज्ञान बतावे ।।
गुरु निन्दक सो नर्क सिद्धावत, पूण्य कर्म कोई काम न आवे ।
रामप्रकाश पूण्य फल भोगत, नारकीय योनि प्रयोजन पावे ।।१८।।
कवि सन्त जन मुनि ऋषिगण, श्री आचार्य गुरूवर सारे ।

परम पुरुषार्थ साधक वृन्द जो, नित्य अद्वय सिद्धान्त विचारे।।
कष्ट साध्य रु गोप्य रहस्य जिन, जिज्ञासु हितार्थ बोध सँभारे।
रामप्रकाश अष्टांग युक्ति युत, वारम्वार प्रणाम हमारे।।१९।।
जग मे आवत जीव जगावत, ज्ञान सुनावत सात्विक सारा।
भ्रम मिटावत भेद हटावत, ब्रह्मनिष्ठ है गुरू हमारा।।
ब्रह्म स्वरूप सो ब्रह्म लखावत, यथार्थ ज्ञान बतावन वारा।
रामप्रकाश नमो पद वन्दन, शीश नमावत वारम्वारा।।२०।।
हे गुरुदेव हो सत चित आनन्द, जिज्ञासु हित भक्ति वश होई।
सर्गुण रूप में श्रेष्ठ मानव हो, भव तारक उपदेशक कोई।।
अनुभव वेद विधि से भाषत, जीवन कल्याण वाही ते जोई।
रामप्रकाश नमो पद वन्दन, सन्त हरि समता मय होई।।२१।।
हे सतगूरू परब्रह्म स्वरूप हो, भव से पार उतारन वारा।
दे उपदेश परमार्थ उतम, पाखण्ड दूर भगावन हारा।।
भ्यानक रोचक और यथार्थ, जिज्ञासु जीव जगावत सारा।
रामप्रकाश तन वाचक मानस, ज्ञानी गुरू को प्रणाम हमारा।।२२।।
ब्रह्मचारी गुरू ज्ञान प्रचारक, भेद प्रहारत भव भय हारी।
यथार्थ का उपदेश सुनावत, पाखण्ड दूर विडारत भारी।।
देव न दूत न भैरव भूत न, व्यर्थ उपाधि छुड़ावत सारी।
रामप्रकाश नमो करे दण्डवत, ऐसे सन्त की मैं बलिहारी।।२३।।
सतगुरु का सब ही गुण गावत, देव रु दानव मानव सारे।
दशनामी गिरिपुरी वन आदिक, वैष्णव नाथ जो भेष को धारे।।
पारसी मुस्लिम सिख ईसाई, यहूदी बोध परम्परा वारे।
रामप्रकाश नही माने मूरख, नीति रीति बिन शिक्षा अनारे।।२४।।
गुरु महिमा बहु गाय थके सब, ग्रन्थ रु पन्थ सन्त जन भारा।
वेद पुराण उपनिषद आदि, सगुणोपासक जो अवतारा।।
अगम अगाध वे निर्गुण सर्गुण, सृष्टि सँचालक वे शक्ति पसारा।
रामप्रकाश कहै सुर नर असुर, गुण गावत है जग में सारा।।२५।।
कामादिक दन्त समान बहुत से, घेरी गयी जिमि जीभ विचारी।
रक्षक जीभ सदा जन जग की, साँसारिक दन्त समान बिगारी।।
वैद्य है सतगुरू सभी उखारत, भ्रम अज्ञान को मूल विडारी।
रामप्रकाश जब दन्त गये तब, पावत जीव साम्राज्य भारी।।२६।।
भवसागर अति गहर गँभीर है, बाहु बलादिक काम ना आवे।
साधक भक्त की जीर्ण शीर्ण, नाव अटक कर बीच डुबावे।।
सतगुरु नाविक ज्ञान जहाज है, सामर्थ तन मन भेंट चढावे।
रामप्रकाश आप को खोवत, आप तरे पुनि और तरावे।।२७।।
सतगुरु ज्ञान रु ब्रह्म स्वरूप है, सत चित आनन्द निर्गुण वारा।
सो प्राकृतिक योगमाया वशि, भक्तों हित सर्गुण देह को धारा।।
पामर विषयी उपदेशत नित ही, परम जिज्ञासु को ज्ञान विचारा।

रामप्रकाश है साधन समर्थक, मुक्त स्वरूप हो मुक्ति मँझारा ।।२८।।
शास्त्र बिन बोध रु नीति बिन जीवन, सतगुरु बिना घन ज्ञान सुनावे।
रति रहस्य पढे बिन गृहस्थ रु, छन्द शास्त्र बिनु छन्दन रचावे।।
साधन बिना ब्रह्मज्ञान शून्यवत, पुरुषार्थ बिन तिमि पुरुष कहावे।
रामप्रकाश यह भूमि खड़े जिमि, शशि ग्रहण शून्य में हाथ बढावे ।।२९।।
गुरु मिले तब गुण सिखावत, भव के काम बनावन हारे।
सतगुरु मिले सत शिक्षा दे कर, भव से पार उतारन वारे ।।
परम गुरु धन भाग्य से पावत, अत्युत्तम शिष्य मिले वर न्यारे।
रामप्रकाश गुरु शरण में जावत, मानवता फल पा प्यारे ।।३०।।
जो जन ज्ञान के क्षेत्र का धारक, प्रथम अपने आचरण लावे।
व्यवहारिक ज्ञान सुधार करे, जीवन को निष्कलँक बनावे ।।
परमार्थिक जीवन की निष्ठा परिपक्व, यथार्थ ज्ञान हृदय बिच तावे।
रामप्रकाश योग्य हो सतगुरु, लोक परलोक में पार लँघावे ।।३१।।
सतगूरू ज्ञान की मूर्ति है नित, बोध स्वरूप है देव हमारे।
आनन्द सूरत मोहनी मूरत, भक्तन के सरताज दुलारे ।।
सत चित आनन्द केवल अनूपम, इन्द्रीयजीत रु ब्रह्म विचारे।
रामप्रकाश ऐसे गुरू वन्दन, उतम गुरू गुण गावत हारे ।।३२।।
सतगूरू ज्ञान नदीवत निर्मल, ध्यान विज्ञान की धार सदाई।
पावन जल सुहावत सादर, श्रवण द्वार ते नित्य पिलाई ।।
तन मन निर्मल होवत है तिन, पाप रु ताप सभी धुल जाई।
रामप्रकाश ब्रह्मवेता गुरु सँग, नित्य करो सद्बोध बढाई ।।३३।।
जिस घर में था वास हमारा, वह घर भूल भुलाये थे।
सतगूरू ने पहिचान करवाई, अगम चेतन अँश आये थे ।।
अब हम उस देश में वास किया, जो सतगूरू साथ में लाये थे।
रामप्रकाश है उसी देश में, ऋषि मुनी जहाँ समाये थे ।।३४।।
हे प्रभू अन्त समय हो रक्षक, आप को नाम हो मुख हमारे।
हृदय में द्रढब्रह्म को निश्चय, वासना कोई ना हो चित चितारे ।।
द्रष्टि गत दर्शन हरि गुरू हाजिर, अन्तस्थ मोह न कोह प्रजारे।
रामप्रकाश हरि गुरू सामर्थ, अर्ज सुने अँत आय सम्भारे ।।३५।।
हरिहर गणपति श्री गणनायक, रवि शक्ति गुरू देव हमारे।
समर्थ शरण गही जब पूरण, तन मन धन से चरण पखारे ।।
कहा करे यमदूत से दानव, समर्थ है नित साथ सहारे।
रामप्रकाश नमो कर वन्दन, निर्बल के बल साथ तुम्हारे ।।३६।।
विपति काल में एक ही रक्षक, राम ही सतगूरू देव हमारे।
भैरव भूत रु नौ ग्रह गोचर, मानव दानव रूप विचारे ।।
विघ्न उत्पात अनेक आये तब, जीवन रहे सत इष्ठ सहारे।
रामप्रकाश जो प्रारब्ध लिखा वह, कौन? कहाँ? कब? मेटन हारे ।।३७।।
श्रेष्ठ मानव अधिकारी का हृदय, उर्वरक भूमि के सम दरसावे।

सतगूरू वाणी का बीज पड़त ही, सद् आचरण की फसल उगावे ।।
ज्ञान मय सृष्टि उत्पन्न कर सतगूरू, ब्रह्मानन्द के रूप समावे ।
रामप्रकाश सतगूरू की महिमा, शेष गणेश पार ना पावे ।।३८।।
दिशा निर्देश करे नित सतगुरु, आदेश लीलावृत माध्यम सारे ।
कभी दिव्य अध्यात्मिक वृति कर, अनुभूति माध्यम बोध पसारे ।।
सतगुरू पलपल में शिष्य सँभालत, सतगुरु सानिध्य प्रेरक कारे ।
रामप्रकाश वे ज्ञान द्रष्टि दे, भवसागर से पार उतारे ।।३९।।
सत्यापित वाक्य अनुभव कृत भाषित, सतगुरु प्रपँच मुक्त नित न्यारे ।
भ्रम से बन्धे गुरू नही होवत, अँध विश्वास मिटावन हारे ।।
अशिष्य भी लाभ उठावत, श्रद्धा सहित विश्वास को धारे ।
रामप्रकाश दिव्य अनुभूति देकर, प्रेरक मार्ग सदा सुधारे ।।४०।।
सतगुरू व्यक्ति नही वह तत्व निरञ्जन, गुरू शक्ति रु भाव हमारे ।
देह के व्यक्ति नही वह व्यक्तित्व, सतगुरू श्रद्धा समर्पण प्यारे ।।
द्रष्टि जिज्ञासु की देखत जैसे ही, तैसो ही रूप स्वरूप को धारे ।
रामप्रकाश प्रार्थना रु भाग्य से, यथावृति मनोभाव सुधारे ।।४१।।
युक्ति बिना यज्ञ योग न जप तप हो, साधन भेद ना सिद्धि को पावे ।
भक्ति बिना नही भौतिक भोग ही, व्यवहार परमार्थ सिद्ध न थावे ।।
मुक्ति की गम सो चर्चित है पर, पाँच है भेद मे षष्ठम गावे ।
रामप्रकाश बिना सतगुरू गम के, प्रारब्ध करणी के हाथ न आवे ।।४२।।
भव की धार बह्यो जन्मान्तर, गुरू कृपा बिन युग योंही बहेगी ।
सतगुरू महर बने तब सार्थक, भव की धार ना कष्ट दहेगी ।।
गुरु कृपाल की दृष्टि परे जब, चित वृति नही दाह सहेगी ।
कविता रामप्रकाश की केवल, गुरू कृपा से ही लाज रहेगी ।।४३।।
सिन्धु अथाह है जल भरा यह, गुरू गुण से भरपूर कहावे ।
दोनों अथाह अपार भरे वह, गुण स्वभाव है अलग बतावे ।।
गुरू गुण डूबत पार करे भव, सिन्धु परे जल मांहि डुबावे ।
रामप्रकाश उतम गुरू सर्वोपरि, ताहि की शरण सो पार लँघावे ।।४४।।
कोई गणेश रु विष्णु मनावत, कोईयक शिव रु शक्ति मनावे ।
भैरव पितर कोई पूजावत, कोई गया रु गोमती नहावे ।।
नाना नाम से देवी रु देवता, कोई अपना इष्ठ बतावे ।
रामप्रकाश के एक ही इष्ट है, उतम ज्ञानी गुरुदेव सुहावे ।।४५।।
सतगुरू सन्त रु इष्ट को ध्यावत, एक जगह जो शीश नमावे ।
ताही नमे सब लोक व्यक्ति गण, परम धर्म यह कर्म बतावे ।।
सन्त शास्त्र सब स्पष्ट लखावत, नियम पृकृति ज्ञान लखावे ।
रामप्रकाश नीति को पालत, वही जन परम पदार्थ पावे ।।४६।।
गुरू और सागर गहर गँभीर है, स्वभाव में अतिशय अँतर भारी ।
सिन्धु गहराई में जाय परे कोई, डूब मरे दुःख पाय अनारी ।।
गुरू स्वभाव सु गहराई पावत, भव सागर से तर जाय सुधारी ।

रामप्रकाश साधन युक्ति तर, पाय मुक्ता फल मुक्ति अपारी ।।४७।।
सतगुरू तेज है ज्ञान की मृदँग, दीक्षा नदी वत धार बहावे।
सत चित आनन्द भाव भरे उर, अनुभव बाँसुरी स्वर बजावे।।
परम प्रसाद भण्डार भरे उर, अक्षय कोष कृपा बरसावे।
रामप्रकाश भव तारक है गुरू, गहर गभीर सिन्धु सरसावे।।४८।।
पर उपकार सदा हितकारक, जीव उद्धारक ज्ञान पिटारी।
जनम मरण को भय अति दुस्तर, लख चौरासी वारम्वारी।।
अनन्त जीव को ज्ञान जहाज से, भवसागर से पार उतारी।
रामप्रकाश है सतगुरू चरण में, कोटिक वार है दण्डवत हमारी।।४९।।
हे गुरू पारब्रह्म परमेश्वर हो, सच्चिदानन्द स्वरूप तुम्हारा।
निर्गुण निरन्तर निर्द्वन्द हो अरु, निर्विकार निर्विकल्प अपारा।।
जिज्ञासु जन तारण कारण, आवत हो सर्गुण अवतारा।
रामप्रकाश नमो पद वन्दन, चरण कमल मे वारम्वारा।।५०।।
श्रेष्ठ सतगुरू वही जग मानियत, जिन की प्रेरणा प्रेरित लावे।
जीव सुधारक चरित्र बदले, व्यशन रहित ब्रह्मज्ञान सुनावे।।
मित्र वही जग श्रेष्ठ मानियत, जिन के सँग से रँग बदलावे।
रामप्रकाश यह नीति लखावत, शास्त्र रु सन्त यही बतलावे।।५१।।
जीव जगावत दिशा दरशावत, खोया तत्व स्पष्ट बतावे।
आतम परिचय मारग दिखावत, मूला तूला भ्रम मिटावे।।
अन्त आपने सम बना कर, उतमराम पुरुषोत्तम पावे।
रामप्रकाश गुरू मार्गदर्शक, अपनी पुरुषार्थ आप दिखावे ।।५२।।
सतगुरू व्यक्ति शरीर नही होवत, गुरू तत्व शक्ति मन्त कहावे।
सतगुरू शब्द स्वरूप अनादि है, श्रद्धा समर्पण भाव से आवे।।
प्रार्थना भाग्य द्दष्ठा से प्रापत, मनोभाव से फल उपजावे।
रामप्रकाश प्रारब्ध सँयोग ते, ज्ञानी गुरू शुभ दरश दिखावे।।५३।।
उतम भाग्य ते उतम गुरू पावत, मन के भ्रम सँदेह मिटावे।
दैहिक भ्रम है षट् प्रकार के, मूल अज्ञान के सहित उडावे।।
शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म लखावत, आन उपासना द्वैत विलावे।
उतमराम प्रकाश प्रसाद ते, जीवित मोक्ष सुधा रस पावे।।५४।।
सतगुरू ज्ञान दिवाकर पूरण, शब्द रश्मि उर भीतर लावे।
अन्तःकरण त्रिदोष विडारत, व्यवहार शुद्धि कर साधन लावे।।
शँका सहित सब भ्रम मिटावत, आतम ज्ञान अद्वैत द्दढावे।
रामप्रकाश नमो गुरू उतम, परम यथार्थ एक लखावे।।५५।।
सतगुरू गुण के सागर है वर, करुणा सिन्धु भव तारणहारे।
अपराध अवगुण पाप रु ताप को, क्षमा के दान को बख्शन वारे।।
ब्रह्मवेता सतगुरू हो उतम, दुर्व्यशन सब दूर निवारे।
रामप्रकाश दरशावत आतम, अरस परस भव जाल विडारे।।५६।।
यज्ञ दान रु व्रत अनेक करे नित, तीर्थ धाम चारों कर आवे।

आसन साधन योग करे बहु, धन नारी निज धाम लुटावे।।
गीता भागवत वेद पढे सब, पुराण कथा कर लोक रिझावे।
रामप्रकाश ना भ्रम मिटे मन, गुरू बिना गति ज्ञान न पावे।।५७।।
सतगुरू चरण के सेवन ते बहु, भव के चरण सब ही मिट जावे।
गुरू के पद पँकज सेव किये, जीव ईश ब्रह्म भेद मिटावे।।
सतगुरू शरण में जावत ही सब, भव की शरण सो दूर विलावे।
सतगुरू शरण तरण भव सागर, रामप्रकाश ब्रह्म रूप समावे।।५८।।
भोजन अपच पर रोग बढे घन के, ज्ञान अपच प्रर्दशन बढावे।
धन अपच अनाचार बढ़ावा, प्रशंसा अपच अहंकार ही आवे।।
सुख अपच पर पाप बढे बहु, सम्मान बढे बहु तामस पावे।
रामप्रकाश गुरू ज्ञान बिना देखो, जीवन व्यर्थ योंहि चला गमावे।।५९।।
बिना पय गाय रु वली सुमन बिन, जल बिन ताल शोभा नहीं पावे।
पण्डित विद्या बिन घर मंगल बिन, यज्ञ मन्त्र बिन नाहि सुहावे।।
निशा शशि बिन राज शासन बिन, मनुष्य शील बिन ज्ञान नसावे।
तैसे हि रामप्रकाश गुरु बिन, शिष्य को ज्ञान मरियाद कहावे।।६०।।
सतगुरू ज्ञान सुना कर भ्रम मिटावत, चार वाणी घट माँहि लखावे।
अर्ध रु उर्ध की गम लखावत, अगम रु निगम का भेद बतावे।।
लोक परलोक रु पृकृति ईश्वर, जीव ब्रह्म का भेद मिटावे।
रामप्रकाश महिमा कोई जानत, कोई गुरू मुख भेद जनावे।।६१।।
समर्थ सतगुरू ब्रह्मवेता वह, जो मोह नींद से आय जगावे।
मार्ग दर्शक जीवन शिक्षक, आतम परिचय खोया मिलावे।।
ज्ञान रु ध्यान मे ब्रह्म दरसावत, कर्म उपासना भेद बतावे।
रामप्रकाश नित नमन करूँ तिहीं, आप समान विधि शिष्य बनावे।।६२।।
कछुआ स्मरण से अण्ड पकावत, मछली दृष्टि से अण्डे पकावे।
कुरँज पक्षी शब्द ध्वनि से, मयूर अण्डे पर पँख जमावे।।
ऐसे ही सतगुरू स्मरण दृष्टि से, शब्द स्पर्श से योग्य बनावे।
रामप्रकाश ऐसे ही सतगुरू, देवे ज्ञान भव पार पठावे।।६३।।
छोटे से इक कागज के ऊपर, हो हस्ताक्षर सक्षम वारे।
सिक्का राशि या होय वसियत, हो जाते सब कीमत धारे।।
ऐसे सतगुरू का शिर हाथ पड़े, जीवन अमूल्य होय हमारे।
रामप्रकाश आप हो अमुल्य, अवमूल्यन मत होवो प्यारे।।६४।।
पुष्प बिन लता रु दूध बिना गाय, शील बिन भार्या ना मन भावे।
कँज बिन ताल रु शम बिन विद्या, वक्ता बिन सभा सतसँग बसावे।।
यज्ञ बिन वह्नि रु मँगल बिन भवन जो, शशि बिन निशा यह नाहि सुहावे।
ऐसे ही सत गुरू बिन शिष्य रामप्रकाश यह सिद्ध न थावे।।६५।।
सतगुरू शरण में मुक्ति विराजत, मौन प्रार्थना जल्दी जावे।

गुरू शब्दों में शक्ति अज्ञात है, शरण में जावत आप समावे ।।
जैसे पुष्प के पास में पावत, सुगन्ध अपने आप ही आवे ।
रामप्रकाश अधिकारी होवत, बिन माँगे पदार्थ चार ही पावे ।।६६।।
प्रणत पाल रु दीनबन्धु पूरण, सतगूरू मोरे प्राण आधारा ।
ज्ञान को दान दियो अभय कर, भ्रम अज्ञान का मूल निवारा ।।
सतगुरू स्वामी अन्तर्यामी, वारम्वार प्रणाम हमारा ।
उतमराम की शरणागत भाषत, रामप्रकाश निर्भय निस्तारा ।।६७।।
धातुवादी गुरू भेंट के लालच, नाना परहेज से भ्रम में डारे ।
चँदन समान सुगन्ध देवे गुरू, वाणी आचरण सुधारण वारे ।।
विचार प्रधान सो तीसरि गुरू, अष्ठधा पृकृति के बोध सँवारे ।
रामप्रकाश है कृपा प्रधान सो, उतम दयाल जो ब्रह्म जुहारे ।।६८।।
ग्रन्थ रु पन्थ अनेक मतान्तर, गुरु बिन पढे सुने भ्रम पावे ।
वेद पुराण रु श्रुति स्मृति रट, रह्यो बोराय भव भेद उपावे ।।
गुरू धाम मर्याद तजी मन मूर्ख, साधु कहावत दम्भ भुलावे ।
रामप्रकाश महमान भयो यम, राज के धाम सीधो चलि जावे ।।६९।।
ज्ञान उपार्जन हेतु करे बहु, साधन कष्ट उठावत भारे ।
गुरू कृपाकाँक्षित क्षणिक, उपाय ते पावत सारे ।।
गुरू सेवा बिन नाहि मिले वह, गुरू सेवा फल पावत चारे ।
रामप्रकाश सतगुरू ते अधिक, नाहि उच्च पद कोई निहारे ।।७०।।
भुवन चौदह में गुरू बराबर, नाहि हरि हर देव निहारा ।
गुरू शब्द का मन्त्र जपे वह, आध्यात्मिक उन्नति पावत सारा ।।
गुरू कृपा बल सर्व है सामर्थ, परम पुरुषार्थ देवन हारा ।
रामप्रकाश सतगुरू की आशिश, होवत लोक परलोक सुधारा ।।७१।।
भक्ति रु कर्म सु धर्म रु योग में, सिद्धि की युक्ति मिले गुरु द्वारा ।
लोक परलोक सुधार को मार्ग, साधन ज्ञान विवेक आचारा ।।
गुरू बिना नही पावत है गम, यज्ञ रु जप तप भुक्ति विचारा ।
रामप्रकाश वन्दु गुरू उतम, ताहि कृपा पद पाय हूँ चारा ।।७२।।
गुरू कृपाल के कारण हमे सत, ईश्वर एक्यता का रूप सँभारो ।
नाम शक्ति प्रसिद्धि सँपति, अपेक्षा किये बिन गुरू सेव विचारो ।।
गुरू ही है साक्षात ईश्वर, अवतार धारण कारण हेत सुधारो ।
रामप्रकाश प्रारब्ध मिटावत, गुरू गुण पार अपार अपारो ।।७३।।
गुरू शिष्य की निरापेक्ष प्रीत से, तुले नही कोई वस्तु सँसारा ।
लग्न श्रद्धा सत लागि रहे तब, पावत परम पदार्थ चारा ।।
गुरू कृपा बल साधन सिद्ध होवत, होय निर्भय पद ब्रह्म विचारा ।
रामप्रकाश वन्दे गुरू उतम, ताहि मया सब भांति सुधारा ।।७४।।
शास्त्र बोद्ध वर्णाक्षर व्याकरण, भाषा प्रवीण नही गति जानी ।
ब्रह्म तत्व अति सूक्ष्म ज्ञान को, साधन निश्चय मति नहीं आनी ।।
सन्तवाणी कछु ज्ञान सुने अरु, छन्द रचे लघु बुद्धि बखानी ।

सतगुरू उतमराम प्रसाद ते, रामप्रकाश करी श्रवण बानी ।।७५।।
गद्य रु पद्य में स्वर्ण व्यंजन, लघु की काव्य कला नहीं मानी।
अज्ञ तज्ञानुवृति साधक सेवक, ज्ञान न ध्यान विधि नहीं कानी ।।
साधु के भेष में भोजन पावत, साधन न योग न ज्ञान बखानी।
सद्‌गुरु उत्तमराम कृपाल ते, रामप्रकाश युक्ति लख जानी ।।७६।।
वेद को भेद न संतवाणी कछु, स्मरण शक्ति नहीं मति मानी।
कर्णापाटव दोष भरे बहू, रस अलंकार की गति बिलानी ।।
सद्‌गुरु ओट में रहे शरण रह्यो नित, आयु विहाय वृद्ध अति गानी।
उतमराम ब्रह्मवेता पद, रामप्रकाश नित रह्यो अबानी ।।७७।।
सत्संग सूचक प्रेरणा प्रेरक, मोक्ष को पन्थ बतावन वारे।
शिक्षक दीक्षक शुभ परीक्षक, मन्त्र को दान दिलावन हारे ।।
गुरू समान सभी सुखदायक, नमन योग्य सब आनन्दकारे।
रामप्रकाश सतगुरू ब्रह्मवेता, उतमराम प्रणाम हमारे ।।७८।।
गूढ गोप्य दुष्कर अति पावन, परम तत्व हित देव तरसावे।
ऋषि मुनी सन्त सिद्ध साधक, जाही तत्व की खोज लगावे ।।
कठिन साधन सतसँग श्रद्धा कर, योगी यति जन ध्यान से ध्यावे।
सतगुरू उतमराम कृपा वश, रामप्रकाश सो सहज ही पावे ।।७९।।
हस्ति दन्त बिन सभा सन्त बिन, नारी कन्त बिन सोहत नाहीं।
शशि बिन रात रु लक्ष्य बिन बात जु, पट बिन गात सोभे नही काहीं ।।
ज्ञान बिन सन्त रु बुद्धि बिन कन्त जो, बिना व्यवहार के जीवन तबाहीं।
रामप्रकाश गुरू बिन ज्ञान है, ध्यान विधि सब व्यर्थ थाहीं ।।८०।।

।। प्रथम खण्ड के अन्तिम छन्द ।।

प्रथम भाग में मँगल स्वरूप जो, हरि गुरू सन्त परमेश्वर माना।
तन मन वाणी के दूषण रुप में, सर्व क्लेश त्रिताप को हाना ।।
विघ्न निवृति रु आनन्ददायक, सवैया तीन सो नव जाना।
रामप्रकाश छन्दावली ग्रन्थ मे, कवि गण दोष न मानिये आना ।।१।।

इति श्री रामप्रकाश छन्दावली अन्तर्गत "मंगलमय वन्दना" नामक
प्रथम खंड समाप्त

श्री रामप्रकाश छन्दावली

"उतम नीतिमय धर्मोपदेश" नामक
द्वितीय खण्ड प्रारम्भ

।। समर्पित भाव ।।

हम समर्पित है गुरू चरणों में, हर क्षण उन्ही के समर्पित है।
हर श्वास प्रति पल पल भी, सर्वस उन्ही के समर्पित है।।
तन उन्ही का भी मन उन्ही का, वाणी उन्ही के समर्पित है।
रामप्रकाश जीवन का अनुभव, सब कुछ उन्ही के समर्पित है।।१।।
जो जन महा तपस्वी तप का, दानी रु यशस्वी काम कमावे।
मनस्वी सदाचारी हो जब भी, मन्त्रवेता बल मन्त्र जपावे।।
सभी साधन बल जब तक वह, प्रभु के चरण में नाहि चढावे।
रामप्रकाश समर्पित भाव बिना कछु, स्वप्न में नाही सिद्धि को पावे।।२।।
सतगुरु सन्त रु परम परमेश्वर, जीव के रक्षक तीन आधारा।
ज्ञान सुनावत जीव जगावत, मोह की नीन्द उडावन हारा।।
पर उपकार रता रह निशिदिन, मुमुक्षु जीव करे भव पारा।
रामप्रकाश हो पूरण समर्पित, सो जन पावत है निस्तारा।।३।।
गुरू कोई शरीर रु व्यक्ति नही वह, सत गुरू तत्व रु शक्ति कहावे।
श्रद्धा समर्पण भाव स्वरुप है, व्यक्तित्व ब्रह्म का बोध करावे।।
परम जिज्ञासु की साधन द्रिष्टि गत, मनोभाव के रूप बतावे।
रामप्रकाश कोई भाग्य ते पावत, द्रष्ठा समर्पित ब्रह्म समावे।।४।।
जप तप दान रु पूण्य कर्म यश, सदाचार बल मन्त्र कमावे।
साधन और अनेक करे भल, तब तक सरलता भाव ना आवे।।
हो निष्काम रु हरि समर्पित, सतगुरु आगल शीश नमावे।
रामप्रकाश सफल हो जीवन, वाञ्छित चार पदार्थ पावे।।५।।
आनन्ददायक आप परमेश्वर, सत चित केवल एक अपारा।
घट घट व्यापक पूरण आतम, गोचर अगोर सब से न्यारा।।
सामान्य विशेष बखानत है कुछ, बुद्धि विवेक उपयोग विचारा।
रामप्रकाश हूँ सर्व समर्पित, परस्पर आपका परम दीदारा।।६।।
उतम सतगुरू आवत है अरु, ज्ञान सुनावत भ्रम भगावे।
कुल मोह मिटावत दोष दुरावत, कलँक कटावत शुद्धि दिलावे।।
सँचित कर्म कलेश कटे सब, मल विक्षेप रु आवर्ण जावे।
रामप्रकाश कोईयक जान सके यह, गुरू की महिमा पार न आवे।।७।।

त्रिगुण प्रान्त के त्रिलोक क्षेत्र मे, पँचकोशी बाजार में एक हजारी।
मनोमय दुकान में महँगे भाव सें, ह्रदय अलमारी में बिकत है भारी।।
शीश दिये रु समर्पण भाव से, बड़भागी लेत है नर रु नारी।
रामप्रकाश हकीकी रु मिजाजी से, साच रु झूठ है दो विध से जारी।।८।।
समय स्थान देहादिक सतगुरु के, मायिक सीमा से परे दिखावे।
अलोकिक सता असीम निरन्तर, महान विभूति ब्रह्मज्ञानी पावे।।
दिव्य प्रेम सबका हित चाहत, होय जिज्ञासु सो लाभ उठावे।
रामप्रकाश हो गुरू समर्पित, हो ब्रह्मज्ञानी मुक्त समावे।।९।।

।। धन्य है वे जन ।।

धन्य है भक्त गुरू सन्तन के, जो दर्शन को तरसाते है।
सतसँग ग्रन्थ नित श्रवण करे, जो श्रद्धा में मन लगाते है।।
परम धन्य है वही भक्त जन, सन्त गुरू इन्तजार बताते है।
रामप्रकाश वन्दन उन सब को, जो परस्पर बलिहारी जाते है।।१।।
धन्य है मात पिता धन धन है, जिनकी सँतान हरि भक्त कहावे।
जगत उद्धारक भव भय तारक, पर उपकार में देह चलावे।।
धन्य है सन्त फकीर त्यागी जन, ब्रह्मज्ञानी ब्रह्म माहि समावे।
रामप्रकाश धन्य जग जीवन, प्रपँच रहित निष्काम रहावे।।२।।
धन्य वही जन कीर्ति पायक, सन्त के भेष मरियाद निभावे।
कुल को त्याग विश्व हित साधक, साधन सहित हरि ध्यान लगावे।।
मात रु तात सकल को त्यागत, सन्त रु सतगूरू नेह सधावे।
रामप्रकाश वे देह धरे भल, सँशय रहित परब्रह्म समावे।।३।।
ध्रुव प्रहलाद को जन्म दियो धन, बालक आयु में भक्ति कमाई।
शिवरी मीरा रु कर्मा और हूँ, सहजा बाई रु अनेक ही बाई।।
सन्त रु साध्वी हरि शरणागत, आपनो जीवन सफल बनाई।
रामप्रकाश हरि भक्ति बिना जन, मानव जीवन अमोलख जाई।।४।।
भाग भला सन्त सेवा में लागत, श्रवण सुने उपदेश सुधारा।
सतसँग करे सत शब्द धरे उर, साधन जिज्ञासा के मन धारा।।
मनन मान सब दोष हटावत, निदिध्यासन करके जनम उद्धारा।
रामप्रकाश वह मानव जीवन, धन्य मात रु पिता धनकारा।।५।।
सतसँग में जावत प्रेम लगावत, सेवा करे मन ध्यान लगावे।
सन्त वचनामृत शब्द का श्रवण, मनन मान के निदिध्यासन लावे।।
सतगुरु शरण सानिध्य पावत, प्राणी सेवा में जीवन जावे।
रामप्रकाश ऐसे धन मानव, ज्ञान को पावत मोक्ष सिधावे।।६।।
मानव जनम रु सतसँग सतगूरू, भाग बिना नर पावत नाही।
ज्ञान के हेतु मुख्य है कारण, परम पुरुषार्थ आप की लाही।।
श्रद्धा विश्वास अभ्यास धरे चित, मानव जीवन में लाभ उठाही।
रामप्रकाश धन्य वह धन धन, परमार्थ पद हेतु बहाही।।७।।
श्वासोश्वास में हरि का सुमिरण, भाग भला नर नाम उचारे।

भक्त भक्ति कर आनन्द पावत, लोक परलोक मे जीव सुधारे ।।
मानव जीवन सफल कर जावत, पावत परम पुरुषार्थ प्यारे ।
रामप्रकाश धन्य वह मानव, आवागमन का भ्रम निवारे ।।८।।
सतगूरू शरण में जावत निशिदिन, श्रद्धा सेवा विश्वास को धारे ।
दर्शन प्रश्न करे मन हर्षित, सन्त वाक्य नित स्मृति सुधारे ।।
ज्ञान रु ध्यान करे मन सँयम, चित मुमुक्षुता साधन वारे ।
रामप्रकाश धन्य तिंहिं जीवन, मात पिता सदा धनकारे ।।९।।
सतसँग में नित जावत आवत, श्रद्धा भाव धारे चित माँई ।
सतगूरू सन्त की सेवा कर मन, श्रवण वचनामृत स्मृति बढाई ।।
मोक्ष इच्छा हित करे शुद्ध साधन, राजस तामस दूर हटाई ।
रामप्रकाश धन्य वह साधक, प्रणम्य रूप है भाव सदाई ।।१०।।
ईश्वरीय शक्ति पूण्यमयी धरा पर, ऋषि कुल भारत में जनम लीया ।
सुन्दर देह सर्व सुखदायक, प्राप्त कर के फिर क्या कीया ।।
पूण्य कमाई करके जावत, वे धन्य भागी है जीवन जीया ।
रामप्रकाश पुरुषार्थ पाया, व्यर्थ जिसने कुछ नही दीया ।।११।।
जो जन है परमार्थ साधक, वे सतसँग कथा मे आते है ।
अपनी सन्तति को सँस्कारित करके, धर्म के पथ चलाते है ।।
पूण्य भाग कमाई करके हम, अपने भावी भाग्य जगाते है ।
रामप्रकाश वे धन्य है जीवन जो, ऋषि का धर्म निभाते है ।।१२।।
सात्विक भाव सतसँग का हेतु है, साधन प्रेरणा पावत प्यारा ।
सतगुरु शरण में जावत मानव, शास्त्र सन्त से सीख सुधारा ।।
हरि का सुमिरण शम दम साधक, विवेक वैराग्य बढावत सारा ।
रामप्रकाश धन्य वह जीवन, सो प्राणी है हरि का प्यारा ।।१३।।
हरि से नेह रु करे सतसँगत, नाम को कीर्तन रोज उचारे ।
साधन प्रेम रु नियमित जीवन, श्रद्धा भाव सदा उर धारे ।।
मैत्री पूर्ण वाणी उचारत, कपट रहित मृदुता वारे ।
उन को वन्दन रामप्रकाश की, वारम्वार जाऊँ बलिहारे ।।१४।।
भाग्य से सतगुरू नगर में आवत, अहोभाग्य अपने घर आवे ।
सतगुरू स्मृति सौभाग्य वर, परम भाग्य गुरू याद करावे ।।
इतने पर सुधर सके नही नर, परम दुर्भाग्य समझो मन लावे ।
रामप्रकाश सुभ हो प्रारब्ध तब, ऐसे सँयोग ही भाग्य जगावे ।।१५।।
साधन सम्पन्न जीवन सोई है, भाग्यशाली ताहि कहै सब कोई ।
भोजन भूख हो सेज रु नीन्द भी, धर्म रु धन घर के सुख होई ।।
यह जब होवत जा जन पास में, शौभाग्यशाली जन मानिये जोई ।
रामप्रकाश शिष्टता उर होवत, विशिष्टता तब मानिये सोई ।।१६।।
राम कृपा सुभ भाग्य उदय जब, सन्त की सतसंग सदा मिल जावे ।
मूर्ख हो विद्वान सुजान रु, व्यशन दोष सभी छिटकावे ।।
पापी होय पुण्यात्म पूर्ण, यश मान बढे रु प्रतीष्ठा पावे ।

रामप्रकाश धन भाग होवे तब, जीवन सफल परम फल आवे ।।१७।।
सौभाग्यशाली जीवन उनका, भूख रच भोजन दोनो ही पावे।
बिस्तर नींद दोनो मन भावन, सतगुरू साथ श्रद्धा मन भावे ।।
धन के साथ उदारता होवत, विशिष्टता सँग शिष्टता आवे।
रामप्रकाश धन्य है मानव, नर के रूप नारायण थावे ।।१८।।

।। गुरू किसे बनायें ।।

गुरू की खोज में नही जरुरत, शिष्यत्व भाव को पहले जगावो।
विवेकादिक साधन युत हो, सतसँग में सन्तन सँग जावो ।।
व्यशन हीन हो ब्रह्मवेता सन्त, स्वार्थ हीन जो विरक्त पावो।
रामप्रकाश निर्बन्धन वह, भाग्य सँयोग सतगुरू बनावो ।।१।।

।। शिष्य धर्म/श्रद्धा ।।

शिष्य धर्म है गुरू आज्ञा रत, सेवा भाव हर हाजिर रहावे।
साधन सतसँग सन्त सेवा रत, विवेक वैराग्य ह्रदय ठहरावे ।।
शम दम, श्रवण मनन निदिध्यासन, काम क्रोधादि विकार हटावे।
रामप्रकाश शरणागत रहिये, श्रद्धा विश्वास के सँग रहावे ।।१।।
सतगुरु हो विद्वान ब्रह्मवित, शिष्य मति हीन यदि मिल जावे।
अपात्र मति रु साधन के बिन हो, नही सफलता कदापि को पावे ।।
शिष्य यदि साधन सम्पन होव ही, सतगुरू का सत इष्ट निभावे।
रामप्रकाश श्रद्धा सम्पन हो, वही परमार्थ पद को पावे ।।२।।
श्रद्धा विश्वास से ज्ञान मिले पुनि, नम्रता से मान सम्मान सदाई।
योग्यता पद दिलावत है वर, तीनों मिले तब शाह नशाई ।।
श्रद्धा नम्रता रु योग्यता वश, ज्ञान विज्ञान मिले सुखदाई।
रामप्रकाश जो एते मिले सँग, परम पुरुषार्थ पावत भाई ।।३।।
श्रद्धा स्वरूप से सतगूरू पावत, प्रारब्ध उतम उतम पावे।
द्रढ विश्वास रु मनोभाव से, साधन सतसँग चित लगावे ।।
सन्तन भाव सेवा कर धारण, ह्रदय हरि से ध्यान लगावे।
रामप्रकाश मानव तन उज्वल, परम पदार्थ सहज समावे ।।४।।
शिष्य जिज्ञासा से पूरित हो वर, सतगूरू भक्त भक्ति मतवारे।
नाम के सुमिरण सतगूरू सेवक, प्रतिक्षण दरश निहारन वारे ।।
सतगूरू आवत आप ही धावत, दरश बिन आँसु बहावत सारे।
रामप्रकाश वे भावुक मानव, परम पुरुषार्थ पावन हारे ।।५।।
पन्थ रु ग्रन्थ रु सन्त कहै इमि, प्रारब्ध अनुसार सबे कछु पावे।
यह जग की जन श्रुति का वाचन, समर्थ सतगुरु लेख मिटावे ।।
मै पुनि अनुभव जान लियो कर, भाग्य ते अधिक विधान दिखावे।
रामप्रकाश गुरु सेवक मानत, श्रद्धा सँग विश्वास ते पावे ।।६।।
सतसँग करे सतगुरू शरण में, सन्त को भाव सदा मन लावे।
श्रद्धा विश्वास धर्म का धारण, विश्व सेवा में पूण्य कमावे ।।
शम दमादिक साधन सम्पन, पावन जीवन धन्य बनावे।

रामप्रकाश वे शनै शनै चल, ज्ञान के पथ परमार्थ पावे ।।७।।
भक्ति का आश्रय श्रद्धा विश्वास है, ता बिन धर्म रु कर्म न होई ।
फल इच्छा कृत वासना धारत, जनम रु मरण का कारण वोई ।।
निरीह निशँक इच्छा बिन कारण, कर्तव्यनिष्ठ करे जो कोई ।
रामप्रकाश मुक्त होवन को, प्रमुख रूप से साधन सोई ।।८।।
पशु पक्षी सब जीव जन्तु गण, सेवा से बहु होवत राजी ।
ज्ञानी और अज्ञानी भी मानत, सेवा ज्ञान रू योग्यता का साजी ।।
नर नारायण जन जगदीश भी, सेवा है सब साधन बाजी ।
रामप्रकाश श्रद्धा सँग सेवा है, बिना सेवा के पण्डित पाजी ।।९।।
खूब खुशी नही खेत में उपजत, हाट बाजार में नाहि बिकावे ।
जेहि रुचे सो लेवत भावसे, सतगुरू के दरबार मे जावे ।।
साधन सहित अन्दर में ढूँढ ले, अतुल भण्डार आनन्द का पावे ।
रामप्रकाश श्रद्धा वश साधक, उतम गुरू प्रसाद ते लावे ।।१०।।
परिवार से मोह मिट्यो नहीं रँचक, सतगुरू शरण में रयो न रयो ।
ज्ञान न ध्यान प्रभु भक्ति बिन, साधु को रूए भयो न भयो ।।
अन्तर शुद्धि भयी ना त्रिदोष की, तीर्थ धाम गयो न गयो ।
रामप्रकाश श्रद्धा बिन गुरू ढिग, साधु को भेष लयो न लयो ।।११।।
सन्तन के प्रति भावभरे अति, श्रद्धा प्रीत सेवा उर धारी ।
ज्ञान रु ध्यान धरे हरि मे चित, वेद विचार रहे नित जारी ।।
साधुशाही रु गुरु गम लखते, गुरु मरियाद के नियम आचारी ।
रामप्रकाश प्रणाम करे नित, ता सन्तन की मै बलिहारी ।।१२।।
तीरथ वही जो भव से तारत, तन मन के सब मेल मिटावे ।
वाणी शुद्व निर्दोषी जीवन, परमार्थ आतम दरसावे ।।
समय अर्थ बिन रोगी दुर्बल, भौतिक तीरथ कभी ना ध्यावे ।
घर बैठे श्रद्धालु पावत, रामप्रकाश जो अन्तर नहावे ।।१३।।
स्वार्थ वश सेवा कर लाभित, लोभ से प्रीति करे वह फीकी ।
द्रोह से प्राप्त लक्ष्मी निकृष्ठ है, परोपकार में खर्च ही नीकी ।।
परार्थ सहन क्लेश किया वह, पूण्य परोपकार क्या वह लीकी ।
रामप्रकाश यह नीति पुकारत, शास्त्र सन्तन की यह टीकी ।।१४।।
कर्म कौशलता कामधेनु घर, सब कुछ देवनहार यही ।
प्रार्थना ईश्वर या मानव की हो, पारसमणि से वह कम नही ।।
सँयम हो यदि जीवन मे तो, वह स्वर्ण समान है वही ।
रामप्रकाश सतगुरू मे यदि श्रद्धा है, साधन सहित भले रहो कँही ।।१५।।

।। सतगुरू निन्दक ।।

गुरू निन्दक के घर कुपुत्र होवत, मुग्ध नँपुसक आप ही होवे ।
असाध्य रोग से पीड़ित होवत, मन ही मन पश्चाताप में रोवे ।।
हो निर्धन अपयश जग पावत, लख चौरासी के बोझ को ढोवे ।
रामप्रकाश सन्तन के निन्दक, व्यर्थ जनम आपनो खोवे ।।१।।

सतगुरू निन्दक गुरू धन पाचक, मानसिक पाप हृदय मन लावे।
तन मन से उत्पत करे नित, कुदृष्टि के नित चक्र चलावे।।
पीड़ित ताप करे उतपात ही, सो अघ पाप रु ताप ही पावे।
रामप्रकाश नरकाधम योनि में, वारम्वार ही जनम धरावे।।२।।
गुरू का निन्दक वैर को पालत, सो भल वास नरक में पावे।
जनम अनेक भोगे भव भ्रमण, मुग्ध नँपुसक योनि में जावे।।
ओछे कुल रु दारिद्रय घर आयके, जनम ही पावत दुःख उपावे।
रामप्रकाश पुनर्भव जावत, आवत लख चौरासी भोगावे।।३।।
गुरु का निन्दक गुरु विरोध में, चरित्रहीन रु होय धूतारो।
जाति का पोषक परिवार का पालक, बात का चातुर नेह पतारो।।
शास्त्र ज्ञान विहीन रु कृतघ्न, लम्पट चोर रु होय चुगारो।
रामप्रकाश करे सतसँगत, रँच भी होय ना लोक सुधारो।।४।।
गुरु के धन का उपयोग करे जन, छल कपट रु हरण विचारे।
झूँठ चोरी धोखा भरे मन, गुरु धन को भोग सु धारे।।
पाय दरिद्रता रोगी होय भोगत, विपति कुल सँतान बिगारे।
रामप्रकाश नीति कहे यह, शास्त्र सन्त यह प्रकट पुकारे।।५।।
गुण को ले अवगुण मनावत, कुल कपूत कुमारग गामी।
कृतघ्नता परिपूरण कर्तव्य, मानव रूप मे मूढन स्वामी।।
मात पिता रु गुरू गुण घातक, पातक मूल रु विकर्म नामी।
आसुरी सम्पति को रखुवार है, रामप्रकाश वही यम सामी।।६।।
वेतन लिये बिन सेवा में लागत, भोजन जल भी आपनों पावे।
सब वस्त्र व्यवहार को भार भी ढोवत, संग धोवत पाप को मेल हटावे।।
सज्जन सन्त रु सतगुरू निन्दक, धन्य सदा निज पाप कमावे।
रामप्रकाश नित निकट बसो मम, मेरी त्रुटि को नित खोल बतावे।।७।।

।। मानव तन की महिमा ।।

महंगो नर तन है घणो, सस्तो कर मत जाण।
भव में भटकत दु खः को, भूल गयो औसाण।।१।।

सवैया छन्द

कामधेनू कल्पवृक्ष चिन्तामणि, मानव देह रु सतसंग है भाई।
दुर्लभ नर तन पूण्य प्रताप ते, पावत भाग्य प्रबल ते आई।।
भवसागर मे अनन्त काल तक, भोगत अब यह उतम पाई।
रामप्रकाश करो हरि सुमिरण, सफल होय यह जन्म सुहाई।।१।।
मानव जनन सीढी है उत्तम, उत्तर चढ़ो बिन काम न आवे।
जप तप यज्ञ के साधन करत ही, चढे स्वर्ग दिव्य लोक बसावे।।
व्यशन सात रु दोष दशो कर, कुपथ चढ कर नर्क सिधावे।
रामप्रकाश हरि भक्ति रु ज्ञान ते, मुक्ति धाम फिर जनम न पावे।।२।।
जप तप यज्ञ के साधन कर नर, नेक भये उन नाक बसायो।

व्यशन दोष लिये कर पाप हि, भव के भीतर नर्क ही पायो।।
हरि भक्ति कर जप तप सुमिरन, हरिलोक गये पद उतम ध्यायो।
रामप्रकाश मानव तन उतम, चढो उतर तन सीढि कहायो।।३।।
उठन बैठन माल रखन हित, सीढि और कछु काम न आवे।
भावे चढ कर अपवर्ग नाक में, भावे उतर भव नरक सिधावे।।
इच्छित फल पावे नर दैहिक, कल्पवृक्ष मनु देह कहावे।
रामप्रकाश दुर्लभ तन मानव, सन्त सदा उपदेश बतावे।।४।।
मानव जीवन सदा अनमोल है, हाट बिके ना खेतों में पावे।
श्वास रु समय मिले नही एक ही, जीवन का धन खूब लूटावे।।
भव में भ्रमत युग अनन्त ही, भाग्य फले हरि हेतु उपावे।
रामप्रकाश दुर्लभ तन पायके, हरि भजन बिन व्यर्थ गमावे।।५।।
कर्म करे नित शुभ उपकार हि, ज्ञान रु ध्यान में चित लगावे।
देव ऋषि ऋण पितृ से उऋण, पाँच हि यज्ञ को नियम निभावे।।
सतसंग सतगुरू सेव करे शुभ, शास्त्र साच सदा मन भावे।
रामप्रकाश वही नर धन है, नर तन त्याग नरोत्तम पावे।।६।।
मानव देह में जप तप साध के, देव भये वह नाक बसाये।
भोग अतिरिक्त कछु नही वहाँ, सतसंग हेतु सदा तरसावे।।
मानव तन को याचत है सुर, पूण्य कर्म नही कैसे कमावे।
रामप्रकाश है देवन दुर्लभ, मानव देह बहु पूण्य ते पावे।।७।।
नाक ते आय के देह धरी नर, करे कुसंग नराधम थावे।
नर देह तजी भू मानव आवत, दोष दशो कुकर्म कमावे।।
ते नर जाय परे भव बन्धन, युग युगान्तर भोगत जावे।
रामप्रकाश शुक्रत कर मानव, नाम जपे तब आनन्द पावे।।८।।
मानव देह मिली अति सुंदर, व्यर्थ खोय के जा मत प्यारे।
है अनमोल महा अति दुर्लभ, सन्त शास्त्र सत वेद पुकारे।।
जीवन सम्पति कमा लयी वह, कहीं लुटाय खरीद ले सारे।
रामप्रकाश नहीं मोल बिके कहीं, समय रु श्वास है अनमोल हमारे।।९।।
लाख चौरासी में भ्रमण भ्रमत, अनन्त काल दुखः पायो है भारी।
चार खानी में जीव जंतु बन, भोग रहा था भव दुखः क्यारी।।
योनि योनि में बहुत गर्भ गत, वारम्वार सह्यो कष्ट अपारी।
रामप्रकाश चेत मन मूरख, नर तन पायके भयो तू भिखारी।।१०।।
चेत रे अचेत नर श्वास तेरो जात यह, अमोल अतोल मांहि गाफिल घेरो।
जावत समय तेरी आयु का व्यर्थ, करो सतसंग हरि भाव घनेरो।।
धन सम्पत्ति कछु काम न आवत, अन्त समय तन खाक को ढेरो।
रामप्रकाश सन्त शास्त्र चेतावत, कछुक कहनो मान ले मेरो।।११।।
इक्कीस हजार छ: सौ श्वास निशिदिन, सतगुरू शब्द हृदय बिच हेरो।

सतसंग सतगुरू सान्निध्य अध्ययन, मानव जन्म सफल हो तेरो ।।
भ्रम प्रमाद मिटे मन मकर, निवृत होवे भवसागर फेरो ।
रामप्रकाश सन्त शास्त्र पुकारत, कछुक मान यह कहनो मेरो ।।१२।।
ब्रह्मदृष्टि सतगुरु की अति पूर्ण, समता भाव लिये सुख बोले ।
राव रु रँक को सम प्रबोधित, व्यवहार परमार्थ युक्ति को तोले ।।
मानव जन्म को मूल्य लखावत, श्वास रु समय अमोलक जोले ।
रामप्रकाश ब्रह्मवेत्ता गुरू सामर्थ, सतसंगत कर को अन्तस्थ धोले ।।१३।।
मानव जन्म धन धन है वाहि जन, जान लियो जिन महात्म सारो ।
कर सतसंग रु गुरू गति मति मन, साधन सन्तमत शास्त्र प्यारो ।।
भेद दृष्टि सब दूर करि भव, एक निजात्म व्याप अपारो ।
रामप्रकाश जग में जन आय के, होय गयो भव खाण से न्यारो ।।१४।।
जीव अनेक बंधे भव बंधन, पामर विषयी गम है कछु नाई ।
कोटि अनन्त में हो पुण्यवान ही, छूटन हेतु उपाय उपाई ।।
साधन साथ सधे गुरू सानिध्य, मोक्ष हेतु मुमुक्षु कहाई ।
रामप्रकाश लखे गुरू गमत, मूढ अज्ञात लखे नही वाई ।।१५।।
सन्त सदा हितकर चेतावत, मानव चेतन होवत नाही ।
मूर्ख लाग रह्या प्रपँच में, समय रु श्वास संभालत नाही ।।
शास्त्र बहुत रचे मन भावक, कोई पढे पर समझत नाही ।
रामप्रकाश मनमुखी वाचक, गुरू बिना गम पावत नाही ।।१६।।

।। इतनी जगह चरण रखने से कष्ट या हानि।।

गुरू के वस्त्र रु निर्माल्य पुष्प जो, कोयला हड्डी रु राख रूई जानो ।
अन्न भूसी अपवित्र जगह रु, चोर गृह पर पांव न पानो ।।
मद्य जूआ गृह वैश्या कुपात्र के, चरण धरे पर हानि ठिकानों ।
रामप्रकाश यह नीति पुकारत, पाद धरे वह कष्ट घरानों ।।१।।

।। सतसँग का अंग।।

पामर को सन्मार्ग दिखावत, मानवता का बोध सधावे ।
विषयानुरक्त को जग भोग दिलावत, शास्त्र विधि से कर्म उपावे ।।
जिज्ञासु को भव पार ले जावत, ज्ञान विज्ञान को बोध करावे ।
रामप्रकाश कल्प वृक्ष है सतसँग, मन वाँच्छित फल शुभ दिलावे ।।१।।
धर्म की रक्षा सत्य ते होवत, सत्य की रक्षा विद्या ते होई ।
विद्या की रक्षा अभ्यास से होवत, अभ्यास होवत पावन जोई ।।
सौंदर्य की रक्षा स्वच्छता ते होवत, कुल की रक्षा सदाचार ते सँजोई ।
रामप्रकाश सफल हो जीवन, हरि भक्ति सतसँग हो दोई ।।२।।
मोक्ष द्वार के चार प्रतिपालक, सजग सही पहरेदार कहावे ।
शम सन्तोष विचार रु सतसँग, लक्षण धारक प्रवेश दिलावे ।।
काम रु क्रोध मोह अहँ चार हूँ, प्रतिबन्धक यह रोक लगावे ।
रामप्रकाश सतगुरु हो साधन, समर्थ पुरुषार्थ सो वह पावे ।।३।।

अनन्त जनम के ज्ञात अज्ञात में, किये हुए जो सँचित नाना।
ताहि प्रभाव ते मानव जीवन, सँत के दर्शन सतसँग पाना।।
ईश्वर कृपा बिन यह नही पावत, पूर्व पूण्य बल पावत जाना।
रामप्रकाश ब्रह्मज्ञानी सतगूरू, परम पुरुषार्थ पाय कल्याना।।४।।
मानव जनम है दुर्लभ जग में, मुमुक्षा भाव भी दुर्लभ भाई।
सतसँग सज्जन मिलन दुर्लभ, महा दुर्लभ है सतगुरु गाई।।
ईश्वर कृपा जब जीव पे होवत, पूर्व प्रबल हो पूण्य कमाई।
रामप्रकाश जो करे पुरुषार्थ, जीवन सफल बने तब आई।।५।।
जप तप तीर्थ व्रत करो बहु, यज्ञ रु योग करो भलसारा।
सुत बन्धु घर सम्पति साधन, दान लुटावत अखूट भण्डारा।।
सतसँग बिना सब व्यर्थ कारज, सन्त सानिध्य से भाग्य सुधारा।
रामप्रकाश बहु पूण्य फले भव, भाग्य जगे तब पावत द्वारा।।६।।
भाग भला सतसँग में जावत, पावत जीवन सत्य व्यवहारा।
सत उपदेश सुने सन्त वाचन, छूटत व्यशन दोष विकरा।।
श्रवण शब्द करे मन भावन, साधन मोक्ष का पावत द्वारा।
रामप्रकाश धन भाग जगे तब, सतसँग होवे घर बीच बाजारा।।७।।
कोटिक तीर्थ व्रत करो भल, कोटिक यज्ञ रु योग आचारा।
कोटिक कन्या को दान करो वर, स्वर्ण आदि लुटावत सारा।।
सतसँग बिना नहि भाग्य फले सब, सन्त सानिध्य सँयोग विचारा।
रामप्रकाश हो पूण्य प्रबल तब, पावत है सतसँग उदारा।।८।।
यज्ञ योग आचार करो बहु साधन, तीर्थ जाय लुटावत सारा।
दान अनन्त करे गौ पूजन, नियम धर्म निभावत भारा।।
धरम रु कर्म करे नित साधन, सतसँग बिना नही पावत द्वारा।
सतगुरु सन्त के दर्शन हो तब, रामप्रकाश बड़भाग विचारा।।९।।
हरि कीर्तन अरु नाम का सुमिरण, सन्त सेवा गुरू शब्द विचारा।
ज्ञान रु ध्यान अध्यात्म साधन, बुद्धि विवेक रु शुद्ध व्यवहारा।।
सत सँगत ते सिद्ध होत सभी वर, पूण्यकार्य कर जीव सुधारा।
रामप्रकाश बड़भागी घर होवत, सतसँग मांहि हो सन्त दीदारा।।१०।।
तीर्थ जाय करे सत सँगत, यम रु नियम सजावत सारा।
सँयम दम रु दान दया उर, सत सँगत से फल पावत प्यारा।।
सतसँग बिना गति मति नही पावत, प्राकृत पूण्य फले बहु भारा।
रामप्रकाश पूर्व भाग्य ते पावत, सतसँगत में सन्त दीदारा।।११।।
जा घर में सतसँगत होवत, ता घर आवत शुद्ध व्यवहारा।
इष्ट देव कुलदेव रु पितर, प्रसन्न हो वर देवत सारा।।
ता घर भूत रु प्रेत न आवत, पाप रु ताप हटे दुःख भारा।
रामप्रकाश यम जोर न लागत, सो घर होवत देव दवारा।।१२।।
सत सँगत होवत है जा घर में, पितर की गति होवत भाई।
सात पीढि गति मुक्ति को पावत, भावी पीढि सँस्कारित थाई।।

भूत रु पितर प्रेत न होवत, सदगति को पावत जाई।
रामप्रकाश ता देव बसे घर, देवत शुद्ध वरदान सदाई।।१३।।
तीर्थ वास में तप करे वर, दान रु दक्षिणा खूब लूटावे।
यम रु नियम करे जप साधन, बिन सतसँग के सब व्यर्थ जावे।।
सद्भाव जगे बिन गति नही होवत, मति को पावत सतसँग आवे।
रामप्रकाश धन भाग जगे तब, जीवन में सतसँग मिलावे।।१४।।
तीर्थ जाय उपवास करे बहु, दान दक्षिणा धन लुटावे।
सो फल अनायास ही पावत, जो घर में सन्त नेत जिमावे।।
सो घर में सतसँग करे जन, सहज ही चार पदार्थ पावे।
रामप्रकाश ब्रह्मज्ञानी की सँगत, भाग बड़े घर बैठे ही पावे।।१५।।
जो फल तैंतीस देव के पूजन, जो फल यज्ञ योग कमावे।
जो फल कन्या दान ते होवत, जो फल स्वर्ण दान दिलावे।।
जो फल जप रु तप करे वन, जो फल वेद पढे पुण्य लावे।
रामप्रकाश ऐसे फल पावत, सुगमता से सतसँग ते पावे।।१६।।
सतसँग में हरि आप विराजत, आचरण शुद्धि बतावत सारा।
सन्त सनातन धर्म लखावत, वेद वेदान्त सिद्धान्त विचारा।।
जीवन में ब्रह्मज्ञान उतारत, साधन सहित निष्ठा कर धारा।
रामप्रकाश संतसँग का महात्म, शेष गणेश न पावत पारा।।१७।।
ऋषि मुनी गण सन्त साधु जन, साधक देव सनातन सारा।
उंच नीच पामर विप्र वनिता आदिक, विषयी जिज्ञासु ज्ञानी जन वारा।।
सब ही श्रद्धा वश करे सतसँगत, पावत गावत ज्ञान भण्डारा।
रामप्रकाश महिमा सतसँगत, कवि पण्डित नही पावत पारा।।१८।।
सतसँगत सब के हित साधत, प्राणी का हित सन्त बतावे।
पामर हितार्थ जीव सुधारत, विषयी को निष्काम बनावे।।
जिज्ञासु को ब्रह्मवेता बनावत, ज्ञानी को होय विनोद सुहावे।
रामप्रकाश सतसँग महात्म, शास्त्र वेद पुराण भी गावे।।१९।।
मानव को लक्ष्य है मुख्य प्रयोजन, मुख्य पुरुषार्थ मोक्ष है भाई।
सतसँग कर ले ज्ञान परमार्थ, ब्रह्मवेता सतगुरू की शरणाई।।
श्रवण मनन और निदिध्यासन, चित के भीतर ठीक जमाई।
रामप्रकाश ले ब्रह्म को चिन्तन, चित के भीतर चित समाई।।२०।।
सतसँग करो नित सत्य को धारण, सत्य मृदु सम बोल सदाई।
जीव हिंसा तज तन मन भीतर, व्यशन दोष को दूर हटाई।।
व्यर्थ चिन्तन तज पर के औगुण, जीवन शुद्ध कर मिंत भलाई।
रामप्रकाश ले जीवन को फल, सतसँग की है सफल कमाई।।२१।।
पन्थ रु ग्रन्थ के मत मतान्तर, काम नही मन बुद्धि को भाई।
साधन सतसँग सतगूरू सामर्थ, कृपा करे तब साधन पाई।।
श्रद्धा ओ विश्वास प्रबल वश, आत्म ज्ञान उदय तब थाई।
रामप्रकाश है पन्थ बिना गम, प्रारब्ध सबलता पावत भाई।।२२।।

हे हरि हम निशिदिन माँगत, दीजे शुभ सुख वरदान सदाई।
सतसँग मिले गुरू भक्तन के सँग, वेद वचनामृत श्रवण सुहाई।।
परम श्रद्धा सतगूरू सन्तन बिच, दर्शन हित नित नैन बहाई।
रामप्रकाश मिले नित सज्जन, चर्चित ज्ञान सदा सुखदाई।।२३।।
सतसँग करे रु हरे मल मानव, जग मलयालम ते दूर रहावे।
सतगूरू ज्ञान में लगन रहे चित, श्रवणादिक में प्रेम लगावे।।
सन्त वाणी नित चित धरे पल, मांहि गुने मन ध्यान लगावे।
रामप्रकाश यूँ अर्थ को जानत, ऋषि ऋण से उऋण बनावे।।२४।।
सतसँग ते प्रेम रु नियम धरे चित, सतगूरू ढिग नित सानिध्य पावे।
अर्थ विचार वरेउर भीतर, अन्तर्ज्ञान के चक्षु जगावे।।
सन्तवाणी नित श्रवण करे शुद्ध, हरि रस ज्ञान बरसावत ध्यावे।
रामप्रकाश वे गुरू भक्त सब, परम पुरुषार्थ सहज ही पावे।।२५।।
सतसँग सुधामृत सागर है सत, जीव सो जाय के स्नान करावे।
तीन हूँ ताप रु पाप अनेक हूँ, जनम जनमान्तर के सब जावे।।
पावन जीवन सुमिरण ध्यान से, भव सागर भव से तर पावे।
रामप्रकाश तब सूझ परे कछु, ब्रह्मज्ञान मे नित समावे।।२६।।
श्रद्धा स्वरूप से सतगूरू पावत, प्रारब्ध उतम उतम पावे।
द्रढ विश्वास रु मनोभाव से, साधन सतसँग चित लगावे।।
सन्तन भाव सेवा कर धारण, ह्रदय हरि से ध्यान लगावे।
रामप्रकाश मानव तन उज्वल, परम पदार्थ सहज समावे।।२७।।
पूर्व भाग से मात पिता गुण, नानी के सँग सतसँग लाये।
सन्तन के सँग वचन सुने तब, साधन तीन जिज्ञासा के आये।।
सतगूरू के शरणापन्न आवत, ज्ञान के साधन तीन उपाये।
रामप्रकाश निज विरद को जानत, मस्त भया सब भेद भुलाये।।२८।।
प्रमाद भ्रम रु मोह अज्ञानता, भव भ्रमण का कारण भाई।
निश्चय आतम विस्मृति पूरण, सतगुरू ज्ञान विमुखता आई।।
सुनो सुनो मेरे आत्मीय बान्धव, भगवद् स्मृति रखो सदाई।
रामप्रकाश नित सन्त सानिध्य, सतसँग में रहो लग्न लगाई।।२९।।
दुर्जन सँगत अग्निवत दाहक, कोयला कालिख रँग उपावे।
जलता होय तो दाह करे वह, बाहिर भीतर कलह करावे।।
दुर्गुण दोष उपावत है घट, दुर्व्यशन नशे कर नीच बनावे।
रामप्रकाश तजो सँग दुर्जन, सजन सँग सदा सुखलावे।।३०।।
सिद्ध के साथ में साधक होवत, कामी के साथ मे होवत कामी।
लोभी के सँग ते लोभ ही लागत, क्रोधी के साथ मे क्रोध हरामी।।
मोह बढे परिग्रह परिजन के सँग, सँग का दोष लगे बहुनामी।
रामप्रकाश करो सतसँगत, सतगुरू सँग मे हो निष्कामी।।३१।।
सतसँग वही है जग में सुन्दर, श्रोता वक्ता हो योग्य सँचारी।
अनुबन्ध चार सहित जिज्ञासु जन हो, मरियाद सहित हो अधिकारी।।

ब्रह्मवेता हो सतगुरू सामर्थ, बैठ एकान्त विवेक विचारी।
रामप्रकाश ब्रह्मानन्द पावत, वा सतसँग की हूँ बलिहारी।।३२।।
करे सतसँग सदा दिन रात ही, तापड़ तोड़ के धूम मचावे।
वाद विवाद करे मन माफिक, बीड़ी नशे कर चाय चलावे।।
अलाप कलाप है ताल बिना स्वर, विवेक बिना जहाँ सन्त बुलावे।
रामप्रकाश मतसँग वही नित, समय बरबाद नही लाभ कमावे।।३३।।
भाव न भक्ति है कण्ठ न शक्ति है, देश काल बिन रागनि गावे।
नशा अचे रु गुमान भरे मन, बिना विवेक की बात चलावे।।
सगे सम्बन्ध सब आवत है वह, बैठ जाणे नही पाँव उठावे।
रामप्रकाश ये लाभ नही कछु, सतसँगत का नाम लजावे।।३४।।
यज्ञ व्रत पूजन शुभ कर्म की, कथा है श्याम यमुना की धारा।
मन्त्र उपासना श्रद्धा सतगुरू, गँगा निर्मल पाप प्रहारा।।
ब्रह्मात्म का अद्वय चिन्तन, भूमा सरस्वति शूक्ष्म प्यारा।
रामप्रकाश सतसँग प्रयाग में, त्रिवेणी न्हावत सन्त हमारा।।३५।।
यदि कुँकम से मिलते चावल, मस्तिष्क माँहि वो तिलक सुधारे।
यदि वह कोई दाल के साथी, खिचड़ी भात का रूप सँभारे।।
ऐसे सज्जन सतसँग मे सुधरे, उच्च पद को जाय निहारे।
रामप्रकाश सतसँगत के फल, तत्काल नर पावत सारे।।३६।।
बाँस की बाँसुरी के समान ही, जीवन मे बहु छेद घनारे।
सज्जन कोई बजाय के जानत, राग सुराग अनेक सुधारे।।
कोई बजाय के जानत ना तब, हवा हवा कर फूँक बहारे।
रामप्रकाश बजावन सीख लो, सतगुरू सतसँग जीवन प्यारे।।३७।।
प्रथम आचार रहे नित जीवन, सात्विक शुद्धता होवे मन लाई।
सात्विक विचार में अन्तःकरण हो, सतगुरू सन्त की सीख सदाई।।
व्यवहार शुद्धि जब हो परिवार में, सतसँग नित होवे घर माई।
रामप्रकाश घर देव बसे सब, पर उपकार मय जीवन भाई।।३८।।
जीवन एक सफरनामा सुन्दर, जीवन की शैली अनोखी प्यारा।
प्रपँच मय रोकर जीवन सो, अतिशय लम्बा दुःखद अपारा।।
हँस कर ज्ञान गरिमामय सुन्दर, जीवन बीतत सुख मय सारा।
रामप्रकाश सतसँग गुरू मुख, आनन्द मय जीवन सुन्दर धारा।।३९।।
उतम महाशय सँगत ते सुख, सम्बन्ध गन्ने सम जान ले भाई।
तोड़ दो मोड़ दो काट दो कैसे भी, कुचल दो तो भी रस दे ताई।।
सज्जन सँग निभाव करो नित, गन्ने सम जानिये गुण को ताई।
रामप्रकाश करो नित पावन, सतगुरू सँग सद सुखदाई।।४०।।
राम कृपा सुभ भाग्य उदय जब, सन्त की सतसंग सदा मिल जावे।
मूर्ख हो विद्वान सुजान रु, व्यशन दोष सभी छिटकावे।।
पापी होय पुण्यात्म पूर्ण, यश मान बढे रु प्रतीष्ठा पावे।
रामप्रकाश धन भाग होवे तब, जीवन सफल परम फल आवे।।४१।।

फल से वृक्ष रु पुष्प लता सँग, दूध से गाय सो सोभा बढावे।
पतिव्रत नारि रु कँज से ताल है, यज्ञ मन्त्र से अग्नि सुहावे।।
शशि से रात रु गज मँद चाल, धर्मात्मा मानव लोक सरावे।
सतसँग सोई विद्वान से शोभित, रामप्रकाश यह नीति बतावे।।४२।।
सतसँग उपवन सिद्धान्त पादप, शास्त्र पुष्प के रँग अति न्यारे।
सन्त सुगन्ध मरियाद क्यारी बिच, मत विभिन्नता वल्ली सुविचारे।।
मन मानन्दी बिगड़ेल कपि जिमि, बाड़ी उजाड़त भेष सँवारे।
रामप्रकाश काषाय गले धर, नाचत घर प्रपँच के द्वारे।।४३।।
गृहस्थ होकर सँगत के वश, विरक्त होय साधन अपनावे।
त्यागी होकर सँग प्रभाव से, गृहस्थ बने प्रपँच रचावे।।
कदली सीफ रु भुजँग के सम, एक बूँद फल भिन्न दिखावे।
रामप्रकाश सतसँगत के फल, लोक परलोक में प्रतक्ष मिलावे।।४४।।
सतसँग करे जन दश प्रतिशत, पाँच प्रतिशत श्रोता है सारा।
तीन प्रतशित श्रवण करे गुनि, ज्ञान वेदान्त को जाणणहारा।।
एक प्रतशित प्रकिया को मानत, जानत मनन बोध विचारा।
रामप्रकाश है करोड़ मे कोइयक, लक्ष लखे चित चेत आचारा।।४५।।
कोटिक है कर्मकाण्ड मे झूलत, लाख़ों उपासना व्रत को धारे।
हजारों व्यवहारिक ज्ञान को जानत, तीन हू काण्ड मे उलझन हारे।।
सैकड़ों श्रोता गुरू भक्त है सेवक, श्रद्धालु है दश पाँच सुधारे।
रामप्रकाश कोई एक जिज्ञासु है, ज्ञान विवेक के साधन वारे।।४६।।
द्वार करो या भवन बना बहु, कद ऊँचे कितने कर डारे।
बातन के धनी बनो नित्य भल, कद बढे नही छतर के धारे।।
दया मैत्री रु विद्या साधन, यह सब कद बढावन हारे।
रामप्रकाश ब्रह्मज्ञानी सतसँग, मुख्य कद बढावन वारै।।४७।।
खोई सम्पति श्रम से मिलती, खोया ज्ञान अध्ययन से आवे।
खोया स्वास्थ औषधि से पावत, खोया राज्य भी युद्ध से लावे।।
विश्वास समय के जाने से, लाख उपाय कर फेर नही पावे।
रामप्रकाश सतसँगत का फल, जन्मान्तर तक अमर रहावे।।४८।।
मित्र पुस्तक विचार रास्ता, चारों यदि शुद्ध मिल जावे।
जीवन की शुद्धता अहल बने तब, धन मान अरु यश बढावे।।
दुर्भाग्य वश गलत मिले गलत तो, जीवन सोई भृष्ट बनावे।
रामप्रकाश सतसँग सुधारत, कुसँगी दुःखी अरु कष्ट उठावे।।४९।।
एक हि कूप के जल से सिंचित, क्यारी अनेक जो न्यारी न्यारी।
आम केरूंदा केला नारंगी, ईख गेहूं रु चना ज्वारी।।
सब के स्वाद रु गुण धर्म भिन्नता हो, जैसी संगति संस्कार को धारी।
रामप्रकाश जैसी होवे सँगत, फल स्वभाव तैसी मति प्यारी।।५०।।

मेली है चादर अनन्त युगों की, अन्तःकरण मे सन्चित सारे।
मल विक्षेप सें चित चँचलता में, जब जब देखा तब चित हारे।।
सतसँग पाय के धोये कछुक, कछुक साधन मन के धारे।
रामप्रकाश सतगुरू शरणागत, आवर्णं सहित सभी मल टारे।।५१।।
शब्द मृगवत स्पर्श गजवत, रूप पतँग रस मच्छी सागे।
गन्ध भँवरवत मनवा डोलत, घर प्रपँच प्रलोभन तागे।।
मोह अज्ञान के बन्धन उलझत, कहिये ध्यान किहीं विधि लागे।
रामप्रकाश सतसँग गुरू मुख, अभ्यास पाठ निरन्तर दागे।।५२।।
सतसंग हाट में संत शाहुजन, हीरा पन्ना नग बिणजण हारा।
और अनन्त विचार भरे नग, ग्राहक पारख बिन मूल्यांकन न्यारा।।
मन्द बाजार में जिज्ञासु ग्राहक, आवत है कोई जाणण वारा।
रामप्रकाश वह भाव से पावत, लोक परलोक में होय सुधारा।।५३।।

।। दुष्ट को सँग ।।

सिंह इत्यादिक हिंसक जीव सो, सर्प दँशे भल जीव ही चाटे।
ठग चोर डकेत हते तन को, तब कष्ट परे बहु प्राण को डाटे।।
इन के दुःख को मानत ना हम, दुष्ट जो वार ही वार में काटे।
रामप्रकाश सह्यो नही जावत, दुष्ट को सँग न दे प्रभु बाटे।।१।।
साँप के मुख में दन्त बसे विष, बिच्छु के डँक हलाहल राजे।
काहू के दन्त रु खुर बसे बहु, पशु रु पक्षी में हलाहल साजे।।
मानव के मन जहर बसे बहु, हृदय कालिख कपट ही बाजे।
रामप्रकाश गुरू मुख सतसँग, जहर मिटे मन मोक्ष नवाजे।।२।।
आतम रक्षा हित पृकृति ने दिये, लाख चौरासी तन जीव के बाजे।
सींग दिये नख दन्त ही तिक्षण, अस्त्र शस्त्र तन साथ ही साजे।।
मानुष को दिये सुख सुविधा हित, सुन्दर देह परमार्थ काजे।
रामप्रकाश तन मन मे विष, देह रक्षा सँग करत अकाजे।।३।।
कुछ अज्ञान के कारण बिगड़े रु, कुछ प्रमाद से धन मद गरवाये।
कुछ बिगड़े वो ज्ञान गर्व से, कुछ भेष पहन के बढ पाये।।
कुछ लोगो को बिगड़े हुओ ने, दिये सँग के रँग डुबाये।
रामप्रकाश सँसार है सुन्दर, बिगड़ो ने द्वन्द के भाव फैलाये।।४।।
साँप बिच्छू रु चूहे सम दुष्ट है, मुख के बिम्ब ते वाक निकाई।
पर अकाज के करण काटत, आपन काज न पेट न भराई।।
ओला गले खेती हो नाश रु, आप रहे नही साबित भाई।
एक ही बार यह काटत है सब, रामप्रकाश वे दुष्ट सदाई।।५।।
महाभारत यह नीति बतावत, मानव समाज के हेतु लखावे।
उपकारी सँग उपकार करो नित, हिंसक साथ प्रति हिंसा जतावे।।
दुष्ट के सँग दुष्टता करिये, अपनो कारज आप निभावे।
रामप्रकाश कोई दोष नही यह, राजनीति यह धर्म सिखावे।।६।।
साँप डसे डँक पेट भरे नही तन, चूहा कटे पट नाज नसावे।

ओलावृष्टि कृषि नाश करे निज, आप गले परहित गलावे।।
दुष्ट जन पद पद ते काटत, निज अनहित हित आप मिटावे।
रामप्रकाश भल नर्क परो पर, दुष्ट को सँग कदापि न भावे।।७।।
खटमल माच्छर जूँ लीखादिक, चींचड़ चुरणिया सब दुःखदाई।
बिच्छु साँप रु सिंह रोगादिक, भौतिक देह को पीड़ित पाई।।
दुर्जन दुष्ट रु निन्दक शत्रु जन, तन मन पीड़ित करे सदाई।
हे प्रभु दुष्ट को सँग न दीजिय, रामप्रकाश यह अरज सुनाई।।८।।

।। मुर्ख के लक्षण।।

बिना बुलाये जावत है कहीं, काम से अधिक बात बनावे।
दोय व्यक्ति जब बात करे कोई, बीच मे जाकर बात कहावे।।
बिना विचारे काम करे कोई, हानि लाभ नहि ज्ञान संभावे।
रामप्रकाश यह मुर्ख लक्षण, अविश्वासी पर विश्वास जमावे।।१।।
पुष्प अवान्तर फल ही आवत, आम समान कहै रु कमावे।
पुष्प रु फल सँग सहतूत मे, कहना करना साथ दिखावे।।
फल विहीन गुलाब सुगन्ध है, केवल कह नही काम करावे।
रामप्रकाश कोई बाँस समान है, पुष्प रु फल एक ना आवे।।२।।
पत्थर धातु की मूर्ति बनाकर, थापत पूजत देव मनावे।
चूहे शेर रु बैल पक्षी सब, मूरख मानत सँग पूजावे।।
मानव में मानव नही देखत, फूटी आँख विवेक बिनावे।
रामप्रकाश है मानव अँधक, मूरख समाज को कोउ समझावे।।३।।
पाँव का भाव सो पँगुल जानत, हाथ की कीमत खूँखा ही जाने।
प्रज्ञाचक्षु सो जानत है सब, आँख का भाव भली विध माने।।
श्रवण कीमत बहरा ही जानत, वाणी का महत्त्व गूँगा मन आने।
रामप्रकाश सब ही जन जानत, ज्ञान को भाव मूरख ना छाने।।४।।
गुरू मर्याद को जिज्ञासु जानत, पति महत्व सो पतिव्रता आने।
कला की कीमत जाने गुणवान ही, ज्ञान महात्म ज्ञानी जन माने।।
देह महात्म सन्त ही जानत, श्वासोश्वास में हरि रस गाने।
रामप्रकाश सब ही जन जानत, ज्ञान को भाव मूरख ना छाने।।५।।
इष्ट को महात्म भक्त भक्ति मन, मन्त्र महात्म जापक जाने।
तप को महात्म तपी ही जानत, कृषि की रीती कीसान ही आने।।
नीति रीती विद्वान गुणी जन, विद्या को महत्व विद्वान ही माने।
रामप्रकाश सब ही जन जानत, ज्ञान महात्म मूढ ना छाने।।६।।
काव्य के गुण कवि जन जानत, रस अलँकार ददाक्षर छाने।
ग्रन्थ महात्म ग्रन्थी जन छानत, ग्रन्थी तीन की भाति पिछाने।।
दोहा दगड़ रु दाम को जोड़न, कोईयक चातुर सो विधि जाने।
रामप्रकाश सब ही जन जानत, ज्ञान महात्म मूढ ना माने।।७।।
भोजन को गुण भूखा ही जानत, जल महात्म प्यासा ही माने।

धन महात्म दरिद्र नारायण, लावत खावत वोही जाने।।
ज्ञान अज्ञान को ज्ञानी जन जानत, आतम ज्ञान हृदय बिच आने।
रामप्रकाश सब ही जन जानत, बुद्धि प्रभाव को मूढ ना छाने।।८।।

।। प्रेम का अंग ।।

प्रेम को नाम सभी जन भाखत, प्रेम रस नही हाट बिकावे।
तन मन भेंटत प्रेम को पावत, तिथि वार को समय भुलावे।।
आँख रु श्रवण देखे सुने बिन, चित में चैन जरा नही पावे।
रामप्रकाश जो मुख न बोलत, नैनन अश्रु की धार बतावे।।१।।
प्रेम ही एक व्यवहार निभावत, प्रेम बिना परिवार न पावे।
प्रेम सँसारिक जीवन है यह, या बिन जीवन शून्य कहावे।।
परमार्थिक प्रेम है ईश मिलावत, सतसँग सतगुरू ज्ञान दिलावे।
रामप्रकाश बड़भाग ते पावत, पन्थ रु ग्रन्थ ये सन्त बतावे।।२।।
प्रेम बिना जग जीवन शून्य है, जगत और जगदीश को भावे।
प्रेम ही सार सँसार के भीतर, या बिन सृष्टी शून्य हो जावे।।
भक्ति रु युक्ति रु भुक्ति मुक्ति सब, प्रेम बिना सब एक ना आवे।
रामप्रकाश जो प्रेम होवे घट, वाँच्छित मन पदार्थ पावे।।३।।
प्रेम बढावत प्रेम मिलावत, प्रेम बिना नही आँख मिलावे।
प्रेम ही जीवन तत्व है निर्मल, पशु पक्षी जड़ चेतन चावे।।
रस कस रु जड़ी जड़ चाहत, प्रेम ही भाव स्वभाव मिलावे।
रामप्रकाश यह सृष्टि का प्राण है, प्रेम बिना जग नाहि रहावे।।४।।
प्रेम बिना नही जग का जीवन, प्रेम बिना सब काम रुकावे।
व्यवहार और परमार्थ साधन, प्रेम बिना नही एक भी भावे।।
प्रेम बिना सब शून्य है ब्रह्मण्ड, प्रेम तत्व निज मूल रहावे।
रामप्रकाश पृवृति रु निवृति, प्रेम के कारण भेद दिखावे।।५।।
प्रेम रखे सब मिलकर भावुक, सतसँग सतगूरू से प्रेम निभावे।
शुद्ध भावना शुद्ध ही जीवन, शुद्ध प्रेम का नियम ही पावे।।
ढाई अक्षर प्रेम के पूरण, भेद बिना नर भटक गमावे।
रामप्रकाश हरि गुरू भक्ति में, मस्त सदा भव में निरदावे।।६।।
प्रेम ही जीवन तन मन धारण, प्रेम को धन जिन लोग कमायो।
या जग आयके प्रेम कियो जिन, व्यवहार परमार्थ आप भुनायो।।
प्रेम पदार्थ अद्‌भूत पायके, अपने आप को जिन भुलायो।
रामप्रकाश इतिहास अमर कर, धन्य धन्य हो नाम कमायो।।७।।
प्रेम प्रवाह सिन्धुवत प्रबल, उलटी धार से तेज बहावे।
किनारे बैठ के बात करे वह, भवसागर की धार डुबावे।।
प्रेम के सिन्धु में डूबत है वह, भवसागर से पार है जावे।
रामप्रकाश हरि रस सागर, डूबे सामर्थ सो तरे तरावे।।८।।
प्रेम कथा बहु कहत सुनत बहु, नाटक चेटक नाचन चावे।
साँसारिक प्रेम डुबावत है भव, हरि का प्रेम सो जीव डूबावे।।

डूबत सोई तरे भवसागर, जनम रु मरण में फेर ना आवे।
रामप्रकाश सो निर्गुण सर्गुण, दोनों प्रवाहित पूरण पावे।।९।।
प्रेम व्यवहारिक और पारमार्थिक, दोनो तन मन साख भुलावे।
आशिक माशुक में इश्क एक है, दोहु भी बलिहारि सिखावे।।
व्यवहारिक भव माहि ले जावत, परमार्थिक मुक्ति माहि पठावे।
रामप्रकाश प्रारब्ध सँयोग ते, ईश्वर कृपाघन आप निभावे।।१०।।
प्रेम ही पावन सृष्टी सधावत, प्रेम बिना जग शून्य लखावे।
प्रेम रुचे तँहि सब कोई लेवत, शीश दिये बिन हाथ न आवे।।
प्रेम ते हरि जग भाव दिखावत, भव या मुक्ति माग सिधावे।
रामप्रकाश प्रेम को पायक, तिन ते हरि सहज ही पावे।।११।।
काश्त कृषि नही प्रेम उपावत, वन उपवन नही प्रेम उपावे।
बाग उद्यान मे प्रेम फले नही, सृष्टी मे अद्वीतिय हृदय लखावे।।
ईश्वरीय तत्व हृदय गत पूर्ण, ईश्वर के ढिग आप बसावे।
रामप्रकाश जग प्रेम बिना सब, सृष्टी भव में रहण न पावे।।१२।।
मनोमय पुरातन हाट में पावत, साच रु झूँठ के दो विधि भारी।
प्रेम मिजाजी जगत के भाव से, होय मिटे वह पलक बाजारी।।
प्रेम प्रधान सतगुरू के भाव से, ईश्वर के रूप मे होय हजारी।
रामप्रकाश खरीद के पावत, मान रु इज्जत दोय बिगारी।।१३।।
सात्विक प्रेम मे सतगुरू ईश्वर, सत्य का भाव ना लेवन देवन हारा।
राजस प्रेम है मोह भरा जीवन, लेत रु देत रहे क्रम सारा।।
तामस प्रेम में कलह रु लालच, क्रोध रु मोह बढावत हारा।
रामप्रकाश है विशुद्ध निष्काम से, परम कल्याण दिलावन वारा।।१४।।
प्रीत करो सदभावना सँगत, निष्काम रहो शुभ कर्म कमावो।
प्रीत करो मच्छी का जल सम, चन्द्र चकोर सी लग्न लगावो।।
पक्षी की प्रीत वृक्ष सम ना कर, पात झड़े उड जाय परावो।
रामप्रकाश पता नागर बेल सम, नेह से साची प्रीत निभावो।।१५।।
रूप विद्या धन जाति कुल कर्म को, प्रभु नही देखत कछु हमारे।
प्रभु प्रभाव प्रभुत्व अति प्रशिद्ध, मन के भाव रु प्रेम के प्यारे।।
जो शुद्ध भाव प्रभाव प्रभावित, भक्त अनन्त किये भव पारे।
रामप्रकाश बलिहारी पुरुषोत्तम, नमन करें हम वारम्वारे।।१६।।
प्रेम वशिकर शिबरी के फल, झूठे बेर में खा मन ललचायो।
सुदामा के चावल पाये हितचित, पुरी सुदामा को नगर बसायो।।
विदुरानी के कर विदुर के घर, केल के छिलके मे स्वाद लखायो।
रामप्रकाश है प्रेम से प्रसन्न, भाव भूखे भगवान कहायो।।१७।।
प्रेम के बाँटत लिखी रामायण, भाई ने भाई का हित पाला था।
राम ने भरत को भरत राम को, राज की गेंद उछाला था।।
जहाँ सम्पति का बँटवारा था, वहाँ महाभारत का जाला था।
रामप्रकाश यह प्रेम रु सम्पति का, बँटवारा बड़ा निराला था।।१८।।

भाव माही भगवान विराजत, भाव की भूख रही नित छाई।
भाव से विदुर घर जावत, भाव से शिबरी के बेर को खाई।।
भाव समान पावे हरि दर्शन, भाव माहि भगवान समाई।
रामप्रकाश मन भाव कमावत, भाव बिना हरि पावत नाई।।१९।।
देह से प्रेम है तो आसन कीजिये, प्राण से प्रेम प्राणायम करावो।
आत्मा से प्रेम तो ध्यान करो नित, सतसँग गुरूमुख नियम सधावो।।
यदि प्रेम होवे परमात्म से तब, समर्पित भाव से समर्पण लावो।
रामप्रकाश हो ज्ञान से भाव तो, सतगुरू से नित प्रीत निभावो।।२०।।
दूध में शक्कर मिले रु रले पुनि, एक स्वरूप हो मित्रता पावे।
जल मिले जब दूध के साथ में, आपने रँग स्वभाव दिलावे।।
जल के बिछुड़े दूध बहे वह, आपने मीत को ढूँढन जावे।
मीत मिले से शान्ति पावत, रामप्रकाश यों प्रेम निभावे।।२१।।
शक्कर दूध से जल मिले तब, सज्जन मित्रता योंही निभावे।
प्रेम की रीत को सज्जन जानत, समर्पित भाव से जीवन बितावे।।
तेल सँग जल जाय मिले तब, दुर्जन द्वैत को यों दरसावे।
रामप्रकाश उदाहरण देखत, मित्रता भाव समझ में आवे।।२२।।
वन में वट पर पक्षी गण आलय, वन में बेहद आग लगी भारी।
वट ने कहा अचर हम प्राणी, उड चलो तुम चर सब झारी।।
फल खाये हम आश्रय पाये, सँग जले यह बात हमारी।
रामप्रकाश कृतज्ञ प्रेम यह, सुख दुःख सहन करे सँग धारी।।२३।।
आकर्षक जग में सुन्दर अक्षर, प्रेम बराबर और न जोई।
ढाई अक्षर बिन जीवन शून्य है, जीव चराचर चाखत सोई।।
प्रेम जब हृदय ऊपजावत, तिथि वार समय नही देखत कोई।
रामप्रकाश प्रेमी नही बोलत, आँख आँसु ढरकावन होई।।२४।।
पुष्प वो सुँदर सुगन्ध भरा जो, खिलता महकता मन भाता हैं।
प्रेम वही जो समय ना देखत, नैन सैणो मै नूर झलक जाता हैं।।
ज्ञान वही जो रहे उर समृति, पलक भर भुलाया नही जाता हैं।
रामप्रकाश सची कहै सन्तों, भक्त वही प्रेम भाव राता हैं।।२५।।
प्रेम पारमार्थिक होय हकीकी, ईश्वर विरह में योग कमावे।
नवधा भक्ति भक्त कमावत, परम पदार्थ सहज ही पावे।।
प्रेम स्वार्थ में इन्द्रियन भावत, इश्क मिजाजी ताहि बतावे।
रामप्रकाश अनुराग में ईश्वर, राग साँसारिक सुख भोगावे।।२६।।
पशु पक्षी मानव सब ही को, प्रेम की प्यास सदा मन भावे।
प्रेम को चाहत प्राणी मात्र सब, बिना प्रेम कोई पास न आवे।।
प्रेम वशिकर भगवत पावत, अनन्तों भक्त इतिहास बतावे।
रामप्रकाश प्रेम पुरुषोत्तम, परम पुरुषार्थ प्रेम कहावे।।२७।।
भाषा रु वक्तव्य काव्य का, अनुवाद होवत आया सदाई।
श्रद्धा रु भावना अनुवाद बिना नित, अनुभव समझ में आवत भाई।।

प्रेम नियम श्रद्धा से भावत, हरि गुरू जन मानत आई।
रामप्रकाश कोई ममत्व ही जानत, हृदय में भाव की हो गहराई ।।२८।।
प्रेम जो चाहत सर्वस समर्पण, सर्वस निष्ठा विश्वास ही चावे।
साथ रहना समय चाहत, वायु रिश्ते ना मुफ्त मिलावे ।।
श्वास कदापि मिले नही निशुल्क, पहले श्वास को त्याग ही पावे।
रामप्रकाश नही त्याग बिना कछु, जीवन की तुच्छ प्यास बुझावे ।।२९।।

।। ढाई अक्षर का लेखा ।।

वक्र तुण्ड रु रिद्धि सीद्धि सत्ति, शम्भु सृष्टि रु कृष्ण कहावे।
दुर्गा शक्ति रु श्रद्धा भक्ति अन्त, ज्ञान रु ध्यान में त्याग दृढावे ।।
तृप्ति तृष्णा रु प्यार घृणा अस्थि, कर्म रु धर्म शत्रु मित्र जनावे।
ढाई अक्षर है प्रेम के साधक, रामप्रकाश यह वक्त दृढावे ।।३०।।
भाग्य व्यथा है ग्रन्थ रु पन्थ में, शब्द अर्थ सन्त सत्य लखावे।
अर्थ मिथ्या श्रुति ध्वनि अग्नि, मन्त्र तन्त्र कुण्ड मुण्ड को गावे ।।
यन्त्र प्राण रु त्राण अर्थी मित्र, शत्रु मृत्यु अन्त घृणा बतावे।
ढाई अक्षर है प्रेम के साधक, रामप्रकाश सत्य वक्त दृढावे ।।३१।।

।। भगवान प्रेम भाव के वसीभूत।।

।। घनाक्षरी छन्द।।

आयु यदि देखते तो, ध्रुव प्रहलाद नहीं तारे।
जाति धन देखते तो, शिवरी ना तारते ।।
व्यंजन के भूखे होते, विदुरानी के नहीं खाते।
ऐश्वर्य यदि देखते तो, दुर्योधन को ना टारते ।।
योनि को जो मन भाते, गज ग्राह तारे कैसे?
वर्ग यदि देखते तो, विभीषण कैसे सारते ।।
भक्ति एक माने प्रभु, प्रेम भाव के वह वसि ।
राघवप्रसाद हरि आचार ना विचारते ।।१।।
आचरण जो देखते तो, सुग्रीव विभीषण।
जाती व्यवहार हीन, उन्हे ना उधारते ।।
गर्वहारी गर्व हरे, बली और रावण के।
ऐश्वर्य अभिमान को, उपादान हारते ।।
रूप बल देखते तो, शिवरी द्रोपदी दोनों।
घटनाएं विपरीत तो, कारण निवारते ।।
भक्ति एक माने प्रभु, प्रेम भाव के वशि वह।
राघवप्रसाद हरि आचार ना विचारते ।।२।।
आवास को देखते तो, निषाद वनवासी कैसे?
रूप यदि देखते तो, कुब्जा शिबरी क्यों सुधारते ।।
कर्तव्य से सदना गणिका को कैसे?
कहा कहै प्रभु पाप ताप हारते ।।
रूप धन वास आयु मान।

सुग्रीव हनुमान को कैसे उपकारते ।।
भक्ति प्रेम भाव वसि ।
राघवप्रसाद हरि आचार न विचारते ।।३।।

।। स्वयं का चिंतन ।।

ज्ञान करो भल शास्त्र पढो वर, साधन योग अद्वैत विचारो ।
सतसँग जप रु तीर्थ करो तप, वनवास करो एकान्त विहारो ।।
जो मन इच्छुक भोगन को बरु, वासना चित में होय हजारो ।
रामप्रकाश विचार करो मन, किये साधन सब होय असारो ।।१।।
ऋषि मुनि जन पूर्वाचार्य श्री गण, गुरु परम गुरू आदि मनाई ।
वन्दों चरण कमल युग मँगल, अन्तस्थ के मल दोष हटाई ।।
विघ्न निवारक आनन्द दायक, ब्रह्म विद्या चित चेतन थाई ।
रामप्रकाश अभय पद मुक्तक, ब्रह्म के चिन्तत ब्रह्म समाई ।।२।।
मानव और के औगुण देखत, अश्रद्धा ईर्षा रु द्वैष उपावे ।
आपने जीवन की न्यूनता जानत, प्रेम श्रद्धा विश्वास जमावे ।।
और को जीतन स्वल्प आनन्द, स्वयँ की शास्वत आनन्द पावे ।
रामप्रकाश यह मानव नीति है, पालन किये परम सुख आवे ।।३।।
चिन्ता करो मत दु:ख का कारण, समाधान नही होवन हारा ।
रोग उपद्रव उपाधि नाना विध, सँकट बाधा को नो तन वारा ।।
चिन्तन शुभ करो नित हरि मन, हो समाधान सिद्ध कारज सारा ।
रामप्रकाश चिन्तन सुख कारण, हरि स्वरूप आप सुख धारा ।।४।।
सतगूरू देव रु इष्ठ बल आश्रित, जो जन जीवन आप गुजारे ।
सद् गुण साधन नित करे नव, सन्त रु सतसँग माँहि विचारे ।।
शास्त्र सार सिद्धान्त पढे मन, परम पुरुषार्थ हृदय धारे ।
रामप्रकाश वेदान्त हितार्थ, ग्रन्थ अध्यात्म नित्य चितारे ।।५।।
मानव को लक्ष्य है मुख्य प्रयोजन, मुख्य पुरुषार्थ मोक्ष है भाई ।
सतसँग कर ले ज्ञान परमार्थ, ब्रह्मवेता सतगुरू की शरणाई ।।
श्रवण मनन और निदिध्यासन, चित के भीतर ठीक जमाई ।
रामप्रकाश ले ब्रह्म को चिन्तन, चित के भीतर चित समाई ।।६।।
ज्ञान अज्ञान अज्ञात भये सब, जीव रु ईश भी गौण असारी ।
माया तादात्म्य भिनाभिनित, मिथ्यात्व प्रपँच सर्व निवारी ।।
परम सच्चिदानन्द लख्यो जब, और सभी कछु चाह विडारी ।
रामप्रकाश को राम रह्यो निज, एक ही व्यापक ब्रह्म विचारी ।।७।।
सतगूरू सन्त है ब्रह्म स्वरूप में, सदा निर्मोह निर्लिप्त सदाई ।
जल कमलवत है जग भीतर, शुद्ध व्यवहार सिखावत भाई ।।
आप सदा शुद्ध जीवन धारत, निर्गुण ते वही धरा पर आई ।
रामप्रकाश शिक्षा दीक्षा नित ही, ब्रह्म के चिन्तन माहि समाई ।।८।।
गावत वेद पुराण सभी सन्त, सत चित आनन्द अभेद अपारा ।
भेद सभी प्रपँच के भीतर, ज्ञान निवारक साधन चारा ।।

शम दम रु उपराम वैराग में, श्रद्धा समाधान सँग होय विचारा।
रामप्रकाश अध्यात्म चिन्तन, पावत गावत मोक्ष का द्वारा ।।९।।
देह भाव से हरि गुरू दास हूं, शरणागत के भाव हमारे।
जीव भाव से ब्रह्म को अंश हूं, करूं उपासना ईश्वर चारे ।।
लक्ष्य सिद्धान्त स्वरूप को भावित, सदा अभेद अद्वैत विचारे।
रामप्रकाश अधिष्ठान अनुपम, वेद वेदान्त सो मोहि पुकारे ।।१०।।
निज स्वरुप की निष्ठा भयी तब, और उपाधि रही ना कोई।
भोजन भिक्षा प्रारब्ध शिर, व्यर्थ चेष्ठा मूल से खोई ।।
आनन्द रूप भया चित चेतन, अनर्थ निवृति प्रपँच धोई।
रामप्रकाश परमार्थ पूरण, द्वन्द अपेक्षा और न होई ।।११।।

।। स्वयँ का स्वरूप ।।

परम परमेश्वर सत चित आनन्द, अचल अखण्ड अनापेक्षित सोई।
व्यापक ब्रह्म अगोचर पूरण, अनन्त अपार रु निर्द्वन्द होई ।।
भावातीत रु ज्ञान स्वरूप जो, द्वैत अद्वैत का शब्द न कोई।
रामप्रकाश है स्वयँ स्वरूप में, आप ही आप में आनन्द जोई।।१।।
चिदाभास का जो अधिष्ठान है, देखत उलट के आपनो सोई।
ब्रह्म नही पर ब्रह्म ही भासत, सो कुटस्थ अधिष्ठाता वोई ।।
कुटस्थ अधिष्ठानी जानत मानत, बोलत बोल महा अनुभोई।
रामप्रकाश कहै निज वाचक, जान लियो निज रूप घनोई ।।२।।
हर्ष न शोक न आवन जावन, जनम रु मरण को भय मिट्यो है।
तादात्म्य सम्बन्ध को जान लियो जिन, द्वन्द्व को मूल अज्ञान हट्यो है ।।
पर अपर को भेद ढयो ब्रह्म, मन रु वाणी को भाव घट्यो है।
रामप्रकाश को निश्चय हुओ तब, सर्वोच्च सत्ता निज एक रट्यो है ।।३।।
भेद हटावत खेद मिटावत, भ्रम भगावत प्रेम बढावे।
सतसँग सुनावत ज्ञान बढावत, जीव रु ईश को रुप विलावे ।।
ब्रह्म स्वरूप निजानन्द चेतन, स्वयँ समर्थ गुरू माहि समावे।
रामप्रकाश सत चित सो आनन्द, आपनो आप को आप ही पावे ।।४।।
मन कुटस्थ लख्यो निज रूप ही को, चित चेतन भीतर होय समायो।
बुद्धि बोध के रूप विलाय रही तब, साक्षी स्वयँ हो ब्रह्म ही छायो ।।
चिद्स्वरूप अरुप रु व्यापक, नाम ओ रुप समूह विलायो।
रामप्रकाश सब सर्गुण निर्गुण, सर्व उपाधि को मूल समायो ।।५।।
सत चित आनन्द परब्रह्म पूर्ण, व्यापक शंकर रूप अनूपा।
अविगत एक अखण्ड अनाम सो, अविनाशी अपार अरूपा ।।
परम अनन्त अचल अधिष्ठान है, केवल अद्वय अनन्य भूपा।
उतम रामप्रकाश है आतम, शुद्ध अन्वय स्वयँ स्वरूपा ।।६।।
नित्यानन्द हूँ परमानन्द हूँ, सच्चिदानन्द हूँ एक अपारा।
पँचीकृत पँचीकरण नाही, कोशातीत त्रिगुण से न्यारा ।।
अजर अमर व्यापकता पूरण, भूमा अद्वय अजीत अविकारा।

रामप्रकाश अनूप अखण्डित, सर्वातीत स्वरूप हमारा ।।७।।
देश न काल दिशावृत नाहि न, वस्तु परिच्छेद दिक्कालादि ना होई।
एक न दोय त्रिगुण त्रयलोक न, वेद न भेद न छेदत कोई ।।
अजर अमर अखण्डित चेतन, सत चित अविनाशी है जोई।
रामप्रकाश व्यापक सब पूरण, स्वयँ स्वरूप हम सोई ।।८।।
मैं नही मन बुद्धि अहँकार हूँ, नही स्मृति ना श्रवण द्वारा।
नही मैं जिह्वा चक्षु इन्द्रियादिक, नही नभ वायु जल की धारा ।।
नहीं मै तेज स्वरूप सूर्यादिक, देह न देही शूक्ष्म गति वारा।
रामप्रकाश हूँ चेतन आनन्द, सोहम् स्वरूप सत्य निरधारा ।।९।।
एक अखण्ड अनन्त असँग है, व्यापक व्योम समान अपारा।
घट मठ पूर्ण एक बराबर, नाम रु रूप उपाधि से न्यारा ।।
अमाप अकाल अक्षर असीमित, सो अविनाशी है आरमपारा।
रामप्रकाश यों वेद कथे सन्त, नेति नेति स्वरूप हमारा ।।१०।।
सत चित आनन्द कन्द अद्वैत सो, सर्व सिद्धान्त के आरम्पारा।
वेद उपनिषद सन्त रु शास्त्र, नेति नेति कहि वर्णित सारा ।।
अनाक्षर नाम अनेक है कल्पित, सर्व उपाधि से चेतन न्यारा।
रामप्रकाश है सर्गुण निर्गुण, शुद्ध स्वरूप है सोई हमारा ।।११।।
योग न भोग न रोग प्रपँच भी, माया न काया त्रिगुण सारा।
भ्रम रु कर्म न वाद विवाद न, ज्ञान अज्ञान न मोह पसारा ।।
जान अजान न द्वैत अद्वैत न, नही त्रिपूटी लेश लिगारा।
रामप्रकाश निज सोहम् सोहम्, अहँब्रह्मास्मि व्यापक न्यारा ।।१२।।
आप को आप लख्यो निज केवल, सतगूरू सेन लखी ततसारी।
यज्ञ योग उपाधि को कौन करे अब, प्रपँच गौण गले सब ढारी ।।
माया जीव न ईश रहे कछु, भ्रम के भेद अभेद विडारी।
रामप्रकाश ब्रह्म एक अखण्डित, और अपेक्षित क्रिया निवारी ।।१३।।
सतगुरु आवत शब्द सुनावत, भेद मिटावत सँशय टारा।
हर्ष रु शोक मिट्या मन सर्वस, शान्त भया अब चित हमारा ।।
जनम रु मरण मिट्या भव बन्धन, जाग्या अन्तस्थ परम विचारा।
रामप्रकाश लख्या सत आतम, भाग्या भ्रम अज्ञान अँधारा ।।१४।।
हरदम हरदम श्वासोश्वास में, प्राण शक्ति है समर्थ धारा।
द्रष्टि सृष्टी का आश्रय वही सत, चेतन द्रष्ठा जाणण हारा ।।
परम पुरुषोत्तम सच्चिदानन्द है, यह एक अगोचर व्यापक सारा।
रामप्रकाश अधिष्ठान अधिष्ठित, साक्षी स्वरूप है सिरजणवारा ।।१५।।
सामान्य ब्रह्म हूँ सत चित आनन्द, घट मठ व्यापक बोलता प्यारा।
वही है भौतिक रूप मे बोलत, शब्द ब्रह्म के रूप आकारा ।।
नाम रु रूप मे एक समान ही, द्वन्द अकार का नाहि विकारा।
रामप्रकाश सामान्य विशेष ही, आप सदा परब्रह्म अपारा ।।१६।।
ना हम स्थूल रु शूक्ष्म कारण, अवस्था पँच कोशादिक कोई।

देश कालादिक वस्तु धर्म है, क्रिया अभिमान रु एक न दोई।।
जीव न ईश्वर ब्रह्म को शब्द है, अपेक्षित वाक्य रह्यो नही गोई।
रामप्रकाश सच्चिदानन्द सोहम्, नाम न रूप हुओ नही होई।।१७।।
ना हम हिन्दू मुस्लिम सिख इसाई, यहूदी पारसी यह भी नाई।
शैख शैयद मुगल पठान ना, हम ब्राह्मण क्षत्रिय भाई।।
वैश्य शूद्र कोई कहै मूरख, वाच्य अवाच्य कहते काई।
रामप्रकाश सच्चिदानन्द ब्रह्म हूँ, एकोहँ सोहँ आप सदाई।।१८।।
पाप रु ताप बिना शुद्ध आप ही, सच्चिदानन्द स्वरूप हमारो।
कर्म क्लेश लिपे न छिपे कछु, त्रिगुण रेश न वृद्ध न बारो।।
चेतन एक अखण्ड अगोचर, पूरण अचल निरोग अपारो।
रामप्रकाश है रामप्रकाश ही, अद्वय उतम अधिष्ठान उजारो।।१९।।
पाप न ताप न रोग से पीड़ित, शुद्ध सच्चिदानन्द स्वरूप हमारो।
एक अखण्ड अनूप परमानन्द, अद्वय उतम देव हूँ न्यारो।।
गुण त्रिगुण मे गुण ही वर्तित, भौतिक देह प्रपँच पसारो।
रामप्रकाश निष्प्रपँच नित्यानन्द, नही हूँ भोग रु भोगणहारो।।२०।।
अपने आप को लक्ष किया तब, द्वैत अद्वैत रहा नही ज्ञाना।
एक अरूप अनूप अगोचर, अपने आप हुआ मस्ताना।।
परम दीदार ज्योतिर्मय अनुभव, चन्द्र सूर्य जहँ सहस लजाना।
रामप्रकाश सतगुरु कृपा बिन, लखे नही सोई अनजाना।।२१।।
अतिविशाल अहँ ब्रह्म चेतन, सिन्धु समान स्वरूप हमारा।
मन बुध के सँकल्पित शब्द सो, सीमित लघु है क्षेत्र विचारा।।
शब्दातीत सत्य हम आतम, द्वन्द्वात्मक से परे अपारा।
रामप्रकाश है सत चित आनन्द, ज्ञानीजन सो जाणणहारा।।२२।।
नदी समूह सिन्धु महि जावत, नाम रु रूप सो सब ही भुलावे।
ऐसे ही ब्रह्म स्वरूप को लक्षित, मन बुद्धि गुण ज्ञान समावे।।
काष्ठ से अग्नि होत उद्योत ही, काष्ठ जले तब वहीँ विलावे।
रामप्रकाश चीन्हो सत चेतन, क्रिया साधन निज माँहि भुलावे।।२३।।

।। ब्रह्मज्ञान की महता ।।

कोई स्वर्ग में कोई वैकुण्ठ में कह, कोई साकेत के लोक बसावे।
कोईयक गौ लोक कैलाश में, मत मतान्तर मुक्ति बतावे।।
जीवन्मुक्ति की खबर नही तब, बाद की बात को कौन सुनावे।
रामप्रकाश ब्रह्मज्ञान बिना सब, स्वप्न की नींद मे मौद मनावे।।१।।
कोई कहै पितर लोक मे गति, कोई हिमालय जाय गलावे।
कोईयक बद्रीनाथ मे जावत, कोई गया जा गति करावे।।
विष्णुलोक मे ब्रह्मलोक में, आपने आपने मतान्तर ध्यावे।
रामप्रकाश ब्रह्मज्ञान निष्ठा बिन, स्वप्निल मुक्ति मौद मनावे।।२।।
हे सन्त पुरुषोत्तम महामानव, यहाँ ब्रह्मज्ञान शीशे की हाट लगाई।

अपने आप को देखले सब, परम पुरुषार्थ ज्ञान पाई ।।
पर यहाँ पत्थर के ग्राहक है सब, जगत जाल रहे अलुझाई ।
रामप्रकाश कोई जिज्ञासु भक्त, गुरू शरणागत कभीयक आई ।।३।।
हे सन्त माँझी तेरी कश्ती के, तलबगार बहु देखनहारे ।
जो आये वह सब पार गये, ब्रह्मज्ञान के थे जो मतवारे ।।
इस पार तो कुछ ही मगर, उस पार बहुत ही इन्तजारे ।
रामप्रकाश जो पार के इच्छुक, आयेंगे जो हरि के प्यारे ।।४।।
शहद सुधा जु श्वान को विष है, गौ घृत पाय मखी मर जावे ।
मिश्री मिष्ठान खर को विष है, काग निंबोली गरल हो भावे ।।
अमृत है ब्रह्मज्ञान महान सो, विषयी के मन नाहि सुहावे ।
रामप्रकाश अधिकारी बिना यह, अमृत पान हलाहल थावे ।।५।।

।। ब्रह्म ज्ञानी का अंग ।।

नित आनन्द मँगल मौज मस्त रह, प्रारब्ध आधार सदा विचरे ।
यत्र तत्र चाहे कुत्र रहो भल, मन में चँचलत नाहि अरे ।।
वन कलदल मन्दिर शहर में, सदा एकान्त थहि निखरे ।
रामप्रकाश रह्यो ब्रह्म विचार में, नाक रसातल धूर तरे ।।१।।
गूप अगूप रु रूप अरूप है, नाम अनाम अनाक्षर धारा ।
आप अपेक्षित रहित स्वरूप है, ता नही द्वैत अद्वैत का वारा ।।
स्थूल न शूक्ष्म कारण अकारण न, सर्व उपाधि से नित है न्यारा ।
रामप्रकाश सो चेतन शुद्ध है, ज्ञानी का निश्चय द्रढ विचारा ।।२।।
बीत गयो सब भूत काल ही, भविष्य की चिन्ता नाहि रही ।
चिन्तन कौन करे वर्तमान को, सब प्रारब्ध पर ही ढार दही ।।
नित्य निश्चिन्त ब्रह्मानन्द मे हम, तुम उपाधि को दूर ढही ।
रामप्रकाश अब छाय रह्यो सब, ओर में ही समद्रष्टि सही ।।३।।
ब्रह्मज्ञानी के पूण्यार्जन को, कहे लिखे कछु पार ना आवे ।
नित निष्काम करे शुभ कारज, नव उपकार उपदेश बतावे ।।
एक अज्ञानी को ज्ञान देवे वृत, भूमि के दान को पूण्य कमावे ।
रामप्रकाश प्रारब्ध भोगत, पूण्य योगमाया गोद समावे ।।४।।
नित्य ब्रह्मज्ञानी के पूण्यार्जन को, कहे लिखे कछु पार ना आवे ।
नित निष्काम करे शुभ कारज, नव उपकार उपदेश बतावे ।।
ज्ञानी के अकृत्रिम पूण्य प्रभाव से, नित्य नैमित्तिक अवतार धरावे ।
रामप्रकाश वो हो उपकारिक, ज्ञानी को पूण्य सदा सुख लावे ।।५।।
ब्रह्मज्ञानी के पूण्य अप्रमित, जो निष्काम निष्प्रह उपावे ।
परोपकारिक लेखन प्रवचन, अज्ञानी को उपदेश जनावे ।।
प्रारब्ध भोगत आयु विहावत, पूण्य अशेष पृकृति गत पावे ।
रामप्रकाश अपार पूण्यार्जन, बिन भोगे वे मुक्त समावे ।।६।।
ब्रह्म ज्ञानी जन सन्त दयाकर, ज्ञान विज्ञान के द्वार अचारी ।
परम विवेक परमार्थ पायक, हरि ही आवत नित्य अवतारी ।।

हरि नहि बोलत दीखत चालत, सन्त है चेतन मूरति धारी।
रामप्रकाश करे पद वन्दन, ब्रह्मज्ञानी जन देह हमारी।।७।।
ज्ञानी का विश्वास आश एक, प्रारब्ध कर्म लिखा मिल जायेगा।
भक्त को विश्वास एक ही, भगवान आप ले आयेगा।।
जिन को विश्वास नही किसी पर, वह निशिदिन भाग कमायेगा।
रामप्रकाश सब अपनी बुद्धि से, कर्म लिखा ही खायेगा।।८।।
नित्यानन्द हूँ परमानन्द हूँ, सच्चिदानन्द हूँ एक अपारा।
पँचीकृत पँचीकरण नाही, कोशातीत त्रिगुण से न्यारा।।
अजर अमर व्यापकता पूरण, भूमा अद्वय अजीत अविकारा।
रामप्रकाश अनूप अखण्डित, सर्वातीत स्वरूप हमारा।।९।।
मानव अज्ञानी की अपेक्षाकृत में, ग्रन्थ का पाठक श्रेष्ठ कहावे।
ताहि की अपेक्षा वाचनकारक, ताही ते श्रेष्ठ है लक्षण पावे।।
वाचक प्राणी ते ज्ञान के धारक, ताते उतम ब्रह्मज्ञानी थावे।
रामप्रकाश श्रेष्टतम श्रेष्ठ है, पदोन्नति पद पावत गावे।।१०।।
जरायुज अण्डज उद्भिज्ज स्वेदज, उत्पन्न होवत जीव अपारा।
स्थूल रु शूक्ष्म कारण शरीर में, त्रिकाल में एक प्रकृति गतसारा।।
नाम रु रूप आकृति अतीत से, जानत आतम कोइक सारा।
रामप्रकाश द्रष्टा होय जानत, वही ब्रह्मवेता है श्रुति पुकारा।।११।।
सत चित आनन्द केवल एक ही, व्यापक व्योम समान अपारा।
जीव न ईश्वर माया नही प्रपँच, जल तरँग ना भिन्न विचारा।।
सतगुरु मुख रु साधन सहित जो, निष्ठा निष्प्रह निर्द्वन्द सारा।
रामप्रकाश वह मुक्त स्वरुप हो, ब्रह्म मे लीन आनन्द भण्डारा।।१२।।
ज्ञानी ज्ञात अज्ञात को जानत, सतगुरु कृपा से पावत ज्ञाना।
अकथ कथन औघट चालन, साधन साधत सन्त विधाना।।
जीवन परम पुरुषार्थ पावत, सतसँग गुरु गम नीति सुजाना।
रामप्रकाश ज्ञानी गम दुर्गम, अगम निगम कथ गावत म्याना।।१३।।
ज्ञानी जन निर्मल है निष्काम जु, निष्प्रह आशक्ति रहित उचारा।
देखत ही रहे अदेखत जैसे, करत ही रहे निष्कर्म विचारा।।
नित ही दैहिक प्रारब्ध भोगत, शुभ सँस्कार कमावत सारा।
रामप्रकाश रहे निर्द्वन्दज नित, प्रकृति नियम निभावन हारा।।१४।।
हर्ष न शोक प्रसन्न अप्रसन, ब्रह्मज्ञानी के होवत नाही।
स्थिर बुद्धि में भ्रम न होवत, मोह न कोह विकार न काही।।
सँशय रहित ब्रह्मवित निष्ठ है, राग रु द्वैष सो द्वैत विलाही।
रामप्रकाश है ज्ञान विज्ञान में, मस्त महा सुख आप अथाही।।१५।।
ब्रह्मवेता सो ब्रह्म समान है, हर्ष शोक बिन आनन्द राही।
राग न द्वैष द्वैत अद्वैत ना, द्वन्द रहित नित बोध के माही।।
वाणी रु खाणी सो रहन अद्वितीय, श्रवण किये सो बोध बढाही।
रामप्रकाश मिटे भ्रम मूल हि, अज्ञ प्रमाद रहे नही ताही।।१६।।

ज्ञानी भगवत रूप विराजत, ईश्वर कला जाग्रत जब होवे।
भेषी सन्त की बात नही यह, ज्ञानीजन ज्ञानामृत जोवे।।
वाचक ज्ञान कथे सब पण्डित, वञ्चित पूण्य मूल को खोवे।
रामप्रकाश सन्त ब्रह्मवेता जन, परम पुरुषार्थ पावत पोवे।।१७।।
आतम ज्ञान भयो द्रढ पूरण, सब मे व्यापक एक दिखावे।
कौन सुने अरु कौन सुनावत? एक लख्यो फिर काहे सुनावे??
द्वैत बिना प्रमोदत और को ? यह कैसे कहो खोल बतावे।
रामप्रकाश यह जिज्ञासु को प्रश्न, ज्ञानवान सो कह दरसावे।।१८।।
ज्ञानी सन्त लिखे कवि भाषित, क्यो किस के यह हेतु बताओ।
कहा आवश्यकता आन पड़ी उर, आप में अन्य को कौन दिखावे।।
जान लियो तब मौन गहो निज, आप में मस्त रहो निरदावे।
रामप्रकाश व्यवहार परमार्थ, दोहू भाति सो को समझावे।।१९।।
मूढ अजान अज्ञात में डोलत, ताहि कहो कछु समझ न पावे।
ज्ञानवान को स्वयँ अति निश्चय, द्रढता में तिंहि काहे बतावे।।
क्यों कवि ज्ञानी सन्त कथे बहु, आवश्यकता का अनुमान लगावे।
रामप्रकाश यह जिज्ञासु के प्रश्न, ज्ञानी उतर खोल बतावे।।२०।।
विवेक ते सत असत को ज्ञान हो, असत को त्याग वैराग बतायो।
शम दम उपराम तितिक्षित, चार पुष्ठ वैराग ही ध्यायो।।
श्रद्धा सँग समाधान विचार ते, मुमुक्षु सतगुरू दर्शन पायो।
उतम जिज्ञासु को ज्ञान भयो चित, रामप्रकाश गुरू ब्रह्म लखायो।।२१।।
विवेकादिक साधन चार विधिवत, चित मे सँशय रँच रहायो।
ता हित सतगुरू सान्निध्य वास में, श्रवण मनन कर निश्चय आयो।।
मध्यम जिज्ञासु ताहि को गावत, प्रतिभासक सता मे आयु गमायो।
रामप्रकाश गुरु ब्रह्म श्रोत्रिय, भिन भिन के उपदेश बतायो।।२२।।
वैराग्य रहित विवेक विचारत, सतसँग शास्त्र को पाठ भनावे।
पृवृति कर्म प्रारब्ध के वश, जगत जाल मे जीवन बितावे।।
ताहित ब्रह्म निष्ठ रु श्रोत्रिय, सतगुरू वाणी को पाठ पढावे।
रामप्रकाश विवेकी समझत, सतसँग करे अद्रढ पद पावे।।२३।।
द्वन्द रहित रु स्वेच्छाचारी, सँशय रहित अनाशक्त होई।
अकिंचन अकेला ज्ञानी सो, सब भाव मे रमता सोई।।
पत्थर लोहा स्वर्ण माटी, एक समान निर्द्वन्द जोई।
टूट गयी है हृदय ग्रन्थि भी, रामप्रकाश है ज्ञानी कोई।।२४।।
मन की मौज से ऊठत बैठत, आवत जावत बोल बुलावे।
महल अटारी झोंपड़ी टाप में, मौन रहे चाहे नाचे रु गावे।।
खीर पुड़ी कभी लूखी रु सूखी हो, कभी फाके भी चित में भावे।
ब्रह्मज्ञान की मस्ती में हम, रामप्रकाश निज मुक्ति मनावे।।२५।।
जगत भगत से काम नही कछु, कोई काम नही कछु भीड़ से भाई।
होय जिज्ञासु दर्शन आवत, ज्ञान सुने मन शँक मिटाई।।

कूर कपूत सँसार की उलझन, लेकर आवत नाही भलाई।
रामप्रकाश निज आपनी मौज में, ज्ञान की मस्ती में मौज सदाई ।।२६।।
कभी गूदड़ी शाल दुशाल में, जीर्ण कन्था कभी ओढ रजाई।
खीर पुड़ी कभी लँघन फाके भी, मढी शमशान एकान्त सुहाई।।
वह सतसँग करे न करे निज, नित्य ही सत्य के सँग भलाई।
मस्त रहे नित रामप्रकाश में, ज्ञान की गरिमा पाय सदाई ।।२७।।
नित निष्प्रह निर्द्वन्द सदा मन, हो निष्काम रु मौज मनावे।
प्रारब्ध भोग निश्चिन्त रहे थिर, जहाँ चहे वहाँ विचरण पावे।।
निन्दो वन्दो जग चहे करे, अक्रिय उद्यम त्याग सुहावे।
रामप्रकाश ब्रह्मज्ञानी के लक्षण, वेद वेदान्त रु सन्त बतावे ।।२८।।
प्रज्ञा चक्षु दो नृत्य करे सँग तब, कौन किस पर मुग्ध ही होई।
ऐसे ही एक राम सिद्धान्त के, कोई विवाद करे अज्ञ जोई।।
दम्पति के रति रहस्य सुख को, नँपुसक जान सके नही सोई।
ब्रह्मज्ञानी के सुख रामप्रकाश को, मूर्ख अज्ञानी जाने नही कोई ।।२९।।
पक्ष विपक्ष न दक्ष अदक्ष ना, राग न द्वैष न दूर न नेड़ो।
पास नही वह दूर नही वह, एक न दोय शून्य ना खेड़ो।।
रात रु दिन की अपेक्षा हीन है, सो निर्द्वन्द स्वरूप है जेड़ो।
रामप्रकाश है आप को जाणणहार, कैसो बखान कहै कोन केड़ो ।।३०।।
ब्रह्मात्म लक्ष्य निश्चय भया द्दढ, मन वाणी अर्पित देहादि सारी।
अलाप कलाप उन्ही का होवत, वाणी मन्त्र मय वेद उचारी।।
शयन अष्ठाँग दण्डवत मानहूँ, कर्म पूजा मय क्रिया अपारी।
रामप्रकाश दृष्टिगत व्यापक, द्वैत भ्रम दृश्य दूर निवारी ।।३१।।
आज मरो चाहै काल मरो, अथवा युगान्तर काल सजीव परे।
लक्ष्मी चाहे रहे न रहे, भीख को भोजन भोग चरे।।
जग में चाहै स्तुति निन्दा रहे, सन्त न नीति को त्याग सरे।
रामप्रकाश ये पुरुषोत्तम लक्षण, तत्व निष्ठ इक चित करे ।।३२।।
महापुरुषोतम वही सृष्टि में जिन, उतम चरित्र जीवन बनायो।
निन्दा प्रशँसा एक समान है, सीख लीयो समभाव सुहायो।।
आनन्द शान्ति मय जीवन में, ब्रह्मज्ञान को मौद मनायो।
रामप्रकाश धन्य ब्रह्मज्ञानी वह, मानव जनम है सफल सवायो ।।३३।।
जो प्रसन्न रहे हर हालत में, हानि लाभ में विचलित हो नांही।
निन्दा करो स्तुति करो भलि, सावधान होवत है चित मांही।।
पाप हरे सब निन्दक जन रु, पूण्य लेवे सब सेवत तांही।
रामप्रकाश ब्रह्मज्ञानी है निष्प्रह, पाप रु पूण्य लिपे नहीं वांही ।।३४।।
त्यागी भये सुखदेव महामुनी, गृहस्थ में कृष्ण को कहै सब भोगी।
राजा जनक विदेह भये नृप पूरण, वशिष्ठ त्यागी भये महा पद योगी।।
रामचन्द्र महाराज भये जग, कर्म निष्ठ भये वशिष्ठ वियोगी।
रामप्रकाश भये ब्रह्मनिष्ठ सब, लक्ष्य एक समझते योगी ।।३५।।

गुरू गम आतम चीन्ह लिया हम, निश्चल पद को पाय लिया।
अजगर वृति प्रारब्ध के शिर, निर्भय भ्रमण इच्छा वृत किया।।
ज्ञानाग्नि सँग अष्टपुरी जल, भव का भय भगाय दिया।
रामप्रकाश ब्रह्मज्ञान गुरूगम, वचन सुधा रस पान पिया।।३६।।
परमानन्द स्थिति दृढ पूर्ण, अनर्थ प्रपँच सब दूर निवारी।
साधु प्रपँची वाचक व्यवहारिक, आवे तो नही लाभ निहारी।।
भीड़ कोई बहु आवत है नही, तिन से नही कछु हानी विचारी।
रामप्रकाश प्रारब्ध वश जीवन, ऐसी हुई चितवृति हमारी।।३७।।
शारीरिक क्रिया स्वालम्बन आधारित, प्रारब्धवश है जीवन सारो।
निष्पृह हूँ निष्काम सदा चित, गलबल एकान्त से काम न म्हारो।।
लोक परलोक ऐषणा चित की, द्वन्द सँग से कियो किनारो।
रामप्रकाश मस्तान हुआ अब, चित चेतन में केवल प्यारो।।३८।।
सूर्य अग्नि रु वरुण अरुण ही, वेद वक्ता सम है ब्रह्मज्ञानी।
कर्म बने निष्काम सदा मन, आशक्ति रहित करे शुभ मानी।।
अष्ठ पुरी गुण दोष विलावत, प्रारब्ध भोग अनिच्छित आनी।
रामप्रकाश ब्रह्मवेता ब्रह्म है, ताहि की वानी है वेद बखानी।।३९।।
ब्रह्मज्ञानी है ब्रह्म समान ही, ताकी बानी है वेद समानी।
परा पश्यन्ति मध्यमा वैखरी, चार स्थान के भेद को छानी।।
ऋग यजु रु साम अथर के, चार स्थान के ज्ञान बखानी।
रामप्रकाश सतगुरू ब्रह्मनिष्ठ ही, तत्ववेत्ता गुरू करिये ज्ञानी।।४०।।
ब्रह्मज्ञानी है ब्रह्म समान ही, ताहि की वाणी है वेद प्रमानी।
भाषा सँस्कृत लौकिक भाषण, भेद भ्रम का मूल विहानी।।
आतम ज्ञान उदय कर पूरण, कारण मूल अज्ञान मिटानी।
रामप्रकाश अभेद द्रढावत, द्वैत रु द्वन्द समूल नशानी।।४१।।

।। ब्रह्मज्ञानी का निश्चय।।

ज्ञान विवेक निर्वेद सन्तोष ही, सहज निर्वेर उदार विचारों।
आठ हूँ के है चार विधि कर, योग बतीस ये लक्षण भारो।।
जेहि माँहि हो यहे पूरण लक्षण, सो ब्रह्मज्ञानी है तत्वज्ञ सारो।
रामप्रकाश है ब्रह्म समान ही, या बिन ज्ञानी है वाचन हारो।।१।।
निरालम्ब रु निर्वासन निर्भ्रम, निर्विकार हो ज्ञान सँभारो।
हो निर्बंध निर्मोह अहिंसक, निर्वाण प्रयोजन विचार सुधारो।।
सर्वंगी रु सारग्रही तृष्णा बिन, सावधान विवेक स्वरूप विचारों।
रामप्रकाश है ब्राह्म सामान ही, या बिन ज्ञानी है वाचनहारो।।२।।
आयाच अमान अपक्षी स्थिर, परम संतोष स्वभाविक सारो।
हो निष्प्रपँच निष्प्रह निर्लिप्त, निःकर्म सहज नियम अधारो।।
सुहृदय सुखदायी शीतल सुमति, निर्वेर परीक्षा देख सम्भारो।
रामप्रकाश है ब्रह्म समान ही, या बिन ज्ञानी है वाचन हारो।।३।।

शील सुबुद्धि सत्यवादी नित, ध्यान समाधि मे मस्त उदारो।
संत गुरू सत्शास्त्र कथे वद, नीति रु धर्म वेदान्त विचारो।।
सतगुरू उतमराम ब्रह्मवेता वर, वाणी रु वेद पुकार सुधारो।
रामप्रकाश है ब्रह्म समान ही, या बिन ज्ञानी है वाचनहारो।।४।।

।। दोहा छन्द ।।

आठ चार बतीस यह, जामे पूरण होय।
वह ब्रह्म समान है, यामे सँशय ना कोय।।१।।

सफलता विफलता नाहि करे, चित विक्षेप न रञ्च टरे।
सम्पति विपत्ति समभाव रहे चित, सुख दुःख में नही सोच करे।।
लक्ष्मी आय या जाय सही, अद्य मरे या युगान्त परे।
रामप्रकाश ना धीर डिगे, द्रढ निश्चय प्रारब्ध रूप खरे।।५।।
निष्काम सदा निर्लेप रहे वह, इच्छा रहित ब्रह्मज्ञानी रहावे।
इन्द्रिय करम करे न करे, स्वभाविक प्रारब्ध वेग करावे।।
देख अदेख अकर्ता आप ही, आपनी मौज में मस्त सदावे।
रामप्रकाश जिन निश्चय कियो वह, वन मे रहे चाहे नगर बसावे।।६।।
ब्रह्मज्ञानी जग माहि रहै ज्यों, जल में कमल अलिप्त जल माँई।
चन्द्र आभा जल में दीखत है, भीगत डोलत नाहि कदाई।।
भूने कण सम भूख मिटावत, ऊगत ना भल कोटि उपाई।
जली रस्सी सम रामप्रकाश है, अकर्म देह रह प्रारब्ध ताँई।।७।।
ब्रह्मज्ञानी है ब्रह्म समान ही, बोलत चालत ब्रह्म बखाने।
अँग अँग में रोम रोम में, ऊर्जा प्रसारित होवत छाने।।
मुख रू चक्षु हाथ रु चरण से, शक्तिपात हरक्षण मे आने।
रामप्रकाश जिज्ञासु जन सेवत, ऊर्जित शक्ति को पावत जाने।।८।।
ब्रह्मज्ञानी है ब्रह्म स्वरूप ही, पूण्यात्म जीवित विग्रह मानो।
दर्शन स्पर्श द्दष्टी के गोचर, ऊर्जा प्रसारित है सब जानो।।
शक्तिपात करे क्षण भाव से, सेवक सेवा करे फल पानो।
रामप्रकाश यह वेद प्रमाणित, भक्त भक्ति वश हृदय आनो।।९।।
ज्ञात अज्ञात पावे फल जीवहि, भव भ्रमित लख चौरासी के माहि।
ऋण से मुक्त अवान्तर कारज, या ब्रह्मज्ञानी के दर्शन पाही।।
स्पर्श शब्द के श्रवण पावत, पूज्य अभूत हो पाप विलाही।
रामप्रकाश महिमा गुण ज्ञानिन, गावत पावत परम भलाही।।१०।।
ज्ञानी जन सब कुछ करता, नहीं करता वह मन की मानी।
प्रारब्ध कर्म की रेख चलें वह, साक्षी आप रहे सुख जानी।।
करते दिखे नहीं वे करते, निष्प्रह है निष्काम विज्ञानी।
रामप्रकाश ब्रह्मज्ञानी महाजन, अद्‌भुत महिमा वेद बखानी।।११।।
उठत बैठत ब्रह्म ज्ञानी जन, पांव धरे वह पूण्य पसारे।
स्पर्श हाथ करें जिन ऊपर, ताहि को वह भव सागर तारे।।
जड़ चेतन हो कोई वस्तु पर, पुण्य प्रदेश सदा सुख वारे।

रामप्रकाश ब्रह्म ज्ञानी महा जन, परम पुरुषोत्तम वेद पुकारे ।।१२।।
ब्रह्म को जानत ब्रह्म सम होवत, ब्रह्म स्वरूप सदा वह सारे ।
अग्नि के माहि परे वह होवत, अनल समान होय वह जारे ।।
गुण इंद्रिय तन दीखत है पर, जली रस्सी नहीं बन्धन डारे ।
रामप्रकाश भूने कण सम है, ऊगे नहीं पर भूख निवारे ।।१३।।
ब्रह्म समान है ब्रह्म ज्ञानी ब्रह्म, ज्ञानी की गति ज्ञानी जाने ।
सर्व ब्रह्म मय देखत ज्ञानी है, शब्द स्वरूप रु देह प्रमानी ।।
जहं जहं देखत चरण धरे शुभ, स्पर्श करें होवे पुण्य खानी ।
रामप्रकाश गुण महिमा अपार है, जानत मानत कोउक ध्यानी ।।१४।।
ज्ञानी सन्त लिखे कवि भाषित, क्यो किस के यह हेतु बतावे ।
कहा आवश्यकता आन पड़ी उर, आप में अन्य को कौन दिखावे ।।
जान लियो तब मौन गहो निज, आप में मस्त रहो निरदावे ।
रामप्रकाश व्यवहार परमार्थ, दोहू भाति सो को समझावे ।।१५।।
नदी अनेक सो जाय मिले सिन्धु, तोयनिधि विचलित होय न भाई ।
ऐसे पुरुषोत्तम धीर मना जन, सम्पति पावत भोगत जाई ।।
साधन विचलित होवे नही चित, सँयम मौन धरे मन लाई ।
रामप्रकाश वे जल कमलवत, है निर्लेप सदा जग माँई ।।१६।।
आनन्द गहन विषय अति सुन्दर, गुरूगम साधन अतशय छानी ।
श्रोता कौन रु कहिये काहु को, श्रवण करे वह समझ न आनी ।।
गूँगे गुड़ रु स्वप्न मनन, समझ सके वह बुद्धि थकानी ।
रामप्रकाश यह अजब गजब की, मन बानी बिन गुप्त कहानी ।।१७।।
नाम हमारो लिये बिना नहीं, भूख नहीं रु नींद न आवे ।
निन्दा ईर्षा चुगली करके, सुमिरण हमारो मन भावे ।।
निन्दा करो स्तुति करो कोई, पाप हरे कोई पूण्य ले जावे ।
रामप्रकाश निष्पाप रहे नित, ब्रह्मानन्द की मौज मनावे ।।१८।।

।। व्यापक ब्रह्म स्वरूप ।।

आदि अनादि अमोघ अनूपम, एक अगोचर परम अनूपा ।
सत चित आनन्द ब्रह्म सनातन, पर अपर के ऊपर भूपा ।।
है घननामी रु नाम अनेक है, अचल अखण्ड रु स्वयँ सरूपा ।
रामप्रकाश है व्यापक पूरण, दूध में घृत मिश्री रस गूपा ।।१।।
तुम ही एक सनातन व्यापक, पूरण घट मठ में अन्तर्यामी ।
आप अनाम अपार अगोचर, सत चित आनन्द हो बहुनामी ।।
माया के जाल मे छाय रह्यो पर, लुप्त अलुप्त हो प्रपँच स्वामी ।
रामप्रकाश है छाय रह्यो सब, एक अनेक में हो घननामी ।।२।।
नर रु नार में स्थावर जँगम, भूचर जलचर नभचर माँई ।
भूमि गगन रु वायु में व्यापक, अग्नि रु नीर में दीखत साँई ।।
एक अगोचर अखण्ड अनूप है, घट मठ में घन पूर्ण ताँई ।

रामप्रकाश रटे सुख पावत, तीन हूँ ताप रहे नही राँई ।।३।।
श्रोत्र त्वचा रु चक्षु रु घ्राण में, जीभ में रस घोलत वोई।
पाणी रु पाद में उपस्थ गुदा कहि, वाक में शक्ति देवत सोई।।
मन रु बुद्धि में चित में चेतन, अहँकृत व्यापक एक है पोई।
रामप्रकाश रटे वह सामर्थ, कीड़ी रु कुँजर में भेद ना होई।।४।।
ज्यों महाकाश है व्यापक पूर्ण, घट मठ जल उपाधि कहावे।
त्यों वह स्थूल रु शूक्ष्म कारण, अँत:करण उर उपाधि में आवे।।
एक अनन्त अखण्ड अगोचर, व्यापक घनानन्द चेतन भावे।
रामप्रकाश रटे वहि राम को, एक अनन्त हो भेद दिखावे।।५।।
मैं नही मन बुद्धि अहँकार हूँ, नही स्मृति ना श्रवण द्वारा।
नही मैं जिह्वा चक्षु इन्द्रियादिक, नही नभ वायु जल की धारा।।
नहीं मै तेज स्वरूप सूर्यादिक, देह न देही शूक्ष्म गति वारा।
रामप्रकाश हूँ चेतन आनन्द, सोहम् स्वरूप सत्य निरधारा।।६।।
दूध में घृत है व्यापक समतल, शस्त्र में लोहा है इकसारा।
भूषण में स्वर्ण या रोप्य पूरण, वस्त्र मे तन्तु रु तन्तु रुई सारा।।
जल में रस रु मिश्री मिठास में, अरस रु परस मे एक आधारा।
रामप्रकाश है यही विधि व्यापक, ब्रह्म स्वरूप में राम सहारा।।७।।
व्यापक ब्रह्म सो असँग अगोचर, माया पुरुष नँपुस नही रण्डी।
अखण्ड अनन्त अपार निरञ्जन, प्रपँच ब्रह्मण्ड पृकृति खण्डी।।
अद्वय अजय अनव्य आप ही, जगत भगत अविद्या नही चण्डी।
रामप्रकाश रमणीय रमता, अपना आप ही एक अखण्डी।।८।।
भव की भक्ति रु योग युक्ति कर, ज्ञान गोप्य गति एक ही धारा।
भक्ति इष्ट मय रु योग ईश्वरमय, ज्ञानज्ञय सत रूप सँभारा।।
परम परमार्थ कल्याणकारी वह, ब्रह्म स्वरूप मे मिले सुखकारा।
रामप्रकाश लक्ष्यार्थ एक ही, जीवन का सत होय उद्धारा।।९।।
एक स्वरूप सच्चिदानन्द पूरण, व्यापक सर्वठाँह आप समायो।
घट मठ को सब द्वैत मिट्यो जब, परम प्रमा पद निश्चय आयो।।
देह अवस्था कोश न त्रिगुण, सोहँ एक ही आप रहायो।
रामप्रकाश ही छाय रह्यो सम, जीव रु ईश को मूल मिटायो।।१०।।
मूर्त अमूर्त में सब घट मठ व्यापक, समर्थ आप अशेष अपारा।
जल में थल में वायु गगन में, चल अचल से है सत न्यारा।।
ज्योतिर्मय है सो चेतन पूर्ण, है नही के मध्य उचारा।
रामप्रकाश में रामप्रकाश है, नाम रु रूप में एक उजारा।।११।।
एक अनक्षर नाम न रुप है, सो घननामी अनामी है सोई।
निरक्षर अक्षर वही सब चेतत, चेत चेतावत है निज वोई।।
द्वैत अद्वैत न द्वन्द अपेक्षित, ज्ञान अज्ञान नही है दोई।
रामप्रकाश है सोहम् स्वरूप सो, सत चित आनन्द सो घन जोई।।१२।।
अक्षर निरक्षर अनाक्षर में अरु, नाम रु रूप में व्यापक होई।

घटाकाश रु मठाकाश में, जलाकाश महाकाश ज्यों सोई।।
जड में सामान्य रु विशेष है चेतन, ता बिन रञ्च न खाली कोई।
रामप्रकाश अनूप अखण्डित, परम अगोचर गोचर जोई।।१३।।
रवि में तेज रु जल में द्रव्यता, वायु में है प्रसारण वोई।
भूमि में स्थिरता रु नभ में अवकाशित, सो अधिष्ठानी तत्व जो होई।।
नाम रु रूप में छाय रह्यो वृत, घट मठ में इक एक ही जोई।
रामप्रकाश वो दृश्य रु श्राव्य में, प्रतिक्षण हाजिर हरदम सोई।।१४।।
सूर्य समान ब्रह्म अनावृत, रश्मि समान कुटुस्थ रासी।
सात्विक अन्तःकरण बिम्ब प्रकाशित, चिदाभास कणु भीति अभासी।।
ताहि ते चेत इन्द्रियादिक शूक्ष्म, चेतन अमल सहज अविनाशी।
रामप्रकाश अनामी अनाक्षर, सोई व्यापक अन्य विनासी।।१५।।
नाद बिन्दु बिन कला अतीत हूँ, सत चित आनन्द ब्रह्म अनामी।
एक अरूप अनूप अगोचर, मन वाणी नही अक्षर गामी।।
क्षर निरक्षर नही अपेक्षाकृत, जीव रु ईश का अन्तरगामी।
रामप्रकाश है सोहम् सोहम्, दूर नजदीक न अन्तर्यामी।।१६।।
व्यापक ब्रह्म सामान्य सर्वत्र है, कारण कार्य विशेष उपावे।
अघटित घटना जहाँ अक्षम हो, वहीँ सक्षम गुण हो दरसावे।।
गोबर के जीव रु द्रोपदी के चीर, यहि उदाहरण सीख सिखावे।
रामप्रकाश सच्चिदानन्द समर्थ, गण अगण सब ही गुण गावे।।१७।।
ब्रह्म स्वरूप सामान्य सर्वत्र है, व्यापक पूरण चराचर पूरा।
चार खानी रु चौरासी लाख में, स्वेदज उद्भव प्रमाण है नूरा।।
जूँ मच्छरादिक प्रत्यक्ष उत्पति, मात पिता बिन होय हजूरा।
रामप्रकाश है सामर्थ चेतन, जहाँ देखो वहाँ है भरपूरा।।१८।।
आनन्दकन्द परमानन्द पूरण, कण कण में भरपूर बह्यो है।
कोऊक इन्द्रियन भीतर पावत, कोऊक भौतिक पदार्थ भाव रह्यो है।।
कोई काहू में मगन कोई काहू में मगन, आनन्द ढूँढत पाय गह्यो है।
रामप्रकाश अध्यात्म आनन्द, सतगुरू शरण में आप कह्यो है।।१९।।
गुरू की आज्ञा साध की सतसँग, अन्दर देखन की धुन लगाई।
फिर देखा बाहर की माया, अन्दर कौन समाया भाई।।
अन्दर बाहर एक ही पाया, मैं तूँ का सब भेद मिटाई।
रामप्रकाश व्यापक सो पाया, दृष्ठ मुष्ट मे एक समाई।।२०।।
एक ही मटी कुलाल ते दीपक, तेल रु बाती दोय बनावे।
सात्विक भू अँश काच मे एक रु, तामस भू अँश मे एक धरावे।।
मट्टी का दीपक जीव उपाधि रु, काच में दीपक ईश बतावे।
रामप्रकाश जीवेश्वर लक्ष्य सो, ब्रह्म ही सच्चिदानन्द समावे।।२१।।
मिश्री में मिठियास बराबर, मिरची में चरकान समावे।
शस्त्र में लोह रु भूषण कनक, वस्त्र रूई पट डोर कहावे।।
सब ही है उन माहि समाहित, भाव अन्योन्या सदा ही बतावे।

निमितोपादान अभिन्न बने तब, रामप्रकाश प्रपँच रचावे ।।२२।।
तत्व में बोलत गुणों में बोलत, जड रु चेतन में वह बोले।
देश रु काल में वस्तु में बोलत, प्रत्यक्ष बोलत रह्यो नही ओले।।
ज्ञानी सो जाणत अज्ञ लखे नही यह, सज्जन मानव भेद को खोले।
रामप्रकाश है सत चित आनन्द, नाम रु रूप में माया को तोले ।।२३।।

।। घट के अन्दर ब्रह्म ।।

घट माहि नव नाथ विराजत, आदि नाथ सब माहि प्रकाशे।
दोय चक्षु रु नासिका दोय है, मुख रु लिंग है गुदा प्रकाशे।।
दोय स्तन सँग बान्ध रहे सब, मन के सँग में चेतन राशे।
एक ते एक है नौ ही नाथक, रामप्रकाश कोई गुरुमुख आसे ।।१।।
पहाड़ शालिग्राम है तब, नदीयाँ सब गँगजल ही लावे।
वृक्ष सभी तुलसी सम भासत, व्यापक एक चराचर गावे।।
जान लियो जिसने घट भीतर है, सो ब्रह्मात्म रूप लखावे।
रामप्रकाश ब्रह्म मय दृष्टि, उप नैत्र रँग आप बतावे ।।२।।
श्याम बसे घट भीतर में नित, हरदम हरदम खोज ले भाई।
ज्यों मृग नाभि के भीतर में शुद्ध, बसे घनसार सुगन्ध फैलाई।।
मूर्ख हरिण जो सूँघत है वन, घास में ढूँढत गन्ध पराई।
रामप्रकाश त्यों हरि घट भीतर, बाहिर ढूँढ फिरे भ्रमाई ।।३।।
पीपल में परमेश्वर है तब, बबुल में कोई और न भासे।
नीम में नारायण है तब, कँटक उपावत और ना आसे।।
व्यापक सब में एक बराबर, ईख रु आक में आप ही रासे।
रामप्रकाश सँस्कार प्रभाव तें, कर्म प्रमाण उजागर खासे ।।४।।
परम शक्ति सचिदानन्द पूरण, दृश्य बने नही त्रिकाल में जानो।
परमात्मा हर हृदय में व्यापक, गुप्त छुपे नही दीख अयानो।।
हर बुद्धि चक्षु के भीतर, देख रहा सब साक्ष्यता मानो।
रामप्रकाश साक्षी वह आतम, ज्ञानी जन जानत मानत आनो ।।५।।
ईश्वर प्रेरक है सब भीतर, साक्षीभूत अधिष्ठाता भारी।
उचित कि अनुचित भाव दृष्टिगत, सुने समझते फले सुख सारी।।
नही सुने समझ नही लावत, पावत है वह कष्ट अपारी।
रामप्रकाश रचना अति सुन्दर, अप्रबल महिमा की बलिहारी ।।६।।
पहाड़ सभी शालिग्राम है तब, नदीयाँ सब गँगाजल लावे।
वृक्ष सभी तुलसी सम भासत, व्यापक एक चराचर गावे।।
जान लियो जिसने घट भीतर है, सो ब्रह्मात्म रूप लखावे।
रामप्रकाश ब्रह्म मय दृष्टि, उप नैत्र रँग आप बतावे ।।७।।
परमात्मा कोई शब्द नही वह, पुस्तकालय बहु पठन मिलेगो।
परमात्मा कोई मूरत नही जो, कही मन्दिर मठ में जाये मिलेगो।।
परमात्मा कोई मनूष नही वह, वर्ग समाज में आय मिलेगो।
रामप्रकाश तन भीतर है वह, अपने अन्तर खोज मिलेगो ।।८।।

।। तप, त्याग, लघुता,सेवा और गुरू कृपा से तत्व ज्ञान की प्राप्ति ।।

ब्रह्म स्वरूप की निष्ठा के हेतु में, सतगुरू शरण आवश्यक माना ।
अकर्म मिटावन हेतु सदा, परमार्थ सेवा जरूरी जाना ।।
आत्म शान्ति हेतु सदा, नित हरि सुमिरण को ही उर आना ।
लख चौरासी से मुक्ति पावन, रामप्रकाश जप कर पहिचाना ।।१।।
असँग अभँग अनँग है एक ही, अचल अखण्ड जान्यो अविनाशी ।
शस्त्र में लोह रु वस्त्र में सूत है, ऐसे ही आतम है ब्रह्मण्ड वासी ।।
निज में निज वही तत चेतन, केवल अनन्त है सबठाँह में खासी ।
रामप्रकाश सतगूरू प्रसाद ते, पाय लियो निज घट घट वासी ।।२।।
सतगूरू प्रसाद से पाय लियो निज, तत्व ज्ञान परब्रह्म अपारा ।
व्यापक एक अगोचर पूरण, नाम रूप बिन सत चित प्यारा ।।
आनन्द स्वरूप है अस्ति भाति प्रिय, अविनाशी अनन्य अव्यय सारा ।
रामप्रकाश उतम गुरू पावत, उतम ध्यावत हो भव पारा ।।३।।
अक्षर बाँच के पण्डित होवत, अनाक्षर बाँचत कोईक जोई ।
लिखित बाँचत सब ही वाचक, अलिखित बाँचत ज्ञानी होई ।।
लिखित अक्षर वेद पुराण है, ताही पढे गुण ज्ञानी ना सोई ।
रामप्रकाश अलिखित अनाक्षर, गुरुमुख जान सके जन कोई ।।४।।
वर्णमाला में मन्त्र बिन अक्षर, व्यर्थ है नही अक्षर कोई ।
कोई जड़ी औषधि बिन नाहिन, विविधता है सब भीतर जोई ।।
कोई भी व्यक्ति अयोग्य नही जग, जाणणहार दुर्लभ है सोई ।
मन्त्रवेता कोई ज्ञानी रु वैद्य सो, काम मे लेवत परीक्षक होई ।।५।।
शस्त्र कोई खरीद करे धन से घन, शूरवीर कोई जागत जोई ।
ग्रन्थ खरीद भण्डार भरे पर, स्मृति भाग्यवश पावत कोई ।।
साज अनेक बाजे बहु लावत, कण्ठ कला नही जानत वोई ।
रामप्रकाश हो कृपा ईश गुरू, धन्यभाग से सफल होई ।।६।।
मूँग मोठ की दाल दले फिर, रात में शीतल जल भिगावे ।
प्रातः मे पीसत शिला चक्की पर, मिर्च मशालें फेर मिलावे ।।
उबलते तेल में तले उबालत, तब पकोड़े बड़े कहावे ।
रामप्रकाश तप त्याग तपे बिन, पद महान कोई नही पावे ।।७।।
सुख चाहत है नित तन मन से धन, कर्म परिश्रम ना नेक उठाई ।
उन के भाग्य में विद्या यश रु, मिले ना धन कदापि जीवन माई ।।
विद्या रु धन कमावन हेतु हे, मानव क्षण समय मत खोय गमाई ।
रामप्रकाश नहि तप किये बिन, विद्या रु यश नही पाय भलाई ।।८।।
प्रभु के पाद पड़े पँकज ने यह, गलहार पड़े पुहुप से पूछ लिया ।
किहि पुण्य प्रताप ते गले पड़े, हरि हार भये कण्ठ वास किया ।।
गल हार सुमन ने उतर दिया, बन्धु सूई का वेध उर छेद दिया ।
रामप्रकाश इस तप के कारण, ईश्वर के कण्ठ वास जीया ।।९।।
पूर्व जनम के थे तपस्वी साधक, खड़े रहे इक टँग सहारे ।

उन्ही दिनों में थके हुओं के, सेवक अँग दबावत सारे ।।
सतसँग लेखन जन हित कारज, किये जिन परिश्रम भारे ।
रामप्रकाश ताहि के कारण, सेवक सेवा मे हाजिर प्यारे ।।१०।।
बड़े अनाज गले पर जाके देखो, पचास किलो लोह बाट है नीचे ।
ऊपर छोटे ते छोटे ही धारत, बीस दश फिर पाँच है खींचे ।।
दो किलो पर एक किलो है, पाँच सौ, दो सौ एक ही सींचे ।
रामप्रकाश बड़े पर भार है, छोटे सदा सब शीश पे रीचे ।।११।।
पचास ग्राम पर बीस ग्राम सो, दश ग्राम सब के शिर राजे ।
सब से नीचे पचास किलो पर, दश ग्राम सब ऊपर साजे ।।
लघुता ते पद प्रभुता पावत, प्रभूता पद भार उठाजे ।
रामप्रकाश नम्र नित रहते, प्रभु शरणागत सम्पन्न काजे ।।१२।।
सूर्यकान्त मणि ज्यों रवि रश्मि, कर प्रभाव ते अग्नि उपावे ।
चन्द्रकान्त मणि शशि प्रभा कर, अमृत धार सुधा बरसावे ।।
त्यों साधन गुरू सन्त कृपा सँग, ज्ञानाग्नि शिष जोत जगावे ।
रामप्रकाश रहे सेवा मे हाजिर, साधक सोई परम पद पावे ।।१३।।
जिन के पद चिन्हो पर चल कर, जीवन का तत्व हमने पाया ।
जिन के परम सिद्धान्त को जाना, परमानन्द मे मन विलमाया ।।
जिन की वाणी पद चिन्हों पर, कविता लिखने पढने मे ललचाया ।
रामप्रकाश वर उन गुरूवों के, पादाम्बुज करूँ वन्दन मन भाया ।।१४।।
ब्रह्मज्ञान से भव भय नाशत, तप से पद प्रतीष्ठा को पावे ।
सतगुरू सेवा से ज्ञान विद्या बल, योग ते देह को रोग नशावे ।।
सभी देवे सुख शान्ति परमपद, भाग सँयोग भागी जन भावे ।
रामप्रकाश हो गुरू कृपा बल, सब ही भाग्य में आय समावे ।।१५।।
सतसँग के प्रताप से पावत, सतगुरू प्रसाद ते जीवन पायो ।
पटसन टाट ज्यों सुधरत कागद, सन्त वाणी विधि वेद लिखायो ।।
कालिख ते ज्यों वेद लिखावट, त्यों तकदीर गुरू ज्ञान ते लायो ।
रामप्रकाश को पलट गयो सब, तन मन अष्ट पुरी विलमायो ।।१६।।
सूर्यकान्त जब भास्कर रश्मिन, मिले सुधा रस को टपकावे ।
चन्द्रकान्त मणि शशि ते द्रवित, चान्दनि में रस की झर लावे ।।
होय जिज्ञासु जो श्रद्धा विश्वास ते, सतगुरू से सत नेह लगावे ।
रामप्रकाश ब्रह्मज्ञान सुधा तब, परमानन्द को उर माँहि मिलावे ।।१७।।
चलते रहे गुरू राह के ऊपर, मिलते गये सब सुन्दर प्यारे ।
साधन सतसँग मार्ग चलते, राह के कँटक भये पुष्प हमारे ।।
जादू नही यह आशिश है वर, सतगुरू सन्त राह सुधारे ।
हजारों फिसल गये इसी राह पर, पहले रामप्रकाश पुकारे ।।१८।।
सतगुरू शरण सदा निज निश्चय, मन विश्वास अहँकार न आवे ।
दास भाव सतसँग के भावुक, गुरू सेवक क्यों मन घबरावे ।।
नाम जपे साधन चित धारत, बाँह पकड़ गुरु पार लँघावे ।

रामप्रकाश सतगुरू का सेवक, परम पदार्थ निश्चय पावे ।।१९।।
गुरू जन की कृपा रही शिर, रहयो नही कछु बात को घाटो।
वाद विवादित कागदिया ले, घूमो देखो सब शहद दे चाटो ।।
राम कृपा सब श्री हरिराम का, भर्या भण्डार भ्रम को दाटो।
रामप्रकाश क्रूर जन भटकत, प्रारब्ध देसी शिर पर भाटो ।।२०।।
सुनार की चोटों को स्वर्ण सहे, भूषण मोल अमोल कहावे।
स्वर्ण तपे अग्नि तप पूरण, कुंदन होय के मोल बिकावे ।।
पिता की डांट को पुत्र सहे घन, गुरू की डांट सहे शिष्य पावे।
रामप्रकाश सौभाग्य फले फल, यश रु धन अमोलक आवे ।।२१।।
टिप्पणी-जो गुरू की डान्ट फटकार सहन किया, सेवा की उन्ही को यह ज्ञान की प्राप्ति होगी।
गुरू कृपा बिन हरि का सुमिरण, जप तप नियम चित न भावे।
प्रीत प्रतीत आवे उर अन्तर, सतगुरू का सत इष्ट निभावे ।।
हरि शरणागत होय रहे नित, आपनो कर्तव्य शुद्ध सँभावे।
रामप्रकाश भय शोक हटे मन, राम कृपा सब काम बनावे ।।२२।।
गूरू सानिध्य वास करे, सतगुरु परम विचारक अनुगामी।
गुरु समादर भाव करे मन, अनुकुल आचरण अनुरागी ।।
अमृतपान मिले सजन को, अनुसरण का हो शिष रागी।
रामप्रकाश वह तृप्ति तृप्त करे, प्राणी मात्र का हो सुखपागी ।।२३।।
पाँचो विषय ज्ञानेंद्रेय सँयम, शास्त्र स्वाध्याय विवेक उर सागे।
ज्ञान वैराग्य साधन युत सतसँग, सतगुरू भाव हृदय में जागे ।।
परम जिज्ञासा मुमुक्षत्व होवत, भक्ति सुमिरण हो अनुरागे।
रामप्रकाश निरन्तर सेवन, ध्यान हरि बिच तब ही लागे ।।२४।।
नहीं तीर्थ धाम स्नान किये नही, यात्रा धर्म यज्ञ दान किया।
नहीं मंदिर देव की अर्चन की वर, आरती पाठ ना पूण्य दिया ।।
नही पितृ पूजन कुल रीत करी मन, और अनेक न कर्म हिया।
रामप्रकाश उर भीतर जाते ही, मै भी तर गया आज सीया ।।२५।।

।। श्री गुरुदेव के देह चरित्र से ।।

सतगुरू मुख ते शब्द उचारत, श्रवण साधन कर सिद्धि को पावै।
हाथ धरे सिर आशिश अभय, आनन्द मँगल चहुँ दिश लावे ।।
नैन ते सैन रु चरित्र चित को, दर्शन समझत मोक्ष को ध्यावे।
रामप्रकाश उतम के देह से, अँग सकल उपदेश दिखावे ।।१।।
परम जिज्ञासु की अरज सुने नित, श्रवण सत्य की बात बतावे।
चरण धरे अघ दूर नशावत, पद रज पावन चित बनावे ।।
मुख मण्डल ज्योति के दर्शन, भक्तन के मन मोद बढावे।
रामप्रकाश उतम गुरू देह से, अँग सकल उपदेश दिखावे ।।२।।
घ्राण से प्राण आयाम क्रिया कर, अर्ध रु उर्ध को लय समझावे।
लोम विलोम मे इडा रु पिंगला, श्वासोश्वास की गति सिखावे ।।

नैन रु बैन से सुरति निरति के, शूक्ष्म वेद को भेद बतावे।
रामप्रकाश उतम गुरूदेव जी, देह के चरित से ज्ञान लखावे।।३।।

।। हरि के नाराज होने पर केवल सतगुरु शरण है ।।

हरि के रुठे यह जनम बिगारत, तीन हूँ ताप तपे तन भारे।
सतगुरु रूठत त्रिदेव प्रकोपित, तीन हूँ लोक में ठोर न ठारे।।
बहुरि जनम श्वान को धारत, विकल मन मुग्ध घरबारे।
रामप्रकाश सतगुरु बिना जन, भवसागर में भटकन वारे।।१।।
हरी के रूठत सतगुरु शरण है, काल रु कर्म बदलावन हारे।
सतगुरु रूठत ठोर ना पावत, तीन हूँ लोक भ्रमावत सारे।।
हरी भवसागर डारत मारत, सतगुरु भव से पार उतारे।
रामप्रकाश हरि से अति उतम, सतगुरु सृजित जीव उभारे।।२।।
पितर रूठे तो देव है रक्षक रु, देव रूठे तो हरि रक्षक हमारे।
हरि रूठे तो सतगुरू रक्षक, सतगुरू रूठे तो यम के द्वारे।।
भवसागर के जनमान्तर दुःख, बारम्वार नरक मे डारे।
रामप्रकाश रूठो जग जँगम, सतगुरू समर्थ रक्षक प्यारे।।३।।

।। तारनहार की पहचान ।।

जँगम तीर्थ सतगुरू सन्त है, ज्ञानी सतसँग ज्ञान सुनावे।
मात पिता सतगुरू सन्तन की, सेवा श्रद्धा भाव से भावे।।
पर उपकार परमार्थ धावन, सदा भलाई काम कमावे।
रामप्रकाश भव तार सके, वह तन के तीर्थ जो नहावे।।१।।
गया गोमती यमुना पुष्कर, सप्तपुरी गँगसागर जावे।
बाहर के यह भौतिक तीरथ, तन के मेल को दूर हटावे।।
जल जन्तु हरदम रह उनमे, भव से मुक्ति कभी नहि पावे।
अन्तर तीर्थ नहाये बिना जन, रामप्रकाश भव पार न जावे।।२।।
साधन विवेकादि चार धाम है, श्रवण मनन निद्धिध्यासन ध्यावे।
अन्तर्मल को धोवत है नित, तत्व अध्यात्म चित लगावे।।
सात्विक जप तप प्रेम श्रद्धा कर, दोष दशों को दूर भगावे।
रामप्रकाश भव तार सके, वह मन के तीर्थ जो नहावे।।३।।
गीता पाठ सतगुरू सन्त वाणी, हरि मन्त्र जप स्मृति कमावे।
रामायण उपनिषद् आदिक, स्वाध्याय के नियम निभावे।।
मृदु सत्य सँयमित नीति व्रत, ब्रह्मचर्य के हेतु उपावे।
रामप्रकाश भव तार सके, वह वाणी के तीर्थ जो नहावे।।४।।

।। बिरह का अंग ।।

जाय बसे प्रदेश हरि तुम हम से, आवन कौल किये बहु सारे।
पथ देखत अँखियाँ थक गयी, सफेद हुए सब केश हमारे।।
खान पान इच्छा सब भूली, दिन गिन कर घिसी रेख विचारे।
रामप्रकाश आशा पर जीवित, हरि दर्शन कब होय तुम्हारे।।१।।

।। मानव धर्म ।।

प्रातः स्नान रु वृद्ध पद सेवन, तुलसी रु देव को पूजन धीजे।
अतिथि सेवा रु अभ्यागत पालन, कीड़ी कबूतर को अन्न दीजे।।
जीव जन्तु पर दया धर्म कर, प्राणी मात्र की सेवार्थ लीजे।
रामप्रकाश यह मानव धर्म है, प्रातः सांय सन्ध्योपासन कीजे।।१।।
हे मानव नित ब्रह्म मुहुर्त में, उठ कर हरि सुमिरण करिये।
स्नान करो वर देव यज्ञकर, पितृ पूजन मे शिर धरिये।।
अतिथि स्वागत पूजन ते पर, प्राणी सेवा मे चित जरिये।
रामप्रकाश है जीवन सफल नित, नित्यकर्म कर भव तरिये।।२।।
मानव के हित साधन को नित, सतसँग साधु के दर्शन भाई।
शब्द वचनामृत श्रवण सुने अरु, चित में ठीक फहरावत जाई।।
मनन मान निदिध्यासन साधत, परम परमार्थ प्राप्त थाई।
रामप्रकाश धन्य हो जावत, जीवन की सिद्ध होय कमाई।।३।।
मानव के कृत कारज है नित, तीन ऋणात्मक कर्म सुधाई।
प्राकृतिक देवन को ऋण है ऊपर, पितृत्व ऋण को भार सदाई।।
ऋषिगण को ऋण जीवन ऊपर, कर्तव्य पालन धन्य कमाई।
रामप्रकाश है मानव सामर्थ, व्यवहार सुधार करो नित भाई।।४।।
मात पिता की सेवा करे धन, जग जीवन का फल पावत प्यारे।
आज्ञाकारी हो जनम सुधारत, शुद्ध व्यवहार आचरण धारे।।
सतगुरु सेवा रु आज्ञा पालन, लोक परलोक सुधारण हारे।
रामप्रकाश वे मानव लोक में, भवसागर से होय किनारे।।५।।
जो जन मात पिता के सेवक, आज्ञा का पालन करने हारे।
उनकी इच्छा शक्ति पालन करके, कर्तव्य निष्ठा दिखावन वारे।।
पितृलोक सुख पावत है वह, आशीर्वाद उन्ही का पावन धारे।
रामप्रकाश वे पितृऋण के, दुःख विपति को समूल से टारे।।६।।
बुद्धि में धारण वृति से धर्म है, धैर्य क्षमा दम दया अचारो।
बुद्धि रु तन मन वाणी सो पावन, हो निर्दोष ब्रह्मविद्या विचारो।।
चित सँतोष सहित अक्रोध हो, धर्म यही दश अँग सु धारो।
रामप्रकाश है मानव लक्षण, चित धरे सँस्कार हमारो।।७।।
जो जेहि विधि ईश्वर ने हमें, उदार होकर दीयो सहारो।
ऐसे ही हम सदा सब के हित, कारक हो उपकार विचारो।।
शुभ कर्म करो सब के वर चिन्तक, दोष विकार सो दूर निवारो।
रामप्रकाश है मानव लक्षण, चित धरे सँस्कार हमारो।।८।।
मानव की सोच करे सब तन ही, ताहि प्रभाव मन राखत भाई।
ताहि प्रभाव के कारण तन हो, जीवनचर्या का काल बिताई।।
तन रु मन के युगल प्रभाव ते, जीवन होवत पूरण आई।
रामप्रकाश शुभ सोच करो नित, हास्य प्रसन्नता प्रेम बढाई।।९।।
नर नारी को भेष पृकृति से, अँग डाढी स्तन से भाई।

घर्षण तापन काटन होवत, स्वर्ण की पहिचान सदाई ।।
त्याग शील ज्ञान ते होवत, मानव की पहिचान बताई ।
रामप्रकाश यह नीति बतावत, त्रिविधि से पहिचान लखाई ।।१०।।
देह सुन्दरता नश्वर नित ही, गुण हीन होवे तो व्यर्थ सदाई ।
मन कर्म विचार चरित्र, वाणी व्यवहार सँस्कार सुहाई ।।
यही हो जीवन में सुखकारक, प्रेरक शिक्षक लोक सराई ।
रामप्रकाश है मानव के गुण, हृदय धरे धन भाग्य सदाई ।।११।।
नम्र भाव क्षमा गुण धारण, कृतज्ञता ज्ञापन मानव सोई ।
दूध दही घृत छाछ सो एक ही, कुल सँकुल में ऊपज होई ।।
मूल्य स्वभाव सभी भिन्न राखत, ऐसे ही मानव के गुण कोई ।
रामप्रकाश श्रेष्ठ गुण कारण, जनम से साथ न आवत जोई ।।१२।।
पूण्य सँस्कार हो मात प्रभाव सें, होय सुशील स्वभाव बनावे ।
पिता के पूण्य ते चतुरता बल, वँश के पूण्य उदारता आवे ।।
स्वयँ के पूण्य से भाग्य पुरुषार्थ, सँग प्रभाव ते साधन लावे ।
रामप्रकाश हो धर्म स्वभाव सु, भव से पार स्वरूप समावे ।।१३।।
टिप्पणी - कोई भी इंसान अपनी माता के पुण्य से सुशील होता है, पिता के पुण्य से चतुर होता है , वंश के पुण्य से उदार होता है और अपने स्वयं के पुण्य होते हैं तभी वो भाग्यवान होता है, अतः भाग्य प्राप्त के लिए सत्कर्म आवश्यक है ।

।। उतम मानव ।।

चार वेद रु पुराण अठ्ठारह, गीता रामायण यही पुकारे ।
स्मृति उपनिषद ग्रन्थ सन्त यों, वाणी सबही ऐक उचारे ।।
तीनों देह रु त्रिगुण द्रश्य सो, मिथ्यादृष्टि परिवर्तन वारे ।
रामप्रकाश मानव वह उतम, जो जीवात्म में ब्रह्म विचारे ।।१।।
क्रोध को जीतना प्रेम क्षमा सँग, पाप को सदाचार गमावे ।
दान से जीतिए लोभ पृवृति रु, झूठ के खोज सत्यवृत मिटावे ।।
न्याय वृति से अन्याय को जीतिए, वात्सल्य भाव समभाव समावे ।
रामप्रकाश यह मानवता गुण, सजन व्यक्ति आप निभावे ।।२।।
सुगन्ध बिना जैसे पुष्प है व्यर्थ, तृप्ति बिना ज्यों प्राप्ति मानो ।
ध्येय सिद्धि बिन कर्म है व्यर्थ, प्रसन्नता बिन जीवन जानो ।।
ज्ञान अद्वय बिन मानव जीवन, हरि शरण बिन ऐसे ही आनो ।
रामप्रकाश बिन मानवता के गुण, मानव जनम अकार्थ हानो ।।३।।
मानवता के गुण जाही मे होवत, शील सँतोष रू शम दम वारे ।
शुभ विचार रु शुभ कर्म हो, सत्य मधुर हो वाणी विचारे ।।
शुद्ध व्यवहार सँस्कार हो सुन्दर, विनय भाव से सँबँध सारे ।
रामप्रकाश है महामानव के गुण, स्वर्ग धरा पर जीवन धारे ।।४।।
मात पिता कुल कर्म सँस्कार ते, मानव जनम वहीं पर पावे ।
पूर्व कर्म प्रधान प्रबल ते, राजयोग विधि योग बनावे ।।
धरा दबा धन, राज योग अरु, औचक सम्पति आपहि आवे ।
रामप्रकाश जो उतम भाग्य होवे तब, मानवता सँग सुख सात हि लावे ।।५।।

सँस्कार पावत सात विधि धर, शुभ अशुभ हो मानव सारे।
मातृ के जब गर्भकाल गत, मानसिक बोध रस रक्त सँचारे।।
मात पिता सोहबत हो शिक्षक, आँख रु कान ते पावत सारे।
रामप्रकाश विचार करो शुभ, मानव होवत शतगुण वारे।।६।।
बिना फल हो रु शुष्क वृक्ष हो, कोई पत्थर नही फैंकत प्यारे।
पत्थर ताहि पे मारत है जन, फलवान मृदु रस लागत द्वारे।।
जा मानव में मानवता गुण, ताकि बुराई को खोजत सारे।
रामप्रकाश बुरे लोगन के, कोई ना देखत औगुण भारे।।७।।
वस्त्र सफेद मे कालिख दाग को, देखत है सब लोग चितारे।
अजब गजब की वस्तु अमोलख, ताहि को देख हो चकित सारे।।
कोयला कूकस गन्द भरी जहाँ, ताहि की ओर में कौन निहारे।
रामप्रकाश सुमानव के गुण, देख हैरान जो होवत न्यारे।।८।।
मानव देह में सुन्दरता है बस, देख खुशी हो व्यर्थ भाई।
कर्म विचार रु वाणी में गुण, व्यवहार सँस्कार को देखो लाई।।
चरित्र सहित छहों गुण सुन्दर, जिस में होवत यही सदाई।
मानव वही है सब से सुन्दर, रामप्रकाश कहै दरसाई।।९।।
हँस मानव प्रधान होवे तब, कारज सिद्ध होवे शुभ सारे।
साज समाज मरियाद रहे थिर, ज्ञान रु ध्यान विधेयक भारे।।
हँस उडे अरु काग पावे पद, काम समाज मरियाद बिगारे।
रामप्रकाश सपूत सुधारत, पूण्य प्रताप से पावत प्यारे।।१०।।
बिन्दी एक रुपये में आवत, वह ललाट मे शोभा बढावे।
पायल चाँदी को मूल्य घनों पर, पाँव में पहनत शोभित थावे।।
धन दौलत से बड़पन नाहिन, धर्म रु कर्म से नाम कमावे।
रामप्रकाश सम्मानित मानव, पद प्रतीष्ठा सब वह पावे।।११।।
लेवन को है हरि नाम सदा, सुख धाम राम नित याद करो।
देवन को है अन्न दान सदा, प्राण रक्षा उपकार खरो।।
करने को शुभ काम करो मन, इन्द्रियन सँयम कर भव तरो।
रामप्रकाश नर जीवन मे शुभ, पुरुषोत्तम लक्षण यह चित धरो।।१२।।

।। गुणवान की प्रतिभा छुपाने से नहीं छुपती ।।

गुणवान प्रतिभा मानव की, किसी भांति छिपाये कभी न छिपे।
कस्तुरी सुगन्ध सो आप ही फैलत, पुष्प सुवास सब काहु लिपे।।
हीरा पन्ना रु माणक मोल को, जवहरि जानत भाव चिपे।
रामप्रकाश कोऊ जानत मानत, सतगुरू की गम लोक दिपे।।१।।

।। अधम के लक्षण ।।

सतसँग जाय के बात सँसार की, व्यशन चाय में समय गमावे।
सन्त के शब्द सुने नहीं श्रवण, मन में नाना तर्क बढावे।।
वाद विवाद में समय को खोवत, आप सुने ना और सुनावे।
रामप्रकाश ये अधम के लक्षण, सतसँग में जावत नर्क सिधावे।।१।।

अन्तस्थ रहे त्रिदोष के कारण, भव में पशु वृत मानव प्रानी।
निद्रा भोजन भोग समान ही, अन्तस्थ कामादिक मृत्यु समानी।।
ईर्षा द्वैष रु मोह भरे मन, दुर्गुण दोषादिक भरे अभिमानी।
रामप्रकाश है पशु के भाग्य से, घासन खावत मूरख मानी।।२।।
दोय तरह के पशु वृत जीवन, मांस अहारी रु शाक अहारी।
गाय भैंसादिक माँस ना खावत, सिंहादिक नहीं घास खवारी।।
मानव अधिक पशुवत जीवन, घास रु माँस को खावत भारी।
रामप्रकाश महा खेद को चिन्तन, पशु ते अधिक मानव भृष्टाचारी।।३।।
कामी क्रोधी रु दरिद्र निन्दक, तन पोषक कृपण अति जानो।
सन्त श्रुति हरि हर विरोधी जु, विमूढ अयशी रोगी अति मानो।।
उद्यम हीन आलसी परमति, दुर्मति युत मृतक यह गानो।
रामप्रकाश जीवन दुःख पावत, शास्त्र सन्त की साख परमानो।।४।।

।। पावन घर ।।

जाहि भवन में हरि गुरू मन्दिर, वेद वेदान्त ज्ञान यज्ञ होही।
गीता रामायण पाठ रु पूजन, सदाचरण युत परिजन सोही।।
ब्रह्मज्ञानी सन्त चरण परे रज, सो भव तारक भव न जोही।
रामप्रकाश भ अक्षर कटे पर, वन समान बने घर वोही।।१।।
मात पिता पद पूजन हो नित, आज्ञा मान के काम करे।
भाई बहन को प्रेम रहे घर, सात्त्विक आचरण सब धरे।।
सन्त रु सतगुरू आगमन रहे नित, सत्संग हरि गुण गान वरे।
रामप्रकाश वह भवन सुहावन, देव सदा तिंहि आय चरे।।२।।
सो घर पावन स्वर्ग समान है, सतसँग कथा हरि नाम जपावे।
पाठ पूजा पँच यज्ञ करे नित, मानव के त्रय ऋण चुकावे।।
पति पत्नि के प्रेम स्वभाव से, कुल परिवार को इष्ठ निभवे।
रामप्रकाश पतिव्रत नारि से, नाक धरा पर सो दरसावे।।३।।
जा घर में नित सन्त पधारत, ता घर में नित नियम आचारा।
नशा रु व्यशन कछु नही होवत, ता घर देव समान उदारा।।
ज्ञान विचार रहे नित चर्चित, ता घर ना यम पाँव पसारा।
रामप्रकाश है सुख स्वरूप ही, ताहि ते वन्दन नित हमारा।।४।।
परम सुहावन पावन धाम है, जहँ हरि चर्चित होय विचारा।
सन्त के सानिध्य सतसँग होवत, व्यशन रहित श्रोता गण सारा।।
भक्ति रु ज्ञान विचारत है तत, पावन होवत शुद्ध आचारा।
रामप्रकाश वही घर पावन, हरदम केवल नाम उचारा।।५।।
वेद वेदान्त विचारत है तत, हरदम चित में आनन्दकारा।
जहाँ विराजत वह घर पावन, देव रम्य शुभ ज्ञान विचारा।।

दे उपदेश शुभ भाव जगावत, हरि चर्चा रत शुद्ध आचारा।
रामप्रकाश ऐसे सन्त सामर्थ, वह सदेही में मुक्त मँझारा।।६।।
घर का कलश शुभ भावना रु, मानवता घर तिजोरी जानो।
मधुर वाणी है घर की दौलत, शान्ति घर महा लक्ष्मी मानो।।
पैसा घर महमान बराबर, एकता घर ममता आनो।
रामप्रकाश व्यवस्था घर शोभा है, समाधान सुख साचो पानो।।७।।
व्यवहार है घर कलश सुन्दर, इन्सानियत है घर माँहि तिजोरी।
मधुर वाणी है धन की दौलत, महालक्ष्मी है शान्ति मोरी।।
पैसा रुपया मुसाफिर है यह, ममता है समता घर धोरी।
रामप्रकाश व्यवस्था घर सोभित, समाधान सुख पावत जोरी।।८।।
मात पिता की सेव करे नित, सज्जन सन्त सदा घर लावे।
घर पत्नी व्रत पालत है नर, अतिथि आदर सहित जिमावे।।
सात्त्विक व्यवहार भोजन पान रु, व्यशन दोष को दूर भगावे।
रामप्रकाश वही सद्गृहस्थ है घर, स्वर्ग ताहि धरा पर आवे।।९।।

।। यमराज का निवास ।।

खावन पीवन मौज उडावन, जा घर व्यशन धूम मचावे।
मुसण्डे जहँ रोल रुलावत, नीति न रीत की बात चलावे।।
सन्तन का अपमान करे जहिँ, हरि निन्दक ईर्षा द्वैष बढावे।
रामप्रकाश यमराज बसे वहीं, नर्क जाय भव माँहि डुबावे।।१।।
जा घर में हरि कथा नही अरु, जा घर सन्त कभी नही जावे।
जा घर में नहीं सतसँग होवत, अभ्यागत नही भोजन पावे।।
जप तप यज्ञ नही हरि सुमिरण, व्यशन नशे रत धूम मचावे।
रामप्रकाश ऐसे घर पाहुन, यम के दूत सदा चलि आवे।।२।।
जा घर शुद्ध व्यवहार नही वहाँ, शुद्ध आचार विचार न पावे।
जहाँ हरि कथा नही सतसँगत, व्यशन नशे रत धूम मचावे।।
ऐसे घरों बिच सन्त न जावत, जीवित ही शमशान कहावे।
रामप्रकाश तहाँ भूत बसे वहाँ, यम के दूत सो जोर जमावे।।३।।
मोह के रूप मे सन्त को मानत, जाति सम्बन्ध से भाव को धारे।
सन्त महात्म वे नही जानत, सो जावत यम के घरसारे।।
सन्त के भाव से पूजत प्रेम से, जीवन में उपदेश उतारे।
रामप्रकाश वह सतगुरु भावुक, परम पदार्थ पावत प्यारे।।४।।

।। भक्ति भक्त का सम्बन्ध ।।

इष्ट प्रभु को पकड़ रहे निज, मर्कट भाव से भक्त दृढाई।
श्रृद्धा औ विश्वास रखें मन, जैसे रखे तिहिं हाल रहाई।।

अथवा हो मार्जार भाव से निश्चित, आप करे प्रभु आय सहाई।
रामप्रकाश राम प्रतिपालक, शरणागत निश्चय होय सदाई ।।१।।
राख श्रद्धा मन दृढ रहे नित, मर्कट शावक भाव लगाई।
पीड़ित होय चाहे दुःख भोगत, हरि करे प्रतिपाल सहाई ।।
होय निशक्त सु हरि भरोस में, जैसे रखे तिंहि हाल रहाई।
रामप्रकाश शरणागत रक्षक, मर्कट शावक भाव दृढाई ।।२।।
दुःख रु सुख में पीड़ित हो पर, बाल मर्कट सम दृढ़ हो जागे।
हरि की भक्ति गहे दृढ़ प्रेम सें, मर्कट भाव भक्ति मन लागे ।।
निशक्त होय रहे हरि शरण में, मार्जार भाव से हो अनुरागे।
रामप्रकाश हो सबल निर्बल, भक्ति के भाव को कबहूं नहीं त्यागे ।।३।।

।। हरि भक्ति ।।

भक्ति के अँग में सर्व प्रथम ही, गुरू पदाश्रय शरण गहाई।
सोच समझ कर निश्चिन्त निश्चय, वैष्णव धर्म सम्प्रदाय पाई ।।
धर्म रु कर्म सिद्धान्त सुहावत, रहणी कहणी परख ले भाई।
रामप्रकाश हो गुरू दीक्षित, भवसागर हो निर्भय ताई ।।१।।
ध्रुव प्रहलाद को जन्म दियो धन, बालक आयु में भक्ति कमाई।
शिवरी मीरा रु कर्मा और हूँ, सहजाबाई रु अनेक ही बाई ।।
सन्त रु साध्वी हरि शरणागत, आपनो जीवन सफल बनाई।
रामप्रकाश हरि भक्ति बिना जन, मानव जीवन अमोलख जाई ।।२।।
नभ से पतित वर्षादि जल आवत, कोई किसी माध्यम बहता जावे।
नाले नदियों से बहता वह जल, अन्तिम जाय समुद्र समावे ।।
वैसे ही कोई भी पूजन अर्चन, परमेश्वर के प्रति जाय बहावे।
रामप्रकाश करो हरि सुमिरण, पाठ पूजा नही निष्फल थावे ।।३।।
भव की भक्ति रु योग युक्ति कर, ज्ञान गोप्य गति एक ही धारा।
भक्ति इष्ट मय रु योग ईश्वरमय, ज्ञान ज्ञय सत रूप सँभारा ।।
परम परमार्थ कल्यणकारी, ब्रह्म स्वरूप मे मिले सुखकारा।
रामप्रकाश लक्ष्यार्थ एक ही, जीवन का सत होय उद्धारा ।।४।।
तप तेज मे ऋद्धि रु सिद्धि मिले, जग कीर्ति सम्पति मिले सब कोई।
योग ते जीवन आयु बढे बल, तामस तप बढे बहु होई ।।
जीवन श्वासोश्वास में जोवत, ज्ञान बिना सब व्यर्थ जोई।
रामप्रकाश हरि भजन बिना सब, अभरा सभर भरे बिन रोई ।।५।।
भगवान भक्त वत्सल है नित वे, सरल सीधे को मिल जाते है।
ज्ञानी ध्यानी पण्डित पुजारी, अपनी चतुराई चलाते है ।।
भाग्य लिखा वो मिलने का, मिले भाग कर जाते है।
रामप्रकाश जो नही मिले कछु, हरि आप उन्हे पहुँचाते है ।।६।।
मानव हमेश विचार रु सोच करे, कैसे कपड़े पहनू जो अच्छा पगे।
कैसा करूँ शृंगार आज यह, पर यह नही सोचे विकार भगे ।।

परमेश्वर को अच्छा लगूँ यह, कभी नही सोच विचार जगे।
रामप्रकाश हरि भक्ति सतसँग से, यह सौभाग्य के भाग लगे।।७।।
सँसार महान है दुःख का सागर, लख चौरासी नाल कहावे।
जीव जन्तु है भयँकर घातक, मच्छी मगरमच्छ और बतावे।।
अनन्त रोग रु ताप त्रिगुण, कष्ट को थाह कदापि न आवे।
रामप्रकाश करो हरि सुमिरण, सतगुरू भव से पार पठावे।।८।।
जिन हि ने हरि कथा रसामृत, जान लियो मन रस भिगोयो।
मानव व्यथा धरी मन कारण, कथा व्यथा युग पार न जोयो।।
सन्त वही जग पूरण जानहूँ, व्यथा को त्याग कथा वश होयो।
रामप्रकाश यह अजब गजब है, दुर्लभ देह में जानत होयो।।९।।
सुन्दर देह पतिव्रत नारि सु, आज्ञा वृत पुत्र होवे धन भारी।
मन के मोहित साज होवे बहु, सम्पति सुमेरु समान हो सारी।।
कीर्ति पद शोभा जग जाहिर, चल अचल हो वैभव भारी।
रामप्रकाश हरि भक्ति नही मन, सन्त शरण बिन सर्व असारी।।१०।।
भाव से जप्यो ध्रुव प्रहलाद ने, कुभाव से कँश रावण ने जान्यो।
अनख या आलस से भी, हरि नाम को जिसने उर आन्यो।।
ज्ञात अज्ञात पड़्यो कोई बीज, भूपर उलट सुलट जम मान्यो।
रामप्रकाश जपो हरि नाम को, निष्फल कदापि ना होवत गान्यो।।११।।
हरि गुरू भक्ति की शरण गही तब, भक्तन भाव बढ्यो अति भारी।
सतसँग भाव लग्यो हरि रँग तो, ताप रु पाप क्लेश निवारी।।
हृदय शुद्ध भयो अति पावन, ज्ञान विज्ञान उदय चित सारी।
रामप्रकाश भये साधन प्रबल, सच्चिदानन्द भयो आप अपारी।।१२।।
काहू की लगन छोकरा छोकरी, डोकरी कुल कुटुम्ब मे लागी।
काहू की लगन सुत वित लोक में, हरदम मोह में रहत है पागी।।
छोड़ा जग जाल के मोह को, जाही की लगन प्रेम में जागी।
रामप्रकाश में अनुरक्त रहे नित, हरि कीर्तन में सो बड़भागी।।१३।।
हरि गुरू हे अर्ज सुनो अब, दर्शन बिन आँसु झड़ लावे।
बात होवे नही ज्ञान ध्यान बिन, तड़पत है उर मना दुःख पावे।।
हरदम स्मृति रहे उर माँहि भी, प्रमाद जनक कभी प्रातः न आवे।
रामप्रकाश आलस्य वश निर्भय हो, सो जाये ऐसी पल न भावे।।१४।।
जानकी मात सीया जगज्जननी है, पिता जगदीश्वर राम हमारे।
बान्धव हरि भक्त सन्त सज्जन, राम प्रसाद ही भोज सुधारे।।
तीन ही लोक में प्रेमी बसे जहाँ, वही स्वदेश है भूमि वृत धारे।
रामप्रकाश हरि भक्त वही जन, प्रेमी सज्जन बन्धु विहारे।।१५।।
प्रातःकाल ब्रह्म मुहुर्त में जागत, ऊठ जपे हरि नाम को प्यारा।
शुद्ध वायु कर सेवन भ्रमण, मुख छवि तन क्राँति सुधारा।।
भाग वही यह समय साधत, रोग रु ताप समूल निवारा।
रामप्रकाश ब्रह्म मुहुर्त महात्म, जानत मानत हरिजन सारा।।१६।।

प्रातःकाल में शुभ ब्रह्म मुहूर्त, रात्री के चतुर्थ पहर को जाने।
देव ऋषिगण नाम जपे उठ, स्नान रु पूजन इष्ठ प्रमाने।।
गुरू पितृगण पूजन जप तप, पँच यज्ञ के नियम निभाने।
रामप्रकाश पूण्यात्म जागत, पावत चार पदार्थ छाने।।१७।।
काम ते क्रोध रु क्रोध ते भ्रम उत्पन्न, भ्रम ते बुद्धि व्यग्र हो जाती।
बुद्धि व्यग्रता ते तर्क नष्ट होवत, ताहि ते क्रिया नष्ट हो पाती।।
ताहि ते पतन होवत मानव, गीता ज्ञान में यही बताती।
रामप्रकाश भजो हर राम ही, कुशल मँगल हो मन सुहाती।।१८।।
नाम भजन रु भक्ति के भाव मे, पाँच ही बात न कहीँ सुहावे।
विषय भोग रु हँसी मजाक भी, जगत प्रीत बहु बात न आवे।।
क्रोध रु नफरत मीठे जहर है, स्वयँ पीवत है सोच न भावे।
रामप्रकाश मरे नही दूसर, आपनी घात सो आप ही लावे।।१९।।
पक्ष करे वह भक्त भक्ति नही, निर्पक्षी की भक्ति उद्धारे।
द्वन्द्वात्मक वृति में ज्ञान नही वर, निर्द्वन्दी सन्त ज्ञान पुकारे।।
मोह रहे तब मोक्ष नही मन, निर्मोही जन मुक्ति सिधारे।
रामप्रकाश अच्युतानन्द आतम, सन्त यही सत वचन उचारे।।२०।।
मानव जनम की लाभ रु हानी, होय सदा नित जीवन माँही।
खोना पड़े यदि सब कुछ ही, पर ईश्वर भक्ति करो मन माही।।
सतगुरू शरण सतसँगत कर, साधन ज्ञान धरो चित माँहीं।
रामप्रकाश श्रद्धा चित पूरण, धैर्य सहित राखो नित माँही।।२१।।
सम्बन्ध नही कछु कारण, मन माने जन सोई हमारो।
प्रेम निष्ठा विश्वास जहाँ पर, सुरक्षा सहयोग में देवे सहारो।।
सहानुभूति सम्मान मिले वर, सब में अपनत्व भाषत प्यारो।
रामप्रकाश हरि भक्ति में शक्ति, सो मानवता मे मानव भारो।।२२।।
सुख है स्वप्न समान समझ मन, जागत ही वो त्वरित विलावे।
दुःख है महमान मुसाफिर, ठहरन वाला नही वो जावे।।
हर हाल में मस्त रहो नित, हरि भजन मे मन लगावे।
कविता रामप्रकाश की राघव, विविध भाति से सन्त समझावे।।२३।।
दान किये ते अर्थ घटे पर, लक्ष्मी घटे नही सौ वार दिये।
घड़ी बन्द रहे तो रहे पर, समय कदापि बन्द नाही किये।।
झूठ छुपाये छुपे तो छुपे, पर सत्य कदापि नाही हिये।
सँसार के लोक सुधरे ना सुधरे निज, रामप्रकाश सुधरे हरि नाम लिये।।२४।।
जहां वनराज बसे मृगराज रहे, तहाँ नही पशु पास घनेरे।
बाज बसे जिंहि वृक्ष की डाल पे, खेचर पास बसे नही केरे।।
ब्रह्मज्ञानी बसे जिहिं धाम ग्राम में, भेष पाखण्ड बसे सब छेरे।
रामप्रकाश हरि वास करे जहाँ, पाप रु ताप रहे नही नेरे।।२५।।
लक्ष्मी के पास दरिद्रा रहे नही, रवि के पास अन्धेर रहे कैसे।

हँस के पास ना बक ही सोहत, शयेन के पास बटेर न जैसे ।।
सिंह के पास न पशु रहे कोऊ, कामधेनु ढिग खरिया है तैसे ।
रामप्रकाश हरि वास करे जहाँ, पाप रु ताप रहे नही ऐसे ।।२६।।

।। साधू भेष श्वेताम्बर और और पीताम्बर कहाँ से आये ।।

गलता मे थे तारानाथ जी सिद्ध, कृष्णपयोहारी वहाँ पर आये ।
पराक्रम प्रबल सिद्धि विजय वश, काषाय श्री वैष्णवों ने पट पाये ।।
श्वेताम्बर रामानन्द जी स्वामी, पीताम्बर श्री राम से लाये ।
रामप्रकाश यह रहन हमारी, गुरू परम्परागत हमे मन भाये ।।१।।

।। सन्त (फकीर)का अंग ।।

भूमि पे आसन मूँआ बिछावत, जीवित ओढत निर्भय सोवे ।
आवत जावत श्वास झकोलत, अर्ध रु ऊर्ध में शब्द को जोवे ।।
हरदम सतगुरू पास विराजत, अभय आशिस ले धुन मे खोवे ।
फिकर फाका करे फकीर सो, रामप्रकाश सन्त मुक्ता होवे ।। १।।
आतम ज्ञान में दृढ भयो चित, हानी लाभ में क्यों फिर रोवे ।
लोमश आयु हो धन्य लक्ष्मी सँग, मृत्यु शैया पर आज ही होवे ।।
ओढ बाघम्बर होय दिगम्बर, चाहे श्वेताम्बर शान्ति सँग सोवे ।
मस्त एकान्त में मढी मशान में, फकर रामप्रकाश में खोवे ।।२।।
फिकर का फाका कर सोवत, चिन्ता चूर के खाक बनावे ।
हरदम चिन्तन एक ब्रह्म को, सत चित आनन्द माहि समावे ।।
हर्ष रु शोक को द्वन्द मिट्यो सब, नित निश्चिन्त निर्भय पद पावे ।
रामप्रकाश फकीर सो मस्त है, हरदम राग सौलहवाँ गावे ।।३।।
हरि के अर्पित जीवन है जग, ज्ञान की मस्ती में मस्त परवानो ।
मिले सो खाय इच्छा वत रहन है, भौतिक में नही ठोर ठिकानों ।।
सतगुरू शरण प्रपँच रहित हो, निष्प्रह निश्चल चेतन जानो ।
रामप्रकाश सच्चिदानन्द केवल, फिक्र बिना वह फकड़ रहानो ।।४।।
मस्त फकीर वही जग आनन्द, साधन सहित ज्ञान मस्ताना ।
गाँठ बाँध कर राखत नाहि न, फिर भी सब ही ठाठ बखाना ।।
फिकर का फाका कर खाया, चिन्ता रु चाहना रही नही आना ।
रामप्रकाश ब्रह्मज्ञान मस्ती में, अपनी हस्ती में रह मस्ताना ।।५।।
आनन्द रूप ब्रह्मानन्द मे सब, अनर्थ मूल सो सर्व विलाई ।
सहज क्रिया सब प्रारब्ध के वश, भया निश्चिन्त अब सँशय नाँई ।।
द्वन्द रहित सुख जीवन में बहु, सर्वत्र आतम एक दिखाई ।
फिकर रहित फकीर भया तब, रामप्रकाश निर्भय पद पाई ।।६।।
सन्त सदा सुखधाम कृपाघन, सत उपदेश सुनावत प्यारा ।
भाग भला सतसँग सुने वर, परम जिज्ञासु हरि रस सारा ।।
व्यशन त्याग करे सुध साधन, हो निष्प्रह रु ज्ञान विचारा ।
रामप्रकाश वही जन सज्जन, ब्रह्म स्वरूप को जानन हारा ।।७।।
नाम लिवारी सन्त मस्तान है, आठ हूँ पहर आनन्द अपारा ।

आपनी मौज से हो भू भ्रमण, सर्वत्र राम का राज हमारा।।
अयाचित भिक्षा ले भोजन, पावत शुद्ध प्रसाद आचारा।
रामप्रकाश नमो तिहूँ काल में, जो हरदम रह ब्रह्म विचारा।।८।।
वेद वेदान्त विचारत है तत, हरदम चित में आनन्दकारा।
जहाँ विराजत वह घर पावन, देव रम्य शुभ ज्ञान विचारा।।
दे उपदेश शुभ भाव जगावत, हरि चर्चा रत शुद्ध आचारा।
रामप्रकाश ऐसे सन्त सामर्थ, वह सदेही में मुक्त मँझारा।।९।।
तरुवर काष्ठ रु छाया को देवत, अपकार उपकार दोउ परसावे।
सरोवर समय गमन जल देवत, हानी रु लाभ दोनो दिखलावे।।
वर्षा अति रु अनावृष्ठि होवत, दारिद्र दोष को यों उपजावे।
रामप्रकाश सन्त सुख सागर, गमनागमन सदा सुख दावे।।१०।।
सत्य एक निरन्तर सत्य है, त्रयलोक रु त्रयकाल अधारे।
ब्रह्म सनातन सत चित केवल, आनन्द अद्वय अपार अपारे।।
व्यापत व्याप्य रु व्यापक वोही, त्रिकाल अबाध्य अद्वय सारे।
याही लखे वह सन्त है पूरण, रामप्रकाश विचार हमारे।।११।।
सन्त रु बसन्त में समानता है ये, शब्द सुहावने है सुखकारी है।
बसन्त की ऋतु आवत ही, प्रकृति सुन्दर सुखदारी है।।
तैसे ही सन्त के आवत ही, सँस्कृति समाज सुखवारी है।
रामप्रकाश यह पूण्य प्रतीक है, भाग्य से ही दुःखहारी है।।१२।।
सन्त के कारण गृहस्थ को पर, लोक सुधार होवे सुख पावे।
गृहस्थ के कारण सन्तन को नित, सेवा साधन से लोक बनावे।।
दोनो हि मिल के काम चलावत, लोक परलोक सभी सुख आवे।
रामप्रकाश जो आपने पथ चलि, जीवित जनम सफल जग थावे।।१३।।
जो जन सन्त मे भाव धरे मन, कुल कुटुम्ब के है हमारे।
सगे सम्बन्धि मात पिता सुत, भाई मित्र जन मोह पसारे।।
सम्बन्धित भाव से जानत मानत, नर्क मे जावनहार है सारे।
रामप्रकाश है सन्त परमेश्वर, हरि की शरण में जीवन डारे।।१४।।
जो जन ईर्षा रु द्वैष से बाहिर, सत्य सदा मृदु बात उचारे।
न्याय प्रिय रु सत्य उपदेशक, आचरण शुद्धि हरि नाम उचारे।।
ब्रह्म विद्या उद्बोधन कर के, जिज्ञासु जन को भव से तारे।
रामप्रकाश नमो पद वन्दन, वही सन्त सिर मोर हमारे।।१५।।
सन्त अवतरण रु कर्मभूमि जहाँ, ब्रह्मलीन हो चरण रज पावे।
पूण्य भूमि हो तीर्थ क्षेत्र वही, आस्थावान का केन्द्र कहावे।।
सन्त चरण रज का महत्व जानत, नतमस्तक हो शीश नमावे।
रामप्रकाश सन्त गुरु स्मृति नमे, ताकी महिमा कही ना जावे।।१६।।
षट् विकार जीत अनघ अकाम ही, अकिंचन सो साधनयुत होई।
भक्ति युक्ति व्यवहार हो पावन, कोह ना द्रोह विकार को धोई।।
विवेक वैराग्य सु ज्ञान रु ध्यान मे, लीन सदा प्रारब्ध सँजोई।

रामप्रकाश सन्त शास्त्र कहै इमि, सतगुरु सन्त के लक्षण सोई ।।१७।।
सन्त सभी हरि रूप निहारत, ईर्षा द्वैष को दूर निवारे।
विश्व को मानत कुल कुटुम्ब सो, सब ही जग में मीत हमारे ।।
सो पक्षपात रु द्वन्द तजे मन, सब मे आतम रूप निहारे।
रामप्रकाश जो भेद निहारत, सो जन जावत नर्क के द्वारे ।।१८।।
हर समय एसे ही लोग मिले हमें, हरि के भक्ति यश गावन हारे।
व्यशन ते दूर हरिजन होय तो, दोष विकारजीत सन्त पियारे ।।
कथा कीर्तन नाम का सुमिरण, प्रतिक्षण नाम उचारन वारे।
रामप्रकाश उनके दर्शन हो नित ही, मन के कलुष हटावत सारे ।।१९।।
सन्त कृपा अति सुख का कारण, सतसँग लाभ सदा हित चावे।
ग्रन्थ रु वाचक मध्य है चार हूँ, दोष को दूर करे मति भावे ।।
कायक वाचक मानस हूँ करि, मल विक्षेप को दूर हटावे।
रामप्रकाश करो सन्त दर्शन, ताप मिटे बहु बोध बढावे ।।२०।।
ब्रह्मचारी गुरू ज्ञान प्रचारक, भेद प्रहारत भव भय हारी।
यथार्थ का उपदेश सुनावत, पाखण्ड दूर विडारत भारी ।।
देव न दूत न भैरव भूत न, व्यर्थ उपाधि छुड़ावत सारी।
रामप्रकाश नमो करे दण्डवत, ऐसे सन्त की मैं बलिहारी ।।२१।।
गीता ज्ञान रु सन्त कहै यह, जो हर्ष शोक में नाहि डुलावे।
पश्चाताप न शुभ अशुभ जो, चित में हानी रु लाभ भुलावे ।।
लोक परलोक की वासना त्यागत, सो जन स्वनिजातम पावे।
रामप्रकाश ऐसे सन्त भागवत, मुक्त स्वरूप ब्रह्म माँहि समावे ।।२२।।
नगर पधारे भाग्यवान हम, घर पधारे अहो भाग्य हमारे।
याद करे गुरू हम सौभाग्य, गूरू करे परम भाग है सारे ।।
यह भी नही होवत है तब, जीवन है दुर्भाग्य के भारे।
रामप्रकाश सन्त ही सर्वत्र, सुख का मूल आनन्द भण्डारे ।।२३।।
सन्त धरा पर ताप हरे सब, व्यशन दोष को दूर प्रहारे।
जन उपदेशत हरे विकारन, आप अडोल रहे जग से न्यारे ।।
ईश्वर चिन्तन ब्रह्म स्वरूप में, निश्चय एक रु सत्य विचारे।
रामप्रकाश धन्य सन्त महात्म, वही सन्त जन प्राण हमारे ।।२४।।
सन्त महाजन महा पुरूष है, परम पुरुषोत्तम ब्रह्म स्वरूपा।
षट् विकारजीत सँशय रहित वे, विवेकादि साधन साथ अनूपा ।।
ब्रह्म का चिन्तन और ना मन्थन, मिथ्या प्रपँच से सदा अजूपा।
रामप्रकाश प्रणाम करे नित, ऐसे सन्त भूपन के भूपा ।।२५।।
सन्त पधारत भूमि सुहावत, धन्य वे मात पिता बन्धु जन सारे।
जहाँ ब्रह्मवेता ब्रह्मज्ञानी वर, जिस धरा पर चरण पखारे ।।
षट् विकारजीत निर्मोह निर्मोचन, परम शक्ति हरि आप पधारे।
रामप्रकाश प्रणाम करे नित, सन्त सदा सरताज हमारे ।।२६।।
सतगूरू सन्त सो जीव उद्धारक, जिज्ञासु जन जो शरण में आवे।

सन्तन के मुख हरि स्वयँ बोलत, ज्ञान रु ध्यान भक्ति पद गावे ।।
ब्रह्मवेता ब्रह्म रूप निरन्तर, साधन सहित उपदेश बतावे ।
रामप्रकाश भक्त जन साधक, पद वन्दन कर लाभ उठावे ।।२७।।
परम परमार्थ हेत ही आवत, निर्गुण से प्रभु सर्गुण आवे ।
जिज्ञासु जन के जगत कारण, पर उपकार हेतु देह धरावे ।।
कुल परिवार तजे जग स्वार्थ, लोक हितार्थ काम कमावे ।
तन मन धन सन्तन को सर्वस्व, रामप्रकाश के हेतु ही ध्यावे ।।२८।।
जीव जगावत भ्रम मिटावत, परमार्थ के माग लगावे ।
भवसागर के जनम रु मरण से, परम जिज्ञासु को पार पठावे ।।
नित उपकार परमार्थ साधत, आतमज्ञान को दृढ सधावे ।
रामप्रकाश सुख सागर है सन्त, आप के माँही आप समावे ।।२९।।
सन्तन की वाणी श्रवण करत ही, अन्तर्पट के मेल मिटावे ।
तन मन के स्वच्छ होवे साधन, अनुभव अपना आप लखावे ।।
भोजन की तृप्ति करे तत होवत, आन कोई नही स्वाद बतावे ।
मार्ग दर्शन करे सन्त उतम, रामप्रकाश जिज्ञासु जन ध्यावे ।।३०।।
अन्तर तीर्थ हरदम में न्हावत, मन वाणी में हरिरस घोले ।
धर्म सनातन अध्यात्म तत्व, ब्रह्मचर्चा उपनिषद् खोले ।।
दोष विकार भ्रम को ढावत, ज्ञान विज्ञान को पूरा तोले ।
रामप्रकाश देह धरि शूक्ष्म, सन्तन के मुख हरि स्वयँ बोले ।।३१।।
सन्त सदा उपदेश दृढावत, गूढ यथार्थ अनुभव ख़ोले ।
सतगुरू सन्त शास्त्र से चर्चित, गुप्त अर्थ को प्रकट तोले ।।
परम विवेकी आवत पावत, ज्ञान प्रसाद हरिरस घोले ।
रामप्रकाश नित्य अवतारी, सन्तन के मुख हरि स्वयँ बोले ।।३२।।
शास्त्र प्रमाणित उतर भाषत, परीक्षक शिक्षक कोई हो आवे ।
मनमुखी हो सतसँग चर्चित, अपने कुल को आप रिझावे ।।
अनुबन्ध साधन सँग प्रयोजन, विधि सहित पूरणता पावे ।
रामप्रकाश उतम गुरू गावत, ब्रह्मनिष्ठ वह सन्त कहावे ।।३३।।
वन वन में चन्दन नही होवत, लालन की नही बोरी भरावे ।
गज गज में मोती नही होवत, हँसन की नही पँगत पावे ।।
फणीधर शेष सभी नही होवत, चक्रवर्ती नही हर नृप थावे ।
रामप्रकाश ज्ञानी सन्त कोईयक, भेषी साँग को वृथा डुबावे ।।३४।।
जाहि सन्तन के शम दम साधन, सिद्ध हुए अरु वासना नाशी ।
ज्ञानात्मा ब्रह्म के निश्चय, ताहि के चरणामृत मिटावत पाशी ।।
सन्त रु हरि के चरणामृत पावत, पाप रु ताप मिटावत राशी ।
रामप्रकाश तीर्थ जल उतम, गँग त्रिवेणी हरिद्वार है काशी ।।३५।।
पक्षी कोटि हजार बसे जग, अनड़ पक्षी जग एक ही राजे ।
नाग अनेक बसे धर ऊपर, शेष नाग कोई एक बिराजे ।।
पक्षी अनेकन मे कोईक है, मोती चुगे हँस सोहँ साजे ।

ऐसे ही भेष धरे जग साधुन, रामप्रकाश सन्त कोईयक गाजे ।।३६।।
मँदिर दर्शन शत करे यज्ञ, पाँच करे तब वही फल ध्यावे ।
यज्ञ करे तप दान करे वर, आन के देवत शत मनावे ।।
पँच साधु के भेष प्रसाद करावत, सो फल पूरण आप कमावे ।
ब्रह्मज्ञानी सन्त के एक ही ग्रास में, रामप्रकाश फल सज्जन पावे ।।३७।।
नट भाट भिटा सब श्रम करे बहु, आपने कर्तव्य बहुत दिखावे ।
बहुरुपिये सो कला दिखावत, रूप धरे बहु साँग धरावे ।।
योगी के भेष अनेक धरे पर, योग सिद्ध नर कोईयक थावे ।
रामप्रकाश साधु बने बहु, साधन साधत धन्य कहावे ।।३८।।
सतगुरू सन्त का हाथ हुमाऊ है, वे ब्रह्मज्ञानी है हँस समाना ।
ताहि को हाथ जिज्ञासु के शीश पे, धारत होवत जीव कल्याना ।।
पाप रु ताप टरे भव बन्धन, पावत मोक्ष को कारण ज्ञाना ।
रामप्रकाश प्रणाम करे नित, सन्त हस्त मम शीश सुहाना ।।३९।।
सन्त सदा भवतारण कारण, निर्गुण से सर्गुण देह धारे ।
पूर्व पूण्य जगे जब प्रबल, सन्त के दर्शन नैन निहारे ।।
ईश्वर रूप कृपा के सागर, अनन्त जिज्ञासु जन पार उतारे ।
रामप्रकाश प्रणाम करे नित, सन्त सदा शिर मोर हमारे ।।४०।।
धन्य भाग जागे जब सुन्दर, सन्त के दर्शन नैन निहारे ।
आवत है भव तारण कारण, सतसँगत के बीच पधारे ।।
पूरण पूण्य से दर्शन पावत, पाप रु ताप कटे तन सारे ।
रामप्रकाश वाणी जन मानत, पावत है शुद्धि बुद्धि सारे ।।४१।।
जप तप ज्ञान रु ध्यान नही कछु, नही रहे कछु पूण्य हमारे ।
जब ते शरण गही गुरू मन्दिर, सन्त की पँक्ति नाम उचारे ।।
सन्त कृपा अपनाय लियो जब, कमी रही नही कछु जन जुहारे ।
रामप्रकाश को सन्त कहै सब, आदर देकर नाम पुकारे ।।४२।।
सब गिरि पर माणक नहिं मिलते, यह मन में देख विचारे ।
दुर्लभ है गज गज के मोती, सिंहन के नही टोल दिखारे ।।
हर वन में चन्दन नही होवत, मानवता नहीं नैन निहारे ।
रामप्रकाश भेष में दुर्लभ, सन्त के दर्शन नीति पुकारे ।।४३।।
सतसँग करे ढिग सन्तन के अरु, साधन सेवा को चित धारे ।
सन्त कृपाल कृपा करे तब, काल चपेट लगे नही मारे ।।
राम प्रताप से कारज होवत, सिद्ध होवत है मन्त्र हमारे ।
रामप्रकाश नमो पद वन्दन, सन्त सभी शिर मोर हमारे ।।४४।।
जा कुल मे वैष्णव जन आवत, जन्म धरे हरि भक्ति कमावे ।
वह मात पिता कुल धन्य धरा, कुल देव सदा धुनि मँगल गावे ।।
स्वर्गीय पितृगण हर्ष मनावत, करे भरोस गति मुक्ति पढावे ।
रामप्रकाश धन्य गुरू शरण होवे जब, सभी धन्य होय हरि गुण पावे ।।४५।।
सन्त अनन्त भये जग भीतर, ज्ञान रु शास्त्र ध्यान उचारे ।

साधन सरल सो सन्त कृपा कर, अनन्त जिज्ञासु पार उतारे ।।
सतगुरू सहायक होवत है जब, सन्त कृपा भव सागर तारे ।
रामप्रकाश नमो वर सन्तन, गुरू चरण नित शीश हमारे ।।४६।।
योग सिद्ध निज देह उद्धारक, ऋद्धि सिद्धि युत लोकेषणा धारे ।
सन्त करे उपदेश सदा शुध, करे उपकार लोक को तारे ।।
जहाँ जहाँ पाँव धरे भू ऊपर, परम पुरुषार्थ से जन निस्तारे ।
रामप्रकाश नमो नित सन्तन, वारम्वार प्रणाम हमारे ।।४७।।
साधन रहित रु शास्त्र ज्ञान बिन, साधु वेश है भाण्ड समाना ।
वीरभूमि बिच निहत्था योद्धा सम, आपन भी नही करे कल्याना ।।
साधक शिष्य को देय न सके वह, युक्ति भक्ति मय आतम ज्ञाना ।
रामप्रकाश हो समर्थ साधु सो, सहजे पावत देवत माना ।।४८।।
सत्य से प्रेम रु कर्म में दत चित, विपत्ति में धैर्य दिखावन हारे ।
दम्भ का त्याग रु हो अनुशासित, यम रु नियम निभावन वारे ।।
कुशल प्रशासन पालत पूरण, सब का सम्मान बढावत भारे ।
मार्गदर्शक अनुभव पूरण, रामप्रकाश सुखी मतवारे ।।४९।।
हरि की कथा रु मानव व्यथा यह, बेअन्त दोनो है भाई ।
जो जन इन को कोई जान लहे मन, वहु सन्त कहावत जाई ।।
समस्त ज्ञान वैराग रु सृष्टि, ऐश्वर्य सहित है भगवन्त कहाई ।
नित्य रु सत्य रहे सनातन, रामप्रकाश यथावत अनन्त कहाई ।।५०।।
प्रतीष्ठा पद रु मान सम्मान में, गर्वित हर्ष ना होवत जाही ।
अपमान हुए कभी क्रोधित नाहिन क्रोधित होय कठोर न थाही ।।
कोमल हृदय नवनीत ते कोमल, पर दु:ख देखत सहत न ताही ।
रामप्रकाश ऐसे सन्त सामर्थ, ताही को कीजिये प्रणाम सदाही ।।५१।।
कोईयक अज्ञान में भूले ही डोलत, कोईयक ज्ञान में गाफिल डोले ।
कोईयक ज्ञान गुमान भरे मन, श्रुति रटे बहु वाचक बोले ।।
कोईयक पण्डित होय के घूमत, कथा विवाद को बेचत तोले ।
रामप्रकाश लखे नही आतम, सन्त सदा भ्रम गाँठ को खोले ।।५२।।
जाति रु कुल गौत्र नहीँ जग बन्धन, सन्त सदा सब का हित चावे ।
नाम रु क्षेत्र जिला नही सीमित, मानव समाज में धर्म सिखावे ।।
वर्ण आश्रम के बन्धन में रह वह, सन्त नहीँ वह भेष ठगावे ।
रामप्रकाश सन्त नीति बखानत, ब्रह्म स्वरूप हो मुक्त समावे ।।५३।।
गाय के पेट गोरोचन होवत, मन्त्र सिद्धि पर यन्त्र लिखावे ।
मृग नाभी घनसार उपावत, महँगे भाव से इत्र बिकावे ।।
काग विष्ट से वट वृक्ष होवत, जन्म तजे गुण भाव पुजावे ।
रामप्रकाश सन्त भेष धरे कुल, त्याग भये गुण लोक सुहावे ।।५४।।
काग विष्टा बहु वान्दे उपावत, वृक्ष प्राकृति बीच दिखाते ।
यन्त्र सिद्धि नाना विधि सेवत, लेवत बहु विध भाव लखाते ।।

वृक्ष अनेक भाग्य वश दीखत, गुरूगम भेद विरले लख पाते।
रामप्रकाश सन्त भेष धरे कुल, त्याग भये गुण भाव पुजाते।।५५।।
सरवर तरुवर मेघ यह तीन ही, सुख रु कष्ट बढावन हारे।
लाभ कदाचित हानि भी होवत, चाहत लाभ वाहीं को प्यारे।।
सन्त स्वभाव अत्युत्तम पर हित, आवत ज्ञान सुना भ्रम टारे।
सन्त "रामप्रकाश" रहे न रहे जग, सब के उर रहे प्रेम पियारे।।५६।।
इष्ट रु मित्र गये हित कारक, आयु रहे सम जावनवारे।
काहू सों भाव रखूं अपनो कर, कोई न संग निभावन हारे।।
सन्त पधारत दरश दिखावत, अन्त सब के उर जाय संभारे।
दास रहे निर्भय हरि आश्रित, "रामप्रकाश" सब के सन्त प्यारे।।५७।।

।। सन्त की पारख ।।

शिलाजीत घनसार कोयला, एक समान वे दरसाते।
कोयल कागा तरबूज तूँबा, मिश्री फिटकरी एक दिखाते।।
सोना पीतल भेषधारी सब, गुण भाव सब अलग कहाते।
रामप्रकाश सन्त की पारख, जिज्ञासु निश्चय कर पाते।।१।।

।। ग्रहस्थ में तीन सन्त हुए ।।

ग्रहस्थ में तीन हि सन्त हुए सिद्ध, हर हाल में राम दयाल सँभारा।
तुकाराम की कुटिला नारि सो, कष्ट मूर्ति द्वैष अपारा।।
राम कृपा कहि नरसी मनावत, नामदेव घर नारि सुधारा।
रामप्रकाश ग्रहस्थ में भक्ति सु, ऐसे कमावत सो भव पारा।।१।।

।। गृहस्थ साधक सन्त समान ।।

जा घर सन्त पधारत है शुभ, ज्ञान कथा सतसँगत होवे।
सज्जन कुल परिजन सब ही, भक्ति के साधन इष्ठ को जोवे।।
धर्म रु नीति वेदान्त सुने नित, परम पुरुषार्थ विवेक सँजोवे।
रामप्रकाश वे गृहस्थ में साधक, सन्त समान धरा पर होवे।।१।।

।। असन्त (भेदवादी,ढोंगी, पाखण्डी) का अंग ।।

कलि के सन्त जो भेष के धारक, कुल परिवार को त्याग के आवे।
जन्म से जाति की छूआछूत को, मन मानस में भूत बैठावे।।
जाति के भूत धिकार सदा तिन, गुरू को नाम लजावत भावे।
रामप्रकाश ऐसे सन्त डूबत, धर्म के साथ वह राष्ट्र डुबावे।।१।।
भेषधारी कनफूँका गुरू बन, नशा अचे अरु फैल मचावे।
मुक्ति की आस रखे मन मूरख, सिद्ध भी हो वह नर्क सिधावे।।
ऐसे घण्टाल चण्डाल गुरुतर, मार भगा कर पिण्ड छुड़ावे।
रामप्रकाश नमो पद वन्दन, ज्ञानी गुरू को शीश नमावे।।२।।
गुरू अज्ञानी रु शिष्य है आँधला, धन हरे नही ज्ञान बतावे।
गुरु है लोभ में परिवार के पालक, शिष्य कामना लालच लावे।।
दोनो ही बैठ के पत्थर नाव में, डूब मरे वे नरक सिधावे।
रामप्रकाश तजो गुरु धूरत, ज्ञानी गुरु को शीश नमावे।।३।।

भेष आडम्बर धार फिरे भल, शास्त्र पढे वर ज्ञान प्रचारे।
तिलक भाल रु माल गले बिच, परिचय भेष बिन शान बिगारे।।
सतगुरू से बेमुख नित रहकर, सम्प्रदाय धर्म से अनभिज्ञ सारे।
रामप्रकाश यह नर्क में जा़वत, कोई भी नही बचावन हारे।।४।।
ग्रहस्थों की भेंट को लाय लगावत, घर का पालन पोषण पाले।
पूण्य को लाकर घर चलावत, सुत को विवाह सुता प्रतिपाले।।
पोल नही है सांई दरबार में, लेखो लेवत है पाई पराताले।
रामप्रकाश ये और प्रमोदत, भवसागर भव आपनो साले।।५।।
घर में नारि रु बालक है बहु, काम कमावत है बहुसारे।
बाहर तेमद घर में धोती है वर, बात अद्वैत जमावत प्यारे।।
त्याग वैराग की बात बिना कह, साधन हीन वेदान्त उचारे।
रामप्रकाश अहँब्रह्म रूपक, मानद उपाधि लगावत ढारे।।६।।
बातन में उलझाकर लूटत, नाटक नाच दिखावन हारा।
मोल बिके अरु धन तके वह, परनारी से हेत लगावन वारा।।
वेद के ज्ञान को बेचत है वह, भ्रम फेलावत आन व्यवहारा।
रामप्रकाश जो ऐसे प्रचारक, वारम्वार धिकार हमारा।।८।।
सनातन धर्म के नाम से आवत, धारत भेष अनेक प्रकारा।
कर्म उपासन नाना विधि कर, भोले धनिन फँसावन हारा।।
कल्पित पन्थ रु ग्रन्थ विचारक, धर्म के नाम कमावन वारा।
रामप्रकाश जो वेद विरुद्धक, वारम्वार उनको धिरकारा।।९।।
धर्म का दोहन करने मे लागत, मन्दिर पूजा रु कथा बिकावे।
पाठ बिके रु ठाठ बिके जग, तीर्थ बिके घर पण्डित भावे।।
विद्या बिके रु ज्ञान बिके सब, लोभ लगे सब भौतिक पावे।
रामप्रकाश ये कैसो परमार्थ? सनातन धर्म को कैसे बचावे।।१०।।
वेद का दोहन धर्म को बेचत, कथा बिकाऊ होवत सारी।
पूजा बिकाऊ रु देव बिकाऊ है, मन्दिर दुकान बिकाऊ की भारी।।
तन्त्र मन्त्र यन्त्र बिकाऊ है, धर्म के नाम उद्योग है जारी।
रामप्रकाश कलिकाल के लक्षण, सनातन धर्म की है ठेकेदारी।।११।।
धर्म बिके अरु कर्म बिके कलि, अध्येता नेता विधि वेता बिकाई।
मोल खरीदत गाढी कमावता, कौन कहै सुन कौन बताई।।
धर्मगुरू सब मौन को साधत, बोलत पोल खुले पण्डिताई।
रामप्रकाश यह समय प्रभाव है, शासन सता मद माहि समाई।।१२।।
समय प्रभाव दुर्गम अति घातक, भौतिक वाद सो बाढत जाई।
कलि काल महा विकराल चले, सब बेच बिकाऊ घने बन आई।।
कोउ मानद उपाधि बिके न बिके, पर धर्म कथा धर्म गुरु बिकाई।
रामप्रकाश यह मानवता का, धर्म गया अब कहा बसाई।।१३।।
बिन परीक्षण लोग लगाय रहे, मन मानी उपाधि में अहँ करे।
वेदान्त आचार्य वीतरागी वह, परम हँस पद और धरे।।

वेदान्त केशरी शँका उपावत, राह उदण्ड की चाल परे।
रामप्रकाश पाखण्ड करे यह, धर्म ध्वजी परिहास खरे ।।१४।।
घर के भावुक भक्त जनों में वह, बेढब उपाधि का मान भरे।
विधि सँचालित परीक्षण मे जब, होय उत्तीर्ण काम करे ।।
नही शिक्षण योग्यता शब्द उचारण, व्युत्पत्ति नही समझ परे।
रामप्रकाश यह हास्य भरा रस, कैसे भक्त भव पार तरे ।।१५।।
सन्त के भेष की परख रहे नित, सात्विक नियम हो शुद्ध आचारा।
शिष्य की भेंट से ग्रहस्थ को पालत, बातन में ब्रह्मज्ञान उचारा ।।
हो धनवान व्यापार करे घन, काम रु धाम बढावत सारा।
रामप्रकाश वह आप बँधा बँध, और न का किमि करे सुधारा ।।१६।।
सन्त के भेष की शाख गिरावत, मन का भेष बनावन लागे।
मूँछ को राखत जटा बढावत, और आडम्बर करे सु अभागे ।।
सन्त मरयाद की खोज होवे तब, ऊठ सदा सतसँग ते भागे।
रामप्रकाश करो मत आदर, नर्क भागी वह जो सँग लागे ।।१७।।
सन्त के भेष की जान नही जब, योग पटादिक को नही जाने।
सन्त की पँगत त्याग के भागत, केवल बात वाच्यार्थ छाने ।।
बाल सवारन ढंग अजीबोगरीब है, शिर जटा रखे मूँछ को ताने।
रामप्रकाश वह सन्त नही यह, पाखण्ड रूप में सन्त ही माने ।।१८।।
भेष को लेवत भेद ना लेवत, साँग पहन गुरु नाम लजाई।
गुरु बिना भी कयीयक भाण्ड है, साँगी होय के माँगन जाई ।।
भेद के कारण भेष को धारत, भेद बिना भव भटकता भाई।
रामप्रकाश ये विचार बिना सब, भवसागर के भव भुलाई ।।१९।।
भेष को लेवत भेद ना लेवत, साँग पहन गुरु नाम लजाई।
गुरु बिना भी कयीयक भाण्ड है, साँगी होय के माँगन जाई ।।
भेद के कारण भेष को धारत, भेद बिना भव भटकता भाई।
रामप्रकाश ये विचार बिना सब, भवसागर के भव भुलाई ।।२०।।
भगवाँ भेष है विरक्ति धारण, प्रतीक वैराग्य का रूप पिछानो।
मन की वासना जग का प्रपँच, छूट जाय तब साधु ही जानो ।।
ज्ञान रु ध्यान नही तप नियम, ब्रह्मातम बोध नही मन आनो।
रामप्रकाश यही है पाखण्ड, ग्रहस्थ रु साधु सो एक बखानो ।।२१।।
भगवाँ भेष मरियाद रही नही, जन साधारण पहनन लागे।
साँग फकीरी ते मोक्ष ना होवत, नशे रु व्यशन तन मन में आगे ।।
घर घर डोलत भेष के पाखण्ड, दोष विकार कामादिक सागे।
रामप्रकाश यह नरक के मारग, सिद्ध भी जावत भागत भागे ।।२२।।
भगवाँ धारक दशा बीसा पन्थ, पोल माँही बहु ढोल बजावे।
कोली साधत मनमुख चालत, करणी बिन कल्याण करावे ।।
भैरवी साधत देवी को थापत, दीपक पाँच की जोत जगावे।
रामप्रकाश पाखण्ड करे सब, सीधा वे जन नरक सिधावे ।।२३।।

भगवाँ पहन मखोल मचावत, गाँजा भाँग अफीम मँगावे।
जूआ सटा दारु दुःख दायक, भीड़ माँही जन खूब रिझावे।।
यन्त्र मन्त्र तन्त्र साधत, लोक डरे पुनि ताहि डरावे।
रामप्रकाश पाखण्ड करे नर, भवसागर में मौज मनावे।।२४।।
भेषधारी ब्रह्मज्ञान सुनावत, आप रहे फँस प्रपँच माँई।
ग्रन्थ वेदान्त सिद्धान्त भनावत, आप रहे घर ग्रहस्थ के ताँई।।
चाल व्यवहार नही शुद्ध चालत, परमार्थ भी नही शुद्ध रहाई।
रामप्रकाश प्रभाव नही जग, भोजन भेंट की लापर ताई।।२५।।
शिष्य शिक्षित रु श्रद्धावन्त हो फिर, गुरू स्वार्थ में अबोध मिलावे।
डूबत आप रु और डुबावत, आप बन्धे फिर कैसे छुड़ावे।।
प्रपँच माँहि फँसे गुरू आप ही, और को मुक्ति व्हे कैसे पठावे।
रामप्रकाश तजो गुरू दम्भिन, बिन गुरू रहना ठीक बनावे।।२६।।
आटे रु दाल के भाव को जानत, मानत तानत बालक नारी।
सुत सुता घर कपड़े लावत, ग्रहस्थ कार्यक्रम बड़े है भारी।।
वेदान्त के अनुबन्ध त्याग किये अरु, श्रुति रटी ब्रह्मज्ञान सँभारी।
रामप्रकाश रख मानद उपाधि धर, वाचक अहँ भयो घरबारी।।२७।।
कथा में नाचत भीड़ जमावत, बाजत गावत तान तनारे।
पूर्व के इतिहास सुना कर, आर्थिक लाभ को लेत घनारे।।
लिखा पढे अरु मूढ रीझे वह, लोक ठगे बहु धन धनारे।
परम्परा चाल तजी सब साधुन, रामप्रकाश यम देवे चनारे।।२८।।
नट भेष अनेक धरे नित नूतन, बहुरूपिया साँग धरे नित न्यारे।
जपी तपी रु सेठ राजा बन, भेष धरे पर बने न वारे।।
ऐसे ही दम्भ करे नर बहुतन, गुरू मरियाद बिन सारे।
रामप्रकाश सन्त भेष धरे नर, सो गति पाय न हरगिज प्यारे।।२९।।
भेषी सन्तन से दूर सदा हम, लाज मरियाद नही जिनके।
साधुशाही पहिचान नही मन, गुरू शिष्य भाव नही तिनके।।
श्रद्धा साधन प्रेम नही जहाँ, ऐसे वह मीत रहे किन के।
रामप्रकाश रहो दूर वही नित, वह मीत नही रहे छिन के।।३०।।
छल रु द्वैत भरे उर अन्तर, कपट गाँठ परी उर जिनके।
ममता रु त्वँता अहँता है घट, द्वैष उपाधि भरी तिन के।।
ज्ञान अज्ञान की परख नही चित, श्रद्धा गुरू भाव नही किन के।
रामप्रकाश फिटकार उन्हे, पट भेष धरे छल मन इन के।।३१।।
जो जन आधि उपाधि ते ग्रसित, जाहि सँतान कह्यो नही माने।
धन सम्पति में परिवार विवादित, देह अशक्त भयो अनजाने।।
पुत्र बहु सब आज्ञा को लोपत, जात समाज सम्मान न आने।
रामप्रकाश सन्त सिद्ध बन्यो मन, शास्त्र साधु मरियाद न जाने।।३२।।
शैतान आवत सन्त के रूप में, सृष्टि के विकार सभी उर धारे।
अखुट धन परिवार को पालत, सुत वित नारि कुटुम्ब पसारे।।

चुगलखोर चकोर विदूषक, गुरु धन हारक झूँठे लबारे।
रामप्रकाश वे जावत सिध ही, रोक सके नही यम के द्वारे ।।३३।।

।। पाखण्ड खण्डन ।।

तरुणी सँग विराजत है घर, बाल गोपाल सो रोल मचावे।
घृत स्नेह रु तण्डुल से बहु, भवन की माँगत छेह ना आवे।।
मानद होय वेदान्त सिरोमणि, परमहँस सोई सन्त कहावे।
रामप्रकाश कलि दम्भ के लक्षण, शास्त्र सन्त पुराण सुनावे।।१।।
भेष आडम्बर धार फिरे मन, ईर्षा द्वैष की आग लगाई।
कागज पोट शिकायत की सब, घर घर खोल के सहायता चाई।।
चिन्ता माहि जले मन तामस, शास्त्र सन्त हृदय नही भाई।
रामप्रकाश कलि दम्भ के लक्षण, शास्त्र सन्त पुराण सुनाई।।२।।
भेष बनाय काषाय अनुपम, आडम्बर माँहि लोग ठगावे।
भेड़ की टोल जमात को जोड़त, ज्ञान बिना मरियाद रहावे।।
वाणी विचार व्यवहार नही शुद्ध, व्यशन दोष का जीवन पावे।
रामप्रकाश सतसँग में बैठत, लोक कहै फिर शर्म न आवे।।३।।
पक्ष विपक्ष की प्रगति देखत, ज्वलन द्वैष उठे मन माहीं।
प्रत्यक्ष सामने आ न सके, जन सभा बिच आवत नाही।।
वाद न्यायालय सोचत कागद, पोट लिये हर घर मे जाही।
रामप्रकाश क्यों भेष लियो फिर, द्वन्द की आग लगी मन जाही।।४।।
सौ काग में एक ही कोयल, सौ बुगलों में हँस एक बिराजे।
उल्लू चमचेड़ी बागल कागा, करे पँचायत मण्डली काजे।।
लेली पींचों कुमाणस बिच में, पँचों की पँचायत लाजे।
रामप्रकाश दम्भी सन्तों के बिच, ज्ञान विवेक साधु को भाजे।।५।।
काषाय श्वेताम्बर पहने वस्त्र, मण्डलेश्वर वही महन्त कहलाते।
साधुशाही ज्ञान ध्यान बिन, खेवनहार वही भय खाते।।
घर के रहे ना घाट धोबी के, गुरू मरियादा को भुला जाते।
रामप्रकाश मानवता बिन साधु, भव सागर में वह बहकाते।।६।।
सतसँग माही उठत बैठत, भाव आवे हैं भोपे के समना।
अर्थ भाव भाषा नही जानत, मानद उपाधि उर अभिमाना।।
जप तप कर्म धर्म ना धारण, गप सप मे प्रवीण नादाना।
राप्रकाश यह भोली दुनिया, इनसे चाहत भव कल्याना।।७।।
कथा कीर्तन व्यास पीठ सब, मोल बिकन लगे है भाई।
शास्त्र पाठ गीता रामायण, यज्ञ पूजा सब मोल बिकाई।।
धर्म सनातन हुआ बिकाऊ, राष्ट् सेवा सब बिसरे जाई।
रामप्रकाश कुल नाम मात्र हिन्दु, नास्तिक होवत जात सदाई।।८।।
तन उघार तपे पँच धूनी रु, शूल बिछाय के देह सतावे।
शीत समय जलधार सहे तप, तीर्थ शिला गिरी वास रहावे।।
त्रिदण्ड धरे तत वेद पढे अरू, शास्त्र अनेक पढे नित भावे।

रामप्रकाश उर वासना भोगनि, क्रिया सभी निष्फल कहावे ।।९।।
तीर्थ न्हावत धन लुटावत, यज्ञादि करे अन्न भोज करावे ।
जप तप नियम करे बहु भाँतिन, भूमि रु स्वर्ण दान दिलावे ।।
जात जमात जिमावत बहुतन, करे अहँकार मन मौद मनावे ।
रामप्रकाश यों गर्व किये फल, भोग चौरासी में जाय के पावे ।।१०।।

।। कवित ।।

शीश कीयो घोटम घोट, विचारों में लोटम लोट ।
चित माहि चोटम चोट, खोटे ही आचार है ।।
देह डोल राता माता, भेष पट रँग राता ।
राम से विरुध्द गाता, फूट डालो सार है ।।
गुरू भी गये है ऐसे, चेले को बताया जैसे ।
जग के आचार तैसे, प्यारो परिवार है ।।
राघवप्रसाद यही, पाखण्ड प्रचण्ड सही ।
यामे तो साधुता नही, साधु साँग धार है ।।१।।

।। कलियुग महिमा ।।

कलि मांहि सम्बन्धी है पर, सम्पर्क नही गुणहीन घनेरे ।
ईश्वर है पर श्रद्धा नही, साधु बहु पर ज्ञानीकर्म शून् बनेरे ।।
भगवान के भक्त भी नाहि रहे, डिग्री है पर नौकरी तनेरे ।
रामप्रकाश होशियारी में भी, शर्मयुक्त ना प्रेम शनेरे ।।१।।
हा कलियुग तेरी महिमा में, मानवता बिन मानव दीख रहे ।
सम्पति है पर शान्ति नही जग, कुटुम्ब कर्तव्य हीन कहे ।।
धर्म है कर्तव्य नही यहाँ, समझदारी मे सँस्कार ढहे ।
रामप्रकाश दिखलावा है पर, आनन्दित जीवन नहे ।।२।।
वाह कलि में कला रही पर, कदरदान नही नकारे है ।
दुकान सही पर अर्थ नही, भाई है अनबोल धिकारे है ।।
सँसार है अभाव भरा सुख, धर्म आचरण बिसारे है ।
रामप्रकाश भगवान मे भी, भक्ति गुण बिगारे है ।।३।।

।। राम नाम महिमा अंग ।।

राम ही राम रटो नित साधव, तारण कारणहार सदाई ।
राम उपावत राम सजावत, राम रम्यों है ब्रह्मण्ड के माई ।।
राम सदा सुखधाम महा पद, सन्त रट्या जिन महा पद पाई ।
रामप्रकाश रमे वह राम ही, रमणीय रमता है सब मांई ।।१।।
अक्षर ते शब्द रु शब्द ते वाक्य है, वाक्य ते भाषा हो बोध बढाई ।
शब्द के अक्षर चौगुने करहूँ, पाँच मिलाकर दोगुने पाई ।।
आठ को भाग प्राकृतिक देत ही, दोय बचे वह राम है भाई ।
रामप्रकाश रटे वह राम ही, पाप रु ताप रहे नही राई ।।२।।
राम रमे सब जड रु चेतन, सत चित आनन्द एक रहाई ।
नाम रु रूप माया कृत दोय हूँ, हो परिणाम रह्यो मिल भाई ।।

पाँच हूँ अँश ते सृष्टि हो भाषत, सामान्य विशेष हो आप लखाई।
रामप्रकाश रमे वह रमणीय, राम को नाम सदा सुख दाई।।३।।
नर रु नार में स्थावर जँगम, भूचर जलचर नभचर माँई।
भूमि गगन रु वायु में व्यापक, अग्नि रु नीर में दीखत साँई।।
एक अगोचर अखण्ड अनूप है, घट मठ में घन पूर्ण ताँई।
रामप्रकाश रटे सुख पावत, तीन हूँ ताप रहे नही राँई।।४।।
श्रोत्र त्वचा रु चक्षु रु घ्राण में, जिह्वा में रस घोलत वोई।
पाणी रु पाद में उपस्थ गुदा कहि, वाक में शक्ति देवत सोई।।
मन रु बुद्धि में चित में चेतन, अहँकृत व्यापक एक है पोई।
रामप्रकाश रटे वह सामर्थ, कीड़ी रु कुँजर में भेदना होई।।५।।
ज्यों महाकाश है व्यापक पूर्ण, घट मठ जल उपाधि कहावे।
त्यों वह स्थूल रु शूक्ष्म कारण, अँतःकरण उर उपाधि में आवे।।
एक अनन्त अखण्ड अगोचर, व्यापक घनानन्द चेतन भावे।
रामप्रकाश रटे वहि राम को, एक अनन्त हो भेद दिखावे।।६।।
सतगुरु मुख से शब्द हो श्रवण, जिभ्या रटे नित राम रमावे।
मुख से कण्ठ से ह्रदय आवत, नाभि प्रवेश करे फल पावे।।
तन मन वाणी के पाप रु ताप ही, भ्रम रु कर्म सभी अघ जावे।
रामप्रकाश मन वाञ्छित पावत, युक्ति सहित पद मुक्ति समावे।।७।।
राम सँबोधन राम प्रबोधन, राम का होवत सर्व उजारा।
राम को गावत राम को पावत, राम को ध्यावत हरि हर सारा।।
सुर नर असुर सृष्टि में गावत, देहधारी धन गावन हारा।
रामप्रकाश लखे नही महरम, जानत मानत मोक्ष मँझारा।।८।।
राम ही राम रटो नर निशिदिन, दीन दयाल दया वत भारे।
भगवत वत्सल हो दीनबन्धु हित, याही ते भक्त है आप सहारे।।
सन्त रु भक्त रटे हर प्रेम से, राम ही राम हर श्वास पुकारे।
रामप्रकाश शरणागत राम के, हरदम रहता राम आधारे।।९।।
राम रटे यम जाल ही टूटत, राम रटे ग्रह भूत ना लागे।
राम रटे तन मन हो उज्वल, राम रटे दश दोष को त्यागे।।
राम रटे धन भाग्य हो प्रबल, राम विमुख सो लोक अभागे।
राम रटे सुख लोक परलोक में, रामप्रकाश जन भाग ही जागे।।१०।।
राम की शरण में सुख ही पावत, दुःख कलेश भी पास ना आवे।
राम की शरण में मनोबल पावत, व्यर्थ चिन्तन को लेश न पावे।।
राम की शरण में अमर हो जावत, युग युग में अविनाश रहावे।
रामप्रकाश है राम शरणापन्न, यम का भव भय दूर रहावे।।११।।
एक ही राम का प्राकृतिक प्रसारण, एक ही राम का सकल पसारा।
वोही राम घटो घट बोलत, वोही राम सकल से न्यारा।।
वोही राम दशरथ घर डोलत, देश रु काल परिस्थिति वश सारा।
रामप्रकाश है रमणीय राम वो, सब ही है उन का प्रस्तारा।।१२।।

महिमा राम के नाम की पूरण, शेष गणेश भी नित ही गावे।
रमेश धनेश सुरेश बखानत, वेद रु शास्त्र सन्त बतावे।।
पापी अनेक जपे त्रिकाल में, भव पार हुए होवत जावे।
रामप्रकाश है राम की ओट में, पावत मोक्ष जो शरण मे आवे।।१३।।
रूप वर्ण बिन राम का नाम है, ध्रुव प्रहलाद जप्यो मन लाई।
शेष गणेश हरि हर ध्यावत, ज्ञानी रु योगी यति गण भाई।।
महरम बिना जन बोध ना जानत, भव के जीव भ्रमावत जाई।
रामप्रकाश के प्राण आधार है, राम बिना चित चैन ना आई।।१४।।
देव रु दानव मानव भैरव, भूत पलीत रु पितृ सारी।
डाकिनी शाकनी श्यारी सीकोतरी, देवी शक्ति बल होय हजारी।।
जादू मन्त्र रु सिद्ध योगी जन, सब में शक्ति है राम की डारी।
सतगुरु शरणागत रामप्रकाश है, कौन सके तकदीर बिगारी।।१५।।
राम भरोस रखो मन धीरज, राम की आस निराश ना होवे।
राम है रक्षक तीन हूँ काल में, तीन हूँ लोक में राम ही जोवे।।
राम ही एक आकाश पाताल में, रमणीय राम ही पाप को खोवे।
रामप्रकाश रमे घट मठ में, श्वासश्वास में राम को पोवे।।१६।।
मिश्री जान अजान में खावत, मीठी लगे निशि दिन हो कोई।
जान अजान छुवे यदि पावक, अँग उपाँग जरावत जोई।।
जान अजान में राम जपे जन, चार पदार्थ पावत सोई।
ऐसे प्रभु की शरण गही अब, रामप्रकाश मन निश्चिन्त होई।।१७।।
हरदम हरदम नाम रटो मन, राम को सुमिरण है सुखकारी।
पाप रु ताप कटे भव बन्धन, पावत अन धन मौद अपारी।।
जग में यश रु सुख भी आवत, लोक परलोक में आनन्दकारी।
रामप्रकाश है राम शरण में, जीवन्मुक्ति की आवत बारी।।१८।।
जीवन के बहु ताप सँताप है, प्रारब्ध वश मे भोग हमारे।
आश विश्वास श्रद्धा उर धारण, जो दृढ होय उपासक धारे।।
सामर्थ आशिर्वाद रहे सँग, सहज में सतगूरू आप ही टारे।
रामप्रकाश है राम के आश्रित, राम रक्षा नित साथ हमारे।।१९।।
उठत राम ही बैठत राम ही, श्वासोश्वास में राम हमारे।
तन मन सर्वस अर्पण है फिर, वोही रक्षक आप सँभारे।।
प्रारब्ध वेग ते समर्थ है गुरू, विकृत को वही आप सुधारे।
रामप्रकाश वह दीनबन्धु नित, भक्तन के सब कष्ट निवारे।।२०।।
चार पदार्थ चाहत है सब, पाँच देवन का लेत सहारा।
लोक परलोक में हित की चाहत, अपरा माया हत आठ पुकारा।।
शेष रहे युग अक्षर राम के, व्यापक सर्वत्र राम उचारा।
रामप्रकाश रमे घट मठ में, राम का नाम है श्रेष्ठ विचारा।।२१।।
राम ही आवत जावत राम ही, घट मठ व्योम मे राम रहावे।
भूमि रु जल थल वायु पावक, अन्तर बाहिर राम रमावे।।

अन्तर्चक्षु से दीख परे वह, थूल दृष्टिगत दूर दिखावे।
रामप्रकाश रम्यो चहै राम में, सतगुरू शरणागत वह चलि आवे।।२२।।
चौगुन नामाक्षर पाँच मिलावहु, दुगुन कर वसु भाग दिलावो।
शेष रहे सो राम है रमणीय, हेत पदार्थ चार गनावो।।
पँच इष्ठ दे लोकालोक मे, अष्ठ पृकृति दूर भगावो।
रामप्रकाश सो रमता राम है, व्यापक ब्रह्मण्ड ज्ञान को पावो।।२३।।
भाषा मे वाक्य रु वाक्य में, अक्षर, ताहि अक्षर गनि चौगुने धारो।
पाँच मिला कर दोगुना कारक, आठ से भाग तिहि कर डारो।।
पृकृति अपरा अष्ठधा हारक, शेष मे साक्षी है राम विचारो।
रामप्रकाश है व्यपक राम ही, ज्ञान द्रष्टि कर ताहि निहारो।।२४।।
राम ही राम रटो निशिवासर, वही है रक्षक हितु हमारो।
व्यापक एक अगोचर समर्थ, सर्गुण निर्गुण पूर्ण सारो।।
मन्त्र तन्त्र यन्त्र सब ही, राम के नाम ते सिद्ध सँवारो।
रामप्रकाश हरदम रटे नित, उतमराम है सिरजण वारो।।२५।।
राम है समर्थ सृष्टि सँचालक, राम रमें ब्रह्मण्ड सँवारे।
राम सदा प्रतिपाल करे शुभ, कारज पूरण आप सुधारे।।
राम है रक्षक हितक पूरण, हम राम के राम हमारे।
रामप्रकाश है राम शरण में, कौन शक्ति तकदीर बिगारे।।२६।।
ओम अकार सृष्टि उत्पादक, त्रिगुण पँच प्रपँच उपावे।
सोहम् शूक्ष्म अष्ठ पुरी वृत चालक, जड़ मे सामान्य शक्ति बढावे।।
रमणीय राम है रमता जीवन, हरि हर शिव का प्राण कहावे।
रामप्रकाश सतगुरू प्रसाद ते, राम नाम जप मोक्ष समावे।।२७।।
राम रम्यो घट भीतर बाहिर, पिण्ड ब्रह्मण्ड में पूरण छायो।
रमणीय रमता राम अगोचर, गुण गोचर ते गुप्त रहायो।।
हरि हर ऋषि मुनि खोजत है जिहीं, सतगुरू सो मोहि सहज लखायो।
रामप्रकाश रमे वह राम ही, राम को विवृत विश्व दिखायो।।२८।।
भूत पलीत रु पितर प्रेत ही, कोई ना आवत पास हमारे।
भैरव आदिक आन ना भावत, परम विश्वास है चित सु धारे।।
अनुचर राम के ताहि के सेवक, रँच बिगार सके नही लारे।
रामप्रकाश है समर्थ एक ही, विश्व विश्वम्भर पूरण वारे।।२९।।
सृष्टि को प्राण हरि हर अज को, रमता राम ही प्राण कहावे।
घट मठ चेतन स्थूल रु शूक्ष्म, सब को कारण मूल बतावे।।
कहत सुनत सरल मन भावन, सुन्दर सुहावन मन को भावे।
रामप्रकाश रमे सोई राम है, एक अनेक स्वरूप सुहावे।।३०।।
भूत रु पितर प्रेत पलीत ही, मोमा मोगा रु पिशाच बहूता।
भैरव भूत रु डाकनि शाकनि, शिव की फोज समूह सहूता।।
राम की शपथ रु आन हनुमान की, भागत जागत सेवक भूता।
रामप्रकाश है राम कृपा वश, ताप रु पाप के लागत जूता।।३१।।

आवत राम ही जावत राम ही, खावत राम ही पीवत राम ही राम जपावे।
लेवत राम ही देवत राम ही, काम करे हरि राम रटावे।।
दान मे राम ही मान मे राम ही राम ही व्यापक एक लखावे।
घट रु मठ में राम बतावत, रामप्रकाश वह सतगुरू मन भावे।।३२।।
प्रहलाद कहै सुन हो पिता, इस खम्बे माँहि राम बिराजे।
यदि राम ना है व्यापक कहीं भी, वस्तु खम्भ बेकार ही साजे।।
तोमे मोमे रु खम्भ मे राम है, पूरण धाम मे राम नवाजे।
रामप्रकाश की लगन है राम से, और से नाहि न मोहि को काजे।।३३।।
राम ही चन्दन राम हि वन्दन, राम हि चिन्तन मनन कामा।
राम अलाप है राम कलाप है, राम विलाप रु राम अकामा।।
राम ही नाम है राम ही रूप अनूप है, राम ही राम रु श्याम है रामा।
रामप्रकाश जो व्यापक सब मे, पहाड़ पत्थर राम अनामा।।३४।।
राम ही जीवन रामप्रकाश है, राम पिया अरु राम ही आसा।
राम ही मीत रु प्रीत है राम ही, राम ही जीवन ज्योति सुखासा।।
राम ही वन्दन राम अभिनन्दन, राम ही गरिमा महिमा रासा।
रामप्रकाश जो व्यापक सब में, कण कण में है राम विलासा।।३५।।
राम ही श्वास रु आस है राम ही, राम ही खास है राम है प्यारा।
राम ही गीत सँगीत है राम ही, राम ही रास रु राम सँसारा।।
राम ही ज्ञान रु ध्यान है राम ही, बाहिर भीतर राम परिवारा।
रामप्रकाश जो व्यापक सब मे, कण कण में है राम हमारा।।३६।।
राम ही प्राण रु त्राण है राम ही, दर्पण अर्पण राम हमारा।
राम अवलम्बन सँबल राम ही, राम जहान समाधान तुम्हारा।।
राम ही कर्म रू धर्म है राम ही, राम ही मर्म रु नर्म है सारा।
रामप्रकाश जो व्यापक सब मे, हर कण मे है राम विचारा।।३७।।
राम आराधना राम है साधना, राम उपासना धैर्य सुधारा।
राम ही निर्गुण राम ही सर्गुण, राम ही त्रिगुण भेद विचारा।।
राम ही आदि रु अन्त अनन्त है, राम प्रलय रु विलय आधारा।
रामप्रकाश जो व्यापक सब मे, जल थल मे है एक अपारा।।३८।।
राम ही आधि रु समाधि है राम ही, राम ही व्याधि राम प्रहारा।
राम ही हवन समिधा राम ही, राम आचार्य याज्ञिक प्यारा।।
राम है भजन भोजन राम ही, साज समाज है राम हमारा।
रामप्रकाश जो व्यापक सब मे, नगर डगर में राम उदारा।।३९।।
राम आभूषण राम है पाहुना, राम ही भावना पावन धारा।
राम समष्ठि रु व्यष्ठि है राम ही, राम हि सृष्टि रु सृष्टा आधारा।।
राम हि अपना रु राम हि राम स्वप्ना है राम अवस्था व्यापक पारा।
रामप्रकाश जो व्यापक सब मे, भूमि गगन रु वह्नि मँझारा।।४०।।

राम हि जप तप ताप है राम ही, राम ही धर्म रु कर्म विचारा।
राम विचार आचार है राम ही, राम ही जागन सोवन वारा।।
दृश्य अदृश्य रु प्रपँच है राम ही, राम उपावन खपावन चारा।
रामप्रकाश जो व्यापक सब मे, जन मन मे राम हमारा।।४१।।
राम ही रमता रमणीय राम ही, क्षमता ममता राम पसारा।
राम अनेक रु राम है एक ही, राम बिना जग भ्रम है भारा।।
राम है नाम रु रूप है राम ही, सत चेतन वह आनन्द प्यारा।
रामप्रकाश जो व्यापक सब मे, राघव प्रसाद का रूप है सारा।।४२।।

।। चेतावनीअंग ।।

ऐसे मानव बलशाली हुए बहु, उन की धरोहर हुई छिन्न छिन्न के।
बहुनामी पुरुष अनेक हुए, उन की कथा कहै बहु भिन्न भिन्न के।।
सम्पति अपार रही जिन की, उन इकठी करी बहु गिन्न गिन्न के।
रामप्रकाश वह अन्त समय सब, साथ गयी किन्न किन्न के।।१।।
देह के त्यागत पीड़ित होवत, एक हजार बिच्छु डँक मारे।
नाड़ि समूह टूटे तब होवत, दर्द असीम रवि टूटत तारे।।
किये कर्म स्मृति में आवत, ह्रदय स्थान मे न्याय विचारे।
रामप्रकाश वासना के इच्छित, पुनर्पि जन्म धरे भव सारे।।२।।
एक बिच्छू डँक मारत ही तन, देह सारे नस टूटत हारे।
लाख बिच्छू डँक अँत समय गत, नाड़ी समूह के टूटत फारे।।
रोवत हारत वाणी नही आवत, कष्ट अपार कह्यो नही सारे।
रामप्रकाश यह अँत समय गत, असहन दरद न सहन हमारे।।३।।
अँत समय यम लेवन आवत, कौन सहायक होयगो तेरो।
सतगुरु रक्षक हो ततकालिक, भाग जाय यम रहे नही नेरो।।
हे नर हो सतगुरु शरणागत, भवसागर को होय निबेरो।
रामप्रकाश सफल हो जीवन, जगत नाश है तेरो ना मेरो।।४।।
मानव जीवन मे है अति दुर्लभ, प्राप्त समय और श्वास विचारे।
समय उपयोग करो सत कारज, चूक गये तो फिर हाथ न वारे।।
श्वास अमोल रु जीवन अधार है, ज्ञात नही कब जावनहारे।
रामप्रकाश हरि भजन शुक्रत कर, बीत गया नही हाथ हमारे।।५।।
मात पिता रु सम सखा बहु, इष्ट रु मीत गये बहु तेरे।
देखत देखत जाय गये बहु, हम हूँ वृद्ध भै अन्तिम छेरे।।
बाल युवा से नेह करे किम, विछुरत देर न विश्वस्त केरे।
रामप्रकाश मिथ्या जग सँसृत, आतम तत्व सत चित को हेरे।।६।।
जग के भौतिक जीवन में बहु, जीतत जीतत समय गमायो।
हारन में मति हीनता मानत, भावी प्रयोजन ना चित लायो।।
हारन से हरि दर्शन लाभ हो, जीतने में जम जोर जमायो।
रामप्रकाश मन इच्छा से हारत, सत चित हरि के रुप समायो।।७।।
कृतघ्नी ओ गुरु का निन्दक, लम्पट झूठ वाचाल धूतारो।

क्रोधी रु हठी मनकामेश्वर, स्वार्थ रत रु मोह मतारो।।
ऐसे सों ही प्रभु दूर रखो नित, हो चाहे पूत या शिष्य हमारो।
रामप्रकाश दीजो हरि सँकट, नीच वृति नर दूर निवारो।।८।।
आँख झरे अरु लार परे मुख, हाथ कँपे अरु पाँव धुजावे।
दाँत गये मुख सोभा घटी अब, नैनन ज्योति सो मँद दिखावे।।
बाल सफेद भये तन भीतर, झुर्रियां पड़ी बल हीन बहावे।
रामप्रकाश अब वृद्ध भये हम, वाणी थकी अब बोल न आवे।।९।।
बाल आयु नित भली रही मन, हर्ष न शोक ना लाभ रु हानी।
जवान भये तब साधन काम के, लाभ रु हानी की लगी है मानी।।
वृद्ध भये अँग क्षीन भये सब, तीन हूँ अवस्था की अजीब कहानी।
वृद्धावस्था में रामप्रकाश ये, खबर अजान रही अनजानी।।१०।।
दो गज पीक परती मुख ते धर, आज वही वह हौठ पे आवे।
बोल आवाज से धाक हुती अब, हौंठ ते बाहिर आवाज ना पावे।।
मुख मण्डल तेज ते चमक हुती अब, श्यामानन सोई रूप सुहावे।
रामप्रकाश पृकृति वसि जीवन, खेल नाना कर याहि दिखावे।।११।।
पट अँबर सोहत थे तन में, वह भाँति अनेक के भेष बनाते।
ऐंठ के चालत बँक में देखत, चाल की ढाल अजीब मनाते।।
अब तो तन की सुद्धि नही कछु, पट छूटि परे तन नाहि ढकाते।
रामप्रकाश सब अहँ गयो तब, जानि वृद्धापन बोल बताते।।१२।।
पेट की लीवर आँत में भारत, खात अघात न खूब चबाते।
पत्थर हाजमा खूब ही खावत, शक्ति भर भोजन खूब पचाते।।
अब अपाचन बाढे अपान ही, दर्द करे तन रोग बढाते।
रामप्रकाश अब वृद्ध भये तब, कौन सहाय करे तन जाते।।१३।।
जरजर देह रु वृद्ध भयो सिर, स्वेत भये सब बाल हमारे।
दान्त की पँगत टूट रही सब, आन्त भी पेट को भार महारे।।
हाथ रु पाँव हिले सिर कँपन, तृष्णा मन ममता पाँव पसारे।
रामप्रकाश नही राम भजे अब, पींजर पीर उठी तन सारे।।१४।।
व्यर्थ मत खोय रे मानव देह को, दुर्लभ भाग्य ते दुर्लभ पाई।
राम भजन कर सतसँग शुक्रत, पूण्य पुरुषार्थ साधन ताई।।
भौतिक धन कमाय के राखत, अन्त समय कछु साथ न जाई।
रामप्रकाश सन्त शास्त्र कथे यह, अवसर फेर मिले ना भाई।।१५।।
खावन पीवन हालन चालन, मँद भये तन काज भी सारे।
बोलन की भी सुद्धि रही नही, स्मरण शक्ति की बुद्धि बिसारे।।
मोह गयो नही ममत्व बाढत, तृष्णा जवान हुई मन जारे।
रामप्रकाश अब काहे को जीवित, मृतक समान भयो अब प्यारे।।१६।।
बाल आयु सो भली नही रञ्च, है पराधीन अपावन सारी।
योवन लाभ रु हानी में रोवत, हर्ष रु शोक की लगी रह झारी।।
वृद्धावस्था तन क्षीण भयो तब, सोभा घटी तन होय बेकारी।

रामप्रकाश जब वृद्ध भया तन, जीवन का अँत है हँसी पिटारी ।।१७।।
बालक रोवन रुठन के बल, ठोर अपावन अँग उघारे ।
योवन काम रु क्रोध विकार में, मोह माहिरत मूढ महारे ।।
वृद्ध भयो तब अपावन निर्बल, रोग बहु तन घेरन हारे ।
रामप्रकाश आयु अँग तीनहु, वृथा भजन बिन जीवन सारे ।।१८।।
काम रु धाम बढावन में मन, लाग रह्यो तन जीवन सारो ।
सन्त की सँगत नाहि गयो कब, हरि को सुमिरण ना मनधारो ।।
मेरी रु तेरी में डूल रह्यो नित, मात पिता सँग रारि पसारो ।
रामप्रकाश अब काहे को जीवत, भवसागर को भोगन हारो ।।१९।।
वृद्ध भयो तन वृद्धि हुई मन, ममता काम को मोह पसारो ।
आयु विहाय गयी सब प्रपँच में, अब तो नाम जपो नित प्यारो ।।
दान रु मान दियो नही कबहूँ, भव को प्रपँच कियो पसारो ।
रामप्रकाश अबहूँ मन चेतन, होय के हरि नाम सँभारो ।।२०।।
तन थाक गयो सब इन्द्रियन, दियो निरुतर काम न होई ।
दान्त रु आन्त स्थूल रु सुक्ष्म, जर जर देह भयो सब कोई ।।
अबहूँ धन धाम में लाग रह्यो मन, नारि के नेह में देह बिगोई ।
रामप्रकाश कहे मन मूरख, आयु बिताय दई रो रोई ।।२१।।
बूढा भया तन थाक रह्या मन, ममता तृष्णा बहु बाढत जावे ।
अजहूँ मन में चेतरे मानव, जीवन अमोलख खोय गमावे ।।
कर हरि सुमिरण नाम जपो नित, भवसागर भय पार लँघावे ।
रामप्रकाश यों सन्त समझावत, आपनी हार क्यों आप मनावे ।।२२।।
धिकरे धिकरे धिकरे मन धिक, डगमग डगमग पाँव धरा पे परे ।
दाँत गये मुख झुरी परी अरु, आन्त भी भोजन नाहि गरे ।।
आँखिन ज्योति मँद भयी पर, अजहूँ भोगन आस करे ।
रामप्रकाश हरि शरण गहो अब, जनम व्यर्थ मतखोय अरे ।।२३।।
देह मलायतन जग मलाय तन, मल मुत्र की देह को धारी ।
काम रु क्रोध विकार भरे बहु, मोह के जाल में बन्ध गयारी ।।
कर्म जँजाल जँजीर में आवत, भव में जावत वारम्वारी ।
रामप्रकाश यों मूढ भयो मन, मानव रूप में भयो भिखारी ।।२४।।
वृथा अभिमान करे मन मानव, तुच्छ जीवन का विश्वास न कोई ।
माया में निशिदिन भाग रहा, अन्त समय सब रहे खोई ।।
कब हो जाये काल कवलित, स्वपन समान जीवन जोई ।
रामप्रकाश चेतावत है सन्त, धर्म रु कर्म चले सँग दोई ।।२५।।
वृथा घमण्ड करे नर मूरख, तेरो कियो कछु हुओ नही होसी ।
धन जोभन दिन दोय को पाहुनो, पाँच तँत को पींजरो पँच कोशी ।।
अँत समय पछुतायगो मानव, जब प्राण कण्ठ में सँकट रोशी ।
रामप्रकाश मान नर पागल, सन्त कहै सब शास्त्र जोशी ।।२६।।
ऊँचे महल में पोढ रहे घर, सुन्दर नारि रु चेरि घनेरी ।

राज अखण्ड सभा सद राजत, ऐसे अनन्त गये बहु तेरी ।।
काल का पहरा हरदम हाजिर, लेहि लपेट में सांझ सवेरी ।
कोमल देह कागज सी जावत, रामप्रकाश ना लागत देरी ।।२७।।
कंचन मेरु भण्डार भरे घर, प्रांगण कल्पवृक्ष हो फल चावे ।
कामधेनु घर दूझत है नित, याचक ले जाय सदा मन पावे ।।
द्वार पे गज झूमत है नित, भीड़ सभासद विद्वत गावे ।
रामप्रकाश आवे जब काल हि, अन्त समय कछु काम ना आवे ।।२८।।
सोने की लंका रु बहु परिवार थो, रावण महा बल बड़ी बड़ाई ।
हिरण्यकश्यप रु कंश थे कौरव, यादव वंश विशाल कहाई ।।
राम रु कृष्ण देहधारी सब, लोक परलोक दृश्य सब भाई ।
रामप्रकाश रहे नहि स्थिर, परिवर्तित है सृष्टि सदाई ।।२९।।
सुंदर नारि पतिव्रत हो घर, स्वर्ण सुमेर होवे घर मांहि ।
विश्व में कीर्ति विशाल मनोहर, हो परिवार जो राज समाहि ।।
सुन्दर रूप मनोहर राजत, सेवक चतुर सभा को रिझाहि ।
रामप्रकाश हरि नाम बिना सब व्यर्थ, प्रपंच है नाश विलाहि ।।३०।।

।। उपदेश चेतावनी अंग ।।

हे मानव हो सतगुरु शरणागत, जनम सुधार करो नर प्यारे ।
लख चौरासी भ्रमण करते, दुर्लभ पूण्य फल पायो है सारे ।।
अब ही चेतन होकर आगिल, अन्त समय है कठिन निबेरो ।
रामप्रकाश भवसागर भव के भय माँही, कोई सहायक होय न नेरो ।।१।।
मानव जीवन मे है अति दुर्लभ, प्राप्त समय और श्वास हमारे ।
समय उपयोग करो सत कारज, चूक गये तो फिर हाथ न वारे ।।
श्वास अमोल रु जीवन अधार है, ज्ञात नही कब जावन हारे ।
रामप्रकाश हरि भजन शुक्रत कर, बीत गया नही हाथ हमारे ।।२।।
मानव के जीवन घटना अजीब है, स्थिर नही बुढापे की काया ।
अन्त समय की माया नही, साथ में नही अन्धेर की छाया ।।
स्थिर नही जगत का प्रपँच, यही है प्रकृति की गजब माया ।
रामप्रकाश जिन लिया हरि शरणा, वे अन्त समय नही पछुताया ।।३।।
जगत द्रश्य माया कृत प्रपँच, देह अवस्था रु कोश हमारे ।
देश रु काल वस्तु परिच्छेद है, सो सब मिथ्यात्व रुप विचारे ।।
असत्य को मान फँस्यो मन मानव, चलक भलक मे वृथा सब हारे ।
रामप्रकाश भजो मन माधव, सत्य वही गुरू भेद हमारे ।।४।।
नश्वर देह में हरि भजन कर, अमरत्व प्राप्त करो नर नारी ।
चोरी चोरों की सँगत त्यागो, मत बनो हिन्सक व्यभिचारी ।।
बुरी आदत नशे व्यशन की लत, त्यागत है कोई सदाचारी ।
रामप्रकाश भव से तरने के, यह उपाय है निर्भय कारी ।।५।।
श्वास के साथ में समय को साथ ले, सद् उपयोग की हो समझ जरूरी ।
श्वास सभी जन लेवत है पर, समय सो खोवत व्यर्थ मजूरी ।।

श्वास समय रु समझ के साथ में, साधन सतगूरू सँग होय सबूरी।
रामप्रकाश यह जीवन के कण, होय निष्फल तब जीवन धूरी।।६।।
प्रबल भाग्य ते मानव रूप हो, ईश कृपा कर योग मिलायो।
सुन्दर देह रु सुविधा सब ही, देव दयाऋषि भेद बतायो।।
अब तो भज भगवान को गाफिल, करो ना चूक ये अवसर आयो।
रामप्रकाश हो गुरू शरणागत, परमार्थ को फल अपनायो।।७।।
सतगूरू मुख ते श्रवण द्वार से, ज्ञानामृत पी हृदय धारो।
साहस सहजता शान्ति स्नेहिल, धर्म सनातन उर बिच सारो।।
हिम्मत दैवीय गुण आवत है तब, अधर्म पाप रु ताप निवारो।
रामप्रकाश हो अध्यात्म शक्ति, वर्द्धन परम पुरुषार्थ वारो।।८।।
सतगूरू ज्ञान नदीवत निर्मल, ध्यान विज्ञान की धार सदाई।
पावन जल सुहावत सादर, श्रवण द्वार ते नित्य पिलाई।।
तन मन निर्मल होवत है तिन, पाप रु ताप सभी धुल जाई।
रामप्रकाश ब्रह्मवेता गुरु सँग, नित्य करो सद् बोध बढाई।।९।।
सुनो सुनो सब बन्धु सुनो वर, सीख सन्तन की शास्त्र सारी।
सनातन धर्म पुरातन सुन्दर, हृदय धार करो रखवारी।।
समाज परिवार सँगठन प्रेम हो, राष्ट्र धर्म रक्षक अनुहारी।
रामप्रकाश मानव तन दुर्लभ, सफल करो सब नर नारी।।१०।।
कान दिये हरि कथा श्रवण कर, आँख दिनी सन्त दरश दिखाने को।
हाथ दिये जन सेवा रु दान को, पाँव दिये शुभ दिशा चलाने को।।
चेतनता को चित दिये मन, जीभ दीवी हरि जस गाने को।
रामप्रकाश यह अवसर है अब, भवसागर तरके जाने को।।११।।
हे मन मानव समझ करो कुछ, शुद्ध विवेक बुद्धि को धारो।
जग में ग्रन्थ रु पन्थ अनेक भरे, मत मतान्तर भेद हजारो।।
सात्विकता युत साधन सतसँग, पक्ष रहित वह पथ सुधारो।
रामप्रकाश विवेक विवेचित, सात्विक पथ वेद मत सारो।।१२।।
आसन उद्योग पुरुषार्थ में नित, व्यस्त रहो हरि नाम उचारो।
हर्ष रु शोक अज्ञान तजो कुल, मोह तजो मन मस्त अचारो।।
भक्ति रु ज्ञान के साधन योग में, अभ्यस्त रहो नित हरदम सारो।
रामप्रकाश सुनो जन भावुक, स्वस्थ रहो गुरू भेद हमारो।।१३।।
पाँच तत्व रु त्रिगुण रचित यह, स्थूल रू शूक्ष्म कारण पाया।
चौदह इद्रिय के मालिक और है, स्वामी बन बैठो झूठी माया।।
यह सब है पृकृति अविद्या में, वृथाभिमानी होय भुलाया।
रामप्रकाश सन्त समझावत, चेतन होकर भव भ्रमाया।।१४।।
अन्तस्थ भीतर हम गये तब, हम भीतर गये सिन्धु अपारी।
कर्म अच्छे है तो किस्मत दासी रु, नियत अच्छी घर काशी प्यारी।।
चिन्ता मन असाध्य रोग रु, चिन्तन से मिलत है हरिजन धारी।
रामप्रकाश मानो तो मौज तुम्हारी है, नही तर समस्या है जारी।।१५।।

बहिनों को सब ही के हित में, शास्त्र मति के उपदेश सुनावे।
पति आज्ञा पालन परमेश्वर, सासु ससुर को तीर्थ बतावे।।
तीर्थ व्रत सब इन का ही पूजन, सेवा सत्कार सँस्कार से पावे।
रामप्रकाश वह जीवन में सब, पावत गावत गुण गणावे।।१६।।
ग्रन्थ रु पन्थ में वेद रु शास्त्र, सात्विक धर्म रु कर्म बतावे।
मन्दिर तीर्थ पुजारी रु पण्डित, राजस उपासना देव पुजावे।।
पितर भोमिया भैरव भोपे सब, तमोगुण पूजन कर्म फँसावे।
रामप्रकाश ज्ञानी सन्त भाषत, शास्त्र विधि से शुद्ध समझावे।।१७।।
व्यवहारिक जगत की वस्तु कोई, प्राणी कछु नही लावत है।
जो कमा कर जोड़त है धन, वह रञ्च भर नही ले जावत है।।
यहीँ कमावत यहीं रखावत, वो खाकर मौज मनावत है।
रामप्रकाश यह हाट हटवाड़ा है, सब खाली हाथ सिधावत है।।१८।।
कुछ कमावत खावत ले जावत, कुछ गमावत उडाय चले।
कोई जोवत खोवत देखत पेखत, कोई साक्षी होवत देख भले।।
कुछ लावत है कुछ ले जावत, कुछ खाली हाथ सिधाय तले।
रामप्रकाश यह मेला है जग, कुछ गमाय कमाय रु कुछ गले।।१९।।
जग के भीतर सब है कुछ, जीवन धन योवन सुत नारी।
सम्पति कुल व्यापार जो सब ही, अस्थिर नाशवान है वस्तु सारी।।
धर्म रु कीर्ति स्थिर रहे जग, आतम चिन्तन शान्ति हमारी।
रामप्रकाश है दृश्य अदृष्ठ सभी, चित चेतन होय के देख विचारी।।२०।।
जो जन मानव आवत है जग, प्रारब्ध के भाग्य ले आवत है।
जो कर्म कमावत है जग, वही सब साथ ले जावत है।।
यह जग बाजार की हाट पुरातन, लाय ले जावत कमावत है।
रामप्रकाश इह मेला की हाट में, गमा कमा कोई खावत है।।२१।।
जीवन को जीना है नित ही तो, प्रसन चित से सदा रहिये।
सत सँगत सज्जन सँग रहो नित, कुसँग बास कभी ना चहिये।।
चिन्तित चित उदास ना होव हु, प्रारब्ध हरि विश्वास में गहिये।
रामप्रकाश जो सत्य पारायण, जीवन सुखी उनही का कहिये।।२२।।
कामना लोभ लगे मन भीतर, धन के हेत सदा चित लावे।
काम कमावत व्यशन विकार में, जीवन में कभी सुख न पावे।।
सुख स्वयँ स्वरूप में पावत, परम सँतोष में सन्त कमावे।
रामप्रकाश प्रवृति रु निवृति के, भेद याहि विधि सन्त बतावे।।२३।।
सन्त रु सतगुरु नाम का सुमिरण, भाग सँयोग से स्मृति में आवे।
उतम भाग हो सतगुरू शरणागत, अहो भाग सन्त द्वार में धावे।।
परम भाग्य से सन्त रु सतगुरु, आपने घर पधारत जावे।
दुर्भाग है मानव जीवन होकर, रामप्रकाश की शरण ना पावे।।२४।।
भाग सँयोग सतगुरु शरणागत, काट दिया जग जनम का मेला।
सत शब्द सतगुरु गम पाया, हरदम सत चित आनन्द भेला।।

साधन सँग गुरु सेन समाया, निश्चय द्रढ है निर्भय खेला।
उतमराम का रामप्रकाश है, आदि अनादि से उतम चेला।।२५।।
जप तप योग रु यज्ञ किये बहु, पूण्य को पावत चौरासी को धारे।
कोई भी में पावत है फल, भवसागर भव भ्रमण वारे।।
सतगुरु शरण से पूण्य को पावत, लख चौरासी ते जीव उभारे।
रामप्रकाश टरे भव भय भीतर, मोक्ष को माग सुधारण हारे।।२६।।
शरीर से शरीरी भिन लखो जन, जनम मरण से न्यारा जानो।
जन्म रहित निरन्तर शाश्वत, अमर अनादि अविकारी मानो।।
घटना बढना बदलना नाही, अविनाशी नित्य निरमानो।
रामप्रकाश स्वतः सिद्ध तत्व सो, अचल अधिष्ठान परम निरवानो।।२७।।
मानव का जीवन निशिदिन है पर, मृत्यु एक बार ही आती है।
तकदीर से ज्यादा चाहत है, दुःख का कारण गाती है।।
सन्तोष सुख का हेतु पूरण, तृष्णा दुःख बढाती है।
रामप्रकाश समझाने से पहले, आयु बीत ही जाती है।।२८।।
सात्विक साधन सहित नर सब ही, ऊर्ध्वगामी स्वर्ग सिद्धावत है।
राजस मध्मम मानव लोक गत, तामस अधोगामी को जावत है।।
ब्रहज्ञानी मुक्तिमय जीवन, ब्रह्मलोक में जाय समावत है।
रामप्रकाश मानव जीवन को, कोई जन सफल बनावत है।।२९।।
चार सैकण्ड में एक श्वास है, एक मिनिट मे पन्द्रह होवे।
एक घण्टे मे होती नौ सौ, श्वासा अमूल्य बोझा ढोवे।।
एक्कीस हजार छः सौ निशिदिन, आयु का महात्म कोइयक जोवे।
रामप्रकाश भजन बिन मानव, वृथा श्वासा को योंहि खोवे।।३०।।
छः श्वासोश्वास की एक पलक है, एक घड़ी पल साठ कहीजे।
साठ घड़ी का आठ पहर, सौ वरष की श्वासा लीजे।।
भया सितहतर करोड़ पर, छिहतर सहस्र गण कीजे।
रामप्रकाश गया भजन बिन, पछुतावे मे जीव रहिजे।।३१।।
सौ वर्ष की आयु मे लेखन, पचीस बालपने के भीतर।
पचीस बिती गृहस्थ कार्य मे, पचीस घर जग काम मे छीतर।।
पिछली आयु मे चेत्यो ना मानव, तृष्णा माँही गयो तूँ ईतर।
रामप्रकाश खाली रह्यो युँही, यम घर जावे पावणो पीतर।।३२।।
बीता समय बिसार देवो सब, बीता समय न वापिस आवे।
भूतकाल का ध्यान करो मत, उज्वल भविष्य आप बनावे।।
भूत भविष्य त्याग करो मन, वर्तमान वर्तित चित भावे।
रामप्रकाश नित मस्त रह हरि, चिन्तन से शान्ति मन थावे।।३३।।
पर नार तजो, गुरु ज्ञान करो, भय भीति तजो, भय दूर करो।
घर नारि सजो, धुरु ध्यान धरो, लय नीति भजो, लयपूर भरो।।
हर बार भजो, करु मान खरो, जय रीति सजो, जयसूर धरो।
धिर कार लजो, हरु तान तरो, पय गीति रजो, लय मूर खरो।।३४।।
टिप्पणी- यह २४ वर्ण का सवैया छन्द के भेदों के अन्तर्गत दुर्मिला छन्द है, जो चार पँखुड़ी

के बारह फूलों में भरा जाता है, इस कारण इसे फूलबन्ध छन्द भी कहते है, नमूने देखो यह "पिंगल रहस्य " पेज नँबर १५४ में

रोयो सोयो रू खायो बहु खेल्यो, बालपनो विद्या पढ खोयो।
काम कला घर धन्धे में लागत, तरुण मांहि तरणो नही जोयो।।
वृद्ध भयो तन क्षीन भयो अब, पश्चाताप कर मन में रोयो।
रामप्रकाश अब राम शरणागत, तन मन सब निर्बल होयो।।३५।।
रोम रोम मे स्वेद झरे अरु, मुख में लार रु नाक मे सैंडो।
हाथ कम्पे अरु दान्त गये अब, पाँव से चल्यो न जावत पैंडो।।
चेहरे झुरियां रु चाम सिकुड़न, मौद करे मन मूरख गैंडो।
मानव आयु खोय दयी पर, रामप्रकाश नही चेत्यो है बैंडो।।३६।।
ढलता भास्कर साँय काल मे, होत अँधेरा दीप जलावे।
ढलती आयु देख के मानव, भजन सुमिरण की शुद्धि न लावे।।
ज्योति जगावन अध्यात्म हेतु भी, जरा उपाय न चित में आवे।
रामप्रकाश हो अन्तर ज्योति सै, जन्मान्तर अन्धकार मिटावे।।३७।।
बालापन पाँवों में शक्ति है, भागत दोड़त धूम मचावे।
तरूणापन में उर भर शक्ति, काम कला बहु धन कमावे।।
वृद्धाश्रम जिभ्या में शक्ति, बात करे अरु मन ललचावे।
रामप्रकाश मन तृष्णा सतावत, राम भजन की याद न आवे।।३८।।
पृकृति ने दिये उपहार अमोलख, जगत धर्मशाला मे जीवन थोरा।
खाओ कमाओ सहयोग करो धर्म, पर उपकार का पूण्य सँजोरा।।
देकर जाओ या छोड़ जाओ सब, साथ चले नही जायेंगे कोरा।
रामप्रकाश सहयोग करो मिल, धर्म रु कर्म का साथ है जोरा।।३९।।
बस रेल या नाव वाहन हो, धर्मशाला मुसाफिर खाना।
केते यात्री आय गये अरु, बैठे रहै पुनि बैठ के जाना।।
यही जगत सराय विचित्र है, ऐसे ही जन्म जीव रू जावत आना।
रामप्रकाश यह देश बिरान है, राम भजो सुख पाय खजाना।।४०।।
बीत गये सब दिन ही व्यर्थ, कियो नही परमार्थ कोई।
जप तप तीर्थ व्रत किये नही कछु, यज्ञ न योग न सतसँग जोई।।
सन्तन सतगुरू सेव भई नही कछु, जागत सोवत आयु विगोई।
रामप्रकाश अब वृद्ध भये तब, सोवन बेर है पाँव पसोई।।४१।।
पाचक हीन में स्वाद बिना अन्न, दान्त बिना मुख बोल न आवे।
कमर झुकी पद कँपन लागे है, हाथ रु शीश हिले भय लावे।।
लार परे मुख चक्षु मे गीड जु, रोग अनेक मे औषधि खावे।
रामप्रकाश ऐसे हाल मांहि दुःख, पीर सहे पर जीवणो चावे।।४२।।
जीवन माहि सदा नर भागत, खावत पावत मौज मनावे।
कुल परिवार हितार्थ लावत, स्वार्थ भोग में आयु बितावे।।
हरि भज्यो नही शुक्रत कारण, वृद्ध भयो मन में पछुतावे।
रामप्रकाश अब देह सो जर्जर, जरा उपाय कोई हाथ न आवे।।४३।।
मानव जीवन का अवसर है यह, श्रेष्ठ कार्य करने का है भाई।

श्रेष्ठ बनने का भव तरने का यह, यश कीर्ति पावनताई।।
प्राप्त करो नित श्रेष्ठ भाव से, मानवता धर्म अध्यात्म आई।
रामप्रकाश तब श्रेय मिले जग, श्रेष्ठ सदा पावत प्रभुताई।।४४।।
जीवन भर इत्र लगावत मानव, नाना सुगन्धित द्रव्य सारे।
अन्त समय में भस्म सुगन्धित, होवत कहीं पाई नही प्यारे।।
पूण्य कर्म परमार्थ इत्र का, करो प्रयोग सुनो जन सारे।
रामप्रकाश सुगन्ध रहे नित, जीवन मरण मे नित हमारे।।४५।।
जगत बाजार सब वस्तु भरा यह, साग पात पट स्वर्ण हीरा।
जैसी चाह रहे वह गाहक, लेवत गाँठ में लावत धीरा।।
साधनवान ही मोल करे वह, भारी रु हल्की सुख रु पीरा।
रामप्रकाश कोई लेत रहे नित, देत पृकृति कर्म की सीरा।।४६।।
सँसार मुसाफिर खाना सराय है, गाडी की सीट समझ ले भाई।
कुछ ठहरने आते है कई दिन, कई बिन ठहरे ही चले जाई।।
पद प्रतीष्ठा कुर्सी भी ऐसी, आते जाते रहत सदाई।
रामप्रकाश अजूबा है नाटक, कोई भी टिक के रहे नही पाई।।४७।।
अञ्जलि नीर कोरे घट स्रवित, बून्द बून्द श्वास झरि जावे।
आयु को श्वास घटे पल जावत, आयु रु सुख साथ नही भावे।।
सुख के हेतु जो धन कमावत, सुख के आये आयु ढरि पावे।
रामप्रकाश भजन हरि गावत, जनम सफल वर हो निरदावे।।४८।।
पल पल छिन छिन श्वास प्रतिपल, आयु घटत ही जात है प्यारे।
धन माल जुटावन लाग रह्यो यह, कुल कुटुम्ब के काज सँवारे।।
अन्त समय नही साथ चले यह, एक छदाम भी काज न सारे।
रामप्रकाश भजो हरि राम को, जीवन का सब काज सुधारे।।४९।।
हीरा है अमूल्य निज जीवन, अपनो मूल्य निज जानत भाई।
मूरख हाथ हीरा पछुतावत, जौहरी बिन कोई परखत नांई।।
पारखियों के नगर माँही भी, मोतियाबिन्द लगा हर ताँई।
रामप्रकाश यही पछुताय के, सन्त हीरा रोवे मन माँई।।५०।।
अँजली में जल बूँद समान ही, श्वास सदा नित ही कम थावे।
जल में बुद बुद बर्फ समान ही, क्षण क्षण आयु भी क्षीण हो जावे।।
वायु लगे रु ताप तपे पर, रँच समय नही देर लगावे।
रामप्रकाश यह मानव देह की गति, पल क्षण माहि विलय हो पावे।।५१।।
लकड़ी मे ज्यों घुण लगे पर, त्यों हि चिन्ता मन मानव लावे।
चिता जलावत मृतक को पर, चिन्ता ही जीवित को ही जलावे।।
चिन्ता को त्याग करो हरि चिन्तन, जीव सुखी भव पार लँघावे।
रामप्रकाश स्वप्न जग नाशत, वृथा ही नर मौद मनावे।।५२।।
जनम के समय मिठाई बाँटत, मरण समय पर श्राद्ध जीमावे।
दोनो समय मिठाई बाँटत, आकर नहाय अन्त में जावत नहावे।।
दुर्भाग्य वश खाय सके नही नर, दोनो समय परवश हो जावे।

रामप्रकाश यह जीवन है बस, आया कमाया और चला ही जावे ।।५३।।
झरे रस रोम के कूपन, कान रु नाक मे आँख तरोई।
देह के भीतर मल भरयो तर, इन्द्रिय द्वार ते निकसत सोई।।
एसे मलीन अलीन है देह में, अहँ करे मन गर्व घनोई।
रामप्रकाश भजे नही भगवन, भव के भीतर डूबत वोई।।५४।।
आज ही है जो साज सजावट, ना राज नाराज न एक रहावे।
ना पावन है ना खोवन है कुछ, आवन पावन ना कुछ भावे।।
हम वक्त टहनी के परिन्दे, उड जायेंगे कोई ना साथ जावे।
रामप्रकाश जग सराय है यह, कर्म क्लेश के भाव बतावे।।५५।।
धन नष्ट हुआ जन प्राप्त करे श्रम, विद्या अभ्यास ते बहुरि लावे।
देह को रोग औषधि ते फिर, होय आरोग्य से फेर बनावे।।
समय विश्वास रु चरित्र गये वह, लाख उपाय से फेर ना पावे।
रामप्रकाश नर श्वास गये वह, गया समय फिर हाथ न आवे।।५६।।
मरने वाले के कपड़े रु बिस्तर, तुरन्त निकाल देवत है सारे।
धन दौलत प्रापर्टी जवाहर, कमाई उनकी कोई ना फैकत प्यारे।।
सब ढूँढत तन पर के भूषण, वसियत की चिन्ता खोजत न्यारे।
रामप्रकाश अजब है स्वार्थ, तन ले जाय श्मशान मे जारे।।५७।।
मुख ते लार रु घ्राण में सैंडो है, आँख में गीड विकार भरायो।
रोम रोम मे स्वेद झरे घन, मल मूत्राशय नित झरायो।।
हाड रु माँस है रक्त मज्जा सँग, देह मलीन रु रोग जरायो।
रामप्रकाश अभिमान करे नर, धनवान मरयो तो निधन कहायो।।५८।।
हाड माँस रु रक्त मज्जा रज, वीर्य मयी यह देह बनाई।
भीतर पुरीष रु मूत्र भरयो रस, ऊपर त्वचा कर सुन्दरताई।।
आन्त रु दान्त कलेवर लीवर, फेफड़े गुर्दे मेल मिलाई।
ऐसी मलीन की देह में अहँ कर, रामप्रकाश यह मूरखताई।।५९।।
नश्वर देह मलीन भरी यह, मिथ्या करे अभिमान सदाई।
ज्ञात नही कब पात होवे तन, भागत काम रू धन कमाई।।
सुत वाम के काम लगो कर, मानव हरि हर को दियो भुलाई।
रामप्रकाश कहै चेत रे मानव, फेर मिले नही देह पराई।।६०।।
पाँच तत्व की देह बनी यह, शूक्ष्म देह को दीप जलाई।
अवस्था इन्द्रिय प्राण रु अन्त, पाँच कोश को है टाट लगाई।।
अन्दर मेल कुचील भरे पर, ऊपर रँग सुरँग चढाई।
वृथा फूल रह्यो नर मूरख, रामप्रकाश यह देह पराई।।६१।।
हम मानत वेद पुराण कथा सब, श्रवण करते नहीं कान थकाते।
लिखा सुना उपदेश नहीं मन, धारण पालन नहीं होय मनाते।।
सन्त महात्म गुरू दीक्षा सब, लेकर उपदेश नहीं मन लाते।
रामप्रकाश बिलाव ठठेर के, होय रहे सब मोह मद माते।।६२।।

माता पिता कई वृद्ध परिजन, बाल सखा गये मित्र हमारे।
समय आयु वर छोटे गये बहु, प्रीत प्रतीत निभावन हारे।।
भावुक होय विश्वास करूं अब, बीच में छोड़ के पहल सिधारे।
रामप्रकाश अब पीछे रहे कछु, मोह किये सब विछुरन वारे।।६३।।
मोह तजो अब राम भजो मन, जग स्वप्न समान है सारे।
अंजली गत जल आयु विहावत, घट कोरे कं टपकत हारे।।
आगे गये कोई जाय रहै, कोई पीछे की धार निहारे।
रामप्रकाश हम हूं तन सो, नदी तट के सम वृक्ष निहारे।।६४।।
ग्रन्थ रु पन्थ अनेक मतान्तर, गुरु बिन पढे सुने भ्रम पावे।
वेद पुराण रु श्रुति स्मृति रट, रह्यो बोराय भव भेद उपावे।।
गुरू धाम मर्याद तजी मन मूर्ख, साधु कहावत दम्भ भुलावे।
रामप्रकाश महमान भयो यम, राज के धाम सीधो चलि जावे।।६५।।
मानव मरे पर परिजन फैंकत, उपयोगित वस्त्रादि फेंकत सारे।
उनकी कमाई धन सम्पति सब, पहने गहने भी सँरक्षित उतारे।।
वसियत आदि सँभालत है तब, रिस्ता कौन किस भान्ति सँभारे।
रामप्रकाश सब स्वार्थ भरे घर, मित्र परिजन सँबम्ध हमारे।।६६।।
लियो हरिनाम रु किये शुभ काम सो, धर्म सहित सब कर्म सँवारे।
आशा रु वासना साथ चले सब, जन्मान्तर में फल देवनहारे।।
देह परिजन धन सम्पति सब, धरा धाम सब यहीं विसारे।
रामप्रकाश रे सोच जरा मनु, कौन साथ फल हेतु हमारे।।६७।।
चार खानि चौरासी में भ्रमत, यह जीव मानव तन जब पावे।
भाग सँयोग सतगुरू की शरण में, जनम सुधारण जब आवे।।
कुल परिवार सो व्याकुल होवत, हमें छोड़ यह कहाँ जावे।
रामप्रकाश यह मुक्ति के बाधक, कोई त्याग कर मुक्ति समावे।।६८।।
जिमि पुष्प सुगन्ध चहुँ ओर फले, यदि घ्राण में दोष है तो गन्ध न पावे।
भान प्रकाश चहुँ ओर करे, यदि उल्लु ना दीख परे तो कहा कथ गावे।।
अधिकारी के माहि जो दोष रहे तब, उपास्य में दोष को नाहि गनावे।
रामप्रकाश उपदेश भरा जग, शास्त्र गुरू जन नित सुनावे।।६९।।

घनाक्षरी छँद ~

कह्यो मान अब नर, गर्भ काल याद कर।
भूलो नर आय धर, कीयो कौल तब को।।
हरि को भजन कर, जनम सुधार नर।
अवसर को सिध कर, समय शुभ अब को।।
आयु छिन्न छिन्न जाय, गयो समय नही पाय।
आगे पूरो होवे न्याय, याद कर तब को।।
राघवप्रसाद कहे, जनमान्तर सुख चहे।
हरि भज सुख लहे, निठुर भयो कब को।।१।।
जप माहि व्रत कर, तप माँहि मन्त्र धर।

ग्रहस्थ माहि जल भर, स्नान त्रय कीजिये ।।
ग्रहस्थ पूजे युग साथ, जपी तपी दान हाथ ।
याही विधि गति पाथ, भव तर लीजिये ।।
जप तप व्रत मन्त्र, स्नान चतुर तन्त्र ।
भव से तरण यन्त्र, मन गुण भीजिये ।।
राघवप्रसाद कहे, जन्मान्तर सुख चहे ।
नाम जप तप बहे, भल तर जीजिये ।।२।।

।। वृद्ध अवस्था का अंग।।

कमर झुकी लकड़ी पकड़ी, कम्पत पाँव चले मगरी ।
नैन की ज्योति मँद भई अब, सूझ परे नही सँकड़ी डगरी ।।
बाल सो आल मखोल करे तब, तोतलि बात कहै झगरी ।
रामप्रकाश अब वृद्ध भयो पर, जीवन आस बड़ी लगरी ।।१।।
हालन चालन मन्द पड़ी तब, सोवत पीठ परी टकरी ।
नीन्द न आवत बैठ सके नही कछु, नैन से मँद आवे चकरी ।।
खावत पेट अफार करे अब, सुधि नही बल तकरी ।
रामप्रकाश अब वृद्ध दशा वश, शुधि रही ना पट जकरी ।।२।।
चरण परे वह थर थर धूजत, कर कँपन लागे अति भारी ।
दान्त रु आन्त सो मोल बिकाऊ, चक्षु की ज्योति भी मन्द थयारी ।।
नबे वर्ष अब जरजर मूरति, प्राण पक्षी अब कूच विचारी ।
रामप्रकाश यह वृद्ध दशा मधि, रोग भण्डार भई देह हमारी ।।३।।

।। जग का प्रवाह ।।

कोई कहै जग व्यवहार ते चालत, कोई कहै चले प्यार ते भाई ।
कोई कहै मित्रता वश चालत, कोई कहै जग बुद्धि चलाई ।।
कोई कहै जग ईश चलावत, कोई कहै यह पृकृति कहाई ।
रामप्रकाश परीक्षण कर भाषत, स्वार्थ भाव ते लेत भलाई ।।१।।
कोई कहै यह कर्मों वश चालत, कोई कहै पुरुषार्थ ताँही ।
कोई कहै यह मानव सँचालित, कोई कहै यह नियमित थाँही ।।
कोई कहै यह प्राकृतिक है भव, नित्य प्रवाह ते योंही चलाही ।
रामप्रकाश सत्य यह भाषत, पृकृति ईश रु कर्म सहाही ।।२।।

।। चाणक का अंग ।।

सुत वित नार की चाह घनी घर, कार व्यवहार रह्यो अलुझाई ।
साधन सतसँग साथ नही गुरू, बिना अनुबन्ध के बात बनाई ।।
गृह क्लेश प्रपँच में लागत, शास्त्र ज्ञान न जानत भाई ।
रामप्रकाश जो ताहि प्रबोधत, सो ज्ञानी मति मन्द कहाई ।।१।।
भेष लिया पर भेद न जानत, भगवाँ पहन के मन फुलायो ।
साधुशाही के परिचय पूरण, बावन बात न जानत आयो ।।
छड़ी छत्र के सात अँग बिन, जाने आने बिन मान भुलायो ।
रामप्रकाश सतसँग मे बूझत, मूढपती क्यों भेष बनायो ।।२।।

बहुत देखे गृहस्थ सन्त जग, भेष पहन के चेले बनाते।
पण्डित ब्राह्मण सन्त कहला कर, शिष्यों की भेंट को घर लाते।।
घर खर्च गृहस्थ व्यवहार में, धर्म के धन को घर लगातें।
रामप्रकाश सुत मूर्ख या व्यशनी, घर पीढि में वह फल पाते।।३।।
ज्ञान अज्ञान रु विद्या अविद्या सँग, जनम मरण को कारण भूलो।
उत्पति प्रलय सृष्टि न जानत, सन्त भगवान भयो मन लूलो।।
जीव रु ईश स्वरूप लखे बिन, भगवाँ पहन के हो गयो खूलो।
रामप्रकाश परख बिन पूजत, भेष आडम्बर केवल झूलो।।४।।
मनमुखी कुछ ऐसे भी होवत, भेष पहन सतसँग मे जावे।
मौनी होकर अड़वा बैठे, भेंट लेत फिर घर में आवे।।
निकमा हो तब जावत घूमत, योंही भगवा भेष लजावे।
रामप्रकाश सतगुरू से बेमुख, मन का मान्या भेष बनावे।।५।।
भाण्ड समान वे भेष बनावत, माँगत खावत सतसँग जावे।
घर में आयके भेष उतारत, ऐसे पाखण्ड कर आयु बितावे।।
बाना लजावत भेंट को पावत, बात बनावत लापर तावे।
रामप्रकाश ऐसे मूढन को, राज बिना कोई को समझावे।।६।।
दान रु भेट की गणित करे घन, मद को तामस कर्म कहावे।
यश लोकार्थ फल को चाहत, राजस दान रु भेँट धरावे।।
सात्विक ईश्वरीय हेतु परमार्थ, मानव धर्म को इष्ठ निभावे।
रामप्रकाश तन धन सेवार्थ, भाव प्रमाणित फल को पावे।।७।।
दान रु भेट की गणित करे घन, मद को तामस कर्म कहावे।
यश लोकार्थ फल को चाहत, राजस दान रु भेँट धरावे।।
सात्विक ईश्वरीय हेतु परमार्थ, मानव धर्म को इष्ठ निभावे।
रामप्रकाश तन धन सेवार्थ, भाव प्रमाणित फल को पावे।।८।।
रिसतेदार रु सगे सम्बन्धी जन, आवे सतसँग मेँ धूम मचावे।
गायक जन को ज्ञान नही पद, राग रु ताल बिना अरड़ावे।।
बैठन की कोई लत नही पँच, पाँव पसार के ऐँठ जमावे।
रामप्रकाश ऐसी सतसँग सो, सन्तन के मन नाहि सुहावे।।९।।
भावुक प्रेमी आवे श्रद्धा कर, भेंट प्रणाम से शीश नमावे।
द्रढ एकासन बैठ मर्यादित, श्रवण कर मन चित लगावे।।
सुख सुविधा रु बीड़ी नशादिक, चाह नही रँच मन में लावे।
रामप्रकाश वे भक्त सदा भल, भाग भला जिन के घर आवे।।१०।।
रात जगावत धूम मचावत, ताल तँदूर बिना स्वर गावे।
बीड़ी तमाखू रु अमल आदिक, रोलम पेल पीवे अरु पावे।।
सगा सम्बन्धी रु रिस्तेदारन, नूतन देकर ताहि बुलावे।
रामप्रकाश वो मतसँग मानहू, धूम धड़ाके क्या फल पावे।।११।।

जागरण लोक जगावत है घर, महँगे कलहगार बुलावे।
साज रु बाज नाना विधि लावत, देश काल बिन धूम मचावे।।
देवी देव रु हनुमान भैरव, कहो वही गाय सुनावे।
रामप्रकाश मरियाद बिना वह, नशे माहि धन लूट ले जावे।।१२।।
शैव रु वैष्णव बिना भेष के, मन इच्छा के भेष बनावे।
नियम धर्म सिद्धान्त हीन सब, नाना पन्थ पाखण्ड रचावे।।
राम नाम की रोटीयाँ खावत, भेष आडम्बर बहुत दिखावे।
रामप्रकाश वे साधु उपासक, परिचय बिना घुमक्कड़ कहावे।।१३।।
कोई शैव नही रु वैष्णव नाहिन, भगवें भेष को यूँहि लजावे।
इष्ठ ग्रन्थ दीक्षा रु मन्त्र, उलट पलट मन के मति ध्यावे।।
गँगा जाय गँगादास रु, मथुरादास मथुरा मे नहावे।
रामप्रकाश वे साँग लिया नित, डोलत बोलत भ्रम फैलावे।।१४।।
भेष परिचय ज्ञान बिना कुछ, मानद उपाधि आप लगावे।
मन मरजी से फूल रहे मन, महामण्डलेश्वर महन्त कहावे।।
सामग्री बिन पीठाधीश्वर होवत, लौकिक शँका दूर भगावे।
रामप्रकाश वे चेलों में घूमत, अनी अखाड़े कभी नहि जावे।।१५।।
भेष सँस्कार का ज्ञान नही उर, पनही बिना वे दोड़ता जावे।
लँबा चौगा पहन लिया तन, हाथ कमण्डल भलो सुहावे।।
जाय घरे तब बाल खेलावत, घर का धन्धा खूब फैलावे।
गाय बजाय के लोक रिझावत, रामप्रकाश ऐसे वह भेष लजावे।।१६।।
घर घर माँगत सन्त बने वह, भेष कला बिन मँगत सारे।
गाँव गाँव में चन्दा माँगत, सतगुरू शरण विश्वास बिसारे।।
भेष धरे घर ग्रहस्थ को पालत, ब्रह्मा बचाय सके नही नर्क दवारे।
रामप्रकाश है सतगुरू शरण में, प्रारब्धवश रखुवार हमारे।।१७।।
जन समूह मे पैठ नही अरु, बात सचाई रति नही होवे।
पाँच सात मिल झूठे भेषी, पँच मण्डली कर पाखण्ड जोवे।।
साच के सामने आ न सके, वह न्यायालय के पथ सँजोवे।
साच को आँच नही रामप्रकाश है, आखिर झूँठे मन में रोवे।।१८।।
सँखिया भिलावा रु जहर कुचीला, परम हलाहल औषधीय जानो।
वैद्य विविध सँस्कार करे विधि, अमृत बने सुख जीवन मानो।।
सिँह सर्प विषधर भी मँत्र वश, दुष्ट स्वभाव न होवत कानो।
रामप्रकाश चाहे भेष धरो कछु, सतसँग रँग न लागत छानो।।१९।।
सर्गुण भाव के पूजनहार है, निर्गुण निन्दत भाव हराने।
निर्गुण वाद के वादी करे नित, सर्गुण उपासना को नही माने।।
अल्प बुद्धि के दोनो उपासक, अल्पज्ञ भाव से मानत छाने।
रामप्रकाश है एक परमेश्वर, व्यापक पूर्ण ब्रह्म पिछाने।।२०।।
ब्रह्म ज्ञान मे होठ हलावत, शास्त्र रटे मन मे हुलसावे।

जग व्यवहार प्रपँच मे है मन, उलझ रह्यो रँच ना ठहरावे।।
सिँह की खाल पहन के गीदड़, भौंकत श्वान ही तोड़ भगावे।
रामप्रकाश अनुबन्ध बिना नही, साधन सा प्रयोजन पावे।।२१।।
वापी तट पर आम लग्यो फल, टूट परयो जल माहि समावे।
गले सड़े अस्तित्व मिटे सब, गलित भयो नही प्यास मिटावे।।
गुरू को त्याग गोविन्द भजे भल, सिद्धि न पावे नर्क सिधावे।
सतगुरू की मरियाद बिना, रामप्रकाश सब मूल नसावे।।२२।।
अँग रँगे काषाय के अम्बर, गृहस्थ रमे गृहणी घर राजे।
महामण्डलेश्वर महन्त बने वर, नये पन्थ रु मत को साजे।।
नये सिद्धान्त अप्रमाणित है सत, साधन हीन अनुबन्ध आराजे।
रामप्रकाश यह कलि के लक्षण, सन्त के भेष में आप नवाजे।।२३।।
बहु भेष धरे पाखण्ड करे घन, दम्भ का जीवन बहु विस्तारे।
पँच पँचायत बीच में बैठत, नशे व्यशन को जन सतकारे।।
अभिमान के जीवन जीव रहे यह, खण्डन मण्डन मन धारे।
रामप्रकाश ये साधन के बिन, साधु शब्द को यह अपकारे।।२४।।
मूढ समाज में परख नही जहाँ, दम्भी पाखण्ड मचावत रोला।
सन्त की बात जो न्याय भरी वह, कौन सुने वहाँ मूरख टोला।।
पावस काल में दादुर बोलत, कोयल वाणी रहे जहाँ ओला।
रामप्रकाश जहाँ परख नही वहाँ, पूज्यमान रहे नित चोला।।२५।।
भगवाँ पहन साधु भया पर, स्वभाविक वृति घर की ना छूटी।
आगी पाछी निन्दा चुगली, लोक भिड़ावन आदत लूटी।।
ज्ञान ध्यान पूजा पाठ बिन, मस्तिष्क में उत्पात अखूटी।
रामप्रकाश ये साधु भिड़ावन, समाज को देवत पक्ष की घूटी।।२६।।
कृतघ्नी गुणचोर भी आवत, सन्त के भेष में बहुजन प्यारे।
आपने काम के कारण आवत, स्वार्थ में बहु लापर वारे।।
भीख के कारण घर घर जावत, ग्रन्थ कथे घर रख परिवारे।
ज्ञान के रूप अज्ञान ही डोलत, रामप्रकाश भ्रम मे मतवारे।।२७।।
भाव भक्ति बिन श्रद्धा प्रेम बिन, मुख दिखावण दोड़ता आवे।
सन्त लक्षण बिन जाति गुलाम ही, पाँच पँच को साथ ही लावे।।
भगता मँगता जगत का भौंदू, सन्त के भेष को योंही लजावे।
रामप्रकाश भक्ति बिन मूरख, भाण्ड को भेष रु भक्त कहलावे।।२८।।
भेष काषाय धरे फिर डोलत, घर घर लाग चन्दा कर काजे।
जात समाज के महा मण्डलेश्वर, पँच पँचायत बीच बिराजे।।
चाय अमल रू बीड़ी तमाखू को, करे मनुहार पीये सन्त बाजे।
रामप्रकाश वह साधन हीन हो, त्यागी भयो फिर आँख न लाजे।।२९।।
ग्रहस्थी भी सन्त है त्यागी भी सन्त है, त्याग महात्म कोइयक जाने।
ग्रहस्थी महामण्डलेश्वर, त्यागी मण्डलेश्वर, छोट बड़ को कौन पिछाने।।
महन्त अरु श्रीमहन्त महरम, देखादेखी सब शीश को भाने।

रामप्रकाश अँधेर है जग में, काग रु हँस को एक ही माने ।।३०।।
दलबन्दी जात को भय सतावत, भ्रम मिट्यो नही देह को भाई ।
सन्त महन्त बण्यो मन घूमत, ज्ञान रु ध्यान दियो विसराई ।।
मेरो तेरो कर आयु विहावत, साधन कर्तव्य दियो भुलाई ।
रामप्रकाश ये पहन काषाय को, जनम गमावत व्यर्थ आई ।।३१।।
भूले साँसारिक भेष के वँचक, कथा वाचक जन भूल मे डोले ।
साधु भी बोलत झूँठ सभी घर, धन सम्पति तज जावत चोले ।।
चार ही लाख कथा कर लागत, लोग ठगाई की बात को बोले ।
रामप्रकाश यह आश्चर्य आवत, भ्रम की गाँठ कोई नही खोले ।।३२।।
बात करे परब्रह्म चिदानन्द, श्रुति रटे बहु बात सुनावे ।
चाल रु ढाल चले जग जीव की, कैसे कटे भव बन्धन दावे ।।
जम्बुक भूलो है सिंह की खाल में, पहन के पुरुषार्थ नाहि जगावे ।
रामप्रकाश यह ज्ञान की घाटी है, विकट विषम अति दुर्लभ पावे ।।३३।।
पाँच कोश को ज्ञान नही अरु, अँतःकरण मे है त्रिदोष भर पायो ।
चित की पँच भूमिका भेद को, पँच क्लेश है बुद्धि में छायो ।।
अविद्या के अन्धकार मे झूलत, आतम देखन मन ललचायो ।
रामप्रकाश मदिरा मद अष्ट पी, बिच्छू दँश सन्निपात बर्रायो ।।३४।।
तर्क वितर्क कुर्तक भरो चित, वाद विवाद में बहु भटकायो ।
पन्थ अनेक की भरी शँका मति, आतम रूप देखन को आयो ।।
ऊषर खेत रु बिगड़ गयो पय, काम नही कुछ भी उपजायो ।
रामप्रकाश ऐसे जग मूरख, अधिकारी बिन कोऊ न पायो ।।३५।।
जाहि के घर में विग्रह चिन्तन, घृत स्नेह रु अन्न चिन्तावे ।
जाहि को व्यवहार शुद्ध नही जीवन, जग में जाहि अपयश थावे ।।
साधन योग रु ज्ञान करो भल, शास्त्र रचो सब वृथा बनावे ।
रामप्रकाश सो साधु ना साधक, साँगलपती को साँग कहावे ।।३६।।
मत मतान्तर के सुन कर चातुर, और की भाषा बोलत जोई ।
वही है तोते समान सो बन्धित, भवसागर मति भ्रमत सोई ।।
आपनी भाषा को कोयल बोलत, मृददु स्वतन्त्र समान है जोई ।
रामप्रकाश ऋषि गुरू मानत, और मतान्तर मूल को खोई ।।३७।।
व्यवहार व्यवस्था डूब रही घर, लोक शिक्षा रत काव्य बनावे ।
ज्ञान घमण्ड बिना अधिकार ते, साधन योग की रीत बतावे ।।
डूब रह्यो व्यवहार साँसारिक, बात परमार्थ व्यर्थ हलावे ।
रामप्रकाश धरा पर स्थित, व्योम के फूल सुगन्ध क्यों पावे ।।३८।।
शास्त्र सिद्धान्त विहीन स्थापित, पूर्वाचार्य की धार उडावे ।
अपने तर्क सहित मतवाद ही, मूल बिना कर पन्थ जमावे ।।
नाम रु काम सिद्धान्त नये कर, पूर्वजों के शुभ नाम न आवे ।
रामप्रकाश कलि के मण्डलेश्वर, नवीन उपाधि आप लगावे ।।३९।।
इस युग में नित नव सँगठन, दल सँघ रु सँस्था बनावे ।

मत मतान्तर पन्थ की रचना, बिना सिद्धान्त मतवाद चलावे ।।
नियम बिना धन लाभ के हेतु ही, कलियुग के यह लक्षण ध्यावे ।
रामप्रकाश मन के सब भावित, मार्ग अपना आप बनावे ।।४०।।
धन बटोरन नाम कमावन, आपनो सृजित काम चलावे ।
भोले अजान फँसे भव बन्धन, आपनो धन मन वहीँ लुटावे ।।
कर्म अकर्म को कोई ना देखत, आपनो पन्थ रु युक्ति बढावे ।
रामप्रकाश सन्त भविष्य भाखत, ये सब भव की धार बहावे ।।४१।।
आसन भेंट रु पद प्रतीष्ठित, नशे मिले मन वाँछित आई ।
मूर्ख मण्डल भीड़ लगी रह, लोभ लगा मन बात बनाई ।।
पढे लिखे बिन सन्त सम्मानित, नशे व्यशन रत रहत सदाई ।
रामप्रकाश समाज विदूषक, धन दुरुपयोग करे यह भाई ।।४२।।
ग्रन्थि बिना बहु ग्रन्थ रचावत, कविता मोल की लाय छपावे ।
अक्षर छन्द को ज्ञान नही वह, बाञ्झ के पूत को योंही जनावे ।।
दोष भरे वह शासन हीन हो, मूढ प्रसाद को बल न आवे ।
रामप्रकाश हँस चाल चले पर, काग के लक्षण सन्त कहावे ।।४३।।
वक्तव्य ज्ञान करे बहु वाचक, कविता वाणी को खूब रचावे ।
गुरु सँप्रदाय मरियाद न जानत, शिष्य करे निज पन्थ बढावे ।।
पक्षपात भरे मन द्वन्द रचावत, साच की बात से सो घबरावे ।
रामप्रकाश दम्भी सन्त जानहूँ, नीति अनीति को नाहि बतावे ।।४४।।
पहन काषाय भयो मंद मस्त ही, भेड़ की टोल को जाय सँजोयो ।
लोग हटे न दटे न पटे मन, ईर्षा द्वैष मे अँध ही होयो ।।
क्रूर ग्रह ग्रस्त बीछी डसी तन, पी मदिरा बोराय के सोयो ।
रामप्रकाश यह साधु के भेष मे, दम्भ में मुक्ति को मान के होयो ।।४५।।
विरक्त तपस्वी साधु सन्यासी सो, भिक्षावृत पावत सहज गुजारो ।
घर घर की अन भेंट ले आवत, सात्विक राजस तामस वारो ।।
गृहस्थ कुल कुटुम्ब जो खावत, सो जड़ मूल से काल को चारो ।
रामप्रकाश शास्त्र यों बाचत, सन्त चेतावत जाय जमारो ।।४६।।
गाय बजाय के लोक रिझावत, बीड़ी अफीम तो रँच न छूटे ।
लाग रु भाग को गाँव घरों ला, नशे व्यशन की आदत लूटे ।।
खावत गावत लावत पावत, इष्ट उपासन चित न ऊटे ।
रामप्रकाश सन्त भेष धरे ऐसे, यम खोपड़ी जोर से कूटे ।।४७।।
चरस घण्डूल रु अभक्ष भखे वह, अमल तमाखू से हेत लगावे ।
नशे व्यशन मे मस्त रहे नित, जनता की भेंट अकूत से आवे ।।
गले माला बहु लम्बी जटाऐं हो, भेष अनूप दिगम्बर ठावे ।
मूढ समाज मे वही सन्त भावत, रामप्रकाश ये खोल बतावे ।।४८।।
पाठ पूजा बिन इष्ठ गुरू बिन, नित भ्रमण मे चित लगावे ।
भेष आडम्बर खूब सजावत, बात पँचायत हेत उमावे ।।
माँग के लाय अफीम को खावत, बीड़ी तमाखू में धन गमावे ।

रामप्रकाश ये साच सुनावत, मूढ समाज मे ऐसे सुहावे ।।४९।।
वृद्ध भये सुत भाव न राखत, बहू परिजन नही सेवत भाई ।
अर्थ रु धर्म सँग्रह नही होवत, भेष को लेवत है सुखदाई ।।
पैसा प्रतीष्ठा भोजन रुचि कर, नशे अचे मन वाञ्छित पाई ।
रामप्रकाश जप तप किये बिन, भव में डूबत सादर जाई ।।५०।।
सुत सुता विवाह दिये घर, सम्पति नारि ना सेवत आई ।
अथवा नारि मुँई घर से परि, पूछ नही सुत परिजन भाई ।।
भेष पहन के होवत है सिद्ध, पद प्रतीष्ठा रु सेवा को पाई ।
रामप्रकाश यह पढे तपे बिन, जीवित सन्त बने दुःखदाई ।।५१।।
वृद्ध भये तब सहज क्रिया बिन, घर परिवार के काम विहाई ।
अर्थ न मान नही सम्मान हो, तब साधु बने सन्त भेष बनाई ।।
गावत राग बतावत बात ही, शिष्य करे भव भय दिखाई ।
रामप्रकाश साधन बिन बोध के, मण्डलेश्वर वह महन्त कहाई ।।५२।।
कूऐ में भाँग घुले जल पीवत, गाँव के लोग ही पागल होवे ।
सिन्धु में भाँग घुले जब पूरण, मच्छी रु जन्तु सभी मद जोवे ।।
वाष्प ते मेघ उमड़ कर वरसत, ताल नदी घट नशे में खोवे ।
रामप्रकाश यह हालत है जग, सभी जन नशे के भीतर सोवे ।।५३।।
समुद्र भाँग घुली जग भीतर, पीवत जीवत जन्म से होवे ।
अज्ञान दशा सब भीतर है यह, जाति को भाव भक्ति नही धोवे ।।
मानवता को भूल रहे नर, आप गति नही कोइयक जोवे ।
रामप्रकाश ब्रह्मा यदि आय भी, तद हूँ भी यह कीच न खोवे ।।५४।।
ज्ञान उपाय से जान सके सब, शब्द की समझ माने सब कोई ।
अनुभव से अर्थ समझ में आवत, साधन ते प्रयोजन होई ।।
ताहि ते आनन्द पावत है सब, साधक गुरू प्रसाद ते जोई ।
रामप्रकाश यह नीति पुकारत, शास्त्र सन्त सनातन सोई ।।५५।।
बालक बालिका घर में घूमत, गृह कार्य दक्ष घर में गृह नारी ।
भेष काषाय पहन संन्यास के, परमहंस बन घूमत बारी ।।
ज्ञान की बात करे बहु शास्त्र की, युक्ति लगा शिष मूंडत भारी ।
रामप्रकाश यह दम्भ के लक्षण, कौन है जग मे टोकन हारी ।।५६।।
सतगुरु दीक्षा में शिक्षा सुनपाई, सन्त समाज से भिक्षा को धारी ।
साच कहो रु मुंह पर बोलिए, नीति रु रीति ना छोड़िये बारी ।।
श्रद्धा रु नीति निर्वाहक मानव, मान लेहिंगे बात तुम्हारी ।
नामधारी सब कूर सो भागत, रामप्रकाश निष्प्रह सोच हमारी ।।५७।।
शब्द गुरू रु सतगुरू परम्परा, प्रारब्ध कर्म भरोसा खूटा ।
दर दर पर भटक रहे वह, लाजत भगवां सो भाग का लूटा ।।
डूबे आप डुबावे शिष्यन, गुरू धर्म रु भाग्य सब फूटा ।
रामप्रकाश वे भेष लजावत, देवे उपदेश है सब झूठा ।।५८।।
भजन शास्त्र को भेद न जानत, चन्दा मांगत लाग लगाई ।

हरि गुरू प्रारब्ध को कछु, रह्यो विश्वास न भाग्य विलाई।।
अर्थाभाव हो भव में डोलते, होय मण्डलेश्वर शान गमाई।
रामप्रकाश छड़ी लिये हांकत, पढ्यो वेदान्त न घूमत भाई।।५९।।
विरक्त भेष सन्त का धारण कर, कुल परिवार में दोड़ता जावे।
जाति पँचायत के बीच बैठता, गपशप कर लाग चुकावे।।
साधु मरियाद भुलाई मन से, ईर्षा द्वैष मे जन्म बितावे।
रामप्रकाश साच कही बात सुन कर, बाँह खैंच लड़न को आवे।।६०।।
आज साधु बड़े हूए उडने लगे कि, मूल पृथ्वी को भुला दिया।
मन मानन्दी में साधु मरियादा, गुरू परम्परा को भुला दिया।।
भेष पहन भूले सब ज्ञान रु, भेष परिचय सब भुला दिया।
रामप्रकाश नही शर्म रही कुछ, आयु बड़पन सब रुला दिया।।६१।।
मन का रँजन चित का अँजन, सन्त वाणी की बात सुनाओ।
समय पास शुभ चर्चा चर्चित, व्यर्थ नही समय गमाओ।।
ज्ञान ध्यान बिन शास्त्र देश के, कलियुग के साधु कहलाओ।
रामप्रकाश मानव की आयु, दे जाओ या कुछ ले जाओ।।६२।।
गुण को ले अवगुण मन धारत, कृतघ्नी मनहूस कहावे।
कुल कपूत वो मात पिता गुरू, कुल मरियाद को धूड़ मिलावे।।
चण्डूल समान वाचाल गुणवान हो, काषाय धारी को त्याग करावे।
रामप्रकाश वह युथ बनावत, आपन मत जमात बनावे।।६३।।
त्यागी का भेष साधारण सादगी, गृहस्थ भेष अजीब बनावे।
छाप रु तिलक माला बहु राखत, भगवाँ साँग को पूरा झुकावे।।
प्रथम आसन जाय के बैठत, साची सुनत क्रोध परखावे।
रामप्रकाश यह आश्चर्य आवत, कौन है ऐसो इन को समझावे।।६४।।
त्यागी रु ग्रहस्थ सन्त एक बराबर, खल गुड़ एक ही भाव बिकावे।
काषाय पट रु अध्ययन आसन, भेंट मानद सब ही पावे।।
सन्त मरियाद रु गुप्त भेद सो, भेष परिचय ना कोई लखावे।
रामप्रकाश पय रु तोय मिले सँग पाखण्ड, कौन पूछे अरु कौन बतावे।।६५।।
त्यागी होकर रोल मचावत, सम्बन्ध घर कुटुम्ब से राखे।
मन चाहै जा गल बन्दी डालत, भिक्षावृत्ति की फौज को ताखे।।
भेष मरियाद रति नही जानत, गुरू भेद मर्म नही भाखे।
रामप्रकाश नाम के त्यागी है वह, साची कहत छुपा नही राखे।।६६।।
अज्ञानावृत का समय आज यह, जन समाज भेष में पाते।
झूँठ मक्कारी दलबन्दी कर, अपना समाज सो अलग बनाते।।
चमगादड़ चमचेड़ उल्लु सम, सूर्य प्रकाश साच से वे घबराते।
रामप्रकाश नही साच बात छानते, फिरते है सब मुख छुपाते।।६७।।
उल्लु चमचेड़ी बागल आदिक, यह सब रहे अँधेरे में राजी।

ऐसे कुछ साधु जन समाज में, अज्ञानावृत मुँह छूपाते पाजी ।।
विद्वानों में नही जावत है अरु, मूढ सैलाब मे जाजम जाजी ।
रामप्रकाश आश्चर्य यह देखत, विचार यही है कलियुग बाजी ।।६८।।
त्यागी रु गृहस्थ का भेद रहा नही, भगवाँ भेष सब धारण हारे ।
गुरू के श्वेत रु शिष्य काषाय में, भेंट रु आसन बराबर सारे ।।
कपि जिमि बाग उजाड़ करे तिमि, सन्त समाज ने किये वह ढारे ।
रामप्रकाश करे सब आदर, कोई नही यहाँ टोकनहारे ।।६९।।
सन्तन खेल बिगाड़ दियो सब, भेष मरियाद रही नही बाकी ।
गुरू शिष्य सब एक समान ही, मानद उपाधि रु आसन जाकी ।।
त्यागी रु गृहस्थ को भेद रह्यो नही, भेष परिचय मरियाद सो थाकी ।
रामप्रकाश ब्रह्म रूप भये सब, अनुबन्ध बिना हरि भक्ति है पाकी ।।७०।।
गृहस्थ रहे घर बार के भीतर, भेंट ले जाय के गृहस्थ चलावे ।
कूप को नीर कूए बिच डारत, पर उपकार के काम न आवे ।।
सन्त त्यागी की भेंट ही लागत, जन सेवा शुभ कारज पावे ।
सिन्धु भाँग घुली जग सागर, रामप्रकाश अब कौन बतावे ।।७१।।
काषाय गले लटकाय फिरे बहु, बिना गुरू के मुग्ध मत वारे ।
कयी गुरू अधिकार बिना कर, शिष की साख बढावन हारे ।।
शास्त्र मर्याद बिना सब मूरख, बाग उजाड़ कपि सम सारे ।
रामप्रकाश सिद्धान्त बिना ज्ञेय, रटे वेदान्त भये मतवारे ।।७२।।
षट् भ्रम मे बन्धे भूले, कहो बताओ कौन है प्यारे ।
पँच सँस्कार सो किसने दीये, शरणागति का मन्त्र बतारे ।।
भेष परिचय बिन भेषी दम्भी, वृथा वाद मे क्यो भटकारे ।
रामप्रकाश परिचय दो पूरा, नही तो सँगत मे भेष उतारे ।।७३।।
गुरू मन्त्र की गम न राखत, शरगणात सम्प्रदाय मन्त्र न पावे ।
पीठ धर्म रु भेद जाने बिना, सूना भेष का साँग बनावे ।।
साच कहूँ जग मानत नाहि न, झूँठ कछु भी कथ्यो नही जावे ।
रामप्रकाश भगवें का पाखण्ड, जग भरमावत लाज न आवे ।।७४।।
गुरू सम्प्रदाय शरणागति, मन्त्र त्रय की गम न जाने ।
पीठ धर्म रु छड़ी छतर के, सात अँग की गत न आने ।।
झूँठी गाथा कथी न जावत, साच कहूँ तब जग न माने ।
रामप्रकाश दधि गली बिके अरु, मधुवा हाट बिकावत छाने ।।७५।।
रामस्नेही रु सन्तदासी तुम, वैष्णव हो तो खोल बताओ ।
सँयोगी वियोगी नाद बिन्दु के, तीन मन्त्र बल सात जताओ ।।
भगवाँ भेष कहाँ से लाये, आदि भेष हैं सही सुनाओ ।
रामप्रकाश प्रकट में पुछे, भेद बिना ही साधू कहाओ ।।७६।।
योग यज्ञ रु जप तप साधन, गुरू धर्म सब ही विसरायो ।

सौ पचास भजन बना कर, ज्ञानी होन को धौस मचायो।।
वेदान्त प्रक्रिया रटी बहु श्रुति, भेष परिचय भेद न पायो।
रामप्रकाश बूझे कोई सामर्थ, तहाँ जावन को मुख छुपायो।।७७।।
असुप्त होय जाग्रत मे जागत, व्यर्थ क्रिया नही करे करावे।
धरातल से चेतन की मञ्जिल, अधिकारी से ज्ञानी पद पावे।।
साधन सहित साध्य को पावत, साधु वही सत मन को भावे।
रामप्रकाश जो भगवाँ धारक, भेष भरोस वह भोजन पावे।।७८।।
कायर होय सो धाक जमावत, दे धमकी कर लोक डरावे।
हत्यारे को महन्त बना कर, मूरख आपनो स्वार्थ पावे।।
पोल खुलने का भय सतावत, कायर धमकी काम न आवे।
रामप्रकाश ये पोल के ढोल है, भरी सभा बिच बोल न आवे।।७९।।
ईर्षा द्वैष भरे उर भीतर, वाणी के बोल को नाहि ठिकानों।
भेष काशाय रँगे बहू भान्तिन, मण्डल गाढ जमात जमानो।।
कैसो है साधु समाज को रूपक, ज्ञात अज्ञात भयो सब स्यानो।
रामप्रकाश हरि अब रक्षक, राम ही राखत राम परमानो।।८०।।
नियम न धर्म न पाठ पूजा नही, जप गायत्री वेद न जानी।
गले जनेऊ भरी रव दूषण, ज्ञान अध्यात्म मन नही आनी।।
दान लायो रु खायो ग्रह पुजन, भर्म अज्ञान मे बुद्धि भ्रमानी।
रामप्रकाश बिना गुरू ब्राह्मण, नामधारी की झूठी कहानी।।८१।।
मानव मार आरक्षी से छूट के, महन्त बने सब के हितकारी।
साहित्य शोध रु विधि विधान से, उद्‌धृत सौजन्य हीन अपकारी।।
सीतला वाहन महन्त बने वह, जगत चाहै कल्याण विचारी।
रामप्रकाश विचार बिना वह, डूबे आप डूबावन हारी।।८२।।
लोह रु स्वर्ण लकड़ माटी सब, है उपादान सदा जग माही।
लुहार सोनार सुथार कुम्भार सु, निमित कारण बिन हैवत काही।।
साज सामान होवे तब कारज, होय प्रक्रिया से सोभत जाही।
रामप्रकाश जग साधु जन होवत, भेष लीयो पर भेद को नाही।।८३।।
आप अनुबंध साधन कर पूर्व में, सद्‌गुरु सन्मुख वह जाते।
वेदांत पठन कर ब्रह्मनिष्ठ होवत, द्वैत भ्रम को दूर भगाते।।
अब वेदान्त आजीविका साधन, पढ कर रोटी रोज कमाते।
रामप्रकाश ब्रह्मविद्या ऋषियन की, पढ कर वाद विवाद बढ़ाते।।८४।।
भक्ति करो कर्म योग करो भल, ज्ञान के साधन सोच सँभारो।
मन रु इन्द्रियादिक शम दम साधन, निश्चित है योगन मांहि विचारो।।
आसन द्रढ आहार द्रढ रु, निन्द्रा द्रढ कर शोच आचारो।
रामप्रकाश यदि नाहि सधे यह, तब व्यर्थ साँग है योगी के धारो।।८५।।
गुरू है चक्षु बिन दीखत नाहि है, शिष्य है व्यशन दोष विकारी।
धन के लालच लोभ लगे मन, भय वश साच कहे नही खारी।।

शिष्य है बहरा सुनत ना वह, सत उपदेश की चाह बिसारी।
खेलत दाँव दोनों भव डूबत, रामप्रकाश कहै साच पुकारी।।८६।।
काषाय पहन के रूखा रख भाल रु, पँच पँचायत बात चलावे।
ईर्षा द्वैष रु दलबन्दी कर, आपनी महिमा आप ही गावे।।
कविता मोल के लेख लिखावत, सनातन धर्म उपाधि लावे।
अर्थ अध्यात्म पूछ लेवे कोई, मूढ प्रसाद को बोल न आवे।।८७।।
गँगा जाय के बने गँगदास जी, द्वारिका में द्वारिका दास कहावे।
यमुना तट पे यमुना दास है, जैसा मिले रँग तैसे बन जावे।।
लक्ष्य सिद्धान्त रति नही राखत, खोट घड़े मन कपट चलावे।
महन्त मण्डलेश्वर सन्त बने महा, भेष मरियाद रति नहि आवे।।८८।।
बिन मरियाद भये सब भेषज, स्वतन्त्र होय के घूमत सारे।
गुरू परम्परागत परगुरू अग्रज, रूठ गुरूद्वार से मन रहे भारे।।
भजन सीखे दश पाँच पढे कछु, गाय बजाय सुनावत प्यारे।
रामप्रकाश गुरू भक्ति सिखावत, लोभ लगा कुल बन्धु संवारे।।८९।।

।। कवित ।।

दश बीस चाय पीये, चिलम तमाखू लिये।
अफीम के माहि जीये, पँचों सँग लाहिये।।
भिक्षा माँग कर आवे, आटो बेच भाँग लावे।
राघवप्रसाद गावे, अवधूत भेष थाहिये।।
बिना पूजा पाठ, माला भेष करे ठाठ।
लाग भाग लावे आठ, मोज में रहाहिये।।
ज्ञान की गरज नाहि, आन के उपासी वाहि।
मूरख समाज माँहि, ऐसा सन्त चाहिये।।१।।

।। वाचक का अंग ।।

परा अपरा महि झूम रहे सब, अपरम्परा नही जानता भाई।
श्रुति रटी न घटी घट भीतर, शास्त्र शासन नाहि लखाई।।
अनुबन्ध साधन पालन नाहि रु, ब्रह्मज्ञान अद्वैत की बात चलाई।
रामप्रकाश जाने तब आप हि, द्वैत अद्वैत की गम भुलाई।।१।।
जब है देह अध्यास रु भ्रान्ति उर, षट उर्मियाँ ह्रदय राजे।
और उपाधि अनेक है अन्तर, तब तक ज्ञान वाच्यार्थ साजे।।
साधन सहित मुमुक्षत्व पूरण, ब्रह्मवेता गुरू पद अराजे।
उतमराम प्रसाद ते पावत, रामप्रकाश सतलोक बिराजे।।२।।
श्रुति रटे न कटे भव बन्धन, प्राकृतिक बन्ध अनेक है भाई।
हँस बनो परम हँस बनो भल, बात करो षट् शास्त्र पाई।।
बन्धकाभाव होवे नही तावद, कल्मष पोहन रूप सहाई।
रामप्रकाश वेदान्त बखानत, वाचकता में मन राख रिझाई।।३।।
वेदान्त सिद्धान्त जाने बिन केवल, शास्त्र षट् को कहो विगताई।

अनुबन्ध बिना व्यवहार सिद्धि नहि, ब्रह्म की निष्ठा सो अद्भुत भाई ।।
सिद्धान्त प्रक्रिया जाने बिन वाचक, साधन बिना नही नैष्ठिक थाई ।
रामप्रकाश आश्चर्य यों आवत, बिना अधिकारी के वाद बढाई ।।४।।
अन्तस्थ में त्रय दोष सहित ही, दोय अज्ञान वृति भल छाई ।
बुद्धि मे पँच क्लेश में प्रमुख, अविद्या बासठ रूप धराई ।।
चित की भूमिका पँचक पूर्ण, पोहन वृति आय समाई ।
रामप्रकाश वाचन ना पावत, मुक्ति नाम धोखा है भाई ।।५।।
अन्तःकरण में अष्ठपुरी के राजत, चिदाभास अवस्था सात है भाई ।
पृकृति के बाधक दोष है सप्तक, पँच क्लेश पँच कोश बताई ।।
और भी बाधक वृतियाँ नेक है, वाचक कैसे मुक्त पठाई ।
रामप्रकाश वेदान्त बखानत, मुक्ति दुर्लभ होवत आई ।।६।।
ज्ञान का अर्थ कदापि न होवत, बैठ अतीत की व्याख्या विचारे ।
ज्ञान भविष्य निर्माण करे शुभ, साधन योग रु वृत्ति सुधारे ।।
ज्ञान वाच्यार्थ वाचकता कर, जीवन आपनो आप बिगारे ।
रामप्रकाश सुनो सन्त सामर्थ, ज्ञान समाज सुधारक सारे ।।७।।
एक विशेष घटित घट देखत, श्वान एक हो भौंकन लागे ।
और अनेक भी जाति आवाज दे, देखे बिन कूकर भौंकत भागे ।।
ऐसे ही ब्रह्मनिष्ठ कोई बानी सुन, और सभी जन बोलत सागे ।
रामप्रकाश अनुभव कोई भाषत, वाच्यार्थी सुन बोलत आगे ।।८।।

।। पतिव्रता का अंग ।।

पतिव्रता नारि करे नित नियम रु, पति जिमाय के भोजन पावे ।
पर पुरुष लघु सुत भाई बराबर, वृद्ध पिता सम आन मनावे ।।
कुल मरियाद सदा मन राखत, राम भजे चित चेतन लावे ।
रामप्रकाश यश लोक परलोक में, सुख रु सम्पत्ति खूब बढावे ।।१।।
पति के प्यार कोपावत है वह, पतिव्रता धर्म को पालन हारी ।
पति की आज्ञा कुल मरियादा, नीति रीति को जाणन वारी ।।
लघु सुत रु सम भ्रातावत, वृद्ध पिता की वृति सँभारी ।
रामप्रकाश यह नारी की महिमा, लोक परलोक में सुख को धारी ।।२।।
देश में राजा रु समाज मे गुरूजन, परिवार में पिता श्री रक्षक हमारे ।
घर में पतिव्रता नारि हो जीवन, पथ दर्शक सतगुरू हो प्यारे ।।
जीवन के धन ऐश्वर्य शक्ति यह, तारण मारण हार है सारे ।
रामप्रकाश यह नीति पुकारत, पावत है सुख सम्पति वारे ।।३।।
देश मे शासक समाज मे पण्डित, रक्षक पोषक पूर हमारे ।
पिता ही होय परिवार के रक्षक, असाधारण घर मे होवत सारे ।।
पतिवृत नारि है कुल मरियाद में, सतगुरू जीवन काज सुधारे ।
रामप्रकाश है न्याय निर्माण में, पूरण हाथ है समर्थ प्यारे ।।४।।
पति के हाथ लगा शिर कुंकम, पर पुरुष को नहीं मांग दिखावे ।

मस्तिक बाल को बान्ध के राखत, पर पुरुष नही देखन पावे ।।
चक्षु की द्रष्टि को वेध रखें नित, पिता पुत्र रु भ्रात दिखावे ।
रामप्रकाश यह लक्षण धारत, पतिव्रता के गुण सन्त बतावे ।।५।।
सीता उर्मिला अनुसुया कुन्ती, द्रोपदी और गाँधारी नारी ।
मन्दोदरी अहिल्या साची, यह सब हुई पतिव्रता सारी ।।
पति आज्ञा पालन कर राखी, नीति धर्म रखुवारी ।
बहिनो रामप्रकाश की शिक्षा, युग युग चर्चा होय तुम्हारी ।।६।।
देश में राजा रु समाज में गुरूजन, परिवार में पिता अनूप है भाई ।
घर पतिवृत नार सुलक्षण राजत, नही साधारण मान कदाई ।।
कार्य निर्माण व्यवहार में पूरण, हाथ प्रलय भी इन के थाई ।
रामप्रकाश यह नीति बतावत, जीवन पाय मरियाद भलाई ।।७।।
पति को दास बनाय रहै कुछ, आप हि दास की नारि कहावे ।
पति परमेश्वर मानत है तिय, लक्ष्मी होय के आप रहावे ।।
जग में माता जगज्जननी लावत, आवत है घर लक्ष्मी बाई ।
रामप्रकाश यह नीति बखानत, जग में चर्चित होत सदाई ।।८।।

।। परोपकार का अंग।।

पीपल के पते सम मत बनो, जो गिरते सूकते उड चल परिये ।
मेंहन्दी का पता बन कर रहना, जो सूख पिसने पर भी रँग धरिये ।।
जीवन उज्वल पावन रखे नित, औरों पर उपकार जो करिये ।
रामप्रकाश उपकारी हो जो, लोक परलोक शोभित भरिये ।।१।।
सन्त सदा उपकार करे बहु, सत उपदेश सुनावत प्यारा ।
पाय व्यवहार सो जीवन पावन, व्यशन दोष को दूर प्रहारा ।।
जीव अनेक तरे भवसागर, पावत ज्ञान रु ध्यान विचारा ।
रामप्रकाश परमार्थ हरदम, भेद नही पक्षपात लिगारा ।।२।।
हरि परमार्थ कार्य हितार्थ, अन धन सँग्राहक पूण्य कमावे ।
हरि कथा श्रवण मनन कर, प्रभूत पूण्य परमार्थ पावे ।।
अनुमोदन प्रेरित कर मानस, प्रसन्नता प्रकट करे मन भावे ।
रामप्रकाश नर नारी हो कोई भी, पामर विषयी भी भक्त कहावे ।।३।।
वृक्ष पात फल आप न खावत, मधुमखी शहद न खाय अघावे ।
पुष्प सुगन्ध न आप अचे रस, सिन्धु नदी जल आप न पावे ।।
सन्त परमार्थ कारण जीवित, परहित सज्जन प्राण बचावे ।
रामप्रकाश है धन्य वही नर, जीवन को फल सहज कमावे ।।४।।
पक्षी हुमाऊ अति परोपकारिक, छाया पड़े तिहि नृप बनावे ।
पँख पसार भरे मृदु जल ही, जँगल के पक्षी प्यास बुझावे ।।
अँत समय करे काष्ठ एकत्रित, ताहि में जाय अँत्येष्ठि बनावे ।
रामप्रकाश वर्षा जल पावत, मात पिता बिन अण्ड उपावे ।।५।।

।। बुद्धि में विकार से सुधार असंभव ।।

मानव पशु समान अज्ञान में, कुछ बिगड़े प्रमाद के माही।
कुछ कुसँग में लाग रहे वह, कुछ रहे गर्व ज्ञान समाही।।
कुछ लोगन को बिगड़े लोगन, बिगाड़ दिया उन के घर ताही।
रामप्रकाश सुधार ना होवत, बुद्धि विकार भरे चित काही।।१।।
ईर्षा द्वैष में बिगड़ रहे कुछ, पन्थ की पोल में उलझत जाही।
कुछ भेष के अभिमान में कारण, मतिहीनता उर छावत पाही।।
कुछ स्वार्थ भौतिकता के वश, मूल को खोवत ब्याज कमाही।
रामप्रकाश सुधार ना होवत, बुद्धि विकार भरे चित काही।।२।।

।। अज्ञान, मोह, विकारों का त्याग।।

मन के भाव त्रिकाल में शुद्धि हो, व्यशन दोष सभी से भागे।
नशे नशीली वस्तु मात्र से, परदोष तृष्णा को त्यागे।।
बिना काम की तृष्णा चिन्ता तज के, भजन सुमिरण के हो अनुरागे।
रामप्रकाश भरोसा हरि का हरदम, हर्ष शोक तज नाम में लागे।।१।।
वाणी उज्वल दोष रहित हो, निन्दा झूँठ कठोरता त्यागे।
अश्लील शब्द कभी नही भाखे, सत्य मृदु सयँमता लागे।।
गायत्री गुरु मन्त्र को नित ही, जपे कपट तज अनुरागे।
रामप्रकाश रहो राम भरोस में, कल्याणकारी हो जीवन सागे।।२।।
शारीरीक शुद्धि सप्त व्यशन तज, नशे सभी हिँसा तज प्यारा।
निन्दा झूँठ चपलता वाणी, लापरता तज शुद्धि कर धारा।।
चिन्ता तृष्णा परदोष चिन्तन, क्रोध कामादिक तजो विकारा।
रामप्रकाश मानस शुद्धि कर, साधन सिद्ध होवत है सारा।।३।।
भौतिक आध्यात्मिक अहँ करे मन, मैं हूँ अहँता मेरो बहु सारो।
मेरो धन धाम कुटुम्ब परिवार है, ममता बन्धन मोह को ढारो।।
तूँ है तेरो की त्वन्ता के वश, अहँत ममता मे मुक्ति से न्यारो।
रामप्रकाश मोह बिन मुक्ति है, त्रिगुण तृष्णा बन्धन भारो।।४।।
मानव विचार विवेक विधि गत, जल की भाति है तरल सुहावे।
गन्दे आचार व्यवहार मिलावत, गन्द भरा यह नाला हो जावे।।
यदि सुगन्ध मिलाय गँगाजल, पावन व्यवहार हो शुद्धि कहावे।
रामप्रकाश जो चाहत हो वह, अपना जीवन आप बनावे।।५।।
किसी की मीठी वाणी हो सुन्दर, वस्त्र सुशोभित हो सुन्दर भाई।
बाहरी सुशोभन अवलम्बन सुन्दर, मन स्थिति पहिचान न थाई।।
जैसे सुपर्णखा पूतना मारीचि, रावण थे सब भान्ति सुहाई।
पट रूप अच्छे भल रामप्रकाश के, मन विकार भरे गन्दे थे लाई।।६।।
बुद्धिमान होय के शास्त्र मद मे, श्रुति भाष्य में टोकरा टोकरी में।
काम रु धाम में उलझ रह्यो घर, व्यापार रोकड़ा रोकड़ी में।।
परिवार के मोह में फँस रह्यो महा, चित है छोकरा छोकरी में।

रामप्रकाश मिले शान्ति कैसे, लगी तृष्णा डोकरा डोकरी में ।।७।।
जो बदल सके वह बदलादे अरु, सुख शान्ति मन में धार रहिये।
बदल सके नही प्राकृतिक भावों को, स्वीकार सँघर्ष धार बहिये ।।
जो स्वीकारा जाय नही वह, त्याग के नित ही दूर लहिये।
रामप्रकाश प्रसन्न रहो नित, यही हरि पूजन परम कहिये ।।८।।
मित्र सखा सम्बन्धी सतगुरू, श्री कृष्ण को अर्जुन मान्यो।
व्यवहारिक स्वार्थ और परमार्थ, अर्जुन जैसो कोई समझ न जान्यो ।।
क्षत्रिय वीर धर्म मरियाद को, भली प्रकार जीवन में आन्यो।
अज्ञान मोह भ्रम गीता ज्ञान से, रामप्रकाश को भली विधि भान्यो ।।९।।
भगवत गीता श्लोक सात सौ, टीका भाव बहु समझायो।
मार्मिक भेद लख्यो नही विद्वत, सब ने आपनो मत दृढायो ।।
मोह शँका अर्जुन की निवृत, आपने कुल को मार खपायो।
रामप्रकाश अज्ञान भ्रम खो, अर्जुन जैसो किंहिं मर्म न पायो ।।१०।।
नारी की देह लगे अति सुन्दर, योवन माँहि रह्यो लपटाई।
अमृत कलश लुभाय रह्यो मन, सुत वित कुल कुटुम्ब के माई ।।
यह सब भोग है रोग के भीतर, भव को देवत भय सदाई।
रामप्रकाश भजो मन राम ही, जीवन अन्त मे है सुखदाई ।।११।।
शुद्ध मति सतगुरू के सेवक, सस्ते भाव मिल जावत भाई।
मृदु वाणी से बोलत ही वह, बिना मोल बिक जावत आई ।।
कनक घट मे विष भरे सम, दुष्ट कपट युत बात सुनाई।
रामप्रकाश परख कर भावुक, करो व्यवहार सुधार सदाई ।।१२।।
अमृत और हलाहल साथ मे रहते, ऐसा स्थान जिभ्या है भारी।
सत्य मृदुता कमती बोलना, यह अमृत सम समझो सारी ।।
निन्दा झूँठ कठोर चपलता, यही जहर भरा है आरी।
सुधा जीव सहायक है वर, रामप्रकाश मृत्युदण्ड विष जारी ।।१३।।
अपने दोषों का दर्शन हो जाय तो, आप समान विद्वान ना कोई।
जो पर दोषों का दर्शन चिन्तन, ना समझ हम समान न होई ।।
ईर्षा की आग रु मत्सर कण्डु में, जलत रहे वह मूर्ख सोई।
रामप्रकाश यह सन्त कहे सब, शास्त्र पठन के अधिकार को खोई ।।१४।।

।। गृहस्थ का सुख ।।

साधन से सुख गृहस्थ के पास में, साधना से शान्ति सन्त ही पावे।
साधन मे शान्ति अभाव दिखावत, साधना में सुख नही कोई आवे ।।
गृहस्थ को शिक्षा सन्त ही देवत, साधु को भिक्षा गृहस्थ दिलावे।
रामप्रकाश उभय मिल चालत, सुख रु शान्ति सदा दरसावे ।।१।।
सन्त के कारण गृहस्थ को पर, लोक सुधार होवे सुख पावे।
गृहस्थ के कारण सन्तन को नित, सेवा साधन से लोक बनावे ।।
दोनो हि मिल के काम चलावत, लोक परलोक सभी सुख आवे।

रामप्रकाश जो आपने पथ चलि, जीवित जनम सफल जग थावे ।।२।।
ग्रहस्थ माँहि प्रपँच बन्धावत, मोह को जाल आहूत फैलावे।
ताप उपाधि को कारण भव में, समय श्वास की युक्ति न भावे।।
विरक्ति जीवन हो परोपकारिक, साधन समय की युक्ति को पावे।
रामप्रकाश निवृति प्रवृति के, प्रारब्ध कारण मुख्य कहावे।।३।।

।। सेवा/पूण्य /तप का फल ।।

भूत सेवा षट मास करे जन, पितर सेवा चव मास करावे।
प्राक्रतिक देव दो मास बराबर, सन्त सेवा इक मास सजावे।।
ब्रह्मज्ञानी दिन एक सेवा कर, एक समय प्रसाद जीमावे।
रामप्रकाश हो पूण्य अद्रष्ठ फल, सहस्र मुख सो कहा ना जावे।।१।।
जो जन मात पिता के सेवक, आज्ञा का पालन करने हारे।
उनकी इच्छा शक्ति पालन करके, कर्तव्य निष्ठा दिखावन वारे।।
पितृलोक सुख पावत है वह, आशीर्वाद उन्ही का पावन धारे।
रामप्रकाश वे पितृऋण के, दुःख विपति को समूल से टारे।।२।।
पूर्व जन्म मे तप कियो जप, इक पाँव खड़े फल जल अहारी।
घास पात रु खाक पे जीवन, नाम हरि पर जा बलिहारी।।
सो अब पावत ताहि फल सुन्दर, खीर पुड़ी रु बास अटारी।
रामप्रकाश सेवक रुचि सेवहि, वृथा कमाई जाय न हारी।।३।।

।। दान का अंग ।।

दान वही जो निष्कर्म करे, अरु जिस दानी ने कष्ट न माना।
जिस दान से दानी कष्ट माने, वह दान नही है जुरमाना।।
दे दिया दान जो हाथों से, मन में जो उन को कष्ट हुआ।
लेता देता नर दोनों हि डूबे, सब दिया दिलाया नष्ट हुआ।।१।।
दान सर्वोत्तम वही है उतम, दान उदरता भाव से दिया।
जिस दान को शर्म रु अहँ से, दान नहीं वह दण्ड किया।।
दान दे कर पश्चाताप करे मन, नर्क विधान से नष्ठ गिया।
रामप्रकाश है तामस राजस, भवसागर में फलदाय जिया।।२।।
मय ने स्वर्ण दान दियो लँक, विश्रवा ब्राह्मण यज्ञ में पाई।
गन्धर्वसेन ने दान दियो तब, गर्दभ मुख पायो दुःख दाई।।
सहस्र गौ को दान दियो नृग, गिरगिट योनि के श्राप को लाई।
रामप्रकाश परिणाम को देख के, दान सुपात्र को दीजे सदाई।।३।।
जलदान रु अन्नदान है, धनदान के सेठ है दाता।
वस्त्र दान भू विद्यादान को, इष्ट निष्ठ वरदान जो पाता।।
उतम कन्यादान को गावत, स्वर्णदान नौ पाप नशाता।
रामप्रकाश सतगुरू गुण गावत दे, अभयदान सत ब्रह्म लखाता।।४।।

पांच क्रियाएं जो दान को दूषित कर देती हैं।

याचक द्वार पे आवत है तब, अपमान विलम्ब से जो कोई देता।
वाणी कठोर सुनाय के देवत, विकृत मुख उपालम्भ केता।।

दिये दान पश्चाताप करे मन, तामस दान की रीत है एता।
पाँच क्रिया यह दान को दूषित, रामप्रकाश कोई हीन ही लेता।।५।।

।। कुण्डलिया ।।

पाँच क्रिया दूषित करें, दाता देवत दान।
अपमानित कर देवता, करे विलम्ब महान।।
करे विलम्ब महान, मुख विमुख हो देना।
कटु वाणी अश्लीलता, पश्चाताप करे मन ऐना।।
रामप्रकाश शास्त्र कहै, नीति रीति जाँच।
दाता नरक मे जावता, व्यक्ति दान दे पाँच।।१।।

मय ने स्वर्ण दान दियो लँक, विश्रवा ब्राह्मण यज्ञ पाई।
गन्धर्वसेन ने दान दियो तब, गर्दभमुख पायो दुःख दाई।।
सहस्र गौ को दान दियो नृग, गिरगिट योनि के श्राप को लाई।
रामप्रकाश परिणाम को देख के, दान सुपात्र को दीजे सदाई।।६।।
परिश्रम से धन मान मिले अरु, सँतोष कीर्ति काम बनावे।
मृदुता सत्य वाणी ये देवत, पहिचान व्यक्तित्व मन भावे।।
सम्मान देवत जो औरन को, नाम धाम यश सब पावे।
रामप्रकाश यह नीति पुकारत, दिया दान निष्फल न जावे।।७।।
दया बिन धर्म है शून्य बराबर, दया प्रधान धर्म उर प्यारो।
विद्या बिना अज्ञ गुरू तज ही, विद्वान गुरू की शरण विचारों।।
क्रोधी स्वभाव पत्नि तज दीजिये, स्नेह बिना बान्धव तज न्यारो।
रामप्रकाश यह नीवत पुकारत, जीवन सार हृदय बिच धारो।।८।।
दान ते महान बने कोई मानव, वाणी मधुर सत्यता धारे।
कोई बुद्धिमान है चातुरता वश, कोई व्यापार विभिन्नता सारे।।
जो जन बिना प्रयास बने वह, परम पुरुषोत्तम कोईक प्यारे।
रामप्रकाश जो भक्ति धरे उर, पूरण लक्षण प्रिय वह न्यारे।।९।।
धर्म बिना धन ठहरत नाहिन, शक्ति बिना नही विजय विभूती।
ज्ञान बिना कोई मोक्ष न होवत, दान बिना यश नाहि प्रसूती।।
बिना सँतोष सुखी नही मानव, भक्ति बिना नही लोक स्तुती।
रामप्रकाश नही धैर्य बिना कछु, मानवता बल शक्ति है सूती।।१०।।
धर्म से अर्जित धन की शुद्धि हो, निस्वार्थ भाव से दशाँश को त्यागे।
ईश्वरीय कार्य के हेतु लगावत, सात्विक स्वभाव भक्ति मन सागे।।
जनता जनार्दन परम परमेश्वर, कण कण भोग उन्ही के लागे।
रामप्रकाश यही विधि लागत, धन परमार्थ भाग तेजागे।।११।।
भिक्षा का अन्न रु धन हो चाहे, सन्त की भेंट में शिष्य चढावे।
घर में खर्च करे जन परिजन, ता धन से व्यवहार चलावे।।
पिछली पीढि द्ररिद्रता भोगत, जीवन कभी सुख नही पावे।
रामप्रकाश यों सन्त वाणी कह, अन्त समय दुःख में पछुतावे।।१२।।

।। भीख पर (मांगन) ।।

मन्दिर सभी अजीब थरोहर, बाहर द्वार पे भीख भिखारी।
बड़े भिखारी मन्दिर अन्दर, माँगत भीख है भुजा पसारी।।
गरीब भिखारी बाहर मांगत, बड़े भिख मंगे आदर धारी।
रामप्रकाश यह अजब नजारा, देख आश्चर्य होवत भारी।।१।।
भाव मोल से खरीद लाये वह, धरी मन्दिर में खर्च भण्डारी।
पूजा करे माँगे फल मन भर, भेंट खावत सब मन्दिर पुजारी।।
आस्था आदर स्वार्थ से पूर्ण, श्रद्धा सन्तोष मन भक्ति बिसारी।
रामप्रकाश ये आप की राखत, आप ही माँगत होय भिखारी।।२।।

।। शुभ कर्म का अंग ।।

सुखिया मानव सुख को बाँटत, दुःखी सोई निज दुःख बतावे।
भ्रमित मानव भ्रम प्रचारित, भयभीत सो भय सतावे।।
ज्ञानी जन सत ज्ञान बतावत, ग्रह गोचर भय दूर नसावे।
जो कुछ जिन के पास में होवत, रामप्रकाश सोई बाँटत जावे।।१।।
पीपिलिका सम है शुभ कर्मन का पथ, तीर्थ व्रत यज्ञादिक ध्यावे।
मीन का माग है इष्ट उपासना, बिना आधार नही ध्यान लगावे।।
पक्षी को माग विवेक वैराग्य ते, पाँख ते उडते थाह को पावे।
रामप्रकाश यह सुख के दायक, ज्ञान के मार्ग तीन कहावे।।२।।
शुभ कर्म निष्काम कमावत, तन के दोष रु पाप मिटावे।
निष्काम उपासना इष्ट के साधत, ताप मिटा मन शान्ति उपावे।।
तन मन वाणी के सँयमित ते सब, साधन सहित सिद्ध ज्ञान द्रढावे।
रामप्रकाश भव तारक है विधि, जनम मरण को मूल मिटावे।।३।।
शुभकर्म है तारों सम उज्वल, उपासना चन्द्र प्रकाश समाना।
ब्रह्मज्ञान है सूर्य समान ही, निशातम दूर करे सब खाना।।
पोहन अज्ञान सामग्री नाशत, पावत आतम ठोर ठिकाना।
रामप्रकाश चँद्र तारा मिल कोटिक, नाश सके नही तम महाना।।४।।
जीवन में सतसँग सदा सुख, तृष्णा रहित सन्तोष को धारे।
सब जीवन पर दया रखिये, निज आतम रूप सदा सब प्यारे।।
निश्चय उपार्जन में अँश दान ही, पाप रु ताप मिटावन हारे।
रामप्रकाश परमार्थ पालन, जीवन धर्म को पोषण वारे।।५।।
चित्र चरित्र दोनों हो सुन्दर, भवन भावना भी सुन्दर होवे।
साधन साध्य रु साधना सुन्दर, साधक सात्विक सुन्दर जोवे।।
दृष्टि सुन्दर दृष्टिकोण भी सुन्दर, सुन्दर दृश्य भी हो मन मोवे।
रामप्रकाश होवे सब सुन्दर, सुन्दर लोक में निर्भय सोवे।।६।।
जीवन की विधि जान सको तब, सूई की भाति सदा रहिये।
दो टुकड़े पट सीवित है तब, एक विधान बने ते सहिये।।
कैंची की भाति से नाहि बनो कभी, काट के दूर करे दो बहिये।
रामप्रकाश यह जीवन की गति दुहु, सुयश प्राप्त सदा कहिये।।७।।

प्रेम भरे चक्षु है पूरण, श्रद्धा से शीश झुका बरिये।
सहयोग करे उपकार भरे वह, हाथ सेवा सत नित्य करिये।।
सन्मार्ग की राह चलते हो पद, गुरू धाम हरि के पद धरिये।
सत्य मृदता प्रसाद अचे वर, रामप्रकाश यों भव तरिये।।८।।
प्रतीक्षा करो नित शुभ समय भव, सन्त गुरू सज्जन घर आवे।
परीक्षा नित्य करो अपनी निज, योग्यता कर्म भूल भ्रम पावे।।
समीक्षा करो नित कर्तव्य कर्म मन, भाव विचार कैसे चित भावे।
रामप्रकाश नित आय व्यय संग, सोच समझ कर काम चलावे।।९।।
सत्य से प्रेम रु कर्म में दतचित, विपत्ति में धैर्य दिखावन हारे।
दम्भ का त्याग रु हो अनुशासित, यम रु नियम निभावन वारे।।
कुशल प्रशासन पालत पूरण, सब का सम्मान बढावत भारे।
मार्गदर्शक अनुभव पूरण, रामप्रकाश सुखी मतवारे।।१०।।
आयु घटे नित तृष्णा बढ़े नई, विधि को विधान सो निश्चल सदाई।
हृदय सत्यता पावनता रख, मुख प्रसन्नता रखियो भाई।।
मन है मस्त तो पाईये समस्त सुख, जीवन सुखद रहे लोक सुहाई।
रामप्रकाश यह नीति लखावत, सन्त गुरू जन खोल बताई।।११।।
मानव समाज में अग्रणीय श्रेष्ठता, जन्म से कभी ना मिली है भाई।
अपने शुभ कर धर्म से ही, कलात्मक गुण कर्म से मुख्य गनाई।।
एतरेय शूद्र वेद अध्यरन से, श्रेष्ठ एतरेय आचार्य उपनीषद् गाई।
रामप्रकाश ब्राह्मण पद को पाकर, प्रशिद्व हुए जग माँई।।१२।।
पक्के फल की पहिचान तीन कह, नम्र सरलता आजावे।
मीठियास बने रुचि कारक हो तब, रँग बाहर के सब बदलावे।।
ऐसे ही मानव सत्य वाणी मृदु, सात्विक मिठास सरलता आवे।
रामप्रकाश हो आतम विश्वासी, अपना जीवन सफल बनावे।।१३।।
चित रु वित स्थिर नही नित, चित चचल सँसार में जावे।
वित चँचल हर काम मे लागत, यह दोनो उतपात मचावे।।
सतसँग हरि के भजन बिच, जावत निश्चत ही कल्याण को पावे।
रामप्रकाश निष्काम करो शुभ, यह दोनो भव पार ले जावे।।१४।।
भौतिक भोग करे बहु मानव, राजस तन को पुष्ट वनावे।
तन पुष्टि ते मन रज पुष्ट हो, ताहि ते मन मँथन बढावे।।
सो परिवार के साथ मे आवत, कामाग्नि क्रोध विकार सँजावे।
रामप्रकाश मन सँयम साधन, धारण करे सो आनन्द पावे।।१५।।
अन्तस्थ भाव मे सत्य हो भाषित, असम्भवादि दोष रहित मृदु बाणी।
वही वाणी कहै शुचि सज्जन, काहू की होय ना कछु हाणी।।
निन्दा झूँठ कठोर रहित हो, नीति विहित हो हृदय से जाणी।
रामप्रकाश हो गूरु सन्त सन्मुख, भव की होवत निश्चय हाणी।।१६।।
हितकर लेख लिखो वह सुन्दर, निर्भय निज हस्ताक्षर होवे।

चिन्तन चित में वही करो नित, जो निर्भयता युत वाणी में पोवे।।
बोल वही नित बोलिये सोचिए, उतर सुनत प्रसन्नता जोवे।
रामप्रकाश सब प्रसन्न रहें नहीं, जीवित मेढक तोलते को वे।।१७।।
ग्रन्थ स्वाध्याय रु श्वासा सुमिरन, ज्ञान रक्षा हित तप सुधारो।
मनोरँजन हित कविता राघव, परहित में अभ्यास हमारो।।
ब्रह्मात्म का चिन्तन हरदम, जग प्रपँच सब दूर निवारो।
रामप्रकाश है अमूल्य जीवन, व्यर्थ समय न जाय जमारो।।१८।।

।। वाक और शिश्न इन्द्रिय प्रबलता ।।

वाक शिश्न दो कर्मैन्द्रिय प्रबल, जिभ्या ज्ञानैन्द्रिय बलवंत भारी।
सकल जगत को वश किया तब नाच रहे सब नर अरु नारी।।
इन को वश कर हरि भजन में, साधन सिद्ध हो ब्रह्म विचारी।
रामप्रकाश इन के वश जो होय रहे वह, लोक परलोक में जावत हारी।।१।।
वाक शिश्न रु जिभ्या तीन हि, जग में प्रबल देखे भारी।
इन को वश करि सिद्ध भये मुनि, अमर भये जग पूजत सारी।।
इन के वश जो होय रहे वह, जग अपयश भव भोगत क्यारी।
रामप्रकाश हरि गुरू कृपा वश, पद पाया शुक्रत ब्रह्मचारी।।२।।

।। ईश्वरीय वरदान ।।

ईश्वरीय वरदान है जिस किस को वह, तन मन धन से सम्पन होते।
सन्त रु सतगुरू वेद विद्वान में, अपूर्व शक्ति से पाप को खोते।।
वाणी प्रभाव सम्मोहन शक्ति से, संस्कार सब के मन बोते।
रामप्रकाश सुज्जन शुभ कारज, पूण्य कमावत निर्भय सोते।।१।।

।। तुलनात्मक विवेचन का अंग ।।

पूण्य कार्य में दान समान ही, उतम काम अहे कछु नाही।
मोह समान कोई शत्रु नहीं जग, पाप को बाप है लोभ महाही।।
सन्तोष समान नही धन कछु, सरल स्वभाव आभूषण आही।
रामप्रकाश है धन्य सु जीवन, भक्त सदा भगवत सराही।।१।।
मानव में पशुता का दर्शन करना, मन वाणी का दोष है भाई।
शुभ उपदेश देकर पशु को, मानव बनाना पूण्य दरशाई।।
याही ते दोष नही यह जानत, दुर्गुण दूर करो नित लाई।
रामप्रकाश सतगूरू बतावत, या सम पूण्य कृत और न काई।।२।।
प्रेम सराहीय मीरां को धन, प्रतीक्षा शिबरी समान बखानी।
भक्ति हनुमान समान करो, शिष्यत्व हो अर्जुन सुजानी।।
मित्रता निभाव कृष्ण समान हो, समर्पित भाव से कार्य अमानी।
रामप्रकाश निज जीवन मे, निश्छल भाव रखो उर जानी।।३।।
शान्ति समान कोई तप नही जग, सम सँतोष न सुख कहावे।
तृष्णा समान रोग नही जन, दया समान नही धर्म बतावे।।
क्रोध समान वैरी नही भाषत, अभिमान सम नही पतन भावे।
रामप्रकाश यह नारकीय नाटक, जहाँ होय तहिँ नर्क पठावे।।४।।

जो घट में सँतोष बसे घन, सब से अमीर उन ही को जानो।
जा चित माँहि जो शान्ति बसे वर, सोई सुखी सब ते जग मानो।।
जा उर माँहि दया बसे मन, सो पुरुषोत्तम मानव गानो।
रामप्रकाश जो है नीति को जीवन, ताही नरोतम इन्द्र ही ठानो।।५।।
बिना सुगन्ध के पुष्प निरादर, तृप्ति बिना प्राप्ति नही मानी।
बिना ध्येय के कर्म है निष्फल, उद्देश्य बिना पुरुषार्थ हानी।।
प्रसन्नता बिना जीवन है व्यर्थ, राम जपे बिन भव भर्मानी।
रामप्रकाश यह जब होवत, सुन्दर मान पावे सब प्रानी।।६।।

।। अभिव्यक्ति का अंग ।।

अभिव्यक्ति रहे इस लोक के भीतर, शुद्ध व्यवहार रहे जग माही।
अनुभूति ह्वै अन्तस्थ के भीतर, अनुभव ज्ञान की दशा बताही।।
दोनों साथ रही न रहे कब, रवि रजनी की भाति अथाही।
रामप्रकाश याही वत साधन साधना, लोक परलोक न सँग दिखाही।।१।।
अभिव्यक्ति जग भीतर के बिच, कहै लिखे कहि बात बतावे।
सो इस पार की बात कहै वह, वैखरी वाणी से कह दरशावे।।
अनुभूति साधन अन्तस्थ भीतर, अनुभव होवत कहि नहि पावे।
रामप्रकाश यह अजब गजब है पर, गूँगे का गुड़ स्वाद लखावे।।२।।
अभिव्यक्ति के कवि साधक है बहु, अनुभव ज्ञान बिना सरसाई।
केवल है व्यवहार में चातुर, साधन सिद्धि को पहुँचत नाई।।
अनुभूति कर सो अनुभव छानत, ऐसे सन्त विरले है जग माँई।
रामप्रकाश अभिव्यक्ति युतपूरण, अनुभूति कहै वह धन्य कहाई।।३।।

।। ईश्वर देव संत अजाति ।।

देवी रु देव हरि हर शक्ति रु, शारद नारद घनश्याम हमारे।
गणपति राम रु अन्य पूज्य वर, जाति नही जगदीश भी धारे।।
भक्त की जाति भी मानत मूढ है, जन जगदीश की जाति विचारे।
रामप्रकाश यह निश्चित रुप से, जाति गने वह नर्क सिधारे।।१।।
सन्त तजे कुल मात पिता जब, सतगुरु शरण में जाय जुहारे।
जाति रु पाँति से दूर भये वह, धर्म सनातन के रखवारे।।
पक्षपात रु नशे व्यशन सब, दूर किये जग प्रपँच सारे।
रामप्रकाश हरि शरण गही फिर, भ्रम के भूत को मूल उखारे।।३।।
जाति सुजाति कुजाति कहो, शर्मा या वर्मा सु दास बखानो।
कर्मा से पूत ना पौत्र विवाहनो, राम के नाम से भिक्षा को ला पानो।।
परिचय एक ही राम को दास हूँ, कर्म है हरि के यस को गवानो।
रामप्रकाश सतगुरु को सेवक हूँ, गुलाम हूँ सन्तन को चावनो।।४।।

।। विद्या का अंग ।।

विद्या यह देवत विनय भाव को, विनय मित्र बढावत भाई।
मित्र ते धन रु धन ते सुभ फल, गुरु सेवा फल ज्ञान को पाई।।

ज्ञान ते धर्म रु धर्म ते सुकर्म, ताहि ते साधन मोक्ष समाई।
रामप्रकाश अविद्या तज पावत, सत्य विद्या गुरु गम ते आई।।१।।
विनय भाव को विद्या ही देत है, विनय मित्र बढावत भाई।
मित्र ते धन रु धन ते सुभ फल, गुरु सेवाफल ज्ञान को पाई।।
ज्ञान ते धर्म रु धर्म ते सुकर्म, ताहि ते साधन मोक्ष समाई।
रामप्रकाश अविद्या तज पावत, सत्यविद्या गुरु गम ते आई।।२।।
मानव जीवन मे आवत है फिर, ब्रह्मचर्य विद्या नाहि उपावे।
गृहस्थ युवा में धन रु धर्म को, अर्जित सर्जित नाहि करावे।।
वानप्रस्थ में यशोमय कीर्ति, तीन अवस्था व्यर्थ बितावे।
रामप्रकाश वह वृद्ध के होवत, वृथा सन्यास को क्यों अपनावे।।३।।
धर्म की रक्षा सत्य ते होवत, सत्य की रक्षा विद्या ते होई।
विद्या की रक्षा अभ्यास से होवत, अभ्यास होवत पावन जोई।।
सौंदर्य की रक्षा स्वच्छता ते होवत, कुल की रक्षा सदाचार ते सँजोई।
रामप्रकाश सफल हो जीवन, हरि भक्ति सतसँग हो दोई।।४।।
विद्या जोभन जाति प्रभूता धन, रूप रु कुल के भाव बिकाऊ।
शीश समर्पित किये ते ही पावत, साच रु झूठ के भाव सुझाऊ।।
एक है झूठ रु काचे कण से, एक है सत्य रु अमर टिकाऊ।
रामप्रकाश है सतगुरू ईश्वर से, भक्त खरीद करे मनभाऊ।।५।।
यात्रा में ज्ञान का अनुभव सहायक, घर सहायक पतिव्रत नारी।
रोगी की सहायक औषधि पथ्य है, धैर्य सहायक कारज सारी।।
धर्म सहायक जीवन त्रिकाल में, मृत्यु में सहाय परलोक सुधारी।
रामप्रकाश है सतगुरू सहायक, श्रद्धा विश्वास के साथ गुजारी।।६।।
जिन के उर है विद्या रु उद्यम, शक्तिशाली वह सम्पति सारी।
निर्बुद्धि पास मे ईर्षा राम रु द्वैष है, युक्ति रु मुक्ति से वञ्चित भारी।।
बुद्धि बल एक खरगोस महा बल, हाथी मदमस्त को ताल में डारी।
रामप्रकाश पढो सब सज्जन, विद्या विविध अज्ञान को हारी।।७।।
देश विदेश में विद्या ही मित्र है, घर में मित्र पत्नी सुखदाई।
रुग्णावस्था में पथ्य मित्र है, वैद्य औषधि सहायक भाई।।
सतगुरू है जीवन मे मित्र, लोक परलोक सहायक थाई।
रामप्रकाश जो पूण्य कर्म अर्जित, अँत समय सहायक गाई।।८।।
आयुषा रोगी को अपरिहार्य देवत, वानर हाथ कपूर सुँघावे।
सीतला वाहन पे वनात धरे अरु, वृद्ध विवाह में वधु दिँलावे।।
मूढ को वेद रु पशु पँचामृत, शठ को राज सिंहासन गावे।
रामप्रकाश अनुबन्ध बिना किम, मानव को ज्यों वेदान्त पढावे।।९।।
शास्त्र अनेक विद्या बहु भान्तिन, मत मतान्तर विविध है भारी।
छोटे से मानव जीवन में, पठन होय सके नही सारी।।
हँस विवेक के मानक भाँति से, सार ग्रहण पय पान पयाहारी।
जल असार का त्याग करो नित, रामप्रकाश है तिन की बलिहारी।।१०।।

सुख चाहत है नित तन मन से धन, कर्म परिश्रम ना नेक उठाई।
उन के भाग्य में विद्या यश रु, मिले ना धन कदापि जीवन माई।।
विद्या रु धन कमावन हेतु हे, मानव क्षण समय मत खोय गमाई।
रामप्रकाश नहि तप किये बिन, विद्या रु यश नही पाय भलाई।।११।।

।। मांसाहार का अंग ।।

अपनी जाति का माँस न खावत, कुता कुते का कभी ना खावे।
बन्दर हो या कौआ पक्षी, सिंह का माँस सिंह ना खावे।।
माँसाहारी कोई घास न खावत, शाकहारी कभी माँस न खावे।
रामप्रकाश मानव हा दानव, जीव जन्तु सब कुछ को खावे।।१।।
जीभ से पानी लप लप पीवत, दान्त बड़े दोय आगिल कानी।
आँख चमकीली तप्र लगे बहु, माँसाहारी की यही निशानी।।
मानव के यह लक्षण नाहिन, माँस भक्षण यह है मनमानी।
रामप्रकाश यह तामसी भोजन, माँस में है भव पूरण हानी।।२।।
शाकाहारी पशु माँस ना खावत, माँसाहारी कभी घास न खावे।
घास अनेक तमाखू के साथ हो, शाकाहारी जु तमाखू ना पावे।।
दूध दही घृत दारू मधि वह, पशु नही मद्यपान करावे।
रामप्रकाश भक्ष्याभक्ष्य करे तब, मानव सोच विचार न लावे।।३।।
घास को खावत भूख मिटावत, पत्थर भक्ष करे जन्तु दावे।
सर्पादिक पावत पवन प्रबल को, अनड़ आदि आकाश रहावे।।
फल फूल खाय के जीवन पावत, काम समय पर ताहि सतावे।
रामप्रकाश जो गरिष्ठ पचावत, ताहि को कैसे राम बचावे।।४।।
कण्टक चोर कठोर हृदय तन, मन मे भरे दोष विकारा।
चोरी जुआ परनारी भजे, नित जीव हिंसा मद पान आचारा।।
वैश्यावृति इति व्यशन भरे चित, कुकर्म पाप सँताप आहारा।
रामप्रकाश विकर्म भरा जीवन, भवसागर का कीट विचारा।।५।।
तन मन वाणी के दोष भरे बहु, व्यशन सात में जीव भ्रमावे।
नशे करे घन द्वैष भरा चित, मत्सर अज्ञान का पामर गावे।।
सन्त निन्दा रत विकृत मानस, जीवित नरक निशान कहावे।
नारकीय जीव नशे रत मस्त में, रामप्रकाश ये नरक सिधावे।।६।।

।। अद्भुत ईश्वरीय सृष्टि का अंग ।।

ईश्वरीय सृष्टि अद्भुत अति सुन्दर, अजीब वस्तु खजाने भारी।
यहाँ हजारों यात्री आते जाते, कोई भी नही है चोकीदारी।।
तीली भी नही ले जाते कोई, आवागमन व्यवस्था जारी।
रामप्रकाश यह सृष्टि चक्र है, तीनो काल त्रिगुण की बारी।।१।।
प्रकृति ईश्वर की सर्वोच्च शक्ति यह, गुण दोष मय सब है भारी।
ज्ञानी की द्रष्टि से देखत ही यह, सर्व ब्रह्म मय ब्रह्म विचारी।।
वैराग्य की द्रष्टि असार कहै अरु, विषयी कहत है सँसारी।

रामप्रकाश सँसृति मय माया, यथाद्रष्ठि तथा सृष्टी है भारी ।।२।।
अद्‌भुत सृष्टि ईश्वरीय महिमा है, अनन्त जीव चौखान अपारा।
भिन्नाभिन्न जाति चौरासी, सब के होते चेहरे प्रकारा ।।
रँग रूप अजूबे नाना विधी के सब, ज्ञानीजन नित वेद पुकारा।
रामप्रकाश आश्चर्य चकित है यह, नमो करें हम वारम्वारा ।।३।।
धन धन है यह महिमा अनोखी, कला कारीगर अजब विचारा।
नाना इन्द्रिय झरोखे रचकर, विविध वस्तु रचे भोग अहारा ।।
विभिन्न स्वाद षट् रस की महिमा, रँग रूप भी रचे अपारा।
रामप्रकाश हरि के गुण गावत, वारम्वार प्रणाम हमारा ।।४।।
वाह रचना की कैसी महिमा, विभिन्न वृक्ष फल फूल अपारा।
जल भूमि वायु नभ तेजस, यह मिले तब अजब दीदारा ।।
प्रपँच सृष्टि चौदह लोक की, अनन्त कोटि त्रिकाल विचारा।
रामप्रकाश त्रिगुण मे निर्गुण, अनन्त गुण का भर्या भण्डारा ।।५।।
एक वृक्ष में फूल काँटे है, गँन्ध सुगन्ध फल विभिन्न प्रकारा।
फल धारी रस कस फूल विहीने, कुछ फूल रसस्वाद सुधारा ।।
सृष्टि की रचना अजब गजब की, जहाँ देखो वहीँ विभिन्न प्रकारा।
रामप्रकाश छाया है सब में, सब के सामिल सब से न्यारा ।।६।।
अजब गजब है ईश्वर का खेल यह, वही लिखे रु वही मिटावे।
भटकाता है वही फिर, वोही सत्य का राह दिखावे ।।
वो ही है उलझाता फिर, वोही शुद्ध मति दे सुलझावे।
रामप्रकाश समय कठिनता पर, राह दिखावे साथ निभावे ।।७।।
अण्डे बिना है प्राकृतिक उत्पति, पक्षी हुमाऊ परोपकारी भावे।
जल बिना मच्छी नही रहत है, स्वाति बूँद मोती उपजावे ।।
प्राण एक दोय मुख धारण, पक्षी भिरण्ड तन एक रहावे।
रामप्रकाश यह अजब गजब है, ईश्वरीय महिमा अनूपम गावे ।।८।।
ईश्वर के सँसार समुद्र में, किसी न किसी अपेक्षा माँई।
मुझ से श्रेष्ठ बहुत हुवे जन, वर्तित है अरु भविष्य में आई ।।
महानुभाव श्रेष्ठ श्रीमान् को, हृदय की गहराई मे लाई।
रामप्रकाश प्रणाम करे नित, हम रहते जिन की परछाँई ।।९।।
सृष्टि मे रचनाऐं बहुत सरस अति, सुन्दर मन लुभावन वारी।
तरासनहार तरास रहे जन, खुबी गुण गण पावत भारी ।।
तलाशनहार तलाश रहे कुछ, कमीयाँ खूब निहारत सारी।
रामप्रकाश नर नारायण में यह, नजर निहाल की मै बलिहारी ।।१०।।
यह कोई आवश्यक नही है भव मे, ईश्वरीय सृष्टि है विचित्र सारी।
बुरे कर्म के कारण दुःख ही हो, यह आवश्यक नही है त्यारी ।।
कई बार अच्छे कर्म के कारण भी, कीमत चुकानी पड़ती भारी।
अनन्त जन्म के कर्म है साथ में, रामप्रकाश भगवत बलिहारी ।।११।।
मानव या हो जीव चराचर, सब ही पूतली नाचनहारी।

चतुर नटवर सब ही नचावत, परा अपरा के रूप को धारी।।
अदृश्य अद्रष्ठ अधिष्ठान के रूपक, त्रिगुण त्रिपूटी को ठीक सँवारी।
रामप्रकाश है नट सर्वोत्तम, आप ना नाचत नचावत सारी।।१२।।
कस्तूरी काली गुण पूरण, बक उज्वल गुण हीन बनाया।
विष्णु कृष्ण राम है श्यामल, सर्व गुण सम्पन्न ईश कहाया।।
हँस बाहिर भीतर उज्जवल, कौआ कालिख सब भाति बताया।
रामप्रकाश पृकृति गुण अवगुण, मिल कर के सँसार कहाया।।१३।।
कामधेनु खरिया दिन रात रु, पण्डित मूरख क्षर अक्षर आई।
कर्मनाशा रु गँगा निर्मल, हिंसा अहिंसा दोय कहाई।।
पाप रु पूण्य धनी रु निर्धन, ब्राह्मण विरुद्ध में जान कसाई।
रामप्रकाश द्वन्दमय सृष्टि, सँसृति रूप में अजब रचाई।।१४।।

।। अटल निश्चय/विश्वास को अंग ।।

कीड़ी को कण रु हाथी को मण भर, देवत समय पर साँझ सवरे।
अजगर भूमि पर लेट रहा, भक्ष्य प्रयास वो नाहि करे।।
पक्षी भी नाहि कमावत है कछु, सब का ईश्वर जो पेट भरे।
रामप्रकाश निश्चिन्त रहो नित, पेट दियो वही लाय धरे।।१।।
विश्व के प्रतिपालक ईश्वर, सबको देवत समय पर भारी।
प्रारब्धानुसार लिखा वह पावत, टँक भी कम विशेष न होवत जारी।।
बिना न्यायालय ना बाबू दफ्तर, सबके हिसाब होवत है भारी।
रामप्रकाश है अजीब अदालत, कोई सिफारिश लगे नही कारी।।२।।
काहू को भरोसो देवी अरु देवता को, काहू को भरोसो आन बान काम को।
काहू को भरोसो पूत परिवार कुल, काहू को भरोसो आप गाम को।।
काहू को भरोसो राजा नेता साहू जन, काहू को है परिजन नाम को।
राघवप्रसाद भरोसे एक राम नाम,और न का नाम सौं तो नहीं मम काम को।।३।।
काहू को भरोसो एक व्रत पूजा यज्ञ को है, काहू को भरोसो उपवास धाम को।
काहू को भरोसो है भोमिया रु भेरव को, काहू को भरोसो परिजन वाम को।।
काहू को है दुकान मकान वास, काहू को भरोसो है सेठ की छदाम को।
राघवप्रसाद भरोसे एक राम नाम, और न का नाम सौं तो नहीं मम काम को।।४।।
कोई राजी रहे नौकरी छोकरी में, कोई राजी रह सुता सुत नारी में।
कोई राजी रहे रोकड़ी धोकड़ी मे, कोई राजी रहे बातबतारी में।।
कोई राजी रहे खेत खड़ावण, कोई राजी रह माँगणबारी में।
रामप्रकाश सब आपने काम ले, सन्त राजी हरि द्वार कारी में।।५।।
धूत नही अवधूत सही हम, राव नही रँक कोऊ ना मानो।
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य ना शूद्र, राम के नाम को हुँ मस्त दीवानो।।
सतगुरु सेवक राम को दास हूँ, वैष्णव धर्म को परम सयानो।
रामप्रकाश हरि गुण गायक और दायक, ब्रह्म स्वरूप में मैं मस्तानो।।६।।
पीर कहो या फकीर कहो भल, साधु या सन्त चाहे कुछ मानो।
निन्दा करो या स्तुति करो वर, लक्ष्मी आय रु जाय तो माल बिरानो।।

आज मरो कि युगान्तर आयु हो, नाम दिवान रु हूँ मस्तानो।
रामप्रकाश हूँ सतगुरु सेवक, हरि समर्पित मूल रहानो।।७।।
एक ही आस भरोस रखो मन, काहे को चिन्तित है बहु तेरो।
गर्भ मे रक्षा करी वही पालक, दन्त बिन जनम ते दूध दे गेरो।।
पेट दियो वह आप भरण को, प्रारब्ध वश है ज्ञान से हेरो।
रामप्रकाश हो निश्चिन्त शरणागत, समर्थ समर्पित राखिये डेरो।।८।।
राम रखे तिहि हाल रहूँ तत, जहाँ रखे तहाँ रहूँ दिन राती।
जैसा दिलावत भोग लगावत, जहाँ कहे वहीं सतसँग बाती।।
जैसा बोलावत वैसे ही बोलन, कथा कीर्तन उनकी है थाती।
रामप्रकाश शरणागत आयके, निशिदिन बाँच हूँ उनकी पाती।।९।।
जीवन में है अवलम्ब नही कछु, राम आधार है वही भरोसो।
सतगुरु सुमिरण राम कह्यो पुनि, साधन पथ्य सो दियो खरोसो।।
आन उपासना दूर धरी मन, सतगुरू शरण में काम करोसो।
रामप्रकाश तन मन हो निश्चिन्त, साँसारिक सोच को दूर हरोसो।।१०।।
एक सहायक सतगूरू सामर्थ, देव रु दानव कहा बिगारे।
नौ ग्रह गोचर भूत रू पितर, सभी सहायक होय हमारे।।
यद्यपि जो विपरीत होवे तुच्छ, श्री हरि प्रबल आप सुधारे।
रामप्रकाश जो प्रारब्ध लिखा वह, राम जी रक्षक आप ही टारे।।११।।
ज्ञानी का विश्वास आश एक, प्रारब्ध कर्म लिखा मिल जायेगा।
भक्त को विश्वास एक ही भगवान को, वह प्रभु अपने आप ले आयेगा।।
जिन को विश्वास नही किसी पर, वह निशिदिन भाग कमायेगा।
रामप्रकाश सब अपनी बुद्धि से, कर्म लिखा ही वह खायेगा।।१२।।
दान्त नही थे तब दूध दियो थन, दान्त दिये वह अन्न ही देगो।
पेट दियो वह आप भरणहार, प्रारब्ध अनुसार वही तो लेगो।।
देह दिन्ही वही प्रतिपालक, काहे की चिन्ता क्यों करेगो।
रामप्रकाश है राम भरोस में, शरण गये की लाज रखेगो।।१३।।
उपाय अनेक किये देह कारण, औषधि सात विधि बतलावे।
यन्त्र मन्त्र तन्त्र किये बहु, जप तप देव पूजे बहु भावे।।
देश विदेश रु साधन बहुत से, शासना भी सही पर सास न रहावे।
रामप्रकाश अब एक सहायक, राम शरण वही टेक रखावे।।१४।।
अमर जाप जपे हित कारण, नाना देवी रु देव मनाये।
भैरव भूत जगाये नेक ही, श्मशान जगे तप तेज बढाये।।
साधन और अनेक किये पर, श्वास सहायक कोई न आये।
रामप्रकाश अब एक सहायक, सतगुरू शरण ही टेक निभाये।।१५।।
ऋद्धि रु सिद्धि भी हाजिर है वर, नाना वरद कर देव मनाये।
राज महाराज को वश किये अरु, औषधि उपाय अनेक बनाये।।
कष्ट से जप तप नियम किये बहु, निशिदिन जाग रहे हरषाये।

रामप्रकाश की शरण बिना अब, श्वास गति नही आन उपाये।।१६।।
या तन खातिर कड़वी औषधीय, खाय किये मुख स्वाद गमाये।
दण्डवत नमन किये बहु मन्दिर, नाना देवी रु देव मनाये।।
मन्त्र मन्त्री कर तन्त्र साधन, अन्त समय कोई काम न आये।
रामप्रकाश है श्वास में सोहम्, वही सहायक साथ निभाये।।१७।।
योग योगासन प्राण का रोधन, यम रु नियम किये बहु सारे।
ज्ञान रु ध्यान किये तप तापन, शैल बसे वन भ्रमण भारे।।
लोक रिझावन भीड़ करी सँग, शास्त्र पढे बहु ग्रन्थ पिटारे।
रामप्रकाश ना देह रहे यह, अन्त समय हरि एक सहारे।।१८।।
ब्रह्मा रु विष्णु अनेक गये शिव, राज महाराज चक्रवर्ती सारे।
जीत रहे जग भूतल भीतर, नाम रु किये कर्म नेक गुजारे।।
जप तप साधन सिद्ध किये बहु, प्राण रक्षा हित साधन भारे।
रामप्रकाश रहे नही अन्तिम, नाम रु काम को लोक सम्भारे।।१९।।
जाति न पान्ति समाज नही कछु, लाग लगेज ना बन्धन भारो।
देव न दूत न राज खेड़ा बहु, वृति आकाश सदा मतवारो।।
एक भरोस हरि गुरू सामर्थ, सब ही जग है पोषण हारो।
रामप्रकाश हरि गुरू चिन्तित, योगक्षेम वही सेव हमारो।।२०।।
हाथी जहाँ बह जाय बहाव मे, भारी अभिमान में सो घबरावे।
पानी से हेत भरोस रखे वह, उलटे जल मे तेरत जावे।।
मीन को भाव रहे जल भीतर, बिछुरत प्राण को तलफ गमावे।
रामप्रकाश जो एक भरोस में, राम की शरण सदा सुख पावे।।२१।।
जाहि का हाथ गहै जन समर्थ, डूबन देत न भवसागर माँई।
काठ को जब जल है सींचत, ताहि को जल डुबावत नाँई।।
सूखी काष्ठ गही कर वामन, कूँपल के बिन गयी ब्रह्मण्ड ताँई।
रामप्रकाश की बाँह गही गुरू, मुक्त करे यह निश्चय आई।।२२।।

।। सनातन सिद्धान्त का अंग ।।

परम सनातन धर्म स्वरूप को, जान सको तो जानलो भाई।
आदि अनादि से ओम रु ईश्वर, एक उपासना मानत आई।।
जनम रु मरण अवतार वरिष्ठता, धर्म दशाँग को धारण ध्याई।
रामप्रकाश स्वरूप सनातन, सन्त रु शास्त्र खोल बताई।।१।।
सनातन धर्म की आयु युगान्तर, सँस्थापक एक व्यक्ति ना कोई।
वेद स्वाध्याय रु ग्रन्थ असँख्य, नीति रीति सैद्धान्तिक होई।।
ईश्वरीय उपासना योगिक साँख्य रु, वेदान्त मत वरिष्ठता जोई।
रामप्रकाश सनातन रूप को, जीवन कला समझ ले ओई।।२।।
सत्य सदा सत्य ही रहत है, व्यवहार या परमार्थ सारे।

असत्य का अस्तित्व नही पर, सत्य का कभी अभाव न धारे ।।
त्रिकाल रु त्रयलोक के भीतर, घटत बढत नही स्थिर विचारे ।
रामप्रकाश त्रिकाल अबाधित, सत्य स्वरूप सनातन प्यारे ।।३।।
निष्प्रह निष्काम अनीह सदा, हर्ष न शोक प्रपँच न धारा ।
सत चित आनन्द स्वरूप का निश्चय, त्रिगुण माया रहित वीचारा ।।
अपनी मौज धरा पर विचरण, सनातन धर्म स्वरूप हमारा ।
रामप्रकाश अगम से आगमन, निर्गुण से सर्गुण देह धारा ।।४।।
वैदिक गरिमा साहित्य अनादि, श्रुति स्मृति योग हमारे ।
अक्षर ओम उच्चारण प्रथम, व्याकरण बोल की लिपि सुधारे ।।
मात पिता पुनर्जन्म तीर्थ, सन्त अध्यात्म जीवन वारे ।
रामप्रकाश सिद्धान्त सनातन, विरले जानत आर्य हमारे ।।५।।

।। पुरुषार्थ का अंग ।।

धन कहता तुम जमा करो, कैलेण्डर कहता पलट दुराओ ।
समय कहता पालन करो, भविष्य कहता मुझे जीताओ ।।
सुन्दरता कहती प्यार करो, प्रभु कहै विश्वास दिखाओ ।
रामप्रकाश सब अपनी कहते, पुरुषार्थ करके शुभ कमाओ ।।१।।
कर्म प्रभाव है जग में प्रकट, व्यास भिलनी सुत विप्र कहाये ।
वशिष्ठ पाराशर बालमीकि सो, जन्म जाति नही कर्म कमाये ।।
पिता वही ऋषि भये उतम, सत्यकाम जाबालि सुहाये ।
रामप्रकाश भये कर्म से उतम, जनम के कारण नाहि बताये ।।२।।
दूध दही घृत छाछ रु माखन, एक ही कुल में होवत सारे ।
कीमत सब की होवत भिन्न ही, सब के गुण होवत न्यारे ।।
ऐसे ही करम कला गुण सब, भिन्नता से मानव पावत भारे ।
रामप्रकाश नही जनम को कारण, पुरुषार्थ फल पावत प्यारे ।।३।।
परम पुरुषार्थ पायक सन्त रु, सतगुरू को जो शीश नमावे ।
नमन करे वह एक जगह पर, ताही को शीश अनेक झुकावे ।।
नीति मरियाद निभाय श्रद्धा युत, सतगुरू सन्त से हेत लगावे ।
रामप्रकाश वह पूज्य बने नित, ज्ञान रु ध्यान से मोक्ष को पावे ।।४।।
साचे लोह के चकमक सँगत, पत्थरी जब तक रगड़ न पावे ।
माचिस रोगन से जब तक लो, तुलिका रगड़ न जोत जगावे ।।
ऐसे ही साधन युत शिष्य हो, ब्रह्मनिष्ठ गुरु सँग हेत लगावे ।
रामप्रकाश पावे पद पूरण, परम पुरुषार्थ सफल बनावे ।।५।।
चकमक सतगुरू माचिस तत्वज्ञ, ब्रह्मज्ञानी नैष्ठिक ब्रह्मचारी ।
पत्थरी तूली शिष्य श्रद्धावन्त, लग्नस्थ होवत प्रेम अचारी ।।
रूई रगड़क रोशन साधन, विवेक वैराग्य ज्योति विचारी ।
परम परमार्थ तब ही जागत, रामप्रकाश जले कर्म सँसारी ।।६।।

देह के दीप में मन की बाती कर, प्रेम को तेल भरो बन्धु प्यारे।
तत्व विचार से ज्योति जगा कर, नियम की ओट में धार प्यारे।।
साधन हाथ उपाय से पूरण, हृदय ग्रन्थि को खोल दे प्यारे।
रामप्रकाश का परम पदार्थ, पाय के भव को टाल प्यारे।।७।।
मन्त्र जपे बिन फल नही पावत, दवा लिये बिन रोग न जावे।
सनातन ग्रन्थ पढे बिन योंही, जन मानस सब शौर मचावे।।
पक्ष विपक्ष को जाने बिना कोई, खण्डन मण्डन कैसे करावे।
रामप्रकाश कोई वृक्ष बोये बिना, फल की चाहना वृथा कहावे।।८।।
सयय कथन सँकोच नही कछु, शपथ प्रमाण नही आवश्यक भाहि।
नदी प्रवाह सँचालन हेतु में, पथ प्रदर्शन जरुरत नाहि।।
बढते जमाने रु दृढ मानस में, मँजिल हेतु ना रथ सहाहि।
रामप्रकाश भाग्य पुरुषार्थ, नित्य सफल सत होवत जाहि।।९।।

।। काल आयु कब ।।

शुद्धता अहार विहार की नित हो, सात्विक भोजन जो नित खावे।
मूआँ बिछाय जीवित ओढत, सूर्य चन्द्र स्वर साधन लावे।।
सतसँग सन्तन सुमिरण साधन, शुद्ध विचार हृदय महि लावे।
रामप्रकाश प्रारब्ध सँयोग ते, काल आयु समय पर आवे।।१।।
अहार विहार अशुद्धता कारण, सतसँग सन्त से दूर रहावे।
अशुद्ध विचार दोषों मय जीवन, नशे व्यशन महि आयु बितावे।।
सूर्य चन्द्र की गति नहि जानत, मूँवा को ओढत जीवित बिछावे।
रामप्रकाश अशुद्ध क्रिया वश, ताहि प्रारब्ध अचानक काल हि आवे।।२।।

।। मर्यादा/संस्कार का अंग।।

गुरू बिन ज्ञान विवेक नही कछु, शील सँतोष रति नही आवे।
सद्‌गुण लोक साकेत न पावत, मानवता के गुण नेक न पावे।।
रखो मरियाद करो शुभ सेव रु, तन मन धन की भेंट धरावे।
रामप्रकाश वाणी कर पावन, महिमा मण्डन कर वेद भनावे।।१।।
माता पिता की आज्ञा वृत पालन, गुरू जन की वर आशिश लीजे।
अतिथि अभ्यागत को सम्मान हो, धनी पुरुष को सम्मान ही दीजे।।
महानुभाव इतने वर जानहूँ, ताहि ते वाद विवाद ना कीजे।
रामप्रकाश यह नीति बखानत, आदर मान प्रणाम कहीजे।।२।।
वृद्ध गुरू जन पालत जा हित, ताहि कदाचित कष्ट ना देवे।
जैसे जल सींचत जा वृक्ष के हित, ता लकड़ी को जल ही सेवे।।
आपनो सिंचित जानत है वह, ताहि को नही जल डूबन खेवे।
रामप्रकाश सभी सुख होवत, वृद्ध मरियाद सदा चित लेवे।।३।।
शिष्ठ पुरुषों के गुण का ग्रहण, प्रकट करे शुभ यश को गावें।
दुर्गुण दिशा पर ध्यान न दीजिय, पूण्य क्षीण होवे दुःख पावें।।
शिष्ठ गुणन का सँग्रह करें नित, मरियाद सहित नित नीति निभावे।
रामप्रकाश यह नीति पुकारत, वाद किये सब पूण्य नशावे।।४।।

भूमि श्मशान के साथ में जावत, अर्थी के साथ चले जब जावे।
शोक सँदेश में बैठे रहे तब, मन्दिर दर्शन को जब आवे।।
कथा कीर्तन सतसँग में बैठत, हँसो कभी मत इतने ठाँ पावे।
रामप्रकाश मरियाद रखो मन, नीति की रीति सदा मन भावे।।५।।
नीम बेर रु नीम्बू करेला, इमली सेव सब स्वाद बतावे।
जल कूए से एक बराबर, एक क्यारी जल धार बहावे।।
बीज के कारण स्वाद विभिन्नता, जल का कोई नही दोष कहावे।
रामप्रकाश शिक्षा नही दोषित, सँस्कार कुल सँग दोष उपावे।।६।।
रावण का बन्धु हो लँका में रहा, सात्विक सँस्कार को नाहि बिसारे।
रामराज्य अयोध्या में रह कर, कैकेयी मथुरा स्वभाव न धारे।।
पात्र सभी रामायण के है, सँस्कार सोच बिगाड़ सुधारे।
सोच विचार आधारित है यह, रामप्रकाश प्रारब्धवश सारे।।७।।
पिता प्रदत शिक्षा सँस्कार रु, सतगुरू प्रदत दीक्षा बतावे।
डाँट फटकार रु मार सूनार की, भूषण बने शुभ नाम कमावे।।
छूट जावे जो सहन किये बिन, विकृत होत ही मूल्य ना पावे।
रामप्रकाश यह नीति पुकारत, सन्त रु सज्जन खूब सरावे।।८।।
जो भोजन अपने हित ठानत, काम सुख हित नारि को माने।
आजीविका हेतु पढे विद्या गुण, ताहि को जीवन निष्फल जाने।।
पति पत्नि सँतुष्ठ रहे जहाँ, वही घर है स्वर्ग छाने।
रामप्रकाश सन्त शास्त्र कथे यह, उतम नीति की रीति बखाने।।९।।
सुन्दर श्रेष्ठ हो व्यक्ति के सुकर्म, सत्य विचार हृदय बिच लावे।
श्रेष्ठ वाणी हो मृदु सत्य वृत, सुन्दर हो व्यवहार सुहावे।।
सँस्कार और चरित्र हो सून्दर, जीवन मे जिस के यह आवे।
रामप्रकाश पूज्य पद ताहित, वही पुरुषोत्तम आप कहावे।।१०।।
जीवन में हर रिश्तों में पल, अमृत भरा रस बरस सदा।
शर्त यही इक भारी पड़ती, शररार्त करो बचपन मदा।।
शाजिश धोखा मन मेलापन, कभी करो मत रखो अदा।
रामप्रकाश यह जीवन नश्वर, सँभल रहो मिल रहो तदा।।११।।
जिन से हो तन मन प्रसन्न रु, लोक हितार्थ कार्य करो।
लोक तारीफ करे न करे पर, यह चित माहि ना नेक धरो।।
पृकृति रु हरि में भी अगणित ही, दोषारोपण लोक बहु रूप परो।
रामप्रकाश निष्काम रहो नित, हरि शरणागत काहे डरो।।१२।।
मानव के जीवन मे शुभ, शिक्षा तन रु बुद्धि सुधारे।
सतगुरू दीक्षा से मन पावन, भाव स्वभाव होवे शुभ सारे।।
मात रु तात ते जनम धरे सब, मानव जनम द्विज को धारे।
रामप्रकाश तन मन मति पावन, तब ही जीवन हो सुखवारे।।१३।।
प्रजा के अँश का नेता नृप, शिष्य के अँश का गुरू जन होवे।
पुत्र करे कर्म पिता अँश पावत, नीति लखे जन चेतन जोवे।।

पाप रु पूण्य के भागी बने विधि, अँश छठ्टा फल गुरू जन पोवे।
रामप्रकाश सँस्कार देवो शुभ, पाप रु ताप पूण्य सब खोवे।।१४।।
यह आपना यह बिराना है, यही विचार सँकुचित चित धारे।
सुशील विचार के सज्जन मानत, वसुधा कुटुम्ब समान हमारे।।
उदार चरित सदा गुणवान है, नित पर उपकार सधावत सारे।
रामप्रकाश ज्ञानुवृति सज्जन, सभी भूमि मे विचरण हारे।।१५।।
अमर्यादित जिन के भ्रात पिता गुरू, तिनके पूत रु शिष्य क्या होवे।
पूर्वज जिनके खड़े पैशाबित, पीढि के चालत मूत भिगोवे।।
पूर्वज द्वैष रु ईर्षा वश तब, पीढि में शान्ति कहो कहाँ जोवे।
पूर्वज स्वभाव रहे अँश व्यापक, रामप्रकाश मिटे नही ओवे।।१६।।
आत्मज्ञान उदय नही निश्चय, कर्म रु धर्म से दूर रहावे।
शास्त्र श्रुति रटी मन मौदित, साधन रहित हो बात बनावे।।
लोक लुभावन चातुरता वशि, मूढ वाचाल को पन्थ बढावे।
रामप्रकाश मरियाद श्रद्धा बिन, सिद्ध बने जन लोक पुजावे।।१७।।
जिस रास्ते से पूर्वज जाते है, उन की याद नही भुलायेगी।
सँस्कार उन्ही के पलते है उर, भली बुरी यादे ही रह जायेगी।।
गुरू लघुशँका खड़े करे तो, शिष्य चलती धार बहायेगी।
रामप्रकाश यह नीति बखानत, यशस्वी क्रिया बनायेगी।।१८।।
जग में सब सँग रहिये नित ही, दाँत बतीस मे ज्यों जीभ अचारी।
रहती सब के टच के भीतर, दबती नही रसीली प्यारी।।
ऐसे रहो सभी से मिल कर, पुरुषार्थ सँग सत भाव विचारी।
रामप्रकाश सब सन्त पुकारत, रहो निर्द्वन्द सदा हितकारी।।१९।।
आँख में शरम रु जेब को गरम रख, जीभ को नरम रु दिल मे दयालता।
तन को चँगा रु मस्तिष्क ठण्डा हो, क्रोध में सँयम हो धैर्य लगामता।।
होठ मे मुस्कराहट व्यवहार हो उज्वल, स्वस्थ रु व्यस्त मस्त रहावता।
रामप्रकाश यह स्वर्ग लक्षण, जीवन आनन्द मय बितावता।।२०।।

।। घमण्ड का अंग ।।

तुफान ज्यादा होवत ही बहु, कश्तियाँ डूबती देखी प्यारी।
अहम की हो बाहुल्यता जहाँ, हस्तीयाँ मिटती बहु सार भारी।।
धन बाहु बल अहँ फूले जहाँ, मस्तीयाँ जीवन मे खूब धारी।
रामप्रकाश बिन मोल से जावत, जीवन की सस्तीयाँ मूल सारी।।१।।
सँसार विजेता अहँकार से हारत, सँस्कार से जीतत जीवन बाजी।
भावना से कोई द्वार न पावत, मन मिले हरिद्वार में राजी ।।
मानवता से हर मान ही पावत, हरि भजन ते हर साधन साजी।
रामप्रकाश सुनो सब सज्जन, गुण बिना नर बाजत पाजी।।२।।
कुल मद वारुणी पान करी बहु, जाति पिशाच लग्यो अति भारी।
गौत्र वृश्चिक रु नाम कुग्रह में, वातिज रोग काषाय न कारी।।
पद गरिमा को राहु रु केतु है, षट भ्रम मे भये साधु भिखारी।

रामप्रकाश रह्यो सतगुरू ओट में, दूर भयो जग मोह विडारी।।३।।
कुल की वारुणी मिली नही बाल्य में, सतगुरू शरण में आयु हमारी।
सतगुरू मन्त्र प्रभाव रह्यो घट भीतर, वातिज रोग साधन से टारी।।
सन्तन के संग नहीं कुग्रह चोट में, सतसंग भेषज सें भव टारी।
रामप्रकाश रह्यो सतगुरू ओट में, बाल योगी तत ब्रह्म विचारी।।४।।
ग्रह ग्रहीत कुल वात लगी मति, वृश्चिक काषाय को विष है भारी।
पद प्रभाव महन्त की वारुणी पी, भेषज कहा कर सुधा विचारी।।
अमृत होय हलाहल ताहि जन, मरियाद बिना यमराज की क्यारी।
कपट विचार भरे उर भीतर, उन रामप्रकाश प्रणाम हमारी।।५।।
गुड़ रु घृत से नीम को सींचत, मीठा कदापि ना होवत भाई।
कौआ पढा भल स्वर्ण पींजरे, भोज प्रसाद ना रीझत खाई।।
हँस रु बक सो एक दिखावत, कुल स्वभाव कहिँ छूटत नाई।
रामप्रकाश पारख बिन जानत, यही अज्ञान अज्ञात है खाई।।६।।

।। किस की परीक्षा कब करें ।।

विवाह के बाद है सुत की पारख, सुता परखिये योवन आये।
पत्नि की पारख पति के रोग मे, पति की गरीबी मे पत्नि लाये।।
भीड़ पड़े तब मित्र की पारख, भाई परखिये युद्ध के पाये।
रामप्रकाश धैर्य की पारख, दुःख के कष्ट समय पर गाये।।१।।
सँतान की पारख वृद्ध भये पर, रुग्णता सेवा में मन लगाये।
बहिन पारख धन जायदाद में, निर्पक्ष बात रु त्याग दिखाये।।
न्याय नीति बखान करे जग, यश मिले सुख मित्र बढाये।
रामप्रकाश दश बैरी बिना नही, परख पड़े बल शक्ति दिखाये।।२।।

।। अपनी सन्तान का दुश्मन ।।

ऋण भार बढा कर जावत है नर, बाल पीढि को अरि जानहू भाई।
व्यभिचारिणी मात है शत्रु समान ही, अनपढ मूरख पूत जमाई।।
भार्या होवे यदि रूपवती अति, सुन्दर शत्रु समान बताई।
रामप्रकाश पण्डित हो पक्षधर, शत्रु समान है न्याय न भाई।।१।।

।। सपूत कपूत का अंग ।।

पूत सपूत तो क्यो धन जोड़त, आप से दुगुनो वह आप कमावे।
पूत कपूत तो क्यो धन राखत, नशे पते कर सर्व खपावे।।
आपने स्वास्थ्य हाथ खरच में, धर्म कर्म हित खूब जुटावे।
रामप्रकाश प्रारब्ध पुरुषार्थ, आपनो आप ही साथ ले आवे।।१।।
धन कमाय के शुक्रत कारज, पूण्य परमार्थ नाम बढायो।
मात पिता यश कुल के मान को, साज समाज को खूब जमायो।।
नाम इतिहास मे अमर भयो अरु, जग में यश अपूर्व छायो।
रामप्रकाश सपूत देखे कुछ, धन रु यश को खूब कमायो।।२।।
पिता को दियो धन माल गमाय के, लाखो को ऋण कियो दुःख पायो।
मात पिता की सेवा नही आशिस, धन के हेतु विदेश बसायो।।

यज्ञ न दान रु पूण्य गमाय के, दुःख में जीवन कष्ट ही लायो।
रामप्रकाश कपूत देखे बहु, धन रु यश को मूल गमायो।।३।।
पूत सुता को देवो सँस्कार ही, शिक्षा दे दीक्षा में सुयोग्य बनाओ।
नशे व्यशन से दूर रहे वह, उद्यम सिखाय के काम लगाओ।।
सतसँग भाव गुरू सन्त सेवन, कुसँग दुर्जन दूर बसाओ।
रामप्रकाश धन्य वह कुल है, ऐसे सपूत को खूब सिखाओ।।४।।
पूत सपूत तो क्यों धन सँचित, आप कमा कर यश बढावे।
पूत कपूत तो क्यों धन सँचित, धन यश गमा कर धूड़ उडावे।।
सँस्कार देवो पुरुषार्थ की यश, धन कमा पितु सेव सरावे।
रामप्रकाश हो मानव प्रशिद्धि, मात पिता कुल यश कमावे।।५।।
कुछ कपूत ऐसे भी भये जग, पिता को भवन बेच के खायो।
बड़े कुल की मरियाद गुरू जन, छोटन को धन लूट के लायो।।
लक्षण हीन हो बडो कहाय के, तास खेलन में मन लगायो।
रामप्रकाश सुत नार कुलक्षण, बिन भक्ति के हेतु उपायो।।६।।

।। मित्रता का अंग ।।

कोई कहे बल बुद्धि बड़ी, कोई कहे सत शास्त्र बल भारी।
कोई कहे शस्त्र बल रु कोई विद्या बल, कोई शक्ति बल भाष अनारी।।
किन्तु शस्त्र रु शास्त्र ते बल रु छल से, बुद्धि बल रु विद्या से एक विचारी।
रामप्रकाश जग मित्र बाहु बल, यही सब से है नेक सुधारी।।१।।
मित्र वही जग भीतर है वर, जो अपनो हितकारी कहावे।
व्यशन मुक्त करे भ्रम हारत, भव के जनम रु मरण मिटावे।।
लोक परलोक सुधारत जीवन, ज्ञान रु ध्यान युक्ति समझावे।
रामप्रकाश सतगुरू सभाजित, मीत परमार्थ जीत दिलावे।।२।।
मित्र मिल जाते है भाग्यवश, जीवन भर वोही साथ निभाते।
कीमत से नही किस्मत से मिलते, कुल कुटुम्ब भी साथ रहाते।।
प्रारब्ध वश सँयोग बने तब, जीवन में सज्जन मिल जाते।
रामप्रकाश यह सब होता है, जब यह सब व्यवहार रखाते।।३।।
पद प्रतीष्ठा रु पैसा सुन्दरता, सँग तुम्हारे देखे सारे।
स्वार्थ साधी सब दूर रहेंगे, भीड़ में तमासा देखे न्यारे।।
विचार व्यवहार से रहन जुड़े वह, सुख दुःख मे रहे ढाल हमारे।
रामप्रकाश मित्र कर पारख, मन की शँका दूर निवारे।।४।।

।। बडे न डूबन देत हे जांकी पकड़ी बांय ।।

काष्ठ की जहाज तरे जल भीतर, ता मे लोह लगा तर जावे।
जल का है उपकार महा अति, अपना सिञ्चित नाहि डुबावे।।
रीत यही महापुरुष न की लख, बाँह गहे को ना छिटकावे।
जिन को पालत रामप्रकाश है, तिन को कबहूँ नाहि मिटावे।।१।।
वामन रूप धर्यो हरि जब ही, कर पात बिना छड़ी जड़ धारी।
रूप वैराट धर्यो बलि कारण, पद पाताल शीश नभ सारी।।

कर की लकड़ी भी बढ रही तब, यह महिमा पुरुषोत्तम भारी।
रामप्रकाश बढे बिनु अँकुर, जिनके हाथ गहे धर्मचारी ।।२।।
सूखी लकड़ी वामन के कर, जाय लगी ब्रह्मण्ड के माँही।
लोहा लाग रहा लकड़ी के सँग, लकड़ी की नाव तरे जल ताही।।
जल ने लकड़ी पालन कर ना, डूबन दे यह आपन पाही।
रामप्रकाश यह रीत्त पुरुषोत्तम, शरण गहे की लाज रखाही ।।३।।

।। ब्रह्मचर्य का अंग ।।

वीर्य वेद रु ईश्वर वाचक, ब्रह्म शब्द के अर्थ विचारो।
रक्षण अध्ययन चिन्तन तीनों, चर्य मिला कर शब्द सुधारो।।
वीर्य रक्षण वेद का अध्ययन, ईश्वर का चिन्तन निश्चय डारो।
रामप्रकाश ब्रह्मचर्य भावार्थ, या विधि से जीवन धारो ।।१।।

।। शब्द शक्ति की महिमा का अंग ।।

शब्दाक्षर के नही हाथ न पाँव है, इन्द्रिय मन बुद्धि नही बोले।
शब्दब्रह्म है यही अजर अमर सत, सगुण निर्गुण के भेद को खोले।।
जाणणहार पढे और जाणत, गूँगे की गति आप में तोले।
रामप्रकाश है सत चित आनन्द, जाण अजाण लखे नही भोले ।।१।।
शब्द शक्ति है अति अप्रबल, हाथ पाँव इन्द्रियन बिन भारी।
ब्रह्म स्वरूप शब्द यह पूरण, निर्गुण सगुण सब ही गम सारी।।
वेद पुराण ज्ञान रु ध्यान सो, शास्त्र अनेक विषय युत कारी।
रामप्रकाश अकथ को भाषत, भेद अभेद कथे गम चारी ।।२।।
शब्द रु बुद्धि यही वह साधन, ज्ञात अज्ञात के भेद को जाने।
गुण स्वरूप प्रयोजन खोलत, ज्ञान अज्ञान को भेदत भाने।।
सब ही लखावत आप अलोगत, शब्दातीत लय होवत छाने।
ब्रह्म स्वरूप हो वेद जनावत, क्षर अक्षर निरक्षर आने ।।३।।
शब्द का भोजन आध्यात्मिक शक्ति है, किस समय क्या कहाँ बोले।
परोसना रोशना कोशना आयतो, ऐसा भण्डारी कोई जन तोले।।
शब्द का स्वाद पहले चख लीजिये, तोल के बोलते वही जन मोले।
रामप्रकाश जो स्वयँ को भावत, वही मुख ते फिर सोच के खोले ।।४।।
शब्दब्रह्म है अतिशय सुन्दर, सगुण निगुण का बोधक भारी।
निन्दा स्तुति का बोधक पूरण, षट्लिंग का है पूर आधारी।।
शास्त्र आधार है शासित शासक, नीति अनीति का न्यायिक सारी।
रामप्रकाश जग मानव गात में, मन के भाव बतावन हारी ।।५।।
कोई शब्द को स्पर्श करे न करे, पर शब्द सभी को स्पर्श धारी।
कपड़ से छाना पानी सुहावन, विवेक से छानी वाणी है प्यारी।।
लाघव मृदुल रु सत्य का भाषण, मोल नही अनमोल हमारी।
रामप्रकाश कृपणता तज कर, अमूल्य शब्दावली बोल सुधारी ।।६।।
शब्द है शूक्ष्म स्थूल रु कारण, विभिन्न रूप है शब्द के प्यारे।
क्षण क्षण में दूर प्रसारण होवत, गति अप्रबल शक्ति को धारे।।

मारत तारत उभार डुबावत, शब्द विचित्र अरूप सुधारे।
रामप्रकाश शब्द अमोल है, आदि मध्यान्त के अक्षर न्यारे।।७।।
नाद अनाद सर्व घट मठ में, व्यापक पूर्ण ब्रह्म विलासी।
नभ वायु भू जल अनल में, सागर शून्य तरू वन वासी।।
सतगुरू नाद युगादिक पूर्ण, सत चित आनन्द नाद अनासी।
उतम राम प्रकाश की नाद से, भुक्त युक्त मूक्त का वासी।।८।।
आवत जावत शुन्य समावत, व्यापक रूप शब्द है न्यारा।
नाद अनाद अरूप स्वरूप है, स्पर्श साकार शूक्ष्म है सारा।।
शब्द बिना सृष्टि नहीं होवत, निर्गुण सर्गुण शब्द अकारा।
रामप्रकाश सतगुरू शब्द से, भवसागर भय होवत पारा।।९।।
शब्द ही शान्ति प्रदायक उर में, शब्द ही भ्रान्ति रु क्रान्ति उठावें।
शंब्द ही सुख रु दु खः उपावत, शब्द ही बन्धन मुक्त पठावे।।
शब्द ही मूल में शून्य मण्डल में, अपर अष्ठ पृकृति दरसावे।
पांच वाणी रु वेद भेद सब, रामप्रकाश है शब्द दिखावे।।१०।।

।। देश काल के अनुसार शब्द के अर्थ अलग हो जाते है।।

मात पिता हरि गुरू ईश्वर, मन्दिर मूर्ति मे पुष्प चढाते।
सन्त स्मृति देव पूजन में, पुष्पाञ्जलि शब्द गुनगुनाते।।
दिवँगत आतमा स्मृति में जो, श्रद्धाञ्जली के पुष्प कहाते।
रामप्रकाश है शब्द उच्चारण, देश काल गत यों बदलाते।।१।।

।। नाम के अनुसार काम नहीं ।।

नाम भूपाल रखे कोई आपन, राजा कहै कोई नृप न होवे।
फकीर नाम ते फकीर ना होवत, सेठ कहै कोई शाहू ना जोवे।।
प्रभा बिना प्रभु नही होवत, सामग्री होवे तभी वह सोवे।
अँग बिना नही अँगी भी सोभत, रामप्रकाश वृथा दम्भ ढोवे।।१।।
महन्त लिखे तब महन्त ना होवत, महनत साधन अध्यात्म सोहे।
राजा भूपाल साधन सामग्री ते, शासन शासित होवे तब मोहे।।
नाम धनपति रु भीख को माँगत, काम बिना यों नाम बिगोहे।
रामप्रकाश हो चक्षु बिन ज्योति के, नैन ज्योति कब नाम भी ओहे।।२।।
भास्कर सूरज नाम रखे निज, रवि को प्रकाश कहाँ से लावे।
वेद प्रकाश को नाम रखे तब, शास्त्र ज्ञान बिना दुःख आवे।।
पीठ बिना जो पीठाधीश्वर होवत, नाम लिखे तब लोक हँसावे।
रामप्रकाश कला बिन साधन, योगी को भेष अनेक बनावे।।३।।
धन बिना धनवान धनी नहि, शाह कहै नही कोई सँभावे।
भूमि बिना नही भूपति होवत, राज्य बिना नही राज कहावे।।
साधन बिना साधु नही होवत, मानत मूरख मान बढावे।
रामप्रकाश यों साच बतावत, झूँठ नही यह सन्त बतावे।।४।।

।। काम से नाम ।।

इन्द्रिय रीचत सँयम ते हो ऋषि, साधना साधत साधु कहावे।
तन मन वाणी की चार ही मौन ते, ज्ञान की मौन ते मुनि बतावे।।
सँशय रहित सन्त तत्व में राचत, विषय वर्जित सन्यास सुहावे।
रामप्रकाश हो द्वन्द ते विरक्त, वही मुक्तक यही पद पावे।।१।।

।। समय की महत्ता का अंग ।।

समय अजीब पृकृति भीतर, किसी के पास यह होवत नाही।
दीखत है पर नही यह होवत, किसी का भी यह काटत राही।।
अपनापन कोई दीखत नाहि न, समय दिखावत आपनताही।
रामप्रकाश है समय बलवान सो, राम भजो शुभ समय सदाही।।१।।
समय अरु जीवन दोय महा बल, सर्व श्रेष्ठ यह शिक्षक जानो।
जीवन सो यह सही बतावत, समय उपयोग सुहावन मानो।।
समय सिखावत जीवन के क्षण, अमूल्य है मत होय दिवानो।
रामप्रकाश यह समय रु श्वास है, अमूल्य निधि को अक्षय खजानो।।२।।
भूखा पेट करावत अनर्थ, धनी के मन कुमति आवे।
खाली जेब रु इच्छा हो प्रबल, झूठा हो प्रेम सो कपट कमावे।।
बहुत सिखावत सुमति कुमति, परिस्थितियों सब रीति सिखावे।
रामप्रकाश मानव मति प्रबल, समय अनुसार सो वर्तित थावे।।३।।
समय महा बलवान अतिशय, गज केहरी भी बन्धन पावे।
सूर्य चन्द्रमा भी राहु केतु बिच, ग्रहण पाय पीड़ित हो जावे।।
साँप छुछुँदर चूहे दानी बिच, अपनी अकल आप फँसावे।
रामप्रकाश समय को देख के, मौन रहो नही बात चलावे।।४।।
सदा नही महमान रहे घर, सदा नही हरियाल रहावे।
सदा नही तरुणाई रहे वर, सदा नही दिन रात कहावे।।
काले केस सदा नही रहवत, जीवन सदा ना जग जगावे।
रामप्रकाश समय परिवर्तन, समय करे वह कोई न करावे।।५।।
धन नष्ट हुआ जन प्राप्त करे श्रम, विद्या अभ्यास ते बहुरि लावे।
देह को रोग औषधि ते फिर, होय आरोग्य से फेर बनावे।।
समय विश्वास रु चरित्र गये वह, लाख उपाय से फेर ना पावे।
रामप्रकाश नर श्वास गये वह, गया समय फिर हाथ न आवे।।६।।
ग्रन्थ स्वाध्याय रु श्वासा सुमिरन, ज्ञान रक्षा हित तप सुधारो।
मनोरँजन हित कविता राघव, परहित में अभ्यास हमारो।।
ब्रह्मात्म का चिन्तन हरदम, जग प्रपँच सब दूर निवारो।
रामप्रकाश है अमूल्य जीवन, व्यर्थ समय न जाय जमारो।।७।।

।। हाव भाव क्रिया से अज्ञात का ज्ञान ।।

दर्द की बात आँसू बतावत, बेरुखी हमदर्दी बतावे।
पैसे का रुतबा घमण्ड जतावत, सँस्कार सो परिवार जतावे।।

वाणी से मानवता जानत, युक्ति बतावत ज्ञान सुहावे।
रामप्रकाश की द्रष्टि लखावत, सूरत सीरत नियति उपावे।।१।।
स्पर्श से मन भाव बतावत, समय बतावत स्नेह कहानी।
रहणी कहणी ध्यान लखावत, आसन साधन बैठक आनी।।
चाल चलन आचरण दिखावत, सतगुरू सन्त के सँग कहानी।
रामप्रकाश अनुभव उर आवत, सतगुरू की प्रसाद बखानी।।२।।

।। माया का अंग ।।

माया है नागिन पाँच फणी यह, बड़ी विचित्र है छलकारी।
जिस ने दूध पिलाया हो तब, अथवा पिलावत है पिय प्यारी।।
उन का नाश करे फिर भव में, बचिये जण जण खावत सारी।
रामप्रकाश उछल कोई बाहिर, आय पड़े हरि शरण उभारी।।१।।
ब्रह्म की छाया है माया अनादि रु, कल्पित सत्य प्रवाह अनादी।
परिवर्तित त्रिगुण कर फैलत, वाद विवाद से हो परिवादी।।
मिथ्या नही सत्य हम बोधत, ज्ञानी समझत निर्विवादी।
रामप्रकाश मिथ्या कहै दोषित, ब्रह्म व्यापक किमि सत्य अनादी।।२।।
विश्व सकल माया से घीरा, जान कर मानव क्यों मोहे।
विनसत लगे ना वार, वृथा मन गर्व में क्यो सोहे।।
सतसँग कर तुम जान लो, ब्रह्म पद कर प्रवेश।
रामप्रकाश वह अक्षय पद, वही सत्य चित को है देश।।३।।

।। मन का अंग ।।

मन ही मन की जानत है सब, मन की प्रीत रही मन लागी।
मनमानी जो करत भाव से, मित्र शत्रु अपना मन सागी।।
मन ही अद्भुत रीत चलावत, हार रु जीत भी रहे उन आगी।
रामप्रकाश मन मानत है सब, निशिदिन हरि से रहो अनुरागी।।१।।
कर्म योग करें या भक्ति योग भी, ज्ञान योग को मार्ग भारी।
मन सँयम बिना नही होवत, इन्द्रियन की गति दमन सारी।।
ता बिन साधन सिद्व ना होवत, लाख उपाय करो शुभ त्यारी।
रामप्रकाश रहो हरि शरण मे, गुरू आज्ञा गत सुधरी हमारी।।२।।
शुद्ध व्यवहार ते मन ही मन्दिर, आचरण शुद्ध है तन हमारो।
अहार शुद्ध ते देह है मन्दिर, विचार अच्छे ते हो मस्तिष्क प्यारो।।
तन मन और विचार हो सुन्दर, जीवन मन्दिर होवत सारो।
रामप्रकाश हो सतगुरू सान्निध्य, लोक परलोक सो होय उद्धारो।।३।।

मन की स्थिति से मन के नाम-

मन के स्वरूप में देश रु काल ही, वस्तु अवस्था में रूप बतावे।
जाग्रत अवस्था में चेतन मन ही, स्वप्न मे अवचेतन गावे।।
सुषोप्ति बुद्धि गत पावत, साक्षी स्वरूप से मन रहावे।
ब्रह्म नही पर ब्रह्म समान हो, रामप्रकाश कुटस्थ दरसावे।।४।।
मन सँसार मे मिलत नही वह, चक्कर घूमे नित उन के माँई।

चँचल स्वभाव गति अति तीव्र, भागत नित मानत है ताँई ।।
अनन्त जन्म सँस्कार सँयोजित, कठिन साधन बिन छूटत नाँई ।
रामप्रकाश सतगुरू शरणागत से, पथ प्रदर्शन होवत वाँई ।।५।।
बन्धन रु मोक्ष मन के हाथ है, चाहे जहा रहे करे वह सारे ।
एक ही चाबी ताला लगावत, वही ताली खोलत है प्यारे ।।
सुख रु दुःख सो मन ही मानत, कारण महा सदा मन धारे ।
रामप्रकाश साधन सब मन का निश्चय, ब्रह्म मिले मन मुक्ति सिधारे ।।६।।
नाहि मन्दिर नाहि पूजा भी कुछ, सुबह उठते ही आता है नाम तेरा ।
आरजू नही कि आप को हम, भूला बैठें हरदम नाम तेरा ।।
तमन्ना यही है कि किसी को, रुलाये भुलाये न हम साथ तेरा ।
रामप्रकाश की अरज है मन से, स्मृति में अन्तर रहे हाथ तेरा ।।७।।
मन का सँकल्प मन ही जानत, विकल्प प्रीत रु द्रोह मे राजी ।
मन ही मनौती को मान रहा, मन ही मीत रु शत्रु बिराजी ।।
मन ही झूमत राज जमावत, हार रु जीत मनावत पाजी ।
रामप्रकाश है मन प्रतीत की, मन की रचना दृष्टि की बाजी ।।८।।
मन कल्पित भोजन पेट भरे नही, स्वप्न मोदक ना भूख मिटावे ।
मन की ऊँच छलाँग लगा कर, ऊँचे से ऊँची उपाधि लगावे ।।
रावण राहू रु कालनेमि सम, कभी समय पर शीश कटावे ।
रामप्रकाश बिन योग्यता के कभी, मान हानि मृत्यु सम पावे ।।९।।

।। विचार का अंग ।।

निद्रा खाद्य ऋतुदान आचार में, काम रु क्रोध ईर्षा गुण गावे ।
द्वैष रु मोह पशु पक्षि मधि, नियमित सँयमित रूप सजावे ।।
मानव सो पशुवाधिक चालत, मति गति बिन मूढ भनावे ।
रामप्रकाश विचार बिना नर, लख चौरासी माँहि भ्रमावे ।।१।।
व्यर्थ कल्पना कभी ना करिये, मनोदशा विकृति को लायेगी ।
जैसा सोच रहा है मानव, वैसी भावी भी दरसायेगी ।।
बीती ताही भुला देना है, वर्तमान ही सुधामृत पायेगी ।
रामप्रकाश है भविष्य उज्वल, जो वर्तमान बनाकर जायेगी ।।२।।
विचारों को वश रखे तब वह, शब्द बने वह कर्म कमावे ।
कर्म को वश किये ते, बने स्वभाव सदा सुख पावे ।।
स्वभाविक भाव चरित्र बनावत, चरित्र ते भाग्य बने दुःख जावे ।
रामप्रकाश वही है जीवन, लोक परलोक आनन्दित धावे ।।३।।
व्यवहार यदि सुन्दर है तब, मन ही मन्दिर सम है भाई ।
अहार यदि सुन्दर है तब, तन ही सुन्दर मन्दिर आई ।।
विचार ही यदि है सुन्दर तब, मष्तिष्क ही मन्दिर दरसाई ।

रामप्रकाश तन मन वच सुन्दर है तब, जीवन ही मन्दिर उतम ताई ।।४।।
पैमाना घर का कितना भी हो पर, कपाट द्वार छोटा दरसावे ।
कुँडी में लगा ताला भी छोटा, चाबी छोटी हाथ मे आवे ।।
ऐसे सभी विचार योजना भीतर, छोटी हो परिणाम बड़ा बतलावे ।
रामप्रकाश विचार करो पर, अदृष्ट परिणाम बाद ही पावे ।।५।।

।। सुख और दुःख का स्वरुप ।।

वस्तु जो नाम रु रूप ते, सुख चाहत या लेवत भाई ।
वही बीमारी है दोष भयँकर, दुःख समूह का कारण आई ।।
सुख अध्यात्म आनन्द रूप है, ताहि सन्त कहै समझाई ।
रामप्रकाश यह खोल कहै सुन, समझते मन सतसँगी लाई ।।१।।
सँसार की सँसृति सता परिवर्तन, बाधक नही जीवन हमारे में ।
प्रभाव महता का बाधक है नित, पुरुषार्थ त्याग हो हमारे में ।।
सँयोग अनित्य वियोग सत्य है, नित्य स्वीकार करो हमारे में ।
रामप्रकाश बाधकाभाव लाओ, आनंदित जीवन सुख हमारे में ।।२।।
विश्व में सुख बरसावन हेतु ही, लोभी को धन प्रदान ही कीजे ।
अहँकारी को कर जोड़ बुलावहु, मूर्ख को उपदेश ही दीजे ।।
पण्डित हो बुद्धिमान सुजान तो, यथार्थ बोध की बात कहीजे ।
रामप्रकाश हो प्रसन्न जाही विध, जैसे के साथ तैसो हि रहीजे ।।३।।

।। कृतघ्नता का अंग ।।

विद्या ज्ञान पढे रु सुने बहु, उद्धृत अँश ले ग्रन्थ छपावे ।
शिक्षक गुरू सन्त नाम छुपावत, कृतघ्नता मति हीन दिखावे ।।
कहाँ सुना अरु कहाँ लिखा यह, कृतज्ञता भाव सद्‌गुण कहावे ।
रामप्रकाश कृतघ्न है पापी, सो विद्वान भी नर्क मे जावे ।।१।।
स्वार्थ मतलब खुदगर्जी यह, कोयले समान होवत काले ।
गर्म को छूवत जलावत है सब, आपन दूसर सम्बन्ध न पाले ।।
ठण्डा होवत कालिख से भर, काले व्यवहार हो भाव में माले ।
रामप्रकाश कुछ करो परमार्थ, स्वार्थ में सब होय निठाले ।।२।।

।। किसान की महिमा ।।

मानव के भोज में एक ही ग्रास की, महिमा जाणत कोईयक भाई ।
श्रम किसान के स्वेद पसीजत, प्रारब्ध वश नर पावत आई ।।
ताहि के कण में जीव अनेक ही, नगर चिउँटी को भोजन थाई ।
अश्वमेध यज्ञ सम रामप्रकाश है, सींचत भींजत पूण्य अथाई ।।१।।

।। पापार्जित धन ।।

अऊत धन रू पापार्जित धन जो, धर्म को धन जो घर मे आवे ।
जपी तपी रु अतीत सन्यासी को, साधु को अन्न जो गृहस्थ ही खावे ।।
पहली दूसरी तीसरी पीढि कुल, नाश दारिद्रयता निश्चय ही लावे ।
रामप्रकाश अग्नि वत वह धन, अपच अमोघ पाप मय गावे ।।१।।
साधु सन्त रु विरक्त सन्यासी, आश्रम को धन कोई जो खावे ।

दूजी तीजी पीढि शास्त्र कहै सत, जड़ा मूल कुल सहित नसावे ।।
भेंट आई सत भिक्षुक अन्न सो, परमार्थ के काज लगावे ।
रामप्रकाश गृह शुद्धि रहे तब, विरक्त आश्रम में भेंट चढावे ।।२।।

अधर्म का अंग

हर कार्य में छल कपट कर, प्रपँच रचे सफलता नही पावे ।
नीति धर्म रु शुभ कर्म कर, पर उपकार मन भाव जो आवे ।।
विश्व विजेता होवन में कोई, बिन पराजित विजय को लावे ।
विद्या विवेक "रामप्रकाश" में, लोक परलोक में यश कमावे ।।१।।
मुद्रा मदिरा मोह अज्ञान में, काम विकार सो लोक डुबावे ।
सत्ता शक्ति रु सम्पति मद है, दुराचारी संग नाश को पावे ।।
अधर्म के संग अस्त्र शस्त्र भी, विद्या शक्ति वर काम न आवे ।
महाभारत इतिहास पढे तब, "रामप्रकाश" यह शिक्षा उपावे ।।२।।

।। प्राकृतिक आपदा/महामारी का अंग ।।

प्राकृतिक आपदा दुष्ट करतूत ते, रोग अजीब धरा पर आयो ।
दुष्ट कुग्रह अरि सम घातक, औषधि वैद्य उपाय न लायो ।।
सँयम धार अकेल रहो घर, बाहर भीड़ परहेज बतायो ।
रामप्रकाश पीयो जल ऊषण, मित्र भी लागत दूर परायो ।।१।।
देश विदेश प्रदेश मे एक ही, रोग अजीब धरा पर छायो ।
जड़ी बूटी रु दवा बिना यह, वैद्य हकीम समझ नहि पायो ।।
कोई काहू से मिलो नही गल, हाथ को जोड़ के नमन कहायो ।
रामप्रकाश रहो एकान्त में, रोग भगाय उपाय बतायो ।।२।।
भयँकर त्रासदी रोग भयँकर, नास्तिक लोगो की पाप कमाई ।
ईति देव दुःख सात प्रकार सें, भीत सो भौतिक दुःख कहाई ।।
राज्य से शोषण चोर बिच्छू सिँह, अरिदल युद्ध की धूम मचाई ।
रामप्रकाश यह तामस राजस, कष्ट बढावत शोषित भाई ।।३।।
जीव हिंसा रु अनाचरित मानव, अनृत अघोर भये व्यभिचारी ।
चोर लुटेर धोखा दश दोष हि, कृतघ्नता संग भये भृष्टाचारी ।।
नास्तिकता वंश होवत पाप हि, ईश्वरीय दण्ड हो पावत भारी ।
रामप्रकाश पा सात ईति दुःख, प्राकृतिक प्रकोप महा कष्टकारी ।।४।।
कृतघ्नी रु विश्वास घातक, लंपट धूत रु आन पूजारी ।
पृकृति प्रकोप विद्युत नभ पावत, अनावृष्टि बहु वृष्टि मूसारी ।।
विविध रोग शुगा भूकम्पन, नाना जन्तु कृषि काटनहारी ।
रामप्रकाश यह सात ईति दुःख, प्राकृतिक प्रकोप महा कष्टकारी ।।५।।
चोर लुटेर धोखा छल छेतर, घातक जीव घने हतियारी ।
सिंह रु सांप बिच्छू बहु कंटक, नृप नेता प्रजा बटमारी ।।
भौतिक आग उपद्रव युद्ध ताण्डव, पाप ईति के कारण भारी ।
रामप्रकाश भीति दुःख बहु विधि, अराजकता के भोग अपारी ।।६।।

टिप्पणी-जो नास्तिकता के कारण से प्राकृतिक आपदा सात प्रकार से जो होती है उसे ईति कहते हैं और जो भौतिक जीवो के द्वारा उत्पात होने वाले भीति कहलाते हैं।

।। सात प्रकार की ईति।।

रोग वृष्टि बहु अनावृष्टि, शलभा मूषा शुक खास।
भू स्खलन दुःख सात ही, ईति रामप्रकाश ।।१।।
सिंह सर्प भूपति कुपित, चोर जन्तु विष आग।
रामप्रकाश यह भीति भय, कष्टकारी लख नाग ।।२।।
प्राकृतिक आपदा होत है, नास्तिक बढे अन्याय।
ईति भीति भय होत है, रामप्रकाश लखाय ।।३।।
नौ ग्रह इति सात दुःख, भीति भूतादि उपाध।
रामप्रकाश पावे नही, राम भक्त हरि साध ।।४।।

।। प्राण का ज्ञान ।।

प्राण स्थूल का जीवन है यह, जड़ अजड़ के बीच रहावे।
क्रिया से चेतन स्वभाव ते जड़ है, देख विचार करो मन चावे।।
प्राण ही ब्रह्म स्वरूप है चेतन, उपनिषद वाक्य यथा फरमावे।
रामप्रकाश ये नीन्द समय जड़, मित्र अरि नही ध्यान धरावे।।१।।

।। तुलसी का पौधा ।।

तुलसी देव वृक्ष है सुन्दर यह, जड़ी औषधीय रोग भगावे।
धर्म पद्धति मे विष्णु शक्ति है वर, पूजा पाठ में काम यह आवे।।
पूजनीय पद धर्म शास्त्र में, सदा से उपयोगी जग भावे।
रामप्रकाश संजीवनी है बहु, रोग दोष को दूर नसावे।।१।।

।। यज्ञोपवीत धारित की पहचान ।।

नशा व्यशन कछू नही करत है, वेद शास्त्र की बात है मानी।
ईश्वर अस्तित्व मानत है उर, धर्म सनातन हृदय छानी।।
ईश्वर जीव रु ब्रह्म माया सब, अध्यातम साधना चित से जानी।
रामप्रकाश है यज्ञोपवीत यह, धारण करे की यही निशानी।।१।।

।। मिश्रित अंग ।।

कविता मन के शुद्धभाव भरे तब, सविता रूप भले दरसावे।
सन्त गुरू गण वेद वेदार्थ, शास्त्र विधि वर ज्ञान लिखावे।।
ज्योति मय ज्ञान दिवाकर होवत, अज्ञान अँधेर को मूल मिटावे।
रामप्रकाश गुरू ज्ञान कथे तब, आतम तत्व उदय होय आवे।।१।।
ज्ञानी जन ज्ञान की बात को जानत, मानत मनावन सहज ही जानो।
अज्ञानी जन को बतावत मानत, समझ परे तब जानत मानो।।
अज्ञवृत अभिमानी जन को, समझाय सके नही ब्रह्मा हूँ को आनो।
रामप्रकाश समय समझावत, ज्ञानीजन अधिकार पिछानो।।२।।
अन्नादि भोज्य भक्ष्य पदार्थ, दीखत है पर पोषण शक्ति नाहि दिखावे।
भक्षक को स्वाद रु शक्ति का परिचय, मिलता है जब विधि वत खावे।।
ऐसे ही ईश्वरीय ईश्वर भी, साधक को अनुभव गम्य करावे।

रामप्रकाश लखे विधि साधन, सतगुरु पथिक पन्थ बतावे ।।३।।
ग्रन्थ रु पन्थ में वेद रु शास्त्र, सात्विक धर्म रु कर्म बतावे ।
मन्दिर तीर्थ पुजारी रु पण्डित, राजस उपासना देव पुजावे ।।
पितर भोमिया भैरव भोपे सब, तमोगुण पूजन कर्म फँसावे ।
रामप्रकाश ज्ञानी सन्त भाषत, शास्त्र विधि से शुद्ध समझावे ।।४।।
फूटी आँख विवेक विद्या वर, ह्रदय वैराग्य जरुरत नाही ।
शम दमादिक विदा किये उर, नही मुमुक्षुत्व की चाह भी थाही ।।
रह्यो वाच्यार्थ शास्त्र आधार से, श्रुति रटी ब्रह्मज्ञान बहाही ।
रामप्रकाश धन्य हो जीवन, सर्व अनुबन्ध गये भुलाही ।।५।।
त्रिगुण प्रान्त के त्रिलोक क्षेत्र मे, पँचकोशी बाजार में एक हजारी ।
मनोमय दुकान में महँगे भाव सें, ह्रदय अलमारी में बिकत है भारी ।।
शीश दिये रु समर्पण भाव से, बड़भागी लेत है नर रु नारी ।
रामप्रकाश हकीकी रु मिजाजी से, साच रु झूठ है दो विध से जारी ।।६।।
देव रु दानव मानव किन्नर, गान्धर्व पृकृति गुण है भारे ।
गिरि पुरी वन भारती शैव रु, वैष्णव ज्ञानी सन्त उचारे ।।
आन उपासक ज्ञान पीपासक, सतगूरू शरण में जावत सारे ।
हरि सन्त रु सतगूरू सामर्थ, रामप्रकाश यह सत्य विचारे ।।७।।
चार हूँ वेद रु छहों शास्त्र विधि, उपनिषद बहुत है वेद विचारा ।
सन्त वाणी बहु विविध भान्तिन, ज्ञान विज्ञान विवेक भण्डारा ।।
सन्त अनेक समझावत है नित, भूत हूए अरु होव ही सारा ।
रामप्रकाश जग भेड़ की चाल है, ज्ञान न पावत एक लिगारा ।।८।।
भणिया बहुत मिले कलि में पर, गुणिया तो भूल भूलावे में ।
पढिया मिले सब अक्षर बाँचते, मँजिल चढिया चलावे में ।।
धन्धा है पर नफा नही कछु, रात में नीन्द घटावे में ।
रामप्रकाश जग जीवन है पर, आयु रोग हलावे में ।।९।।
योगी योग साधन में जागत, भोगी जागत भोग प्रमानी ।
चोर भी जागत धन चुरावन, कविगण जागत शब्द पिछानी ।।
जागन के है कारण विविध, भावत नींद न भोजन पानी ।
रामप्रकाश एकाँकी भावत, लाभ रु हानी मे जागत प्रानी ।।१०।।
ज्ञानी विवेक भरे उर भीतर, दबे नही किस भाँति दबाये ।
नाहि किसी जन को ही दबावत, बोद्ध प्रबोध करे सब भाये ।।
उतर दे सब भाति से समर्थ, कीचड़ में कौन पत्थर ढाये ।
रामप्रकाश कोई ऊपर आवत, ताहि धका दे दूर भगाये ।।११।।
कुता रु सूअर भेंस लोमड़ी, बन्दर भालू मिलते प्यारे ।
यह सब एक सरोवर घाट पर, मिल कर पानी पीवत सारे ।।
निश्चय मानो और घाट पर, खड़ा शेर कोई सन्त हमारे ।
रामप्रकाश जहाँ सत्य का भाषक, पाखण्डी मिलते एक इसारे ।।१२।।
कुल देवी बनी कूमावत कुल में, भक्त सिरिया देवी शुभ नारी ।

दुर्गा बनी महा क्षत्रिय कुल में, कुलदेवी होय के पूज्यता भारी ।।
चारण कुल में जन्म धरयो वह, करणी देवी वह देव हमारी ।
रामप्रकाश ना होय सकी वह, जीवित समाधि डाली कुल धारी ।।१३।।
सरिता के तट योगी बसा उन, आरण्यक में शुचि बास बसायो ।
कन्द मूल फल वन से लावत, खावत सरिता कँ पान करायो ।।
ना जानत वह कैसी जड़ी वर, जिन स्थूल को अमर बनायो ।
रामप्रकाश वो बहु उपाय से, कौन जाने जिन स्वस्थ्य सजायो ।।१४।।
माता छूटी फिर पिता छूटे सब, नन्द यशोदा सो मिलत कुल छूटे ।
राधा छूटी रु गोकुल छूट गो, मथुरा वृन्दावन ग्वाल भी छूटे ।।
जीवन में सब छूटे ही छूटे है, देवत्व मुस्कान कभी नहीं छूटे ।
रामप्रकाश सीखे कोई कृष्ण से, गीता उत्सव कदापि नही छूटे ।।१५।।
गुरुज गुरुजन के प्रति होवत, रिपुज प्रति शत्रु के भारी ।
भृत्यज दास नोकर प्रति होवत, प्रणवी उपालम्भ प्रिय जन प्यारी ।।
कृतिम खयानत धोखे के कारण, अकारण क्रोध करे मूढ अनारी ।
रामप्रकाश यह क्रोध स्वरूप है, विविध शुभाशुभ समय विचारी ।।१६।।
भूपति की दुष्टता से प्रजा दुखी, दुष्ट मित्र ते सुख नही कोउ पावे ।
जो दुष्टा घर नारि बसे तब, सुख शान्ति कदाचित नाही कमावे ।।
जो शिष्य होय कुपात्र तो, वह यश रु कीर्ति नाहि उपावे ।
रामप्रकाश यह नीति पुकारत, भाग सँयोग ते योग मिलावे ।।१७।।

~ झूलना छन्द ~

गीता रु वेद पढे न पढे सब, हिन्दु पुराण को जानता है जी ।
कुरान पढ़ें पर मानता नाहिन, मोमिन हदीस को पालता है जी ।।
त्रिपटक ग्रन्थ पढे सब बोद्ध ही, जानत वे भौतिक मानता है जी ।
रामप्रकाश फकीर कहै यह सब, स्वार्थ काज को ताणता है जी ।।१।।

।। हमारा सिद्धान्त ।।

प्रीति करे तासों, बोलिये हजार बार ।
ताके ढिग बैठ बैठ, प्रेम रस पीजिये ।।
टेढी गति चाले जासे, टेढी गति चौगुनी सी ।
फेर वाकी बाहू काम, नाम नही लीजिये ।।
ऐसी भाँति भाँतिन की बहु समझाईयत ।
भाये मन के गुमान माया कहा कीजिये ।।
नर कहा नारी कहा, और हो ना बुद्ध कहा ।
आप को ना चाहे, ताके मुँह धूल दीजिये ।।१।।
चाहे योग जप नाना, तपस्या अनूप महा ।
चाहे पढो विद्या वेद, रञ्च हूँ वो फले ना ।।
नीति गुरू मरियाद ना, चाहे मुक्ति भोग मना ।
सब नरक वास प्रद, शुभ फल मिलेना ।।
रावण रु मेघनाद, हिरणाकुश कँश आदि ।

कौरव कपूत ऐसे, युक्ति ऐक चले ना ।।
ताते कवि राम कहे, जीवन एक श्वास तक ।
रीति नीति मरियाद ते, एक पल हिले ना ।।२।।

।। भक्तों हित मंगल कामना ।।

गिरी पुरी वन भारती सागर, नाथ साथ सब हितु हमारे ।
श्री वैष्णव के चार सम्प्रदायक, सब ही है शिरमोर है सारे ।।
और सन्त श्रीमहन्त भी पूज्य, करूँ प्रणाम सिद्धान्त के भारे ।
रामप्रकाश सब गुरू भक्तन के, हरिगुरू शुभ काज सँवारे ।।१।।
काशी रेवासा धाम दाँतड़ा, गुरू आश्रम परम्परागत सारे ।
हरिद्वार मथुरा वृनदावन के सन्त, मध्यप्रदेश महाराष्ट्र हमारे ।।
राजस्थान के पच्चीस जिलेभर, मुँबई पूना के भक्त है सारे ।
रामप्रकाश गुरू भक्तन के सब, हरि गुरू शुभ काज सँवारे ।।२।।
हरियाणा में हिसार सिरसा, डबवाली कालावाली प्यारे ।
पठानकोट भठण्डा और ये, पँजाब आलमगढ अबोहर सारे ।।
देश प्रदेश हिन्द सिन्ध में, गुरू भक्त सब देह सुधारे ।
रामप्रकाश गुरू भक्तन के संग, हरिगुरू शुभ काज सँवारे ।।३।।
अहमदाबाद नडियाद बड़ोदरा, गुजरात मे भी भक्त अपारे ।
हरिराम वैरागी परम्परा, के साधक सेवक सारे ।।
आते जाते दर्शनार्थी सब, श्रद्धा पुष्प चढावन हारे ।
रामप्रकाश सब गुरू भक्तन के, हरि गुरू शुभ काज सँवारे ।।४।।

।। होली के परिप्रेक्ष्य में ।।

नफरत घृणा दूर करो सब, हो ली जलाओ व्यशन की ।
प्रेम नेम का रँग वरसाओ, द्विधा द्वल हरो मन की ।।
ज्ञान गुलाल ध्यान की धारा, ताप हरे सब तन की ।
रामप्रकाश होली पर्वोत्सव, जीवन बने वरसा घन की ।।१।।

।। कुण्डलिया ।।

रँग है सातों बसँत में, रवि रश्मि रँग सात ।
होली भव की यातना, जन्मोजन्म बिसात ।।
जन्मोजन्म बिसात, होली ताप त्रय की ज्वाला ।
सीतल जल हरि रस मिले, श्याम रँग के रँग आला ।।
भव बाधा होली जले, जब मिले सतसँग ।
होली तब ही जानिये, शान्ति भक्ति रस रँग ।।१।।

।। दीपावली के परिप्रेक्ष्य में ।।

सन्तन के नित नूतन दिन है, तीस ही दिन त्योहार सदाई ।
हर्ष रु शोक ते रहित सदा रह, ज्ञान में मस्त रु चुस्त रहाई ।।
सदा दिवाली बनी रहे वर, ज्ञान को भानु सदा चमकाई ।
रामप्रकाश आनन्द नित नूतन, जग प्रपँच सो दूर विलाई ।।१।।
सदा दीवाली सन्त के होवत, तीस हूँ दिन त्योहार मनावे ।

सुमिरण राम रु सतगुरू शरण में, प्रारब्ध वश सब मोज बतावे ।।
हर्ष रु शोक मिट्यो मन चँचल, निश्छल निश्चिन्त निशँक रहावे ।
रामप्रकाश है ब्रह्म स्वरूप में, सच्चिदानन्द में परम सुहावे ।।२।।
दीपावली है दीप ज्योति का, बाहरी त्योहार उजाला है ।
अन्तर्ज्योति जब जगमग जलती, चारो ओर उज्वाला है ।।
घर की ज्योति चार पहर की, वह जन्मान्तर ज्योति वाला है ।
रामप्रकाश वह परम ज्योति है जो, पिण्ड ब्रह्मण्ड का रखवाला है ।।३।।
यह दीपक है दो घण्टे या चार पहर, फिर तो यह अन्त हो जायेगा ।
अन्तर्ज्योति जन्मान्तर ज्योति, फिर बुझना नही लग पायेगा ।।
उस में तेल बती लगाना, इसमें ध्यावत ध्यायेगा ।
रामप्रकाश सतगूरू ईश्वरीय का, पिण्ड ब्रह्मण्ड में छायेगा ।।४।।
यह दीपक है सब भाँतिन के तेरे, मेरे विविध सजावट उजाले है ।
दीप अपने अपने न्यारे न्यारे, सब ही बुझने वाले है ।।
एक अखण्ड परम ज्योति जो, सच्चिदानन्द शक्ति डाले है ।
रामप्रकाश उस ज्योति के सब, प्राकृतिक मतवाले है ।।५।।
दीप मालिका दीपोत्सव में है, व्यवहारिक रीति इतिहासों में ।
पलक झाँपते रहते मिटते, क्षणिक समय रहे घरवासों में ।।
स्वयँ आप बनो प्रज्वल्लित जोति, ब्रह्मदीप शिक्षा परकाशों में ।
रामप्रकाश हो विश्व प्रकाशित ये, जन जन के पथ परवासों में ।।६।।
स्वयँ दीप बनो पथ प्रदर्शक हो, जन जग के भ्रम को दूर करो ।
व्यवहार कुशल हो पावन जीवन, शिक्षा प्रचार भरपूर भरो ।।
अज्ञान अँधेरा नाश करो निज, हर क्षण प्रकाशित निज नूर खरो ।
रामप्रकाश धर्म धारण कर के, जग अँधियारा कूर हरो ।।७।।
यश कीर्ति वैभव श्री समृद्धि, सम्पन ऐश्वर्य का आभास करो ।
सुख सम्पति सम्पनता शिक्षा में, दीप ज्योति प्रकाश करो ।।
जन जन के मार्ग दर्शक हो, अज्ञान अँधियारा खास हरो ।
रामप्रकाश हो स्वयँ सुखी, सब विश्व में सुख वास धरो ।।८।।

।। विभिन्न प्रयोजन से स्वामी जी के पास लोगों का आना ।।

कैयक सन्त अहँकार से आवत, कैयक आपने ग्रन्थ बतावे ।
कैयक आय महन्ताई जतावत, कैयक दर्शन भाव दिखावे ।।
कैयक पढने अर्थ को पूछत, सँशोधन हेतु ग्रन्थ को लावे ।
रामप्रकाश कोई साधन युत हो, दुर्लभ दर्शन नाहि दिखावे ।।१।।
कैयक सन्त निमन्त्रण ले आवत, कैयक मुहूर्त पूछने लावे ।
कैयक ज्योतिष पढने आवत, कैयक पिँगल सीखने धावे ।।
कैयक आपने काम से आवत, साधन युत ना दरश दिखावे ।
रामप्रकाश कोई सेवा भाव मन, विरले सन्त श्रद्धा ले आवे ।।२।।
कैयक आवत मुख दिखावन, कैयक मुख देखन को आवे ।
कैयक पुष्प माला प्रसाद को, कैयक भाव फल को लावे ।।

कैयक श्रद्धा कर दर्शन को आवत, फल फूल अरु भेट चढावे।
रामप्रकाश पृकृति है न्यायिक, जैसो है भाव तैसो फल पावे।।३।।
कैयक बर्तन माँज के जावत, कैयक झूँठन छोड़ के भागे।
कैयक बर्तन सब के धोवत, कैयक आश्रम सेवा मे लागे।।
कैयक बातों में योंहि बैठे रहे, कैयक आवत सेवा के सागे।
रामप्रकाश श्रद्धा युत साधन, सेवा मे रहता सब से आगे।।४।।
कोइयक आवत भाव श्रद्धा कर, भाव सहित हो भेंट चढावे।
कोइयक आवत दर्शन केवल, कोइयक आकर वाद बढावे।।
कोइयक ज्ञानी के परीक्षक होय के, व्यर्थ प्रश्नोत्तर फैल मचावे।
रामप्रकाश श्रद्धा कर सेवत, सोई चार पदार्थ पावे।।५।।

।। पिंगल ज्ञान ।।

मनभय आदि मे शुभ गण धारण, जसरत गण को दूर निवारो।
हझधन घरखभ आदि दद्धाक्षर, मँडप मध्य मे कभी ना धारो।।
झटक अन्त दद्धाक्षर त्याग के, अपनी कविता आप सुधारो।
रामप्रकाश कविता के कविजन, धर्म धन सुख पावत सारो।।१।।
आदि में मित्र मित्र गण पूरण, मित्र दास भी सुख को लावे।
मित्र अरि या उदास न लावहू, दास दास उदास न आवे।।
उदास उदास गण को टाल दे, आदि कविता में दूर नसावे।
रामप्रकाश दो गण में फल है, पिंगल रहस्य बोध लखावे।।२।।
उतमराम कविता गुण भाषत, कविजन गुरु मुख बोध विचारो।
रति बोध बिन गुरू शोध बिन, छन्द ज्ञान बिन पशु जमारो।।
शेष गुरू से गरुड़ विद्या बल, पिँगल ऋषि से प्रकट सारो।
रामप्रकाश उतम कवि गावत, कविता के गुण भेद सुधारो।।३।।
दोहा दगड़ रु दाम को जोड़त, बोधवान गुण कोईयक प्यारा।
मूरख पागल बोध बिना खल, करे बिगाड़ उडावत न्यारा।।
करे प्रशिद्ध देवे यश कीर्ति, भाग्य जगे गुण आवत सारा।
रामप्रकाश उतम गुरू पावत, आवत है सब भान्ति आचारा।।४।।
प्रज्ञा चक्षु नही रूप को जानत, पँगु चले नही पन्थ सुधारे।
पूत जन्म सुख बाँझ न जानत, छँद बिना कवि मूरख सारे।।
छँद लखे तब छँद कथे वर, वास्तु स्मृति को भवन है प्यारे।
रामप्रकाश है दाम जगत सुख, तीन हि देवत कीर्ति हमारे।।५।।
आदि मध्य रु अन्त मे गुरू कर, भगण जगण रु सगण मनावे।
तैसे हि लघुतर लाईये यों, यगण रगण रु तगण गणावे।।
सर्व गुरू कर मगण मानियत, नगण लघु सब अक्षर ही लावे।
रामप्रकाश यह छन्द शास्त्र मत, जान लखे वह छन्द बनावे।।६।।

ह ज ध न घ र ख भ आदि दद्धाऽक्षर, म ड प तीन ही मध्य न लावे।
झ ट क तीन को अन्त तजे जन, गुरू लघु प्रस्तार ही पावे।।
मात्रिक वर्णिक छन्द लखे जन, पिङ्गल को ज्ञान हृदय मधि आवे।
रामप्रकाश यह छन्द शास्त्र मत, जान लखे वह छन्द बनावे।।७।।

।। ज्योतिष का ज्ञान ।।

सँक्रान्ति के जे दिन गये तिन में, पन्द्रह जोड़ नौ भाग दिलावो।
या विधि बारह दश आठ चव, मिला नौ भागान्तर जो बच पावो।।
पाँच बचे क्रमशः पाँच बचे ते जानिये, रोग अग्नि नृप चोर को गावो।
मृत्यु पँचक अशुभ फल है, रामप्रकाश यह ज्योतिष दावो।।१।।
एक दश रु उन्निस अठाविस, इन में मृत्यु पँचक गावे।
सँक्रान्ति दिन मे जोड़ के देखिये, नौ भाग ते शेष रहावे।।
पन्द्रह से रोग रु बारह से अग्नि को, आठ मृत्यु दश चोर कहावे।
रामप्रकाश यह बाण है पाँच ही, ज्योतिष मे यह दोष बतावे।।२।।
एक गये ते मृत्यु का बाण है, दोय गये ते अग्नि जनावे।
राज बाण चौथे पर राजत, छठे पर यह चोर का गावे।।
आठवें दिन में रोग का बाण है, सँक्रान्ति के अँश दिन जो जावे।
रामप्रकाश यह बाण है पाँच ही, शुभ कार्य में कभी न लावे।।३।।
रवि रात्रि के उपनयन मे रोग है, यात्रा शुक्र निशि चोर मनावे।
मँगल दिन मे अग्नि घर दावत, शनि दिन में नृप सेवा न जावे।।
सन्ध्या बुध मृत्यु विवाहित, वर्जित कार्य कभी न लावे।
रामप्रकाश यह बाण है पाँच ही, अशुभ करे ये ज्योतिष बतावे।।४।।

।। द्वितीय खण्ड का अन्तिम छन्द ।।

द्वितीय भाग मे मानव नीति मय, पुरुषोत्तम के मन भाव बखाने।
धर्मोपदेश सन्तन के विविध, धारण पालन ज्ञान बढाने।।
सवैया इन्दव जाति प्रजाति के, एक हजार सतावन छाने।
रामप्रकाश छन्दावली ग्रन्थ में, बुद्धिमान कवि गुण को माने।।१।।

इति श्री रामप्रकाश छन्दावली अन्तर्गत "उतम नीतिमय धर्मोपदेश"
नामक द्वितीय खंड समाप्त

श्री रामप्रकाश छन्दावली

“वेदान्त सिद्धान्त का विनोद” नामक
तृतीय खण्ड प्रारम्भ

।। ॐ की व्याख्या ।।

ओम अच्युतायनमः ओम, अनन्तायनमः नित शब्द उचारो।
ओम गोविन्दाय नमः श्री, राम राघव का वेद विचारो।।
औषधि को अनुपान लीये सँग, प्रातः शायँ तप जाप निहारो।
रामप्रकाश है रोग प्रतिहारक, मन्त्र यही श्रद्धा सँग धारो।।१।।
विश्व का आदि व्यापक अक्षर, ध्वन्यात्मक मय ध्वनि उठावे।
प्रथम ध्वनि हर भाषा मे बोलत, अउम अक्षर ओम कहावे।।
जप तप ध्यान रु वेद विहित मत, मन्त्र तन्त्र को सफल बनावे।
रामप्रकाश ओम को ध्यावत, सतगुरू पूरण शब्द लखावे।।२।।
जाग्रत सृष्टि समावत अ अक्षर मे, स्वप्न सृष्टि उ मे समावे।
सुषुप्ति सृष्टि म मे विलावत, अउम की ध्वनि ओम बनावे।।
उत्पति स्थिति प्रलय कारण, निःशब्द भी ओम बतावे।
रामप्रकाश त्रिगुण त्रिपुटी, ओम से आय रु वाही समावे।।३।।
मात्रा अकार रजोगुण पूरक, ब्रह्मा ब्रह्मण्ड कर्म कमावे।
उकार सतोगुण विष्णु विश्व रत, पालन पोषण काम चलावे।।
मकार तमोगुण शिव कल्याणक, तीन गुणों मयी ओम रचावे।
अर्ध बिन्दू मायावृत चेतन, रामप्रकाश स्थूल चलावे।।४।।
अकार रजोगुण सृष्टि उत्पन्न, उकार सतोगुण पालन हारा।
मकार तमोगुण सृष्टि सँहारक, अर्धबिन्दु साक्षी है सिरजण वारा।।
ओम अक्षर है सृष्टि का वाचक, ध्यानी के जप का मूल आधारा।
श्वासोश्वास में रामप्रकाश है, जपे तपे भवसागर पारा।।५।।
ओम शब्द है सृष्टि का वाचक, त्रिगुण से त्रयलोक रचावे।
सोहम् शब्द है श्वास का वाचक, शूक्ष्म सृष्टि का प्राण मनावे।।
राम शब्द रमणीय है रमता, चेतनता सब माहि दिलावे।
रामप्रकाश में तीन ही एक है, श्वासोश्वास जपे फल पावे।।६।।
ओम ही सोहम् सोहम् राम है, तीनों तादात्म्य ज्ञान विचारा।
ओम है वैदिक विश्व मूल में, सृष्टि चक्र का मूल आधारा।।
सोहम् प्राण है जीवन तत्व में, रमता राम है सकल सहारा।

रामप्रकाश यह एक स्वरूप है, सुमिरण किये ते हो भव पारा ।।७।।
ओम स्थूलता सृष्टि उपावत, जड तत्व गुण मेल मिलावे ।
सोहम् श्वास उपावत चेतन, घट मठ व्यापत शूक्ष्म भावे ।।
रमणीय रमता राम है जीवन, एक स्वरूप से कारण गावे ।
रामप्रकाश जो मनोयोग से, जपे तपे मन कामना पावे ।।८।।
अकार उकार मकार है ओम की, अर्धबिन्दु साक्षी रह जावे ।
त्वँ ततपद असीपद सोहँ, तुरिय साक्षी भाव कहावे ।।
रकार अकार मकार है राम ही, ररँकार ध्वनि उपजावे ।
रामप्रकाश है एक स्वरूप में, साक्षी को जान परम पद पावे ।।९।।
ओम स्थूल भौतिक सृष्टि कर, सामान्य विज्ञान चेतनता लावे ।
सोहम् शूक्ष्म सृष्टि सचेतक, विशेष भाव से जीव जगावे ।।
रमता राम है व्यापक पूरण, ओम सोहम् का प्राण कहावे ।
रामप्रकाश ध्यावे सत राम ही, द्वितीया भ्रम को दूर भगावे ।।१०।।
ओम अकार विश्व मधि व्यापक, त्रिगुण सहित है साक्षी सोई ।
सोहँ श्वास का साक्षी स्वरूप है, सृष्टि आधार कुटस्थ है वोई ।।
रमणीय राम रमे सब भीतर, ओम रु सोहँ का प्राण सँजोई ।
बैठ एकान्त रटो निशिवासर, रामप्रकाश निस्तारक होई ।।११।।
ओ३म रु सोहम् राम है एक ही, सगुण निगुण का मूल कहावे ।
रमणीय रमता राम है सोहम्, सकल सृष्टि का प्राण जगावे ।।
स्थूल रु शूक्ष्म कारण ओम ही, पिण्ड ब्रह्मण्ड में व्यापक गावे ।
रामप्रकाश सब मत मतान्तर, भाषान्तर मे ओम को गावे ।।१२।।
ओ३म जपो चाहै सोहम् को जप, राम रणुकार रट ध्यान लगावो ।
तन मन वाणी रु सुरत निरत को, सँयम कर गुरु ध्यान को ध्यावो ।।
बैठ एकान्त एकाग्रचित्त से, त्राटक साधन जप दृढावो ।
रामप्रकाश सहज के साधन, माग मुक्ति के जाय समावो ।।१३।।
सृष्टि में शक्ति वर लोह प्रबल है, लोह ते प्रबल अग्नि तपावे ।
अग्नि ते बलवन्त जल को जानिये, जल ते मानव प्यास बुझावे ।।
मानव से मृत्यु है प्रबल, मृत्यु से हरि जप काल भगावे ।
रामप्रकाश अनमोल सन्देश यह, नाम जपे ते परम फल पावे ।।१४।।
ओम रु सोहम् सुमिरण पथ्य है, पावन तन मन प्राण आचारा ।
पवित्र आसन जीवन विधि मय, वैदिक मन्त्र है शुद्ध विचारा ।।
सरल है राम को नाम सभी विधि, उलट सुलट जप बीज भू डारा ।
रामप्रकाश सन्त वाणी पुकारत, नाम सुमिरण ते हो भव पारा ।।१५।।
ओम ही सोहँ सोहँ ओम ही, सोहँ ओम सो एक भनावे ।
ओम है राम ही राम है ओम ही, सोहँ राम सो एक कहावे ।।
श्वासोश्वास रु लोम विलोम ही, नाम बिना दम खाली ना जावे ।
रामप्रकाश रटे नित गुरू मुख, सोई भक्त निज नाम कमावे ।।१६।।
अचलोत्तम सतगुरू से प्राप्त, प्रणव मन्त्र संग सोहम् पाया ।

हंसों सोहम् सोहम् हम सो, उलट पलट के रट लाया।।
ततत्वँपद शोधन असीपद, श्वासोश्वास में सो गाया।
रामप्रकाश सहज कर साधन, गुरू गम में आप समाया।।१७।।
योगी जपे नित ओम अर्ध बिन्दु, तीन मात्रा त्रिगुण त्यागे।
तत त्वंपद और अस्सीपद, ज्ञानी सोहम् स्वरूप में लागे।।
रमणीय रमता रंरकार सो, राम भक्त घट हरदम सागे।
ध्यानी ज्ञानी भक्त जपे नित, रामप्रकाश हरदम अनुरागे।।१८।।
शास्त्र पढे पर अर्थ न जानत, दोय पाँव के पशु कहावे।
अकार अज अक्षर रजोगुण, उकार विष्णु सतो बतावे।।
मकार तमो शिव आप सदा शुभ, चन्द्र माया का रूप सुहावे।
बिन्दु चेतन सत्य कुटस्थ सो, रामप्रकाश ब्रह्मात्म ध्यावे।।१९।।
ओम शब्द को धनुष बना कर, प्राण त्वँचा को खैंच चढावो।
जीवात्म शर से लक्ष्य करो नित, ब्रह्म तन्मय बिन्दु को ध्यावो।।
इमि होय जीव ब्रह्मातम एक भये, जनम मरण दुःख मूल मिटावो।
रामप्रकाश यों श्रुति ररे वर, एक ब्रह्म के बीच समावो।।२०।।

।। क्षर, अक्षर, निरक्षर का निरूपण ।।

भौतिक सृष्टि दिखाय नाना विधि, होय विलाय सो क्षर कहावे।
अपर माहि सता दरसावत, सो सत चित परब्रह्म सुहावे।।
क्षर निरक्षर बोध करावत, सो अक्षर अभि भूत रहावे।
रामप्रकाश अवाच्य अनाक्षर, सो सब माहि पूरण भावे।।१।।
क्षर अपरब्रह्म एक समान ही, भौतिक सृष्टी का रूप दिखाता।
स्थूल शूक्ष्म कारण रूप से, नाना सिद्धान्त मतवाद बनाता।।
खण्डन मण्डन नश्वर माया वृत, वाद विवाद विशेष बढाता।
रामप्रकाश अविद्या कृत मण्डन, होय मिटे बहु रूप विधाता।। २।।
निरक्षर अनाक्षर सत चित आनन्द, कारण कार्य नहीं आप अघाता।
अचल अखण्ड अपार अनूपम, अद्रश्य अरूप पूर्ण परित्राता।।
अटल अगोचर गुण इन्द्रिय बिन, निष्प्रह सो निर्लेप अजाता।
रामप्रकाश परब्रह्म लखावत, मन वाणी गति सर्व विलाता।।३।।
अक्षर आप शब्दब्रह्म रूपक, क्षर निरक्षर भेद बतावे।
शास्त्र दृष्टान्त सिद्धान्त लखावत, मत मतान्तर भेद लखावे।।
द्विपक्ष द्रष्ठा जड़ चेतन के बिच, अपना अस्तित्व खूब जमावे।
रामप्रकाश अगोचर गोचर, होय अलोप अरूप समावे।।४।।
परब्रह्म निर्गुण अपर ब्रह्म सर्गुण, माया मय और रहित कहावे।
दोहू को बोध करावत अक्षर, ब्रह्म अद्रश्य अरूप रहावे।।
निर्गुण सँग मे ध्वन्यात्मक रहवत, सर्गुण सँग दोहू रूप धरावे।
रामप्रकाश वह शब्दब्रह्म पूरण, समर्थ के बिन ज्ञान ना आवे।।५।।

।। अकारादि,वंश,कला ।।

र अक्षर अग्नि वँश दायक, परशुराम कल तीन उपावे।

अ अक्षर है ज्ञान प्रभाकर, द्वादश कला मय राम रमावे।।
म अक्षर है शशि वँश कर, तीन कला कर कृष्ण रचावे।
रामप्रकाश मानव वँश तीन ही, रमणीय रमता राम कहावे।।१।।
रकार अक्षर अग्नि का वाचन, मानव वँश त्रय कला आधारा।
अकार अक्षर सूर्य का वाचक, मानव वँश की बारह कल वारा।।
मकार अक्षर चन्द्र वँश का वाचक, ध्वनि में रमणीय राम उचारा।
ओम सोहम् में रामप्रकाश है, कण कण मे रमें सो राम पुकारा।।२।।
अग्नि के वँश में परशुराम है, वड़वा जठर भूमा कल वारा।
सूर्य के वँश में रामचन्द्र हुए जो, द्वादश सँक्राँति की कला सुधारा।।
चन्द्रवँश में कृष्ण हुए जब, सोलह कला सम्पन हो सारा।
रामप्रकाश ये त्रय वँश मानव, त्रिगुण मय यह त्रय अवतारा।।३।।

।। वेदान्त क्या है ? ।।

कर्मकाण्ड से मानव जीवन, करे यज्ञादि व्यवहार चलावे।
ईश्वर उपासना करे व्रत धारण, मोक्ष हितार्थ वृत्ति बनावे।।
व्यवहारिक ज्ञान जगत में जीवन, कुल कुटुम्ब सँग जैसे रहावे।
रामप्रकाश यथार्थ के बिन, चार वेद सो यही बतावे।।१।।
वेद के अन्त मे उपनीषद् भाषत, ऋषि मुनि गुरू ज्ञान बतावे।
व्यवहारिक जीवन शुद्धिकरण पर, परम यथार्थ हेतु लखावे।।
सर्व प्रपँच की निवृति पाय के, परम पुरुषार्थ मोक्ष को पावे।
रामप्रकाश यह ऐसे सिद्धान्त को, परम ज्ञान वेदान्त लखावे।।२।।

।। सत चिद आनन्द का अर्थ।।

त्रिकाल अबाध्य जो घटे न बढे, सत्य वही सन्त ग्रन्थ बतावे।
चित चेतावत घट मठ पूरण, चेतन व्यापक एक रहावे।।
काल रु कर्म से रहित उपाधि के, आनन्द त्रिकाल अभेद सुहावे।
रामप्रकाश सच्चिदानन्द आतम, परम ब्रह्मानन्द सोई कहावे।।१।।
देश रु काल से वस्तु परिच्छेद के, रहित होय हरदम परसावे।
चन्द्र सूर्य रु तारा मण्डल भी, होय प्रकाशित ताहि दिखावे।।
सर्व प्रकाशक नाद बिन्दु बिच, अलुप्त प्रकाश है सोई कहावे।
रामप्रकाश है ब्रह्म अगोचर, त्रिकाल त्रिलोक मे एक रहावे।।२।।

।। सृष्टि उत्पति का उद्देश्य ।।

बीज अनन्त पुहुमी पर पतित, समय बिना नही पुष्पित होवे।
त्योंहि जीव रु जग की उत्पति, पृकृति नियम समय पर जोवे।।
कर्म परिपक्क होवत है तब, रोक सके नहीं विधि बल खोवे।
रामप्रकाश है सामर्थ बीज में, एक अनन्त अनन्त इक खोवे।।१।।
वृक्ष के बीज रु डाल पते सब, पृकृति रचना अजब निराली।
पल्वित सामर्थ सब में होवत, विधि विज्ञान में देखी है आली।।

ऐसे ही जीव के कर्म शक्ति बल, कभी कहीँ फल पल्वित डाली।
रामप्रकाश हो ईश इच्छा तब, पृकृति जीव कर्म जाय न ठाली।।२।।

।। सृष्टि उत्पति क्रम ।।

चेतन शुन्य परब्रह्म बिन्दु ते, महतत्व चन्द्र का हुआ पसारा।
ताहि ते त्रिगुण अपर ब्रह्म भाषित, रजो सतोतम हुआ हँकारा।।
सतो ज्ञानेन्द्रिय रजो कर्मेन्द्रिय, तमो से पँच तत्व की धारा।
रामप्रकाश यूँ शब्द ब्रह्म से, ज्ञान विज्ञान से सृष्टी विचारा।।१।।
सतोगुण ते ज्ञानेन्द्रिय उत्पन, रजोगुण ते कर्मेन्द्रिय धारा।
तमोगुण ते पँच तत्व सृष्टी, ओमकार से हुआ पसारा।।
गुण प्रभाव से इन्द्रिय सम्बन्ध जु, ज्ञान कर्म का जाल विचारा।
रामप्रकाश अपँचीकृत में, पँचीकरण का जोड़ सम्भारा।।२।।
श्रोत्र वाक नभ ते सम्बँध जु, त्वचा पाणी सँग वायु विचारा।
चक्षु पाँव तेज सँग में, जिभ्या उपस्थ जल से सारा।।
घ्राण गुदा भूमि सँग सम्बध, ज्ञान कर्म तत्व मिल धारा।
रामप्रकाश सृष्टि क्रम उत्पन्न, ओमकार का सकल पसारा।।३।।
परब्रह्म निर्गुण निरालेप से, प्रकृति गुण अपरब्रह्म सारा।
युगल बोधक इन्द्रीय तत्व से, उत्पन्न शब्द ब्रह्म किया पसारा।।
सृष्टि क्रम वेदान्त पुकारत, सन्त सिद्धान्त की वाणी पुकारा।
रामप्रकाश विवेक विचारक, पावत परमानन्द अपारा।।४।।
यही सृष्टी उपक्रम उत्पन्न, विपरीत याहि विधि प्रलय धारा।
इन्द्रिय तत्व मे तत्व गुण में, त्रिगुण प्रकृति मे उपसँहारा।।
प्रकृति महतत्व मे पूरण, हो तादात्मय ब्रह्म सम्भारा।
रामप्रकाश यह युक्ति रसील को, जानत सन्त ज्ञानी जन सारा।।५।।
उत्पन्न सम्पादन प्रलय होवत, समय समय पर गतिमय भारा।
ईश इच्छा रु सृष्टि काल मय, जीवों के परिपक्क कर्म हो सारा।।
सब ही मेल होवे तब क्रमश, उत्पन्न प्रलय होय विचारा।
रामप्रकाश विवेक विचारक, पावत परब्रह्म आनन्द कारा।।६।।
प्रकृति से गुण प्रभावित, गुणाश्रित प्रक्रिया होवत जाई।
सतो ज्ञानेन्द्रिय रजो कर्मेन्द्रिय, पाँच तत्व ते इन्द्रीय पसाई।।
जाहि तत्व ते उत्पन्न इन्द्रिय, ज्ञान कर्म के मेल विहाई।
रामप्रकाश सम्बन्ध चराचर, परस्परता से सृष्टि रचाई।।७।।
पर पिता गुण पिता में आवत, पिता का अँश पुत्र ज्यों धारा।
याहि विधि से सृष्टि गुणधारक, प्राकृतिक अँश आरोपित सारा।।
गुण प्रभाव ज्ञानेन्द्रिय आवत, ताहि ते कर्मैन्द्रिय होय विचारा।
रामप्रकाश सम्बन्ध परस्पर, सृष्टि उपक्रम होत सँहारा।।८।।
परब्रह्म की सता परमार्थिक, पृकृति अपरब्रह्म होत पसारा।
व्यापक एक अगोचर पूरण, बोधक शब्द ब्रह्म होवत सारा।।
परम सता सो सत चित आनन्द, सब रस पूरण एक आधारा।

रामप्रकाश निराश्रित चेतन, अधिष्ठान परब्रह्म सोई विचारा ।।९।।
माया गुणाश्रित सो परिवर्तन, तीन हूँ काल बदलती जावे ।
याते सन्त जन मिथ्या मानत, अस्थिर होय के रूप दिखावे ।।
अधिष्ठाता ब्रह्म के आश्रित छाया, क्षण क्षण में बदलावत आवे ।
रामप्रकाश यह माया परिणाम से, सृष्टि नाना भाति रचावे ।।१०।।
ब्रह्मा कल्प पर नित्य प्रलय होवत, अर्ध आयु नैमित्तिक कहावे ।
ब्रह्मा आयु जब होय समापन, महाप्रलय तब धूम मचावे ।।
तीन प्रलय सृष्टि महि व्यापत, चतुर्थ ज्ञानी के हेतु बतावे ।
रामप्रकाश कारण कार्य लय, जरा मरण में फेर न आवे ।।११।।

।। अनुबंध का कथन ।।

अनुबन्ध में अनुबन्धित हुए बिन, अधिकारी विषय को बोध न पावे ।
सम्बध जिज्ञासु नाही हुए तब, आप प्रयोजन कैसे ही ध्यावे ।।
बिना फल की सिद्धि हुए तब, ब्रह्मनिष्ठा द्रढ कैसे लखावे ।
रामप्रकाश अनुबन्ध बिना सन्त, शास्त्र सिद्धान्त मखोल मचावे ।।१।।
प्रथम अधिकारी योग्यता धारक, विषय वस्तु गत भेद को जाने ।
विषय वस्तु से अधिकारी का, कैसा? क्यों? का उतर छाने ।।
फल प्राप्ति क्यों का उतर लेना, प्रयोजन यह कारण माने ।
रामप्रकाश जो कार्य वाहक, अनुबन्ध वेदान्त में चार बखाने ।।२।।
मानव को लक्ष्य है मुख्य प्रयोजन, मुख्य पुरुषार्थ मोक्ष है भाई ।
सतसँग कर ले ज्ञान परमार्थ, ब्रह्मवेता सतगुरू की शरणाई ।।
श्रवण मनन और निदिध्यासन, चित के भीतर ठीक जमाई ।
रामप्रकाश ले ब्रह्म को चिन्तन, चित के भीतर चित समाई ।।३।।
जड रु चेतन दोहूँ गुण राखत, आप अरूप अखण्ड अपारी ।
अक्षय अनन्त अभय गुण पूरण, भेद अभेद सब ही करवारी ।।
विषय सम्बन्ध प्रयोजन सब ही, ज्ञान अज्ञान रु सो अधिकारी ।
रामप्रकाश यह है दुभाषिया जु, खोलत सर्गुण निर्गुण भेद विडारी ।।४।।
मुख ते कहै मै ब्रह्म तूँ ब्रह्म, कहने से कोई ज्ञान न होवे ।
क्रिया हीन उपोद्घात बिन, अधिकारी भी कुछ समझ न जोवे ।।
चार अनुबन्ध को पाये बिना नही, विकृत मति ते आचरण खोवे ।
रामप्रकाश व्यवहार सिद्धि बिन, केवल बात से थूक बिलोवे ।।५।।
कृषि हल जोत बीज बोये बिन, कर्म का फल अन्न नही थावे ।
चूल्हा आटा साधन के बिन, रोटी भोजन नही पकावे ।।
ऐसे ही अनुबन्ध बिना, मुख से कहै ब्रह्म नही पावे ।
रामप्रकाश शुभ साधन गुरू बिन, अध्यात्म तत्व अनुभव नही आवे ।।६।।
बिना अनुबन्ध वेदान्त पढे घन, या कोई शास्त्र पढावत आह ।
अन्ध के आगल दर्पण दे कर, रूप को ज्ञान करावत ताहि ।।
बिना अधिकार पढे रु पढावत, सो कहुँ निश्चल पावत राहि ।
रामप्रकाश ज्ञानी जन जानत, बिन अधिकार न होय भलाई ।।८।।

१-अधिकारी

श्रद्धा युत सतसँग विश्वास हो, हृदय विवेक साधन उपजावे।
शम दम से उपराम वृति कर, तितीक्षा रत वैराग्य जगावे।।
तीव्र मोक्ष की इच्छा धारण, मुमुक्षता युत सतगुरु ढिग जावे।
रामप्रकाश यह अनुबन्ध प्रथम, अधिकारी उतम सो कहलावे।।१।।

२ -विषय

कारण कार्य रहित क्या? वस्तु है, केवल कारण क्या? है भाई।
कारण सहित कार्य क्या? होवत, केवल कार्य कौन? कहाई।।
वेदान्त विषय का मुख्य विवेचन, ज्ञानी गुरू बिन है कठिनाई।
रामप्रकाश यह अनुबन्ध द्वितीय, उतम अधिकारी मन शँका आई।।२।।

३ -सम्बध

जीव ईश्वर माया ब्रह्म क्या है, निर्णय स्वरूप हेतु क्या भाई।
कारण प्रक्रिया रु उपादान जु, जिज्ञासा मन ही उपजाई।।
अधिकारी का विषय रु सम्बन्ध, तत्व उपनीषद् वेदान्त लखाई।
रामप्रकाश यह अनुबन्ध तृतीय, उतम अधिकारी खोजत आई।।३।।
अधिकारी का क्या उद्देश्य, क्यो इतना पुरुषार्थ भावे।
विषय सम्बन्ध के जानन हेतु, साधन उपाय गुरू पहँ जावे।।
सर्व प्रपँच की दुःख निवृति रु, परमानन्द प्राप्ति लक्ष्य बतावे।
रामप्रकाश यह अनुबन्ध चतुर्थ, मुख्य प्रयोजन शान्ति लखावे।।४।।

४ -प्रयोजन

अधिकारी का क्या उद्देश्य, क्यो इतना पुरुषार्थ भावे।
विषय सम्बन्ध के जानन हेतु, साधन उपाय गुरू पहँ जावे।।
सर्व प्रपँच की दुःख निवृति रु, परमानन्द प्राप्ति लक्ष्य बतावे।
रामप्रकाश यह अनुबन्ध चतुर्थ, मुख्य प्रयोजन शान्ति लखावे।।५।।

।। ज्ञान के साधन पर वर्णन ।।

साधन जिज्ञासु के दोय है प्रमुख, श्रद्धा विश्वास युत विवेक पिछानो।
शम दम रु उपराम तितिक्षित, सहित वैराग्य हृदय में आनो।।
विवेक वैराग्य है सँबल सँयुत, या बिन युगल शून्य ही जानो।
रामप्रकाश मुमुक्षता के बिन, विवेक वैराग्य व्यर्थ ही मानो।।१।।
साधन आठ विचार विहीन कहै, ज्ञान के साधन तीन है भाई।
विवेक वैराग्य सँयुक्त मुमुक्षु, गुरू सान्निध्य श्रवण कर जाई।।
बैठ एकान्त मनन कर निश्चय, सतगुरू शास्त्र बात को लाई।
दृढ करो निद्धिध्यासन धारण, रामप्रकाश निश्चय पद पाई।।२।।

।। ज्ञान के साधन।।

प्रथम विवेक सत्यासत्य जाग्रत, हित अनहित के विचार को आने।
उपरति वैराग शमदम बिन व्यर्थ, सो हृदय गत तितिक्षु प्रमाने।।

तृतीय मुमुक्षु पावे जब सतगुरू, साधन तीन अधिकारी के जाने।
रामप्रकाश श्रवणादिक तीन ही, ज्ञान के प्रमुख साधन माने।।१।।
श्रद्धा समाधान बिना शून्य है, विवेक बिना सतसँग बखाने।
शम दमादि बिन वैराग्य शून्य है, याही ते साधन दोय प्रमाने।।
तृतीय साधन मुमुक्षुत्व हो जाग्रत, ज्ञान अधिकारी जीवन माने।
रामप्रकाश जावे गुरु शरण मे, श्रवणादिक सहित ज्ञान जाने।।२।।
विवेक बिना वैराग्य है चक्षु बिन, विरति बिन विवेक पँगु कहावे।
अँध रु पँगुल दोहु मिले जब आपस, जगत ज्वाल से बाहिर आवे।।
मुमुक्षुत्व पुरुषार्थ जाग परे तब, आगिल जीवन हो निरदावे।
रामप्रकाश सतगुरु शरणागत, ज्ञान के साधन मोक्ष पठावे।।३।।
मुमुक्षुत्व बिना है विवेक वैराग्य सो, हर मानव है तृषित दुःख खानो।
हानि रु लाभ से पीड़ित है जन, हर्ष रु शोक मे मानो।।
विवेक वैराग्य होवे तब ही मन, नाहि मोक्ष हित साधन आनो।
रामप्रकाश यही भव भ्रमण, भवसागर भव भीती प्रमानो।।४।।

।। वैराग्य का स्वरूप वर्णन ।।

प्रत्यक्ष प्राप्त वस्तु परित्याग को, त्याग कहे मुनि सन्त बखाने।
लोक परलोक के भोगन की वृति, वासना त्याग वैराग लखाने।।
भेद उपभेद लखे मति सज्जन, विषय उपराम की वृति को लाने।
रामप्रकाश है मुमुक्षु साधन में, द्वितीय आवश्यक साधन माने।।१।।
परम वैराग है पर अपर से भेद, कहे कवि सन्त लखावे।
अपर वैराग है चार प्रकार से, यतमान व्यतिरेक सुनावे।।
एकेन्द्रिय, वशिकार है श्रेष्ठ, गुणात्मक भाव से भेद बतावे।
रामप्रकाश है मुमुक्षु का साधन, या बिन वाचक ज्ञान कहावे।।२।।
प्रयत्न करे पर छूट सके नही, सो यतमान वैराग कहावे।
इन्द्रिय गत विषया छूट रहे पर, कछुक सो व्यतिरेक लखावे।।
इन्द्रिय विषय को त्याग एकेन्द्रिय, मन के सँकल्प होय मिटावे।
रामप्रकाश वशिकार मन इन्द्रिय पर, अपना ही पूर्ण सँयम लावे।।३।।
मानव ब्रह्म को ज्ञान बखानत, त्याग बिना वह वाचक भावे।
देह को त्याग रु गेह को त्याग दे, नेह को त्याग त्रय भेद जनावे।।
तन मन वाणी से वासना त्यागत, वह मुमुक्षु साधन रत गावे।
सतगुरु शरणागत ज्ञान निष्ठ हो, रामप्रकाश ब्रह्मज्ञानी कहावे।।४।।
नाम सहित षट्भ्रम कुलादिक, ममता त्वँता रु अहँता को त्यागे।
विष समान विषयन में वृत हो, मुमुक्षु मोक्ष के महत्व लागे।।
लोक परलोक की वासना त्यागत, देह रु गेह के नेह ते भागे।
रामप्रकाश हो ब्रह्म का चिन्तन, ब्रह्म स्वरुप में हो अनुरागे।।५।।
ज्ञान परोक्ष को कारण विवेक है, यतमान वैराग्य प्रमुख जानो।
लोक आलोक मे यज्ञ तीर्थाटन, ढूँढत ईश्वर को भ्रमण ठानो।।
व्यतिरेक वैराग्य ते अद्रढ होवत, द्वे निष्काम सकाम बखानो।

रामप्रकाश हो चित विक्षेप तो, ज्ञान विधि परोक्ष ही मानो ।।६।।
वासना त्याग उदार भये बिन, साधन ज्ञान विवेक ना जागे ।
विवेक बिना वैराग्य ना होवत, असत्य त्यागत वृति हो आगे ।।
विवेक वैराग्य मुमुक्षु बिन शून्य है, यह तो विषयी जन को भी लागे ।
रामप्रकाश जब होय मुमुक्षुत्व, विवेक वैराग्य सुहावत सागे ।।७।।

धर्म तें बिरति जोग तें ग्याना, ग्यान मोच्छप्रद बेद बखाना ॥
जातें बेगि द्रवउँ मैं भाई, सो मम भगति भगत सुखदाई ॥

श्रीरामचरितमानस

भावार्थ : धर्म (के आचरण) से वैराग्य और योग से ज्ञान होता है तथा ज्ञान मोक्ष का देने वाला है- ऐसा वेदों ने वर्णन किया है। और हे भाई! जिससे मैं शीघ्र ही प्रसन्न होता हूँ, वह मेरी भक्ति है जो भक्तों को सुख देने वाली है॥

।। त्वँपद और ततपद का वर्णन ।।

त्वँपद जीव विवेचन भाखत, देह अवस्था कोशादिक सारे ।
ततपद ईश प्रक्रिया खोलत, वाच्यार्थ सामग्री सार सँभारे ।।
जीव रु ईश वाच्यार्थ त्यागत, लक्ष्यार्थ असीपद तत विचारे ।
रामप्रकाश तुरियपद चेतन, तुरियातीत स्वरूप उचारे ।।१।।
त्वँपद जीव रु ततपद ईश्वर, लक्ष्यार्थ असीपद ज्ञान विचारे ।
साक्षी द्रष्टा चेतन तुरियपद, तुरियातीत अधिष्ठान उचारे ।।
चार हि पद परमार्थ शोधन, परम पुरुषार्थ ज्ञान सँभारे ।
रामप्रकाश जो परम जिज्ञासु जन, ज्ञानी सतगुरू आप अपारे ।।२।।
ततपद ईश्वर तत्व मायावृत, गुणात्मक भाव से सृष्टि रचावे ।
त्वँपद जीव अविद्या मिल जावत, श्वासोश्वास से देह चलावे ।।
असीपद महतत चेतन के सँग, साक्षी सोहम् लक्षार्थ गावे ।
रामप्रकाश हो व्यापक चेतन, शूक्ष्म सृष्टि का खेल रचावे ।।३।।
त्वँपद जीव की वाचक प्रक्रिया है, ततपद ईश्वर की वाचक धारा ।
असीपद है जीवेश्वर लक्ष्यार्थ, ध्वनीमय सच्चिदानन्द उचा्रा ।।
सोऽहम् स्वरूप निजातम सोई, ज्ञानी जन का प्राण आधारा ।
रामप्रकाश है श्वास का साधन, जानत मानत मोक्ष मँझारा ।।४।।
अविद्या की रात अज्ञान अँधेर में, मोह की नीन्द में जीव भ्रमावे ।
सतगुरु आय के शब्द सुनावत, जीव जगाय के ब्रह्म मिलावे ।।
सत रु चित के दोय विशेषण, ब्रह्म के आनन्द मांहि समावे ।
रामप्रकाश यों जीव वाच्यार्थ, त्याग के लक्ष के बीच विलावे ।।५।।

।। जीव का स्वरूप और अष्ठ पुरी ।।

अन्तःकरण ज्ञानैन्द्रिय सतो सृष्टि, प्राण कर्मैन्द्रिय राजस जानो ।
अज्ञानावृत तन्मात्रा पँच, तामस सँग चिदाभास मिलानो ।।
यही जीव जो कर्म करे भव, त्रिविध भोगत जन्मान्तर खानो ।
रामप्रकाश समझे यह ज्ञानी सो, गूढ रहस्य वेदान्त खजानो ।।१।।
पँच ज्ञानैन्द्रिय पँच कर्मैन्द्रिय, प्राण पँच तन्मात्रा पावे ।
चार अन्तःकरण चौवीस तत्व सँग, चिदाभास पचीसवाँ आवे ।।

चेतन के आभास मिले सँग, साँख्य शास्त्र यौं जीव बतावे।
रामप्रकाश गीता से प्रमाणित, ज्ञानी समझे युक्ति लावे।।२।।
पाँच ज्ञानैन्द्रीय पाँच कर्मेन्द्रीय, पँचप्राण अँत:करण जो चार कहावे।
एक अज्ञान यह पाँच कोटड़ी सो, प्राकृतिक रचना कुटस्थ मिलावे।।
सँचित कर्म क्रियमाण वासना, जीव कल्पित मय जीव रचावे।
रामप्रकाश यह अष्ठपुरी मिल, आवागमन के भव भ्रमावे।।३।।
पाँच कर्मैन्द्रिय पाँच ज्ञानेन्द्रिय, प्राण पाँच अन्त:करण चारा।
अज्ञान सहित प्रकृति गत, पाँच ही पुरी शुक्ष्म तन धारा।।
सँचित कर्म रु क्रियमाण सो, वासना सहित ये तीन पसारा।
रामप्रकाश यह अष्ठपुरी मिल, जनम मरण का कारण सारा।।४।।
अष्ठपुरी सँग चिदाभास मिल, कुटस्थ सँग यह जीव बखाना।
शूक्ष्म देह में चिदाभास मिल, जीव स्वरूप कहत हम जाना।।
सतरह तत्व मे चिदाभास से, अविद्या विशिष्ट चेतन माना।
रामप्रकाश वेदान्त बखानत, जीव स्वरूप विभिनन्ता नाना।।५।।
चिदाभास का अधिष्ठानी कुटस्थ वो, ब्रह्म नही पर ब्रह्म समाना।
जनम मरण रु हर्ष शोक यह, चिदाभास को होवत ज्ञाना।।
चिदाभास निज अधिष्ठानी जानत, अपने आप का देखत बाना।
रामप्रकाश चिदाभास बखानत, कुटस्थ ब्रह्म का रूप बखाना।।६।।
पाँच ज्ञानैन्द्रिय पाँच कर्मैन्द्रिय, पाँच ये प्राण अन्तःकरण चारा।
पाँच तन्मात्रा रु चार दिग्पाल ही, दोय श्रवण मिल तीस विचारा।।
पाप रु पुण्य कर्म करे यह, परलोक ग्वाह बने यह सारा।
रामप्रकाश चिदाभास ये भोगत, सुख दुःख नर्क स्वर्ग सँसारा।।७।।
स्वर्ग रु नर्क मे लाख चौरासी है, चार खाणी बहु बार भोगावे।
आवागमन जन्म रु मरण में, सुख रु दुःख का अनुभव पावे।।
इन्द्रियन द्वार ते भोग को भोगत, अन्तःकरण को साक्ष्य लावे।
रामप्रकाश चिदाभास यह भोगत, आवागमन मे आवे रु जावे।।८।।
पाँच तन्मात्रा धुरी रथ कारण, ज्ञानैन्द्रिय द्वार ते अनुभव लावे।
कर्मैन्द्रिय सेवक सेवा में हाजिर, पाँच विषय का स्वाद चखावे।।
वाहन प्राण पाँच है रथ के, अन्तःकरण थित कुटस्थ गावे।
या रथ ऊपर चिदाभास चढ, रामप्रकाश बहु मौज मनावे।।९।।
ज्ञाता ज्ञान रु ज्ञेय जानलो, ध्याता ध्यान रु ध्येय गनावे।
भोगता भोग रु भोग्य तीन ये, कर्ता करण रु क्रिया गनावे।।
चित कुटस्थ के चिदाभास में, नाना भाव स्वभाव दिखावे।
रामप्रकाश यह बारह स्वरूप में, सृष्टि सँसृति सँसार कहावे।।१०।।
ब्रह्म अनीह अरूप अखण्डित, निष्प्रह व्यापक एक रहावे।
सत चित आनन्द सर्व कला युत, रमता राम ते सर्व उपावे।।
ब्रह्म नही पर ब्रह्म समान ही, कुटस्थ नाम से चित कहावे।
रामप्रकाश आभास प्रदर्शन, चिदाभास सोई आप कहावे।।११।।

किरण रवि तादात्म्य भाव में, भिन्नाभिन्न अद्भूत निसानी।
कुटस्थ ब्रह्म नही ब्रह्म समान ही, युक्ति तादात्म्य वेद लखानी।।
अन्योन्याश्रित ताहि कला, सोई चिदाभास बखानी।
रामप्रकाश उतम गुरू भाषित, वेदान्त माँहि सिद्धान्त कहानी।।१२।।
ब्रह्म नही पर समान प्रतीत हो, कुटस्थ कहै वेदान्त परमानी।
तू है सो मै हूँ मै हूँ सो तू है, कुटस्थ कहत है यह बानी।।
तेरे मेरे में अन्तर जरा नही, चिदाभास की रव यही बखानी।
रामप्रकाश निज ज्ञान होने पर, ब्रह्मवेता सो वही ब्रह्मज्ञानी।।१३।।

।। जीव के तीन शरीर ।।

पाँच तत्व पचीस पृकृति मिल, स्थूल देह को मेल मिलावे।
दस इन्द्रीय प्राण पँच मन बुद्धि, तेरह तत्व सो शूक्ष्म बतावे।।
एक अज्ञान की सर्व शक्ति मिल, कारण शरीर सब को उलझावे।
रामप्रकाश कुटस्थ चिदाभास ते, मिले भिले तब सृष्टि रचावे।।१।।
पाँच तत्व पच्चीस प्रकृति की, प्रक्रिया से स्थूल शरीर रचाया।
मन बुद्धि आदि सतरह तत्व से, अष्ठपुरी शूक्ष्म तन पाया।।
सकल का कारण एक अज्ञान ही, कारण शरीर सो कहलाया।
रामप्रकाश कह तीन देह का, यह सरल भेद समझाया।।२।।
पाँच तत्व है तामस उत्पति, जिसने स्थूल शरीर रचाया।
पाँच कर्मेन्द्रियाँ पाँच प्राण यह, रजोगुण से परचाया।।
पाँच ज्ञानेन्द्रिय, चार अँत:करण सतोगुणी है, यह शूक्ष्म देह की माया।
रामप्रकाश याहि विधि से, त्रिगुण द्वारा रची काया।।३।।
स्थूल देह के द्वार ते शूक्ष्म, इद्रिय ते शूक्ष्म अति मन मनावे।
मन ते शूक्ष्म बुद्धि अति शूक्ष्म, बुद्धि ते शूक्षम चित बतावे।।
चित ते शूक्ष्म अतिशय शूक्ष्म, कुटस्थ आतम चिद् सुहावे।
रामप्रकाश सो अतिशय गोप्य है जो, कष्ट साध्य ते काहू लखावे।।४।।

।। पँच कोश का निर्णय ।।

अन्नमय कोश स्थूल शरीरगत, प्राणमय बिन रहण न पावे।
अन्न प्राण दो ब्रह्म समान है, सत्य उपनीषद् यह खोल बतावे।।
मनोमय विज्ञानमय शूक्ष्म तन में, आनन्दमय कोश कारण तन पावे।
रामप्रकाश कोश पँच का निर्णय, सन्त वेदान्त यह सत्य लखावे।।१।।

।। अवस्था ज्ञान ।।

हानि लाभ रु सुख दुःख सँशय, सुषोप्ति में नाहि दिखावे।
प्रज्ञा में बास करे जो प्राज्ञ, जीव सभी सुख अनुभव पावे।।
अज्ञान दशा कृत आनन्द पावत, तृतीय अवस्था यही रहावे।
रामप्रकाश तत्व बिन साधन, अवस्था ज्ञान वेदान्त बतावे।।१।।

।। ईश्वर के तीन शरीर ।।

स्थूल शरीर समूह जीवन के, मिल कर ईश्वर का वैराट कहावे।
शूक्ष्म शरीर के समूह तत्वन ते, ईश्वर का हिरण्यगर्भ बनावे।।

समूह जीवन कारण शरीर ते, आव्यकृत ईश्वर देह बतावे।
रामप्रकाश अधिष्ठान महाकारण, साक्षी परब्रह्म आप रहावे ।।१।।
कारण समष्ठि सँग कुटस्थ से, आव्यकृत ईश प्रक्रिया मानी।
समष्ठि शूक्ष्म से व्यष्ठि हिरण्यगर्भ, ईश्वर देह वेदान्त से जानी ।।
समष्ठि स्थूल से व्यष्टि वैराट हो, सर्व ऐश्वर्य युक्त यह खानी।
समष्ठि बून्द मिले सिन्धु व्यष्ठि में, रामप्रकाश वेदान्त की बानी ।।२।।
अज्ञान स्वरूप को कारण शरीर ही, समष्टि मिल आव्यकृत देह कहावे।
अशुद्ध समूह ते व्यष्टि बने शुद्ध, आश्चर्य जनक यह शँका उपावे ।।
लोह मिले जब पारस से तब, नाली को नीर गँग जाय मिलावे।
रामप्रकाश सिन्धु बून्द मिले तब, सहज ही जीव परमानन्द पावे ।।३।।

माया ईस न आपु कहुँ, जान कहिअ सो जीव।
बंध मोच्छ प्रद सर्ब पर, माया प्रेरक सीव॥

(श्रीरामचरितमानस)

भावार्थ : जो माया को, ईश्वर को और अपने स्वरूप को नहीं जानता, उसे जीव कहना चाहिए। जो (कर्मानुसार) बंधन और मोक्ष देने वाला, सबसे परे और मायाका प्रेरक है, वह ईश्वर है॥

।। ईश्वर की अष्टपुरी ।।

वैराट हिरण्यगर्भ देह ईश के, इन्द्रिय देव शुक्ष्म कोश बतावे।
उत्पति स्थित्यादि अवस्था कालहू, वैश्वानरादि अभिमानी गावे ।।
शुद्ध सतो माया देश है, त्रिगुण वस्तु तत्पर पावे।
समष्ठी सृष्टि की प्रक्रिया मिलकर, ईश व्यष्टि अष्टपुरी कहावे ।।१।।
तीन शरीर रु पांच कौश है, तीन अवस्था त्रय अभिमानी।
देश काल रु वस्तु सम्बोधन, सताइस तत्व की अष्ठपुरी मानी ।।
जीवन की जो सृष्टि समष्टि जु, मिले व्यष्टि ईश्वर की तब जानी।
रामप्रकाश प्रक्रिया वेदान्त की, जान के ले सो होवत ज्ञानी ।।२।।
आव्यकृत वैराट हिरण्यगर्भ, तन त्रिगुण की वस्तु होवे।
जीव समष्टि के इन्द्रिय देव मिल, पंच कोश शूक्ष्म मिल सोवे ।।
उत्पत्ति स्थिति प्रलय व्यष्टि लख, काल अवस्था ईश की जोवे।
विश्व सूत्र अन्तर अभिमानी है, शुद्ध सतो माया देशोवे ।।३।।
समष्टि विश्व चौदह भुवन सो, त्रिगुणात्मक त्रय लोक कहावे।
चतुर्थ पाद वैराट अन्तर्गत, पूर्ण त्रिपाद भरपूर रहावे ।।
सर्व समर्थ ब्रह्म शक्तिमान है, ज्योतिर्मान सत चित सुहावे।
रामप्रकाश है आनन्द निर्मल, अद्वय शुद्ध स्वरूप मनावे ।।४।।

।। दोहा ।।

त्वंपद है जीव का, तत्पर ईश्वर जान।
सम्बोधन यहि को कहै, भिन्नाभिन पहिचान ।।१।।
अष्ठ पुरी यह ईश की, समष्टि व्यष्टि होय।
रामप्रकाश पृकृति रचे, नियन्ता स्वामित्व जोय ।।२।।

।। जीव और ब्रह्म् में भेद ।।

जीव रु ब्रह्म् में भेद जरा जिम, जल से बर्फ की भाति सो जानो।
जब गाँठ रहे तब बर्फ कहे अरु, ठण्ड घुली जल रुप पिछानो।।
अज्ञान की गाँठ रहे तब जीव कहे, अज्ञान रहित हो ब्रह्म ही मानो।
रामप्रकाश नही भेद जरा, गुण के भेद की उपाधि को हानो।।१।।
सुद्ध सतोगुण अँत:करण माहि, कुटस्थ आभास से है चिदाभासी।
वाहि ते चेतत ज्ञानैन्द्रिय सो, कर्मेन्द्रियादि हो चेतन तासी।।
ब्रह्म नही परब्रह्म समान ही, शुद्ध सात्विक प्रति भासित रासी।
रामप्रकाश अध्यस्त सता सत, एक ते एक ही होय प्रकासी।।२।।
जीव प्रक्रिया ज्ञान कहावत, अष्ठपुरी गुण भेद बतावे।
जीव सृष्टि मय ताप तपावत, नाना प्रपँच माहि आप फँसावे।।
ईश प्रक्रिया विज्ञान कहावत, पिण्ड ब्रह्मण्ड की सृष्टि रचावे।
रामप्रकाश या ज्ञान विज्ञान ते, आगे बढे तब ब्रह्म लखावे।।३।।
काम रु काल क्लेश रु कर्म से, लिप्त हो करजीव भोगावे।
कर्म क्लेश रु काल ओ काम से, रहे निर्लिप्त सो ईश्वर गावे।।
जीव ईश्वर की यह पहिचान है, कहै वेदान्त सन्त यों पावे।
रामप्रकाश समर्थ है ईश्वर, असमर्थ जीव परमार्थ छावे।।४।।
तीन शरीर रु अवस्था तीन हूँ, पँचीकरण का जो विस्तारा।
देश रु काल में वस्तु विशेष हूँ, जीव रु ईश्वर माया तत धारा।।
त्रिगुण नाम रु रूप सर्व का, तुरियातीत अधिष्ठान है सारा।
उतम रामप्रकाश है चेतन, साक्षी स्वरूप अद्वैत विचारा।।५।।
माया सत त्रिकाल परिवर्तन, जीव है सत रु चित विचारा।
ब्रह्म है सत चित आनन्द विभुवत, यह निर्णय सतवेद अचारा।।
माया मिथ्यात्व जीव अमरत्व, ब्रह्म एक अखण्ड निरधारा।
रामप्रकाश यह निर्णय विवेचित, ज्ञानी ज्ञाता जानत सारा।।६।।
जीव है सत रु चित ब्रह्म के, दोय विशेषण अँश कहावे।
चेतन आप द्रष्टा रु द्रश्य, माया रु ब्रह्म के बीच लुभावे।।
आवागमन है याही ते भव में, जनम रु मरण अविद्या में आवे।
रामप्रकाश अधिष्ठानी जानत, आप ही आप में होय समावे।।७।।
ब्रह्म सनातन चेतन व्यापक, एक अखण्ड अनन्त अपारा।
वृहत भाव अभाव ते दूर ही, अपेक्षित अपेक्षा को दूर प्रहारा।।
नाम न रूप न रेख न कल्मश, काल रु कर्म के लेश निवारा।
रामप्रकाश लखे सन्त सज्जन, ब्रह्म निष्ठा सतगुरू मुख धारा।।८।।

।। संख्यावाचक वेदान्त प्रक्रिया ।।

।। वाच्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ ।।

जीव रु ईश्वर प्रक्रिया भाषत, तीन शरीर अवस्था प्यारी।
देश काल वस्तु पँच कोश ही, धर्म सहित सामग्री सारी।।
यह वाच्यार्थ वेदान्त पुकारत, साक्षी सिद्धान्त लक्ष्यार्थ न्यारी।
रामप्रकाश तत्व निज केवल, चिन्तित दृढता ब्रह्म विचारी।।१।।

।। दो प्रकार के जीव श्रेणी ।।

बद्ध जीव है दोय प्रकार के, बुभुक्षु और मुमुक्षू जोई।
बुभुक्षु अर्थ धर्म हित साधक, मुमुक्षू केवल रु मोक्षक होई।।
देवान्तर रु राम उपासक, भक्त प्रपन्न जान हू दोई।
रामप्रकाश है जीव श्रेणी यह, मुक्त रु नित्य अमर है योई।।१।।

।। समष्टि व्यष्टि विवेक ।।

जीव सृष्टी सो समष्टि कहियत, बहुत शब्द का वाचक मानो।
ईश्वर सृष्टी है व्यष्टि मूलक, जीव सब ही समष्टि में जानो।।
ईश्वर व्यष्टि जो एक है समर्थ, मायापति सृष्टा ही बखानो।
रामप्रकाश यह भेद वेदान्त में, जीव ईश्वर की प्रक्रिया गानो।।१।।

दो प्रकार की उपासना

आप से भिन्न अन्य को मान के, कृतोपासक उपासना ठाने।
अकृतोपासक ब्रह्म उपासत, दोय उपासना भेद उपाने।।
मध्यम जिज्ञासु उपासत मूर्ति रूप, उतम जिज्ञासु अकृतोपस आने।
रामप्रकाश हो गुरू कृपा तब, फलित होवे फल जीवन जाने।।१।।

।। दो प्रकार का शुभ कर्म ।।

शुभ कर्म है दोय विधि कर, नित्य रु निमित जो होवत सारा।
पाठ पूजा रु स्नान ध्यानादिक, सतत स्वभाविक रूप अपारा।।
नित्यकर्म से सन्त रूप में रु, निमित कर्म ले निमित अवतारा।
रामप्रकाश ज्ञानी के कर्म का, पृकृति न्याय से हरि ले अवतारा।।१।।

।। जीवन के दो मार्ग ।।

जग मे जीवन दोय है मारग, एक पूरव एक पश्चिम में जावे।
पश्चिम भीड़ देख कर भागे, भोग रु रोग सदैव कमावे।।
भौतिक भय को मारग सारो, भागत उमरिया सारी बितावे।
रामप्रकाश जब पिँजर थाके, तब याद अध्यात्म आवे।।१।।
पूरव मार्ग को सन्त बतावत, अध्यात्म को सुख आनन्द आवे।
युक्ति मुक्ति भुक्ति को पावत, कोई समझ यह नही पावे।।
पश्चिम मार्ग दुःख को सागर, भीड़ को भोग ही नित भावे।
रामप्रकाश परिणाम दुःखी जब, याद अध्यात्म की तब आवे।।२।।

।। परा अपरा का विचार ।।

वेद वेदाँग पुराण अष्टादश, स्मृति छः मत मतान्तर भारी।
सिद्धान्त शास्त्र चौंसठ कला युत, चौदह विद्या अपरा है सारी।।
ब्रह्म विद्या परा कही केवल, दृढ अदृढ दो भाँति पसारी।
रामप्रकाश श्री परा विद्या बिन, भ्रम मिटे नही सन्त पुकारी।।१।।

।। चेतन के मुख्य दो प्रकार ।।

या घट में है दो विधि चालक, सो बहु रूप धरे सुख माने।
चेतन बुद्धि सामान्य विशेष हो, तन की चाल सुधारत छाने।।
मन अवचेतन लखो कुटस्थ ही, प्रमेय प्रमाण रु प्रमाता आने।
रामप्रकाश प्रमा लक्ष पूरण, व्यापक रूप अनेक बखाने।।१।।
जड वस्तु सामान्य चेतन, आज विज्ञान मे तत्व बोले।
टेलीविजन अरु सूर मोबाईल, समाचार को दूरा खोले।।
स्थावर जँगम विशेष चराचर, व्यापक आप सभी को तोले।
रामप्रकाश सब ज्ञानी भूले, व्यर्थ वाद विवाद में डोले।।२।।
माया उपहित चेतन जीव है, माया उपाधि ईश्वर गायो।
त्रिगुण उपाधि मे जीव रु ईश्वर, भिन भिन कर सतगुरू समझायो।।
ब्रह्म स्वरूप अनूप अगोचर, अनुभव ज्ञान लखन मे आयो।
रामप्रकाश अविनाशी आतम, गुरू गम रमझ समझ लिव लायो।।३।।
जड़ माँही है सामान्य चेतन, अवचेतन अर्ध चेतन विचारा।
शुद्ध चेतन है विशेष चेतन, व्यापक चेतन है इकसारा।।
प्रमेय प्रमा प्रमाण चेतन, प्रमाता शुद्ध ईश उचारा।
रामप्रकाश उपाधि अनेकन, सब है चेतन का विस्तारा।।४।।

।। परमात्मा के दो अवतार-नैमित्तिक और नित्यावतार।।

दीनदयाल कृपाल कृपाघन, भक्त भक्ति हित देह को धारी।
धर्म प्रतिपालक भक्त उद्धारक, ऐसो श्रवण कर ताक तुम्हारी।।
क्षमादान शरणागत वत्सल, भव से अब भय लागत भारी।
रामप्रकाश सतगुरु पद वन्दन, भवपार करो अब अरज हमारी।।१।।
योगमाया वश दो विधि आवत, सत चित आनन्द आप अपारी।
सामान्य से होत विशेष ही, नैमित्तिक हरि अवतरण धारी।।
नित्यावतार में सन्त पधारत, जीवन हितकर पूरण हारी।
रामप्रकाश जो शरण में आवत, पावत सोई पदार्थ चारी।।२।।
सन्त पधारत कारज सारत, पर उपकार करे हित चावे।
अविद्या की रात अज्ञान अँधेर में, मोह की नींद में प्राणी छावे।।
सतगुरु शब्द सुनावत है सत, दे उपदेश रु जीव जगावे।
रामप्रकाश परमार्थ कारण, नित्य अवतार हरिजन आवे।।३।।
ऋग्वेद छ सेंतालिस अष्टादश, ईश्वर निज माया से भेद रचावे।
अनेक स्वरूप को धारत है वह, इच्छानुसार धरा पर आवे।।
अजन्मा अविनाशी योगमाया वश, सगुण होय के लीला कमावे।

रामप्रकाश है सर्व शक्तिमान सो, अघटित घटना सोई बनावे ।।४।।
हम आये है अगम देश से, जिज्ञासु हित देखन वारे ।
जो जन मानत वचन शिक्षा को, वह पावत निर्द्वन्द्व अपारे ।।
जो नही मानत कुछ भी जानत, वह भव भटकत जीवन हारे ।
रामप्रकाश मैं योगमाया वश, आया जाने जिज्ञासु सारे ।।५।।

।। दो प्रकार का आवरण ।।

असत्वापादक रु अभानापादक, यह अज्ञान की शक्ति कहलाती ।
अन्त:करण में वास किया इन, यही कारण तन की थाती ।।
सामग्री तामस और राजस की, सतोगुण अन्तर में मिल जाती ।
रामप्रकाश याही विधि रचना, ब्रह्मण्ड की सृष्टि बन जाती ।।१।।
अस्तवापादक अज्ञान शक्ति वृत, मूढ भ्रम मल भव को भारो ।
अभानापादक है आस्था को कारण, परोक्ष ज्ञान को हेतु सुधारो ।।
विक्षेप मिटे रु आवर्ण सहित ही, अद्रढ अपरोक्ष है ज्ञान विचारो ।
रामप्रकाश मिटे जब आवर्ण, द्रढ अपरोक्ष ब्रह्मज्ञान हमारो ।।२।।
सँशय रहित ज्ञानी सन्त दर्शन, ब्रह्म साक्षात है देह सकारा ।
शब्दब्रह्म शब्दावली वाचन, श्रवण किये मल दूर निवारा ।।
मनन मान निदिध्यासन सेवन, आवर्ण द्वन्द विकार विडारा ।
रामप्रकाश कटे भवबन्धन, सन्त के दर्शन होत सुधारा ।।३।।

।। दो प्रकार के सँशय ।।

तीन ग्रन्थी अज्ञान की जानहूँ, ज्ञान विघ्न मन माहि है चारो ।
चित भूमिका पाँच प्रकार के, पाँच क्लेश बुद्धि माहि विचारो ।।
कर्म है दोय रु सँशय दोय है, अन्तर्गत पाँच विकार निवारो ।
रामप्रकाश उतमेश गुरू वर, देह भ्रम जाल जँजाल निवारो ।।१।।
सँशय दोय प्रकार कहावत, अन्तःकरण में बास बसावे ।
वेद शास्त्र में सँशय होवत, सो प्रमेयगत सँशय कहावे ।।
वेद शास्त्र गत कथित मोक्षादिक, विषय प्रमाणगत सँशय गावे ।
सतसँग सतगुरू श्रद्धा अध्ययन, सँशय भ्रान्ति को दूर भगावे ।।२।।

।। अविद्या के दो प्रकार और क्लेश का वर्णन ।।

अध्यारोप जो ईश्वर को ढाँपत, तूला अविद्या सोई कहावै ।
माया का है तामस रूप वह, अविद्या चौसठ रूप धरावे ।।
अध्यारोप कर चार प्रकार से, जीव को ढाँपत मूला बतावे ।
रामप्रकाश वेदान्त लखावत, त्रिगुण माया जाल बिछावे ।।१।।
अविद्या बासठ रूप धरे नव, मुख्य मूला रु तूला कहावे ।
तमस आठ रु मोह आठ है, महामोह दश भाँति बतावे ।।
तामिस्र अष्ठादश सन्तवाणी के, शब्दकोश में खोल लखावे ।
रामप्रकाश अविद्या प्रस्तार से, अपना क्षेत्र विस्तार बढावे ।।२।।
पृकृति विभाजन दो प्रकार से, ईश्वरीय शक्ति सँचालक धारा ।
सात्विक माया तीन प्रकार है, त्रिगुण रूप में किया पसारा ।।

तामसी अविद्या दोय विधि पसरी, मूला रु तुला दोय प्रकारा।
रामप्रकाश तूला अति शूक्ष्म, सब के अन्तस्थ मे डेरा डारा ।।३।।
अविद्या मूला चार प्रकार से, चेतन प्राणी के अन्तस्थ आई।
अनित्य में नित्य रु दुःख में सुख, अशुचि मे शुचि बुद्धि पाई ।।
अनात्म में आतम बुद्धि जानत, भ्रम रहा जग छाई।
रामप्रकाश अज्ञान शक्ति वश, यह पूरण धमाल मचाई ।।४।।
प्रसुप्त अविद्या चित भूमि रह, शूक्ष्म वासना तनु चित बसावे।
एक अभाव मे अन्य रहावत, विच्छिन्न अविद्या क्षेत्र उपावे ।।
उदार अविद्या कारण रूप में, सहायक विषय में प्रबल थावे।
अवस्था चार अविद्या कह पावत, रामप्रकाश यह ग्रन्थ बतावे ।।५।।
ईश्वर का ढाप स्वरूप छुपावत, कारण मूला सो अविद्या गावे।
दुःख में सुख अनात्म में आत्म, अशुचि में शुचि आय दिखावे ।।
रामप्रकाश अनित्य को नित्य कर, सो अविद्या विभिन्न दिखावे।
जीव स्वरूप आच्छादित कारक, तूला कार्य सो अविद्या थावे ।। ६।।
मूढ खल जड़मति तामस, नराधम कुटिल मन द्वैष बढावे।
माया अपहृत ज्ञान से पामर, असुर वृति में दुष्ट बुद्ध धावे ।।
मानव अनेक अनिष्ट कमावत, चार प्रकार से पाप कमावे।
रामप्रकाश गीता सन्त भाषत, श्री कृष्ण यों साख बतावे ।।७।।
अविद्या रूप अज्ञान अभिधा, शक्ति चँचल अस्मिता जाना।
राग साँसारिक भाव हो जाग्रत, द्वैष क्रोध अरु वैर बढाना ।।
अभिनिवेश मृत्यु भय कारण, पँच क्लेश स्वरूप बखाना।
रामप्रकाश अन्तःकरण के माँही, वास करे उत्पात विधाना ।।८।।
अविद्या सँग अस्मिता अहँ वृति, राग विषियन में प्रेम बढावे।
द्वैष मे क्रोध आवेश परिवार में, वैर विरोध के भाव जगावे ।।
अभिनिवेश मृत्युदंड सतावत, जीवन हेतु प्रपँच रचावे।
रामप्रकाश ब्रह्मज्ञान होवे जब, पाँच क्लेश समूल नसावे ।।९।।
अनुबन्ध समूह भुलाय दिये मन, पँच प्रयोजन मूल भुलाई।
सर्व दुःखन की निवृति मानत, कुटुम्ब जाल रहे अलुझाई ।।
परमानन्द की प्राप्ति मानत, सो रहे पँच क्लेश लुभाई।
रामप्रकाश धोखे जग भूलत, भाँति अनेक सिद्धान्त गमाई ।।१०।।

।। सामान्य और विशेष भेद से दो प्रकार का अहंकार ।।

देहादि के नाम धाम अरु कम से, भौतिक अहँ को बोध करावे।
वह विशेष अशुद्ध अहँकार है, सँसृति कर के भव भटकावे ।।
निज स्वरूप के ज्ञान जन्य हो, सामान्य शुद्ध अहँकार लखावे।
रामप्रकाश हूँ अहँब्रह्मास्मि, ज्ञानी जन यों बोध जनावे ।।१।।

।। दो प्रकार के निग्रह हठ निग्रह और क्रम निग्रह ।।

यम नियमादिक अष्ठाँग योग से, साधन चित निरोध करावे ।
क्रम निग्रह है सोई कहावत, आगे सो हठ निग्रह बतावे ।।

साँभवी आदि हठयोग क्रिया कर, मुद्रा के अभ्यास जमावे।
प्राणायाम कर रामप्रकाश में, चित निरोध कर लक्ष को पावे।।१।।

।। दोय प्रकार की प्रज्ञा (बुद्धि) ।।

जगत प्रपँच में बुद्धि लगी भ्रम, करूँ न करूँ अनिर्णय रहावे।
बोध बिना अस्थिर प्रज्ञा सो, चँचल वृति कर भ्रान्ति उपावे।।
स्थित प्रज्ञा निश्चय दृढ आतम, युक्त मुक्त जग जीवन पावे।
रामप्रकाश प्रज्ञा विधि मानव, दोय प्रकार से आयु बितावे।।१।।

।। मानव जीवन की दो प्रकार गति ।।

मानव जीवन की दोय गति कह, पृवृति और निवृतिं जान हूँ प्यारे।
प्रपँच कारज लाग रहे जग, काम धन्धे बहु भाति पसारे।।
ताहि पृवृतिक है सन्त शास्त्र, निवृति मार्ग वैराग्य विचारे।
रामप्रकाश स्वार्थ बिन परमार्थ, निवृति मोक्ष को पन्थ सुधारे।।१।।

।। दो प्रकार के संत के लक्षण १ परसँवेद्य, २ स्वसँवेद्य ।।

स्वयँ विचार से बोध युक्ति युत, साधन के सँस्कार जगावे।
श्रद्धा से सतगुरू सेवा कर, स्वसँवेद्य सो ज्ञान उपावे।।
आयु बढे सतसँग से जागत, परसँवेद्य से ध्यान को ध्यावे।
रामप्रकाश सत्ग्रन्थ बतावत, सन्त लक्षण दो भाँति बतावे।।१।।

।। कर्म सन्यास और ज्ञान संन्यास भेद से संन्यास के दो प्रकार ।।

ज्ञान हेतु जिज्ञासा धारण, विधि युत ब्रह्मज्ञान को पावे।
विविदिया ज्ञान सन्यास मे जीवन, विरक्त एकता भाव को लावे।।
ज्ञान प्राप्ति होय अवान्तर, वासना युत मनोनाश नशावे।
रामप्रकाश सो विद्वत ज्ञान से, सन्यास होय दो भाति कहावे।।१।।

।। स्वर और व्यंजन भेद से अक्षर दो प्रकार के हैं ।।
वर्णात्मक और ध्वन्यात्मक भेद से शब्द के दो प्रकार हैं।

अक्षर से शब्द रु शब्द से वाक्य है, वाक्य से भाषा बोध करावे।
स्वरव्यञ्जन से शब्द बने वह, वर्णात्मक ध्वन्यात्मक गावे।।
लिखित बोल के वर्ण लखावत, सार्थक निरर्थक दो भाति कहावे।
रामप्रकाश व्याकरण यह लेखत, अविनाशी यह वृति लखावे।।१।।
सार्थक निरर्थक दोय विधिकर, शब्द अनेक स्वरूप बतावे।
शब्द शक्ति दो भाति लखावत, शक्ति वृति तीर सम धावे।।
लक्षणा वृति लक्ष का भेदन, देश काल गत वस्तु लखावे।
रामप्रकाश यह हाथ पाव बिन, मन के भेद सो खोल दिखावे।।२।।

।। दो दल (शम्भू दल और रामादल) ।।

शैव शम्भूदल वैष्णव रामादल, मुख्य सन्त परम्परा गावे।
इष्ठ ग्रँथ मन्त्र शरणागति, अनी अखाड़े प्रबन्ध बतावे।।
साधन नियम सिद्धान्त है निश्चित, साधुशाही परिचय आवे।
रामप्रकाश शाखा प्रशाखाऐं, विरक्त ग्रहस्थ के भेद दिखावे।।१।।
शम्भू दल मे दशनामी सब ही, नाथ इत्यादि शिव को ध्यावे।

रामादल में वैष्णव है आवत, विष्णु राम को सभी मनावे।।
सर्गुण निर्गुण होय उपासक, विरक्त और गृहस्थ दोनो ही आवे।
गोस्वामी आदिक और अनेक ही, रामप्रकाश दो दल कहावे।।२।।
शृँगेरी मठ को रामेश्वर तीर्थ, यजुवेंद्र अहँब्रह्मास्मि गावे।
बद्रीकाश्रम अयँमात्मा अथर, गोवर्धन प्रज्ञान ऋग बतावे।।
शारदापीठ सामवेद पावत, तत्वमसि ब्रह्म मन्त्र को ध्यावे।
शँकराचार्य से स्थापित है यह, रामप्रकाश दशनाम कहावे।।३।।

श्रवण मनन और निद्धिध्यासन का वर्णन

।। श्रवण का स्वरुप ।।

परम पुरुषार्थ हेतु विचारक, विवेकादिक चव साधन धारे।
परम जिज्ञासू सतगुरू सानिध्य, दत चित एकाग्रता वारे।।
सतगुरू सम्मुख दर्श निहारत, गुरू शब्द सुन चित मे जारे।
रामप्रकाश यह श्रवण लक्षण, शास्त्र सन्त सो प्रकट पुकारे।।१।।

।। मनन का स्वरुप ।।

बाक्ष्य अतरँग जीवन दोष जो, निवृत कितने रहे विचारे।
विवेक वैराग्य साधन युत हो, श्रवण किये सन्त शब्द चितारे।।
गुरूमुख श्रवणादि किये सुधा रव, बैठ एकान्त चित माहि सँभारे।
रामप्रकाश मनन कर लक्षण, मन माँहि सो हरदम धारे।।२।।

।। निद्धिध्यासन का स्वरुप ।।

भेद की बाधक रु अभेद की साधक, वृति बीच मे ब्रह्म विचारे।
अभेद की बाधक जगत व्यवहार की, बात समूल सो दूर निवारे।।
श्रवण मनन उपरान्त का साधन, सोई निद्धिध्यासन पूरण प्यारे।
रामप्रकाश अद्वैत का चिन्तन, पाय ब्रह्मानन्द भेद ते न्यारे।।३।।

।। भेद की बाधक युक्तियाँ ।।

यज्ञ पूजा रु तीर्थ व्रत उपासन, आन देव जप तप विचारे।
भेद साधक युक्तियुक्त साधन, आवागमन के बीच है सारे।।
सतगुरू सान्धिय जिज्ञासु जायके, श्रवण मनन निद्धिध्यासन धारे।
अभेद साधक युक्ति विचारत, रामप्रकाश वेदान्त चितारे।।४।।

।। अभेद की साधक युक्तियाँ ।।

विवेक वैराग्य के पुष्टी कारक, शम दम श्रद्धा सतसँग गावे।
विषय उपरामता तितिक्षित वृति, हरदम ज्ञान रु ध्यान को ध्यावे।।
अद्वितीय ब्रह्म सच्चिदानन्द चिन्तन, सतगुरू सान्धिय वेदान्त पढावे।
रामप्रकाश अभेद की साधक, युक्ति सहित सत चित को पावे।।५।।

।। ज्ञान के बहिरँग/ अन्तरँग साधन ।।

तीर्थ भ्रमण मन्दिर पूजन, यज्ञ रु व्रत उपासना सारी।
वृति भटकन बहिरँग साधन, कर्मन फल को दूर निवारी।।
अन्तरँग साधन श्रवणादिक धारण, अभेद की साधक युक्ति अचारी।
रामप्रकाश निद्धिध्यासन साधन, केवल चित मे ब्रह्म विचारी।।६।।

।। ब्रह्मज्ञानी के लक्षण ।।

व्यर्थ क्रिया रज तम तज उद्यम, आन उपासना सब की त्यागी।
साधन विवेकादि धारण हो, अनुबन्ध युत सतगुरू अनुरागी।।
परम जिज्ञासु श्रवणादि पालन, सतसँग सन्तन का हो पागी।
रामप्रकाश वह ज्ञान अधिकारी, ब्रह्मज्ञानी होवे बड़भागी।।७।।
अनाशक्त क्रिया सहज ही होवत, निर्द्वन्द निष्प्रह हो मतवारे।
प्रारब्ध मन्द तीव्र सब पूर्व, सतगुरू समर्थ बदल दीये सारे।।
प्रारब्ध तीव्रतर देह रहावत, ब्रह्मात्म निश्चय दृढ विचारे।
रामप्रकाश सन्त शास्त्र लखावत, ब्रह्मज्ञानी के लक्षण सारे।।९।।

।। श्रवण मनन और निद्धियासन का उत्पति स्थान ।।

विवेक वैराग्य सम्पुट साधन, मुमुक्षु होय गुरू ढिग जावे।
श्रोत्र द्वार से श्रवण होवत, सतगुरू शब्द वचन फरमावे।।
मन से मनन साधन होवत, ब्रह्मनिष्ठ उपदेश मनावे।
रामप्रकाश मन चित चिन्तन ते, बैठ निद्धिध्यान योग कमावे।।१०।।

नोट-किसी भक्त ने शंका की श्रवण कान से मनन मन से होता है तो निद्धियासन कहाँ से होता है उसका उत्तर है।

श्रवण मनन और निद्धिध्यासनादि साधन समाप्त

।। एक ही जीव का तीन जगह अलग अलग नाम और काम ।।

विश्व जाग्रत चक्षु मे वास है, विश्व व्यवहार का है अधिकारी।
तेजस वही कण्ठ गत स्वप्न में, जन्मान्तर सँस्कार की है रखुवारी।।
प्राज्ञ प्रज्ञा में वास सुषुप्ति, प्रिया शान्ति सँग है सहचारी।
रामप्रकाश वह एक ही जीव सो, तीन स्थान में काम सँभारी।।१।।

।। तीन प्रकार की सृष्टि ।।

नाद सृष्टि है अनादि अखण्डित, शब्द गुरू शिष्य भाव उपावे।
बिन्दु सृष्टि जग मात पिता कर, आवागमन का खेल रचावे।।
कला सृष्टि बहु भान्तिन की कर, विश्वकर्मा से जीविका लावे।
नाद बिन्दु रु कला अतीत है, रामप्रकाश सत ब्रह्म रहावे।।१।।
तीन सृष्टि जग माहि प्रशिद्ध है, नाद बिन्दु रु कला कहावे।
एक अखण्डित आदि अनादि है, गद्दि मरियाद से सन्त रहावे।।
दोय कला जग कारज सारत, दृश्य श्राव्य के भेद लखावे।
रामप्रकाश हरि की चर्चा कर, आवागमन का मूल मिटावे।।२।।
प्राकृतिक ईश्वर सृष्टि अधिष्ठान की, बिन्दु सता का सकल पसारा।
हरि हर अज को शक्ति देवत, लोक परलोक रचावन हारा।।
सतगुरू कृपा वश सो चिद् आनन्द, प्रकट हृदय बिच भया उजारा।
रामप्रकाश भव भय मिटा सब, जनम न मरण में आवनहारा।।३।।

।। तीन प्रकार का ब्रह्म ।।

शब्दब्रह्म रु अपरब्रह्म ये, परब्रह्म के अन्तर माही।
ज्यों जल भीतर बुदबुद तरँग है, बर्फ में भीतर जल है बाही।।

शब्द में अर्थ रु अर्थ में वस्तु है, वस्त्र में रुई है व्यापक ताही।
रामप्रकाश हैं सर्वत्र पूरण, अन्तर बाहिर एक सदाही।।१।।
परब्रह्म व्यापक एक समान है, अद्वय अनन्त अमोघ अपारा।
अपर ब्रह्म है ब्रह्मण्ड व्यापक, पाँच तत्व गुण तीन पसारा।।
कविता महारानी कण्ठ विराजत, शब्द ब्रह्म कर बोध विचारा।
रामप्रकाश अनामी स्वयँ चेतन, विविध विवेक ते भासत न्यारा।।२।।
परब्रह्म है अद्वितीय सोऽहम्, अपरब्रह्म दो रूप को धारे।
सगुण निर्गुण रूप अरूप सो, विविध रूप क्षर अक्षर न्यारे।।
पँचतत्व भी एक ते एक ही, दश-दश गुण शूक्ष्म वृद्धि वारे।
रामप्रकाश वेदान्त बखानत, युक्ति युक्त विद्वान हमारे।।३।।
काष्ठ समान है अक्षर मन बुद्धि सो, भेद अग्नि जलावत भारी।
गुण अवगुण सब छेद लखावत, आग बहुल जलावत सारी।।
साधन ज्ञान विवेक उपावत, विस्तृत स्वरूप बताय अपारी।
रामप्रकाश हो लोम विलोम ही, अक्षय अलोप हो लय लखारी।।४।।
मन बुद्धि अरु अक्षर वाणी ही, रमणीय राम को ब्रह्म बतावे।
ज्ञान स्वरूप लखाय अलोगत, काष्ठ जलाय अलोगत थावे।।
मन अमन हो बुद्धि अबुद्धि हो, वाणी अबाणी को बोध लखावे।
रामप्रकाश सब द्वन्द मिटाय के, होय अद्वितीय आप छिपावे।।५।।
अजब गजब है पृकृति अप्रबल, अपर ब्रह्म जड़ चेतन भारी।
कारण कार्य स्वरूप लखावत, सृष्टि गत भे अनन्त अपारी।।
परब्रह्म एक अखण्ड अनन्त है, मन वाणी गत निरक्षर डारी।
रामप्रकाश पर भेद लखावत, अपर शब्दब्रह्म सार असारी।।६।।
कार्य कारण रूप नश्वर जो कुछ, देश काल गत वस्तू है सारी।
ताहि ते क्षर कहै विधि सँगत, माया रचित जो दृश्य है भारी।।
अक्षर अजर अमर अविनासी है, ज्ञान लखावत श्राव्य अगारी।
रामप्रकाश निरक्षर परब्रह्म सो, दृश्य श्राव्य से परे अपारी।।७।।

।। त्रय-ताप का विशद वर्णन ।।

आत्म ज्ञान बिना नर इच्छित, निज सम्मान अपेक्षाकृत भारी।
मन अभावों में डोलत है नित, मानसिक ताप के ताप दुःखारी।।
सुख रु सम्पति हेतु ही चिन्तित, उर की कामना प्रबल धारी।
रामप्रकाश है आधि को ताप यह, आध्यात्मिक रूप कहावत वारी।।१।।
तन के रोग सतावत है नित, हाथ रु पाँव में पीर अपारी।
पेट रु पीठ मे वात व्याधि कर, स्नायु रोग अनेक बीमारी।।
पित रु कफ बढे घटे बहु, रूप अनेक ही धारत भारी।
रामप्रकाश यह व्याधि कहावत, है अधिभौतिक ताप दुःखारी।।२।।
सिंह सर्प रु चोर वैद्य कृत, भौतिक रूप में है व्यभिचारी।
मात रु तात सों भाई रु बहिन के, सप्त विधि परिवार अपारी।।
ससुराल के पक्ष में हो उत्पात ही, भागनो होवत दुःखदा भारी।

रामप्रकाश है यही अधिभौतिक, ताप को भोगत नर रु नारी ।।३।।
कोई अध्यात्म कष्ट को भोगत, विविध रूप में दुःख अपारी।
मन पश्चाताप करे तन भोगत, अधिभौतक के ताप तिजारी ।।
कोई अधिदैविक ईति को पावत, कर्म आधारित भोग भण्डारी।
रामप्रकाश है त्रिपथ तापित, कर्म को भोगत जीव सँसारी ।।४।।
कोइयक आधि के कष्ट को भोगत, मानसिक पीर है दुःख अपारी।
कोइयक व्याधि से पीड़ित है तन, रोग अनेक लगे नही कारी ।।
कोइयक है जो उपाधि को भोगत, हरदम भागम भाग दुःखारी।
रामप्रकाश है त्रिविध के दुःख, ज्ञान बिना सब भोगत भारी ।।५।।
आतम ज्ञानी जन नित्य सुखी रह, आनन्द रूप के निश्चय धारी।
प्रारब्धानुसार है वर्तित मानत, मन के वेग को शान्त कियारी ।।
विवेक वैराग्य धरे उर भीतर, साधन साथ में शम दम भारी।
रामप्रकाश निश्चिन्त रहे नित, सतगुरू शरण में जीवन वारी ।।६।।
आध्यात्मिक ताप है देह इन्द्रिय कृत, विवध रूप रूपान्तरण धारे।
अधिदैविक है प्राकृतिक ईति वृत, सप्त प्रकार से ताप विचारे ।।
अधिभौतिक है पँच तत्व कृत से, सगुण रूप नाना विधि वारे।
रामप्रकाश है त्रिविध के दुःख, हरि गुरू बिन कौन विडारे ।।७।।
आध्यात्मिक दुःख है देहिक इन्द्रिय, भूख प्यास बहु रोग बढावे।
अधिदैविक मे प्राकृतिक पीड़ा भू, भ्रमण वर्षादि आग लगावे ।।
अधि भौतिक में राज दण्डादिक, चोर सर्पादि भय सतावे।
रामप्रकाश यह तीन हू ताप है, कर्मों वस प्राणी वही फल पावे ।।८।।
दुःख मानसिक आधि कहावत, कामादि विकार से मानव पावे।
व्याधि है तन रोग नाना विधि, भोगत कष्ठ रु धन लुटावे ।।
दुःख पारिवारिक जान उपाधि सु, तन मन धन को बहु कष्टावे।
रामप्रकाश यह तीन हू ताप के, अन्तर्गत पीड़ा भोग भोगावे ।।९।।
शारीरिकता के रोग अध्यात्म, भूख रु प्यास सदा दुःख भारी।
ईति सात प्रकार अधिदैविक, प्राकृतिक ताप पीड़ा अति सारी ।।
भौतिक ताप में चोर सिंहादिक, राज्यदण्ड रु अन्य भयकारी।
रामप्रकाश नास्तिकता कारण, प्राणी भोगत अविद्या विहारी ।।१०।।
आधि ताप है मानसिकता पीड़न, भाति अनेक वैचारिक धारी।
व्याधि ताप शारीरिकता भोगत, रोग विविध प्रकार है भारी ।।
उपाधि ताप पारीवारिक पीड़ित, भागत भोगत जीव दुखारी।
रामप्रकाश प्रारब्ध के कारण, सब ही भोगत देह को धारी ।।११।।

।। तीन त्राप की निवृति ।।

हे ईश्वर परमेश्वर सतगुरू, सन्त त्रय काल के वन्दन कारी।
अर्चन प्रणाम किये दुःख जावत, जीवन हो सुख आतम भारी ।।
ताप रु पाप मिटे जन्मान्तर भव, पावत शान्ति सँतोष भलारी।
रामप्रकाश समर्पित होवत, तीन हूँ ताप मिटे भयकारी ।।१।।

सतगुरू सन्त के सान्निध्य वास में, श्रवण मनन निधिध्यासन ठाने।
साधन सँग दश धर्म अँग धारण, दोष दशो दुःख मूल मिटाने।।
आतम निष्ठ प्रारब्ध निश्चय, शाप रू पाप सो दूर नसाने।
आधि रु व्याधि उपाधि नसे सब, रामप्रकाश त्रय ताप हटाने।।२।।
दैहिक ताप मिटे आयुष कर, योगिक साधन साधत भारी।
आध्यात्मिक बोद्ध अधिदैविक नाशत, प्रारब्ध निश्चय अधिभूत हटारी।।
सतसँग सतगुरू पाय प्रसाद से, आतम ज्ञान हो हृदय उजारी।
रामप्रकाश मिटे भव बन्धन, हरि गुरू कर वन्दन भारी।।३।।
सतसँग किये सतगुरू के ढिग, श्रवण किये हो परोक्ष धारी।
मनन बोध किये तन ताप मिटे, निदिध्यासन ते भय दूर निवारी।।
ब्रह्मज्ञान के द्रढ अपरोक्ष से, ताप रु पाप मिटे भव भारी।
रामप्रकाश सन्त शास्त्र कहै इमि, भक्ति रु ज्ञान ते होय सुखारी।।४।।
मन की चिन्ता सो आधि को ताप है, व्याधि सो देह को रोग कहावे।
परिजन को दुःख अहे उपाधि सो, अध्यात्म ताप इन्द्रियन को गावे।।
ईति देव उपाधि अधिदेव है, भौतिक ताप अधिभूत बतावे।
रामप्रकाश मिटे तिहूँताप ही, ज्ञान भक्ति उर में उपजावे।।५।।

।। तीन गुणों की वृतियां ।।

शम दम त्याग विवेक दया तप, स्मृति सन्तोष रु लज्जा गनावे।
आत्मरति दान वृति वर, सरलता युत स्वाध्याय को ध्यावे।।
पाप वृति सँकोच स्वभाविक, विषय इच्छा अतीत रहावे।
सात्विक वृति के यह है लक्षण, रामप्रकाश सन्त शास्त्र गावे।।१।।

अर्थ-सत्त्वगुण की वृत्तियाँ हैं-शम (मनःसंयम), दम (इन्द्रियनिग्रह), तितिक्षा (सहिष्णुता), विवेक, तप, सत्य, दया, स्मृति, सन्तोष, त्याग, विषयों के प्रति अनिच्छा, श्रद्धा, लज्जा (पाप करने में स्वाभाविक संकोच), आत्मरति, दान, विनय और सरलता आदि।

इच्छा प्रयत्न तृष्णा घमण्ड रु, धन याचना ऐंठ जमावे।
विषय भोग रु भेद बुद्धि कर, यश में प्रेम रु हास्यरस भावे।।
युद्ध मे रुचिहठी उद्योग में, नाना उपासन पराक्रम चावे।
राजस वृति के यह है लक्षण, रामप्रकाश सन्त शास्त्र गावे।।२।।

अर्थ-रजोगुण की वृत्तियाँ हैं-इच्छा, प्रयत्न, घमंड, तृष्णा (असन्तोष), ऐंठ या अकड़, देवताओं से धन आदि की याचना, भेदबुद्धि, विषयभोग, युद्धादि के लिये मदजनित उत्साह, अपने यश में प्रेम, हास्य, पराक्रम और हठपूर्वक उद्योग करना आदि।

मिथ्यात्व भाषण लोभ क्रोध जु, पाखण्ड कलह प्रिय श्रम कमावे।
हिंसा शोक मोह भय आदिक, विषाद दीनता आश जगावे।।
अकर्मण्यता युत निद्रा याचना, असहिष्णुता मन में लावे।
तामस वृति के यह है लक्षण, रामप्रकाश सन्त शास्त्र गावे।।३।।

अर्थ-तमोगुण की वृत्तियाँ हैं-क्रोध (असहिष्णुता), लोभ, मिथ्या भाषण, हिंसा, याचना, पाखण्ड, श्रम, कलह, शोक, मोह, विषाद, दीनता, निद्रा, आशा, भय और अकर्मण्यता आदि।

देश काल रु वस्तु प्रयोजन, कर्ता कर्म रु ज्ञान बतावे।
श्रद्धा अवस्था देव रु मानव, देह निष्ठा तिर्यंगादिक भावे।।
त्रिकाल रु त्रिगुण सृष्टी बनी यह, ज्ञानी जन यों बोध करावे।

त्रिताप त्रिलोक त्रिकाल में, रामप्रकाश सन्त शास्त्र गावे ।।४।।
जप तप ज्ञान रु ध्यान पूजा व्रत, त्रिविध से सब कर्म कमावे।
निःस्वार्थ भाव से मानव कर्तव्य, सात्विक भाव से वो दरसावे ।।
देव उपासना इच्छा वृति कर, राजस भाव से सोई कहावे।
लोकैषणा सिद्धि कमावन, रामप्रकाश वह तामस गावे ।।५।।
कर्म रु धर्म सेवा सत्कार भी, तीन प्रकार समझ में आवे।
निस्वार्थ मानवता लक्षण, सात्विक के भाव बतावे ।।
स्वार्थ के वश करे लोभार्थ, राजस वृति सो दरसावे।
अहँता वश हो लोक दिखावट, रामप्रकाश वह तामस गावे ।।६।।
अर्थ-द्रव्य (वस्तु), देश (स्थान), फल, काल, ज्ञान, कर्म, कर्ता, श्रद्धा, अवस्था, देव-मनुष्य-तिर्यगादि शरीर और निष्ठा-सभी त्रिगुणात्मक है।

।। तीन प्रकार के वाद ।।

गुरु उपदेशत शिष्य को सत, ज्ञान हितार्थ बात चलावे।
शँका निवारण बोद्ध बढावन, शिष्य का प्रश्न सम्वाद कहावे ।।
व्यर्थ वाद प्रलाप अहँकृत, जल्पवाद विवाद बढावे।
आपन श्रेष्ठ विद्वता हेतु जो, वितण्डावाद सो "राघव" गावे ।।१।।

।। ज्ञान, अज्ञान और विज्ञान का अर्थ ।।

ज्ञान क्या है ?

ज्ञान गरिमा दोय विधि भाषत, व्यवहारिक में जग रहन बतावे।
अपने स्वरूप को जीव लखे सत, आवागमन को मूल मिटावे ।।
मैं हूँ कौन रु आयो कहाँ चल, जीव ईश्वर ब्रह्म भेद विलावे।
रामप्रकाश मिथ्या लख माया को, ज्ञान जीव को भेद लखावे ।।१।।

अज्ञान क्या है ?

अपने आप को और व्यवहार को, लोक परलोक कथा नही जाने।
कुछ ऐसे भी है जन जीवन, जानत है पर हृदय नही माने ।।
मात पिता रु कुल मरियाद को, साधारण है वो पशु समाने।
जग प्रपँच लुभाय रहयो नित, रामप्रकाश अज्ञान को रूप पिछाने ।।२।।

विज्ञान क्या है ?

ईश्वरीय सता लखे सत चेतन, प्राकृतिक तत्व भली विध पावे।
परम तत्व लख निश्चय धारत, ऋषि मुनि सन्त ध्यान लगावे ।।
भौतक परीक्षण पाय प्रयोजन, दोय विधि से विज्ञान बतावे।
रामप्रकाश ईश्वरीय ज्ञान सो, सही अर्थ विज्ञान कहावे ।।३।।

।। तीन प्रकार की माला ।।

मणिमाला तन ताप हरे मल, हरिनाम जपे मन प्रीत लगाई।
करमाला मन चिन्ता हरे सब, गुरु मुख शब्द जपे चित लाई ।।
मानसिक शान्ति देवे मनमाल ही, अजपा सिद्ध करे सिद्धताई।
माला के भेद जाने बिन जापक, रामप्रकाश फल पावत नाई ।।१।।

।। तीन प्रकार के जप सुमिरण ।।

साधारण स्मरण मुख से प्रकट, शब्द सुने बहु मानस भाई।
उपाँसु स्मरण होठ कण्ठ में, अपने कर्ण में गूँज सुहाई।।
मानस श्वासा मन शब्द सँग, सुरत मिले इकसार रमाई।
रामप्रकाश हरदम रह स्मृति, सो है सोहम् सुमिरण भाई।।१।।
सँख्या वाचक मन्त्र जपे वह, किसी देव का जप कहावे।
हरदम स्मृति सो है सुमिरण, मन प्राण सँग शब्द मिलावे।।
नियत समय पर जप तप पूरण, नियम सहित अनुष्ठान सुहावे।
रामप्रकाश सतगुरू के मुख से, लिया मन्त्र सो सिद्धि दिलावे।।२।।
शब्द ध्वन्यात्म स्वर उचारत, साधारण सुमिरण सो कहलावे।
होठ कण्ठ जिभ्या से उच्चरुत, सुमिरण उपाँसू सो मन भावे।।
तन मन प्राण रु सुरत शब्द सँग, मानस सुमिरण श्रेष्ठ कहावे।
रामप्रकाश जप एक श्वास में, कोटि बहतर नाम सु आवे।।३।।
साधारण ते तन पाप ते, मुक्ति मिले तन ताप नसावे।
उपाँसू सुमिरण मानस के, कलि के कल्मष मूल मिटावे।।
मानस सुमिरण जरा मरण भय, भवसागर से पिण्ड छुटावे।
रामप्रकाश इक कल्प पलक में, पूरण योग हरि आप मिलावे।।४।।

टिप्पणी- सुमिरण तीन प्रकार का होता है, साधारण मुख से बोला जाता है, उपाँसु जो जीभ कंठ और होठों से बोला जाता है और मानस जो श्वांस के साथ किया जाता है उसमे पाँच का सँगम साथ होता है शरीर ,मन , प्राण ,सूरत और शब्द ,यह पांचो एक साथ में एक श्वास मे वह करोड़ जप सारी रोमावलु में करोड़ो जप हो जाता है मानस सिमरन का महत्व है।

अण गिणती गिणती नहीं, राम नाम की जोड़।
एक श्वास में होत है, सुमिरण सितर करोड़।।

।। तीन प्रकार की अग्नि ।।

वड़वाग्नि जल भीतर है सिन्धु, जल को शोषित करे करावे।
जठराग्नि सब जीव चराचर, रहे पेट में खाद्य पचावे।।
भूमाग्नि सो पत्थर काष्ठ में, अस्तित्व शक्ति को खूब बढावे।
रामप्रकाश अग्नि यह तीन ही, ज्योति स्वरूप हो ज्योति जगावे।।१।।

।। तीन प्रकार के स्नान ।।

नित्य मानव देव स्नान ते, पावत दश गुण लाभ घनेरा।
रूप तेज आयु शुद्धता बल, आयु आरोग्य तप बडेरा।।
स्पष्टता स्फूर्ति मेधा बढावत, कुस्वप्न नाश हरे दुर्गति फेरा।
रामप्रकाश स्नान करे जन मानस, लोक परलोक में यश अपारे।।१।।
मुनि स्नान सो ब्रह्म मुहुर्त में, सुख समृद्धि आरोग्य बढावे।
सूर्योदय देवस्नान सर्वोत्तम, वैभव कीर्ति ज्ञान सधावे।।
पहर चढे दिन राक्षस मानत, दरिद्रता क्लेश उपद्रव लावे।
रामप्रकाश स्नान त्रिविध, शास्त्र सन्त सिद्धान्त बतावे।।२।।

।। सन्त ज्ञानी तीन श्रेणी के माने गऐ हैं -वर, वरियान, वरिष्ठ ।।

ज्ञानी तीन प्रकार विचारत, वर वरियान रु वरिष्ठ आचारा ।
बिना पूछे उपदेशत है वर, शास्त्र विहित विधि ज्ञान आचारा ।।
बिन पूछे वरियान न बोले, प्रश्न किये उपदेशत सारा ।
रामप्रकाश वरिष्ठ नही बोले, स्वयँ ब्रह्म बल आप अपारा ।।१।।
वर ब्रह्मवेता नित्य अवतार मे, सन्त के रूप ज्ञानी बन छावे ।
वरियान ब्रह्मज्ञानी नैमित्तिक हो, अवतार धार समय पर धावे ।।
वरिष्ठ षष्ठम ज्ञान भूमि पा, आवन जावन का मूल मिटावे ।
रामप्रकाश चतुर्थ पँचम ज्ञानी जन, जिज्ञासु उद्धारक होकर आवे ।।२।।
वर ज्ञानी सो सन्त रूप में, नित्यावतार आवे नित धारा ।
वरियान ज्ञानी सो नैमित्तिक आवे, विश्व हित कर शत्रु सँहारा ।।
वरिष्ठ ज्ञानी मुक्ति मय राजे, सहज ही आप स्वरूप सँभारा ।
रामप्रकाश ये ब्रह्मवेता ज्ञानी सब, विषयातीत में करत विचारा ।।३।।
ब्रह्मज्ञानी जन वर श्रेणी गत, वारम्वार धरा पर आवे ।
सन्त वरियान नैमित्तिक रूप में, भक्त हितार्थ कदाचित पावे ।।
वरिष्ठ सन्त षष्ठम भूमि गत, मुक्त स्वरूप हो ब्रह्म समावे ।
रामप्रकाश हो जीवन्मुक्त वह, प्रारब्धवश मे भुक्त भोगावे ।।४।।
प्रथम द्वितीय ज्ञान भूमि तर सो, कनिष्ठ मध्यम जिज्ञासा लावे ।
उतम जिज्ञासु तृतीय भूमि सहे, चतुर्थ भूमि वर ज्ञानी बनावे ।।
पँचम में वरियान रु षष्ठम, वरिष्ठ उतम ज्ञानी लखावे ।
रामप्रकाश तुरिय तत चेतन, ब्रह्म स्वरूप में त्वरित मिलावे ।।५।।
शुभ इच्छा कनिष्ठ जिज्ञासु जन, मधमम जिज्ञासु सुविचारना धारी ।
उतम जिज्ञासु तनुमानसा, सत्वापति वर ज्ञानी भारी ।।
अशँशक्ति ज्ञानी पँचम भूमि, पदार्थाभाविनी वरिष्ठ की सारी ।
रामप्रकाश वरिष्ठातिवरिष्ठ ये, तुरिय सप्तम ब्रह्म विचारी ।।६।।
शुभ इच्छा निष्काम भूमि मे, कनिष्ठ अधिकारी कर्म कमावे ।
सुविचारना मध्यम अधिकारी, ईश्वर उपासना चित लगावे ।।
तनुमानसा चव साधन युत, उतम अधिकारी गुरू पहि जावे ।
रामप्रकाश त्रय जन अधिकारी, ज्ञान प्राप्ति उपाय जमावे ।।७।।
सत्वापति वर ब्रह्मज्ञानी हो, वेदोक्त उपदिष्ठा पूछे बिन होई ।
पँचम भूमि सत वक्ता अबूझे, वरियान विरक्त साधन सँग जोई ।।
छठी पदार्थाभाविनी भूमि में, वरिष्ठ मौन सर्व रस खोई ।
रामप्रकाश त्रिविध है ज्ञानीजन, मुक्ति मय हरि सम भोई ।।८।।

।। तीन प्रकार की बाणी ।।

भ्यानक शब्द है पामर जीव को, आस्तिक भाव जगावन हारा ।
रोचक शब्द है विषयी जीवन हित, मोक्ष स्वरूप लखावत सारा ।।
जिज्ञासु हितार्थ यथार्थ भाषण, मेटत भ्रम अज्ञान अँधारा ।
रामप्रकाश सतसँग में आवत, पावत लोक परलोक सुधारा ।।१।।

।। अन्त:करण स्थित तीन दोष ।।

अनन्त जन्म के संचित कर्म बहु ही, मल अन्तस्थ में सोई कहावे ।
ताहि प्रभाव ते चित चंचल हो, दोष विक्षेप है सोई जनावे ।।
अविद्या विहित जो मूल अज्ञान है, प्राकृत आवर्ण उर में छावे ।
रामप्रकाश त्रय दोष अन्त: में, ब्रह्मज्ञान ते सतगुरू मिटावे ।।१।।
मूल अज्ञान में कर्म जो होवत, शुभ अशुभ कर्म मतवारे ।
ताहि विक्षेप ते मल उपावत, कर्म अनेक होवे बहु सारे ।।
या विधि मल विक्षेप रु आवर्ण, होय त्रिदोष अन्त:करण भारे ।
रामप्रकाश हेतु भवसागर, जन्म रु मरण को कारण प्यारे ।।२।।
अन्तस्थ रहे त्रिदोष के कारण, भव में पशुवृत मानव प्रानी ।
निद्रा भोजन भोग समान ही, अन्तस्थ कामादिक मृत्यु समानी ।।
ईर्षा द्वैष रु मोह भरे मन, दुर्गुण दोषादिक भरे अभिमानी ।
रामप्रकाश है पशु के भाग्य से, घास न खावत मूरख मानी ।।३।।
आवर्ण विक्षेप रु मल सहित हो, वह पामर है मतिहीन अज्ञानी ।
हो शुभ कर्म से मल निवृति सो, परोक्ष ज्ञान को होवत मानी ।।
विक्षेप मिटे निष्काम उपासन, अद्रढ अपरोक्ष को हो अभिमानी ।
आवर्ण रहित हो रामप्रकाश तो, द्रढ अपरोक्ष को हो ब्रह्मज्ञानी ।।४।।
अनत:करण में अनन्त जन्म के, भरे त्रिदोष अविद्या भ्रम मानी ।
हो निष्काम करे शुभ कर्म तो, मल निवृति से आस्तिक प्रानी ।।
साधन सहित उपासना हो तब, मिटे विक्षेप निष्काम अमानी ।
रामप्रकाश हो सतगुरु कृपा तब, आवर्ण रहित शुद्ध आतम ज्ञानी ।।५।।

अन्त:करण स्थित तीन दोष की निवृत्ति के उपाय

शुभ कर्म किये मल दोष नसावत, उपासन ईश विक्षेप मिटावे ।
ज्ञानी गुरू की शरण जावे जब, आवर्ण मूल अज्ञान नसावे ।।
आशक्ति रहित करे जब त्रिविध, हो निष्काम प्रयोजन पावे ।
रामप्रकाश वेदान्त रु सन्त कथे वर, उतम मानव कर्म बतावे ।।६।।

।। जन्म व मरण के तीन कारण ।।

जागृत अवस्था मध्य वासना, रजोगुण का प्रभाव बतावे ।
तनु वासना स्वपन सतोगुण, घन वासना तमो सुहावे ।।
जन्म रु मरण में कारण तीन है, त्रिगुणी माया में आलुझावे ।
रामप्रकाश ये वासना निवृत्त, अष्ठ पुरी महि बास बसावे ।।१।।

।। नर्क के तीन द्वार ।।

बहु रस भोगनि काम बढावत, काम असँतुष्टी सो क्रोध बढाई ।
क्रोध ते लोभ रु मोह बढे बहु, आगे परिवार इन को बढ जाई ।।
तीन यही बस नर्क के द्वार है, हरि की शरण बचावत भाई ।
रामप्रकाश उतम गुरू रक्षक, प्रभु कृपा सब ताप भगाई ।।१।।

।। तीन मंत्र रहस्य ।।

परम तारक सत गुरू मन्त्र है, कर कृपा सतगुरू बतावे।
दिव्य मन्त्र का भेद है दुर्लभ, शरणागति मन्त्र से आशिश पावे।।
त्रय मन्त्र रहस्य को पावत, गुप्त भेद में पृवृति लावे।
रामप्रकाश गुरूगम भाषत, विरले सन्त यह भेद लखावे।।१।।

।। तीन प्रकार के ऋण ।।

प्राकृतिक सूर्य चन्द्र वर्षा रु, वायु के लाभ देवऋण गावे।
वेद वेदाँग वेदान्त ज्ञान रु, साहित्य उपदेश ऋषि ऋण कहावे।।
जन्म से पालन पोषण कारक, पितृऋण मानव के सिर पावे।
रामप्रकाश उऋण हो तीन ते सो, धन मानव लोक मे आवे।।१।।

।। तीन प्रकार के मूर्ख ।।

मूर्ख मानव पहिचान लक्षण ते, गर्वित हो अभिमानि रहावे।
अज्ञता सहित सुज्ञ निज मानत, क्रोधित रह अपशब्द भनावे।।
हठी स्वभाव गुणी अनादरित, निन्दक हो बड़पन्न दिखावे।
रामप्रकाश वे असाधु असभ्य हो, मानव गति को क्षति रूप बनावे।।१।।
मानव पशु समान है पामर, गाढ निन्द्रा रत मूढ रहावे।
भक्ष अभक्ष पेट भरे पर, व्यशन नशे रत भोग भोगावे।।
नर नारि सदा भय काम क्रोधादिक, ईर्षा द्वैष रु मोह फँसावे।
रामप्रकाश नर देह में दीखत, भव के बीच भ्रमण नित पावे।।२।।
सत्य असत्य विचार नही उर, निशिदिन भोगन भाग सँवारे।
काम रु क्रोध विकार भरे चित, हानि रु लाभ न सोच अचारे।।
मोह अज्ञान में भाग रह्यो नित, तृष्णा रही हरदम चिन्तारे।
रामप्रकाश यह पामर लक्षण, मानव पशु समान विचारे।।३।।
पामर तीन प्रकार बखानत, शास्त्र सन्त विचार पुकारी।
पामर मानव घर का पालक, अति पामर है भूत पुजारी।।
अति घोर है पशु समान सो, घोर अज्ञेय अज्ञान मँझारी।
रामप्रकाश यह मानव रूप मे, पशु समान अति जड़ कारी।।४।।

।। तीन प्रकार के विषयी ।।

विषयी मानव वेद विधिवत, कर्म करे शुभ पूण्य कमावे।
ग्रहस्थ धर्म को पालत है वह, शुभ सँस्कार व्यवहार चलावे।।
मन इच्छा रत लोक परलोक में, चाहत सुख पुनरागम पावे।
रामप्रकाश यज्ञ याग करे नित, सन्तन के सँग आवत जावे।।१।।
विषयी तीन प्रकार उचारत, जगत जाल में विधिक उचारा।
द्वितीय वेद विधिवत पालक, सो इह लोक को भोगन हारा।।
तृतीय शास्त्र विहित कर्म कर, लोक परलोक के भोग सुधारा।
रामप्रकाश सँसारिक जीवन, उतम रीति से करत गुजारा।।२।।

।। तन,मन और धन की शुद्धि के उपाय ।।

स्नान रु तप से देह शुद्धि हो, जप से मन की शुद्धि होवत प्यारे ।
दान किये ते धन शुद्धि होवत, देखो सुपात्र देवन हारे ।।
सात्विक अहार से स्वास्थ्य वर्द्धन, व्यसन त्याग के रहिये सारे ।
रामप्रकाश हरिनाम जपे तब, होय कल्याण रु जीवन तारे ।।१।।

।। तीन प्रकार की ऐषणा।।

ऐषणा तीन का शूक्ष्म स्वरूप है, स्पृहा वासना इच्छा बखानी ।
सुत रु वित लोकैषणा मूल में, पोहन विकार अन्तःकरण आनी ।।
विपर्यय दर्शन अविद्या भाषत, विपर्यय ज्ञान अज्ञान कहानी ।
रामप्रकाश ब्रह्मज्ञानी बखानत, उतम गुरू की युक्ति नही छानी ।।१।।

।। मानव जीवन में इन तीन का होना आवश्यक है ।।

मानव जीवन में आनन्ददायक, आतम सँयम है प्रथम अचारी ।
आतम सम्मान है समाज में सुन्दर, आतम ज्ञान है सर्व सुखकारी ।।
जो यदि तीन हूँ साथ मिले यश, परम सम्पन हो आनन्दकारी ।
रामप्रकाश ये सतगुरु कृपा सँग, सोने में सुगन्ध सुहावत भारी ।।१।।

।। तीन प्रकार के जिज्ञासु ।।

जिज्ञासु मानव देव समान हो, कर्म करे निष्काम उपावे ।
सतसँग करे गुरू वाक्य जरे उर, साधन रत हो नियम निभावे ।।
मोक्ष हितार्थ भाव भरे नित, पृवृति प्रारब्ध भोगत जावे ।
रामप्रकाश वे अदृष्ट निवृति वश, पावत ज्ञान अभय होय जावे ।।१।।
निष्काम रहे निर्पक्ष बहे, सत वचन कहे सत ग्रन्थ विचारे ।
विवेक वैराग मुमुक्षूता चित, सन्त रु सतगूरू सँग सँभारे ।।
शुभ कर्म करे मन धर्म धरे, व्यवहार शुद्धि सँग धैर्य को धारे ।
रामप्रकाश जिज्ञासु के लक्षण, सन्त कहै वो विचार हमारे ।।२।।
हरि नाम जपे सतसँग करे, सतगूरू ज्ञान को ध्यान सँभाले ।
शुभ कर्म रु धर्म विवेक धरे उर, वैराग मुमुक्षू के राह में चाले ।।
श्रवण मनन और निदिध्यासन, अन्तस्थ आवर्ण दोष को जाले ।
रामप्रकाश जिज्ञासु के लक्षण, शास्त्र सन्त कथे यह वाले ।।३।।
जिज्ञासु तीन प्रकार बखानत, प्रथम सो तीर्थ व्रतादिक धारा ।
द्वितीय शास्त्र अनुकूल मे वासित, साधन सतसँग भोगन हारा ।।
तृतीय तीन साधन युत मुमुक्षुत्व, सतगूरू सानिध्य वास उचारा ।
रामप्रकाश अध्यातम चिन्तक, मोक्ष अधिकारी ज्ञान विचारा ।।४।।
मनमुखी ग्रन्थ अनेक पढो भल, गुरूमुख पढे बिन ज्ञान न होवे ।
ग्रन्थन भाषण प्रवचनन में, रहै चार दोष सो नहीं न खोवे ।।
देश काल रु शब्द त्रुटि वश, मूल उद्देश्य का अर्थ न जोवे ।
परम जिज्ञासु अनुबन्ध धारण, रामप्रकाश स्वाध्याय सँजोवे ।।५।।

।। तीन प्रकार के श्रोता ।।

कथा सतसँग मे श्रोता आवत, शँका तर्क कर वाद बढावे।
एक स्रोता सतसँग मे जावत, जल झरने सम शब्द बहावे।।
जिज्ञासु श्रोता गुरू सन्तन की, बात श्रवणित कर उर ठहरावे।
तीन प्रकार के श्रोता कहावत, रामप्रकाश मति के फल पावे।।१।।
गूँगु गूँगा सम बैठ सँगत में, आया गया कुछ हाथ न आवे।
ऊँगु नींद में सोय स्वप्न ले, आँख अलसाई घर जावे।।
सूँगु नशे में बीड़ी तमाखू, बात करे बहु मन ललचावे।
चूँगु गौ वत्स सम सार ग्रहण कर, रामप्रकाश वह श्रोता कहावे।।२।।

।। तीन प्रकार की शक्ति ।।

जड शक्ति मिल क्रियाशक्ति युग, सब ही जगत नचावन हारी।
ज्ञान शक्ति बिन काज न होवत, अवस्थ तीन चेतावन वारी।।
राज रहे इन तीन को बदलत, जानत ज्ञानी जन ज्ञान विचारी।
रामप्रकाश यह सृष्टि सँचालन, त्रिगुण जाल ने माया पसारी।।१।।
मै नित निरोग अरोग अचल अज, सच्चिदानन्द स्वरूप हमारो।
देह तीन को साक्षी हूँ नित, शक्ति तीन रचावन हारो।।
जनम मरण से रहित अनादि हुँ, और उपाधि से नित ही न्यारो।
रामप्रकाश है उतम रूप में, सकल उपाधि को जाननवारो।।२।।

।। तीन प्रकार की सता ।।

प्रतिभासक सता मे जग भ्रमित है, मूढ अज्ञान में जीव है सारे।
व्यवहारिक सता को बुद्धि निभावत, देह धरी मरियाद सुधारे।।
परमार्थ सता में ज्ञानी का निश्चय, अटल अडोल प्रपँच ते न्यारे।
रामप्रकाश अधिष्ठान अधिष्ठित, तीन सता को जानन हारे।।१।।

।। तीन प्रकार के कर्म का विशद वर्णन ।।

सँचित कर्म है जनम अनेक के, शूक्ष्म देह में अँकित रहावे।
ताहि लाभाँश प्रारब्ध उपावत, जन्म मरण सँस्कार उपावे।।
हानि रु लाभ है यश अपयश वो, जीवन पाय जहा सँग जावे।
रामप्रकाश करे क्रियमाण ही, भोगत राखत जनम धरावे।।१।।
तन मन वाणी ते कर्म बने सब, या बिन कर्म बने नही भाई।
जड़ चेतन दो मानत पारख, कर्म के अस्तित्व को मानत नाई।।
कर्म रहे या बने तो कैसे कहो? ताम्बे बिन स्वर्ण भूषण ताई।
रामप्रकाश करो कोई पारख, बात किये कछु होवत काई।।२।।
सँचित कर्म है जन्म अनेक के, पृकृति सँगोष्ठी न्याय चुकावे।
अष्ठपुरी महि पाप रु पूण्य ही, एक पुरी यह कोष बनावे।।
ताही के लाभाँस प्रारब्ध को सब, भोगत है नर जन्म धरावे।
रामप्रकाश हो आगामी भी सामिल, ताप तीनो हि जीव भोगावे।।३।।
मानव जीवन में योग सँयोग ते, इष्ठ मित्र कुल बन्धु मिलावे।

पूर्व जन्म में किये कर्म वसि, कोई मित्र बनि सुख भोगावे ।।
देनदार हो देवत है धन सुख, लेनदार अरि कष्ठ दिलावे ।
रामप्रकाश है सुख दुःखदायक, आपने किये सो कर्म भोगावे ।।४।।
पूर्व जन्म में कर्म अनेक के, तन मन वाणी से उपजन हारे ।
सात्विक राजस तामस भाति से, कर्म अकर्म विकर्म भारे ।।
इच्छित अनिच्छित ओ परइच्छित, कर्म नाना विधि रुप बनारे ।
रामप्रकाश वही कर्मभोग में, त्रिविधा ही त्रयताप परवारे ।।५।।
इच्छित कर्म से भव भोगावत, त्रिविध त्रिगुण त्रयलोक घुमावे ।
अनिच्छित सुकर्म मल मिटावत, निष्काम उपासन विक्षेप हटावे ।।
मल विक्षेप निवृति पावत, साधन सहित गुरू ढिग जावे ।
रामप्रकाश ब्रह्मवेता वृत, श्रवणादिक से सिद्ध समावे ।।६।।
पारख पन्थ की पोल खरी यह, दोय वस्तु जड – चेतन माने ।
जड में शक्ति नाही रहे कछु, चेतन इच्छा से रहित पिछानो ।।
दोय मिले बिन सृष्ठि नही तब, कर्म की तीसरि शक्ति क्यों जानो ?
रामप्रकाश कहो कर्म की उत्पति, क्यों ? कर सृष्ठि उद्भव ठानो ।।७।।
पन्थ रु ग्रन्थ रु सन्त कहै इमि, प्रारब्धानुसार सबे कछु पावे ।
यह जग की जन श्रुत वाचन, समर्थ सतगुरु सो लेख मिटावे ।।
मै पुनि अनुभव जान लियो कर, भाग्य ते अधिक विधान दिखावे ।
रामप्रकाश गुरु सेवक मानत, श्रद्धा सँग विश्वास ते पावे ।।७।।
पाप करो या पूण्य करो, गुप्त प्रकट मन मानक धारी ।
सोवत जागत रात दिवस भल, देश प्रदेश कोई विधि सारी ।।
प्राकृतिक न्याय होवे मन मन्दिर, बिना अदालत वेद विचारी ।
रामप्रकाश कबहू न छुपे कछु, रुई लपेटी आग प्रजारी ।।८।।
कर्म ही ईश्वर कर्म गुरु कर, कर्म प्रधान है विश्व विख्याता ।
भय अभय रु सुख दुःख भोगत, कर्म ते होवत सृष्टि अख्याता ।।
कर्म के बिना कछु नही होवत, त्रिगुण के त्रयलोक में ख्याता ।
रामप्रकाश है जीव सृष्टि गत, कर्म बिना यह देह अग्याता ।।९।।
जिन ही ने निज जान लियो तत, सत चित आनन्द व्यापक वोई ।
सो जन पूरण ब्रह्म भयो जिमि, काष्ठ लोह अग्नि सँग होई ।।
ब्रह्म रटे ता कटे भव बन्धन, बन्धन मुक्त होवे जन सोई ।
रामप्रकाश है सोहम् में, कर्म क्लेश विपाक न कोई ।।१०।।
ईश्वरीय सृष्टि में कर्म भोग है, सभी जीव जन भोगत भारी ।
सँचित कर्म से प्रारब्ध बनते, प्राकृतिक लाभाँस मिले गुण सारी ।।
त्रिगुण त्रिकाल त्रिलोक में भोगत, लख चौरासी में खाणी जो चारी ।
रामप्रकाश करे जो प्राणी, आगामी कर्म की आवत बारी ।।११।।
अनन्त जनम के ज्ञात अज्ञात में, किये हुए जो सँचित नाना ।
ताहि प्रभाव ते मानव जीवन, सँत के दर्शन सतसँग पाना ।।
ईश्वर कृपा बिन यह नही पावत, पूर्व पूण्य बल पावत जाना ।

रामप्रकाश ब्रह्मज्ञानी सतगूरू, परम पुरुषार्थ पाय कल्याना ।।१२।।
आँखिन देखा फल पाँव चला कर, हाथ से तोड़ के मुँह से खाया।
मार पड़ी जब पीठ पे ताड़ित, आँख में अँसुवन झड़ लाया।।
प्राकृतिक न्याय है कर्मन को फल, समय पाय के भोगत आया।
रामप्रकाश है कर्मवशी ब्रह्मण्ड, ताही को फल भोगत काया।।१३।।
हाथ करे फल हाथ ही भोगत, आँख करे फल आँख ही पावे।
पाँव करे फल पावत पाँव ही, मुँह से बोलत मुख भोगावे।।
कर्मन को फल विश्व सो भोगत, प्राकृतिक न्याय अचूक कहावे।
रामप्रकाश कर्म फल पावत, करे भरे वह भोगत जावे।।१४।।
बीज बबूल को बोवत है फिर, आम को फल वो क्यों कर पावे।
गाजर खावत मुख ते भावुक, स्वाद बादाम को कैसे ही आवे।।
कर्म करे फल वैसो ही पावत, शुभ अशुभ सो प्राकृतिक गावे।
कर्म आधार से रामप्रकाश है, पिण्ड ब्रह्मण्ड में कर्म ले जावे।।१५।।
जनम रु मरण प्रारब्ध से होवत, बीच का जीवन वृत हमारा।
प्यार विश्वास श्रद्धा भर सुक्रत, आनन्द पूरण पावत प्यारा।।
हँसी खुशी जैसी भी चाहत, अपनी पुरुषार्थ पावत सारा।
रामप्रकाश निज कृत कर्म ही, हर्ष रु शोक दिलावन हारा।।१६।।
युग युगान्तर से नीतिगत है यह, जीवन का विधान निराला है।
जीवन की होती है विविध समस्या, जीवन ही निदान विशाला है।।
भाग्य कमाना भाग्य गमाना, यह अपने कर्म की माला है।
रामप्रकाश मानव पुरुषार्थ से, अच्छा बुरा सफेद काला है।।१७।।
जीवन सम्बँध में जो कोई आवत, मित्र पुत्र परिवार के प्यारे।
ऋणानुबंध जो लेनदार होवत, शत्रु रूप में कोई हमारे।।
देनदार या मित्र ही आवत, कोई होय उदासीन विचारे।
रामप्रकाश सँसार बाजार में, हिसाब किताब चुकावत सारे।।१८।।
मानव के किये पाप पूण्य फल, मृत्यु बाद साक्षी यह ढोवे।
सूर्य चन्द्र अग्नि वायु लख, देव दशैन्द्रिय काल को जोवे।।
रात दिन सन्ध्या भूमि जल, काल धर्म चौदह योवे।
रामप्रकाश चौदह ये साक्षी, जन्म का कारण होवे।।१९।।
मानव कर्म को भोग थके सब, पाप पूण्य दु:ख सुख को भोगे।
मानव भूमि भोग नही समर्थ, स्वर्ग नर्क चौरासी मे जोगे।।
पृकृति न्याय अपूर्व देवत, अन्तिम मानव योनि को ठोगे।
रामप्रकाश त्रिलोक में त्रिगुण, कर्म निष्फल कभी नही होगे।।२०।।
लाभ रु हानी हो जनम रु मरण, यश अपयश यह जान लो सारा।
कब कहाँ अरु कैसे वर्तित हो, अदृष्ट कर्म विधि होवन हारा।।
भविष्य वेता भी जान सके नही निज, गोप्य प्राकृतिक खेल विचारा।
रामप्रकाश प्रारब्धवश सब ही, सर्व सृष्टि मे भोगनहारा।।२१।।
अदृष्ठ प्रारब्धवश भोगत प्राणी है, ताप रु पाप रु पूण्य प्रमानी।

सँचित जन्म अनेक के आतुर, देत लाभाँश प्रारब्ध खानी ।।
ज्ञानाग्नि कर सँचित जालत, भावी प्रारब्ध होवत हानी ।
रामप्रकाश है आगामी कर्म सो, दुष्ट रु सेवक लेजावत मानी ।।२२।।
अदृष्ट संचित अज्ञानी के अनन्त, जन्म के प्रारब्ध दे नव दानी ।
ताहि ते जन्म मरण की, भोगत लाख चौरासी खानी ।।
ज्ञानी के संचित ज्ञानाग्नि कर, क्षय होवत प्रारब्ध हानी ।
प्राकृतिक चक्र ज्ञान अज्ञान को, रामप्रकाश अजन्मा ब्रह्मज्ञानी ।।२३।।
कर्मों का फल है पृकृति वश में, आज नही तो कल दिल ही सही ।
तत्काल अन्तराल बाद तक, कुछ अगले जन्म के लिये सही ।।
सँभल चलो हे मानव कर तन, दुर्लभ का उपयोग सही ।
रामप्रकाश सन्त शास्त्र कहै सब, कुछ मान शान रहे तो सही ।।२४।।
जो जन जग मे जनम धरे तब, भौतिकता नही साथ मे लावे ।
यहाँ कमाया सँग्रह किया वह, यहीं का यहीं धरा रह जावे ।।
धर्म रु कर्म में पाप रु पूण्य है, साथ आये अरु साथ ले जावे ।
रामप्रकाश है व्यापार केन्द्र जग, लेन देन सब यहीँ निपटावे ।।२५।।
कर्म की मार भयँकर है अति, ज्ञात नही कब पूण्य भगावे ।
पूण्य समाप्त होवत है जब, अति प्रबल नृप भीख मँगावे ।।
ताहि ते सँभल रहो सब सज्जन, छल कपट नही पाप कमावे ।
रामप्रकाश मन भला करो सब, होय कल्याण सदा सुख पावे ।।२६।।
पूर्व कर्मों वश ही हमको, इस जन्म में मिलते है बान्धव सारे ।
माता पिता बहिन भाई पति, पत्नी प्रेमी प्रेमिका प्यारे ।।
मित्र शत्रु सगे सम्बन्धी वर, लेन रु देन चुकावन हारे ।
रामप्रकाश यही पृकृति न्याय है, सँस्कार वश है मिलने वारे ।।२७।।
कौन हिसाब रखे भव बीच मे, जीव अनन्त है योनि अपारा ।
किसे दिया अरु लिया कहाँ, ताहि ते कर्म विभाग विचारा ।।
सँचित आगामी ते होय उपार्जन, जीव भोगो निज कृति विहारा ।
रामप्रकाश यों खाली ही भेजत, आप लेजावत कर्म का भारा ।।२८।।
चाँद रु सूरज दोनों अलग, कभी चले नही साथ सुहाते ।
नदी किनारे नही इक साथ मिलावत, दोनो पाँव नही साथ उठाते ।।
मानव साथ चले किहिं भाँति से, नाना पृकृति स्वभाव सुहाते ।
रामप्रकाश है कर्म सब अपने, कर्तव्य सब ही आप निभाते ।।२९।।
सँचित व्यस्थापक कर्म आधार से, प्रारब्ध प्रबन्धक बैक कहावे ।
लाँकर भाग्य की कूँची के पालक, पुरुषार्थ कूँची निज हाथ रहावे ।।
भाग्य पुरुषार्थ दोनो लगे तब, मानव फल परिश्रम पावे ।
रामप्रकाश नही एक सजे तब, जीवन सुख कदापि ना लावे ।।३०।।
प्राकृतिक है यह कर्म कार्यालय, अजब स्थान विचित्र है भाई ।
कागद बिना बही लेखनी, लिखनहार नही दीखत आई ।।
फिर भी अनन्त जीवों की गणित, रति भर कहीं चूकत नाई ।

रामप्रकाश आश्चर्य करे मन, तभी सन्त जन महिमा गाई ।।३१।।
सँचित पृकृति ब्याज उपावत, प्रारब्ध नाम उसी का भाई ।
क्रियमाण करे जन अब ही, त्रिगुण रूप अनेक धराई ।।
कर्म विस्तार प्रस्तार अनेक ही, अनन्त जीव के अनन्त कहाई ।
रामप्रकाश अजब यह महरम, तभी सन्त बहु महिमा गाई ।।३२।।
हे गुरुदेव हो सिद्ध योगेश्वर, परमेश्वर उतमेश्वर मेरे ।
मन्द तीव्र प्रारब्ध कर्म को, बदल देत अरु धोवन हारे ।।
कर्म तीव्रतम आन परे तन, आप ही भव भय टारन वारे ।
रामप्रकाश कृपा कर खर पूरण, उतमराम मै शरण तुम्हारे ।।३३।।
आया अकेला जाय अकेला, लोक यही यों बतलावे ।
मालूम नही ऐसे कहते ही कि, अनन्त प्रारब्ध को वह ले आवे ।।
अष्टपुरी सँग सँचित कर्मो के, त्रिगुण माया सँस्कार भी सँग लावे ।
रामप्रकाश भौतिक प्रपँच यह, छोड़ आया सो यहाँ कमावे ।।३४।।
सँचित ज्ञानाग्नि कर्म जलावत, अकर्म दुष्ट लेजावत सारा ।
विकर्म ज्ञानी के होवत नाहि रु, सुकर्म सेवक बाँटत प्यारा ।।
सतसँग ज्ञान रु ध्यान है दैनिक, अपार बचे रह पृकृति मँझारा ।
रामप्रकाश तीव्रतर प्रारब्ध, जीवन्मुक्त भोगत है प्यारा ।।३५।।
शुभ कर्म है दोय विधि कर, नित्य रु निमित जो होवत सारा ।
पाठ पूजा रु स्नान ध्यानादिक, सतत स्वभाविक रूप अपारा ।।
नित्यकर्म से सन्त रूप में रु, निमित कर्म ले निमित अवतारा ।
रामप्रकाश ज्ञानी के कर्म का, पृकृति न्याय से हरि पधारा ।।३६।।
जीवन में सँग आवत है कुल, मीत रु प्रीत सखा कुल वारे ।
कोई लेनदार कोई देनदार हो, आय हिसाब चुकावत सारे ।।
कोई मित्र सखा कोई शत्रु महा, पूर्वोत्तर कर्म चुकावन हारे ।
रामप्रकाश व्यापार क्षेत्र यह, पृकृति न्याय चुकावत प्यारे ।।३७।।
धीर सुवीर ज्ञानी जन सुख दुःख, अनित्य जानत हँस भोग लगावे ।
कायर रोवत पश्चाताप मे, चतुर सहन मन साहस द्रढावे ।।
कायर और कपूत ईर्षा वश, करे शिकायत क्रोध बढावे ।
रामप्रकाश ज्ञानी जन जानत, प्रारब्धवश हो भोग भोगावे ।।३८।।
कैयक पूत खैलावत है बहु , कैयक तरस रहे कुल भाई ।
कैयक है धनवान नृपत, कैयक दरिद्र नारायण आई ।।
कैयक विचित्र वाहन धारक, कैयक पैद उभाने ही धाई ।
रामप्रकाश ये कर्म की रेख है, जैसो है प्रारब्ध वही फल पाई ।।३९।।
अमोघ अदालत ईश्वर की है वहाँ, अदल वकालत निःशुल्क होवे ।
खामोस रहिए रु कर्म को कीजिए, मुकदमा न्यायालय माँहि सँजोवे ।।
राम रु रावण राशि पर नाहि न, करो विश्वास कर्म पर कोवे ।
रामप्रकाश नियति का निर्णय, भाव समय परिस्थिति पर जोवे ।।४०।।
अकर्म विकर्म कर्म करे नर निशिदिन, विविध रूप मनोरथ लावे ।

इच्छित अनिच्छत परेच्छित पावत, पाप रु पूण्य मिश्रित ध्यावे ।।
सात्विक राजस तामस के कर, त्रिपथ नाक धरातल जावे ।
रामप्रकाश सँचित आगामी हो, आपने प्रारब्ध आप बनावे ।।४१।।
सात्विक राजस तामस त्रिगुण, पाप रु पूण्य वो मिश्रित पावे ।
सँचित से घन प्रारब्ध पावत, क्रियमाण के कर्म कमावे ।।
इच्छित परेच्छित अनिच्छत के फल, जीव सभी भव माहि भोगावे ।
रामप्रकाश यह नियम प्राकृतिक, ज्ञान बिना नही क्षीण ही थावे ।।४२।।
भूने कण नही ऊग सके धर, खाये जाय तब भूख मिटावे ।
जली रस्सी नही बन्धन कारक, देखन में अति सुन्दर आवे ।।
ऐसे ही ब्रह्मज्ञानी जन उतम, ज्ञानाग्नि कर कर्म जलावे ।
रामप्रकाश वे देह में दीखत, जरा मरण अँकूर जलावे ।।४३।।
ईश्वर परम कृपाल दयाल है, डरो मत कोई सज्जन प्यारे ।
पाप अपराध क्षमा करे ईश्वर, गौ वत्स सो नेह निहारे ।।
कर्म क्षमा करे नही काहुन, वत्स सम ढूँढ लेवे निज सारे ।
रामप्रकाश कर्ता सही ढूँढत, कर्म के फल को देवत भारे ।।४४।।
ज्ञान अग्नि कर अष्टपुरी जले तब, ज्ञानी रहे निष्काम सदाई ।
ऊषर भूमि वत कर्म फले नहीं, प्रारब्ध भोग उपराम रहाई ।।
सूखे नारियल भाति अलाग है, मस्ती ज्ञान रही उर छाई ।
रामप्रकाश आगामी सो वितरण, कर्म रहे ना भव में काई ।।४५।।
कर्म रस्सी सें बन्धन में रह, कृषि भूमि वत कर्म फलावे ।
कच्चे अन्न की भाति सदा वह, ऊगत है अरू भूख मिटावे ।।
अष्टपुरी मे आगामी रु सँचित, फलित होय के प्रारब्ध पावे ।
ताहि ते अज्ञानी रामप्रकाश है, जन्म रू मरण भोगे भव आवे ।।४६।।
सुरक्षि कोष की अँकीय तिजोरी, दोय ताली रक्षक भोक्ता पास रहावे ।
रक्षक चाबी है प्रारब्ध बल, पुरुषार्थ भोक्ता के पास रखावे ।।
एक ते ताला खुले नही काहुते, कर्म सहायक होवत आवे ।
रामप्रकाश पृकृति है न्यायिक, सब के कर्म फल को सो भुक्तावे ।।४७।।
टिप्पणी-अंकीय तिजोरी -लाकर
हर मौसम के आने पर सब, वृक्ष पर फल रु फूल सजावे ।
वसन्त आये से लगे सुहावन, पतझड़ भी ऋतुकाल मे आवे ।।
ऐसे ही प्राणी के कर्म फले सब, अपने आप ही फल आय दिखावे ।
रामप्रकाश पृकृति है न्यायिक, ईश्वर महिमा अजब कहावे ।।४८।।
शुभ अशुभ रु धर्म अधर्म भी, कारण अकारण ज्ञात न जोवे ।
देश रु काल वस्तु धर्म से, धर्म अधर्म अधर्म धर्म होवे ।।
दे उपदेश सतगुरू बतावत, नीति समय विधि खूब सँजोवे ।
रामप्रकाश सतगुरू समर्थ बिन, पूण्य कर्म अकार्थ खोवे ।।४९।।

।। प्रारब्ध का वर्णन एवम कर्मों की निवृति ।।

अनन्त जन्म के संचित कर्म ही, पृकृति ब्याज प्रारब्ध कमावें ।

ज्ञान अग्नि कर संचित जल ही, प्रारब्ध कर्म ना एक उपावै ।।
क्रियमाण ले सेवक दुष्ट ही, वर्तित प्रारब्ध यहीं भुगतावे ।
रामप्रकाश हो ब्रह्मज्ञानी जन, निश्चय मुक्त निज मांहि समावे ।।१।।

।। तीन प्रकार के प्रारब्ध व उनकी निवृत्ति के साधन ।।

प्रारब्ध तीन प्रकार कहै सन्त, मन्द तीव्र तीव्रतर गाये ।
मन्द कटे हरि भजन सुमिरण ते, तीव्र कटे सन्त सान्निध्य पाये ।।
तीव्रतर हरि सँग रहे सन्त, भोग भोगावत शान्त सुहाये ।
रामप्रकाश कटे रु घटे सब, प्रारब्ध अटल रूप बताये ।।१।।
सात्विक सँचित मन्द बनावत, राजस तीव्र प्रारब्ध सारे ।
तामस सँचित तीव्रतम प्रारब्ध, घटक ब्याज प्राकृतिक भारे ।।
जैसे हो सँचित तैसे ही प्रारब्ध, जनम रु मरण के कारण न्यारे ।
रामप्रकाश सन्त शास्त्र लखावत, कर्म निर्णय कर भव में भारे ।।२।।
प्रारब्ध मन्द कटे हरिनाम जपे वर, श्रद्धा विश्वास हृदय बिच धारे ।
तीव्र प्रारब्ध सतगुरू शरणागत, ज्ञानी के सँग किये हरि हारे ।।
तीव्रतम कर्म कटे हरि सँगत, द्रढ ब्रह्मज्ञान अपरोक्ष अचारे ।
रामप्रकाश यह प्रारब्ध तीन ही, अज्ञानी भोगत भव में सारे ।।३।।
मन्द तीव्र तीव्रतम भेद से, प्रारब्ध तीन प्रकार बतावे ।
हरि कीर्तन जप सुमिरण से, मन्द कटे तन मेल हटावे ।।
सतगुरू प्रसाद ते बदल ही जावत, जीव सुखी भव बन्ध मिटावे ।
द्रढ ब्रह्मज्ञान ते तीव्रतम पाटत, रामप्रकाश वह मोक्ष समावे ।।४।।
मन्द प्रारब्ध कटे जप ध्यान ते, तीव्र कटे गुरू शरण गये ते ।
साधन विवेकादिक हो निष्काम ही, परम परमार्थ पथ भये ते ।।
ऋषि मुनि अवतार सन्त सब, तीव्रतर काटत भोग रह्ये ते ।
रामप्रकाश कटे आयु भोग ते, आयु बढे नित योग किये ते ।।५।।
ज्ञानाग्नि से कर्म रस्सी जल, बन्धन योग्य रहै नही कोई ।
भूना अन्न सो भूख मिटावत, ऊग सके नही जीवन होई ।।
अष्टपुरी सँग सँचित जले सब, कर्म आगामी वितरण जोई ।
रामप्रकाश तीव्रतर भोगत, प्रारब्ध मँद तीव्र को खोई ।।६।।
पूर्व संचित कर्म से पावत, सुख दु खः प्रारब्ध कर्म सिखावे ।
प्रारब्ध भोग मिटे न उपाय से, सामर्थ सतगुरू सो पलटावे ।।
लेख लिखे पर मेख लगावत, अलिख शब्द पर लेख लिखावे ।
रामप्रकाश हरि हर ऊपर, सतगूरू सामर्थ्य रूप दिखावे ।।७।।

।। जीवन मुक्ति के तीन कारण ।।

मुमुक्षू हो चार साधन युत, सतगुरू सान्निध्य श्रवणादि पावे ।
प्रथम वासना क्षय कर मानस, मनोनाश अवस्था लावे ।।
नैष्ठिक तत्वज्ञान में पूरण, जीवन्मुक्ति के वास बसावे ।
रामप्रकाश इन तीन कारण से, साधक परम पदार्थ ध्यावे ।।१।।

टिप्पणी-जीवन मुक्ति के तीन कारण - तत्वज्ञान, मनोनाश, वासनाक्षय है।

।। तीन प्रकार की दृष्टि विवेक ।।

चर्मदृष्टि जग स्थूल इन्द्रिय से, व्यवहार व्यवस्था देखत जानी।
दिव्यदृष्टि साधक सिद्ध मति मय, परमार्थ कर शोधन मानी।।
ब्रह्मवेता की समदृष्टि नित, ब्रह्मा तृण समता कर ठानी।
रामप्रकाश तीन है दृष्टि यह, दृष्टि सृष्टि वाद बखानी।।१।।
व्यवहारिक चक्षु बाहिर देखन, लौकिक सुधार सदा शुद्धि होवे।
अन्तर्चेतना अन्तर्चक्षु है, साधन विचार का अनुभव जोवे।।
अन्तर्ध्यान मे चक्षु सँयम है, परम अनुभूति होवत पोवे।
रामप्रकाश विचार के चक्षुष, खुले बन्द जो सँयम सोवे।।२।।
चक्षु खुले तो ज्ञान के समझ, व्यवहारिक शुद्धि की बात जानो।
जो बन्द है तब अन्तर्ध्यान है, ईश्वरीय परम विज्ञान प्रमानो।।
अश्रुपूरित प्रेम प्रदर्शित, चक्षु परिचय निस्फल न मानो।
रामप्रकाश की प्राकृतिक शक्ति है यह, इन के बिना अज्ञान पिछानो।।३।।
जैसी हो द्रष्टि वैसी हो सृष्टि भी, जहाँ द्रष्टि वहाँ सृष्टि दिखावे।
जब हो द्रष्टि तब हो सृष्टि भी, जितनी द्रष्टि उतनी सृष्टि भावे।।
शास्त्र सन्त रु कवि गण गावत, यही द्रष्टि सृष्टि वाद कहावे।
रामप्रकाश वेदान्त यों भाखत, अन्तस्थ प्राकृतिक दोष लखावे।।४।।
अन्दर की आँख खोल के देखो, बाहर के चक्षु मीच लो भाई।
सारी सृष्टि का ज्योति दर्शन, दो नैनन के बीच में साँई।।
सुरत शब्द का साधन करलो, सोहम् आप आप दरसाई।
रामप्रकाश यम नियमादिक, सब योग सधे दिखलाई।।५।।
प्रकृति ईश्वर की सर्वोच्च शक्ति यह, गुण दोष मय सब है भारी।
ज्ञानी की द्रष्ठि से देखत ही यह, सर्व ब्रह्म मय ब्रह्म विचारी।।
वैराग्य की द्रष्ठि असार कहै अरु, विषयी कहत है सँसारी।
रामप्रकाश सँसृति मय माया, यथाद्रष्ठि तथा सृष्टी है भारी।।६।।
आतमज्ञान निश्चय कर पावन, चित समान चित उज्वल थायो।
सर्व दिशा सच्चिदानन्द पूरण, द्वन्द को दोष सो दूर भगायो।।
अपेक्षाकृत और न दृष्टि मे भाषत, उतमराम निर्द्वन्द ही पायो।
रामप्रकाश लख्यो ब्रह्म केवल, अपने आप मे आप समायो।।७।।

।। तीन प्रकार की ग्रंथि ।।

ग्रन्थ वही सत मानने योग्य है, जाहि मे ग्रन्थि तीन समावे।
उद्देश्य में हेतु या कारण कथन, साहित्यिक गुण से परिक्षित भावे।।
लक्षणा वही जो भाव भरे गुण, शासन की विधि खोल बतावे।
रामप्रकाश शास्त्र अनुशासित, ग्रन्थन के गुण विधिवत गावे।।१।।
उद्देश्य परीक्षा लक्षणा युत हो, ग्रन्थि तीन गुण ग्रन्थ कहावे।
शासन सहित अनुशासित जीवन, नियम सिखावत शास्त्र गावे।।
तीन ग्रन्थि बिन ग्रन्थ न गावत, अनुबन्ध बिना नही साहित्य पावे।
रामप्रकाश परहित स्वबोद्धक, रचना लेखक यश कमावे।।२।।

।। तीन प्रकार के साहित्य एवं उनके प्रकार ।।

अल्प साहित्य पत्रकारिता, अल्प आयु वृत काल बितावे ।
गल्प साहित्य उपन्यास कहानीय, कल्पनाओं की बात बतावे ।।
सत्साहित्य सन्त वाणी वृत, हरि कथा रस आयु बढावे ।
रामप्रकाश नित अमर बने वह, सत्साहित्य से प्रेम लगावे ।।१।।
साहित्य तीन प्रकार लखावत, यथानाम तथा अर्थ लखावे ।
अल्प आयु अखबार कहावत, गल्प उपन्यास कहानी बतावे ।।
सत्साहित्य वेद वाणी सन्त, सदा सुबोध कल्याण सुजावे ।
रामप्रकाश पढो सत्साहित्य, जीवन सुखी धन भाग बनावे ।।२।।
अल्प साहित्य पत्र पत्रिकाएं जो, आज पढे कल पढा न जाये ।
उपन्यास आदिक गल्प साहित्य जो, कल्पित कथानक पात्र सजाये ।।
हर बार है सत्य से सजित, सत्साहित्य नूतन नित भाये ।
रामप्रकाश है त्रिविध प्रबोधक, समय की कीमत वही बताये ।।३।।
कागज एक धर्म कथा लिख, सात्विक बोध इतिहास बतावे ।
आरती पूजन होवत है नित, कागज एक अखबार छपावे ।।
पढा फैंकता हर कोई मानस, यही कथा उपदेश लखावे ।
रामप्रकाश जो हरि से जोड़त, वही जगत में पूज्य कहावे ।।४।।
समाचार पत्रिका जगत सँदेश है, ताही पढे फिर काम न आवे ।
हरि कथा इतिहास बतावत, नित्य आरती पूजन पावे ।।
ऐसे ही जग से प्रीत लगे वह, भव के माग में सीध सिधावे ।
रामप्रकाश हरि से जोड़त, जीव अमर पद आप समावे ।।५।।
कागज मानव एक बराबर, सँग किये फल वैसा ही पावे ।
असत के सँग व्यवहार किये तब, भव को भ्रमण भाग ते लावे ।।
सत के सँग इतिहास बने जग, नाम अमर हर मांहि समावे ।
रामप्रकाश पावे यश अपयश सो, सँगते आवत नीति बतावे ।।६।।

।। वेद की एक लाख श्रुति का कर्म,उपासना और ज्ञानकाण्ड में वितरण ।।

पितर भोमिया भेरव पूजत, अस्सी हजार जन दोड़त जावे ।
सौलह हजार प्रतिशत मानव, मन्दिर तीर्थ यज्ञ कमावे ।।
चार हजार व्यवहारिक ज्ञान की, लाख श्रुति यह वेद बतावे ।
रामप्रकाश ब्रह्मज्ञान वेदान्त को, उपनीषद् आत्मज्ञान लखावे ।।१।।

।। चार वंदन करने योग्य है ।।

भक्त श्रद्धा हरि की मन राखत, धर विश्वास शरण मे जावे ।
भक्ति है साधन शुभ कारण, सोई सम्बन्ध हरि सँग लावे ।।
भगवन्त है अन्तर्यामी परिपूरण, सतगुरू माध्यम ताही मिलावे ।
वन्दन योग्य है चार समान ही, रामप्रकाश ताहि शीश नमावे ।।१।।

।। चार प्रकार के वेद और उपवेद ।।

जाहि को वेद रु श्रुति कहै वह, ऋग्वेद यजुर्वेद कहाये ।
सामवेद रु अथरवेद है वह, वरुण अँगिरा उर वायु के आये ।।

चार विभाग किये झिमरी सुत, व्यास ने आपने शिष्य पढाये।
रामप्रकाश विद्या गुण सागर, धर्म सनातन मूल बताये ।।१।।
पैल को सँहिता रु वैशँपायन, ब्रह्मण ग्रन्थ अनूप पढाये।
आरण्यक जैमिनी सुमन्त उपनिषद, चार ही शिष्य को व्यास गढाये ।।
भाग विभाग ऋषिवर बहु तन, विविध भान्ति हो शिष्य सिखाये।
रामप्रकाश विद्या गुण सागर, धर्म सनातन मूल बताये ।।२।।
ऋग्वेद ते आयुर्वेद है, यजुर्वेद ते धनुवेद सुहाये।
सामवेद ते अथरवेद है, अथर ते शिल्पवेद बनाये ।।
चार ही वेद ते है उपवेद ही, मानव के हितकारक आये।
रामप्रकाश विद्या गुण सागर, धर्म सनातन मूल बताये ।।३।।
अस्सी हजार श्रुति वेद बखानत, विविध व्यवहार कर्म कहावे।
सौलह हजार उपासना श्रुति में, मन्त्र तन्त्र रु यन्त्र बतावे ।।
नौसौ निनानबे जगत ज्ञान को, चार हजार श्रुति वेद में गावे।
त्वँ वेदोऽसि ब्रह्मज्ञान है, रामप्रकाश स्वरूप लखावे ।।४।।

।। चार महावाक्य ।।

ऋग ऐतरेय प्रज्ञानं ब्रह्म भाखत, प्रतिनिधि लक्षण वाक्य बतावे।
साम छान्दोग्य तत्वमशि अर्थगत, उपदेशात्म महावाक्य भनावे ।।
अथर माण्डूक्य अयंमात्म ब्रह्म, साक्षात्कार स्वरूप लखावे।
रामप्रकाश यजुर वृहदारण्यक, अहं ब्रह्मास्मि निष्ठा लावे ।।१।।
उपनिषद वेद प्रतिनिधि चार हि, जीव ब्रह्मात्म लक्ष्य लखावे।
शब्दार्थ त्याग रु अर्थगत जानहू, एक स्वरूप का ज्ञान बतावे ।।
भाग त्याग लक्षणा कर जानहूं, सर्व खल्विदं ब्रह्म द्रढावे।
रामप्रकाश साम छान्दोग्य, सर्व ब्रह्म मय दृश्य दिखावे ।।२।।

टिप्पणी-
१-अहं ब्रह्मास्मि - "मैं ब्रह्म हूँ" (बृहदारण्यक उपनिषद १/४/१० - यजुर्वेद)
२-तत्त्वमसि - "वह ब्रह्म तू है" (छान्दोग्य उपनिषद ६/८/७- सामवेद)
३-अयम् आत्मा ब्रह्म - "यह आत्मा ब्रह्म है" (माण्डूक्य उपनिषद १/२ - अथर्ववेद)
४-प्रज्ञानं ब्रह्म - "वह प्रज्ञानं ही ब्रह्म है" (ऐतरेय उपनिषद १/२ - ऋग्वेद)

।। चार प्रकार के योग ।।

अष्टांग आसनादि हठयोग कर्म है, मन्त्रयोग गुरू शब्द रटावे।
राजयोग में हरदम सुमिरण, जीव ईश्वर से लग्न लगावे ।।
वृति समावत लययोग मैं, द्वन्द मिटे तब मुक्ति समावे।
चार प्रकार की योग विधि यह, रामप्रकाश गुरू युक्ति लखावे ।।१।।

।। चार सम्प्रदाय का विशद वर्णन ।।

श्री सम्प्रदाय के दोय भेद है, रामानुज रामानन्द जानो।
विशिष्ठाद्वैत सिद्धांत जाहि में, चिदाचिद विशिष्ठ बखानो ।।
कारण ब्रह्म रु कार्य ब्रह्म हि, अभिन्न स्वरूप सदा है मानो।
रामप्रकाश अच्युत बखानत, परिचय ज्ञान अतिशय जानो ।।१।।
ब्रह्म संप्रदाय ब्रह्मा से उच्चरित, माध्वाचार्य सिद्धान्त बखाने।

ब्रह्म सविशेष सर्गुण स्वरूप है, लक्ष्मीनारायण उपासना आने।।
वैष्णव भेद सम्प्रदाय यही वर, सात्त्विक भाव हृदय ठहराने।
रामप्रकाश यह ज्ञान बखानत, मानत है गुरू मुखी सुजाने।।२।।
रूद्र परंपरा शिव से आई है, वल्लभाचार्य से वल्लभ जाने।
शुद्धाद्वैत सिद्धांत है जाहि में, मार्ग पुष्टि रु मरियाद के छाने।।
माया के भेद से जीव को मानत, जीव यही ब्रह्म रूप दिखाने।
रामप्रकाश लखे यह ज्ञान ही, गुरु मुखी होय सो वैष्णव आने।।३।।
सनकादिक कुमार कहावत, निंबार्काचार्य निम्बार्क माने।
द्वैताद्वैत सिद्धांत है जाहि में, भेदाभेद स्वरूप बखाने।।
हंस कुमार सनकादिक भाषत, चतुः संप्रदाय भेद कहलाने।
रामप्रकाश यह भेद लखावत, गुरुमुखी कोई संत पिछाने।।४।।
श्री विष्णु के चतुर्भुज मे यह, शँखावतार रामानुज मानो।
सुदर्शनचक्र के विष्णु स्वामी रहे, सुदर्शनाचार्य उपनाम पिछानो।।
गदावतार निम्बार्काचार्य जी, पद्म रूप वल्लभाचार्य जानो।
रामप्रकाश यह वैष्णव जन मे, चार सम्प्रदाय परिचय छानो।।५।।
विशिष्ठाद्वैत सिद्धान्त रामानन्द, रमता राम का इष्ट हमारे।
विष्णु स्वामी के शुद्धाद्वैत है, रुद्र से चला सिद्धान्त विचारे।।
निम्बार्क सनकादिक इष्ट में, द्वैताद्वैत सिद्धान्त सुधारे।
ब्रह्म सम्प्रदाय से वल्लभाचार्य, रामप्रकाश यह द्वैत को धारे।।६।।
अष्ठ बीस रामानन्द द्वार श्री, निम्बार्क बारह द्वार को जानो।
माध्वाचार्य के आठ द्वार है, विष्णु स्वामी के चार ही मानो।।
बावन द्वाराचार्य मुख्य यह, वैष्णव रु श्री वैष्णव आनो।
रामप्रकाश यही चार सम्प्रदाय है, वैष्णव धर्म है आदि पुरानो।।७।।
रामानुजाचार्य के इष्ठ रमाश्री है, विष्णु उपास्य गरुड़ विचारे।
रामानन्दाचार्य के इष्ठ सीता श्री, रामचन्द्र जी उपास्य धारे।।
दोहुन को सिद्धान्त एक ही, विशिष्ठाद्वैत वेदान्त पुकारे।
रामप्रकाश श्री वैष्णव अग्रावत, उतमराम गुरूदेव हमारे।।८।।
वैष्णव सम्प्रदाय में अनेक शाखा श्री, विशेष मान्यता छतीस द्वारे।
श्री अग्रद्वारा के पद्रह द्वारा रु, श्री चेतन्य महाप्रभु से और अपारे।।
शाखोपशाखा प्रचार प्रसार मे, नानक दादू कबीर सारे।
रामप्रकाश हरि गुण गावत, जिन की वाणी सत्य उचारे।।९।।
रामानुजाचार्य के इष्ठ रमा श्री है, विष्णु उपास्य गरुड़ विचारे।
रामानन्दाचार्य के इष्ठ सीता श्री, रामचन्द्र जी उपास्य धारे।।
दोहुन को सिद्धान्त एक ही, विशिष्ठाद्वैत वेदान्त पुकारे।
रामप्रकाश श्री वैष्णव अग्रावत, सतगुरू उतमराम हमारे।।१०।।
श्री युत वैष्णव धर्म सम्प्रदाय में, नाना उपासना इष्ट पुजावे।
निर्गुण सर्गुण देवी देव अरु, विशिष्ठाद्वैत वेदान्त मनावे।।
बड़े द्वार में पोल बड़ी है, मनचाहा कलि माग बनावे।

रामप्रकाश प्रणाम सन्तन को, राम नाम पर शीश नमावे ।।११।।
शूक्ष्म तन के सत्रह तत्व मे, चिदाभास प्रकाश समावे ।
तब वह जीव कहावत है वर, स्थूल धारत आत्मा गावे ।।
पृकृति नियन्त्रित माया विशिष्ट हो, ईश्वर परमात्मा नाम धरावे ।
रामप्रकाश याते हो भिन्नता, पँच भूत अनात्मा गावे ।।१२।।
शूक्ष्म तन के सत्रह तत्व मे, चिदाभास प्रकाश समावे ।
तब वह जीव कहावत है वर, स्थूल धारत आत्मा गावे ।।
पृकृति नियन्त्रित माया विशिष्ट हो, ईश्वर परमात्मा नाम धरावे ।
रामप्रकाश याते हो भिन्नता, पँच भूत अनात्मा गावे ।।१३।।
दक्षिण मे श्रृँगेरी मठ में यह, यजुर्वेद अहँब्रह्मासिम गावे ।
पुरी भारती सरस्वती तीन ही, सुरेश्वराचार्य आदि गुरु आवे ।।
गोवर्धन मठ पूर्व मे राजत, प्रज्ञान्मानन्द ऋग्वेद बतावे ।
रामप्रकाश वन आरण्य यह, शँकराचार्य दशनाम कहावे ।।१४।।
शारदा मठ द्वारिका राजत, तत्वमसि साम को गावे ।
तीर्थ सरस्वति हस्तामलक जी, अयमात्म अथर को चावे ।।
ज्य़ोतिर्मठ बद्रीनाथ में, गिरि पर्वत सागर ये आवे ।
आद्य शँकराचार्य के यह रामप्रकाश दश नाम कहावे ।।१५।।

।। चार प्रमुख धामों का संक्षेप मे वर्णन ।।

वैष्णव धर्म श्री जगन्नाथ पुरी, द्वारिकापुरी कृष्ण धाम बसाये ।
बद्रीनारायण नर नारायण की, तपो मूर्ति धाम कहाये ।।
रामचन्द्र रामेश्वरम स्थापित, चार यही मुख्य धाम बताये ।
रामप्रकाश सनातन तीर्थ, तन के ताप रु ख्वाप मिटाये ।।१।।
बद्रीनारायण उतर दिशावृत, दक्षिण द्वारिका धाम कहावे ।
जगन्नाथपुरी दक्षिण माहि गन, रामेश्वरम चतुर्थ धाम को गावे ।।
सब ही तीर्थ महात्म छानत, प्रमुख पूण्य महि बतावे ।
रामप्रकाश दर्शन सुमिरण, नाम सुने अघ औघ नसावे ।।२।।

1- जगन्नाथपुरी धाम -
2- द्वारिका धाम -
3- बद्रीनाथ धाम -
4- रामेश्वरम धाम

१- जगन्नाथपुरी धाम

हिन्दुओं के चार धामों में से एक गिने जाने वाला यह तीर्थ पुरी, ओड़िसा में स्थित है। यह भगवान विष्णु के अवतार श्री कृष्ण को समर्पित है। रथ यात्रा यहाँ का प्रमुख और प्रसिद्ध उत्सव है। यह मन्दिर वैष्णव परंपराओं और संत रामानन्द से जुड़ा हुआ है। गोड़ीय वैष्णव संप्रदाय के संस्थापक चैतन्य महाप्रभु कई वर्श तक भगवान श्रीकृष्ण की इस नगरी में रहे थे। कथाओं के अनुसार भगवान की मूर्ति अंजीर वृक्ष के नीचे मिली थी। भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा इस मंदिर के मुख्य देव हैं जिन्हे अति भव्य और विशाल रथों में सुसज्जित करके यात्रा पर निकालते हैं। यह यात्रा रथ यात्रा के नाम से जानी जाती है जो कि आषाढ़ शुक्ल पक्ष की द्वितीय को आयोजित की जाती है। रथ यात्रा का उत्सव भारत के अनेकों वैष्णव कृष्ण मन्दिरों में भी बड़ी धूम धाम से मनाया जाता है एवं भगवान की शोभा यात्रा पूरे हर्ष उल्लास एवं भक्ति भाव से निकाली जाती है।जगन्नाथ मंदिर वास्तव में एक बहुत बड़े परिसर का हिस्सा है जो लगभग ४०००० वर्ग फिट में फैला हुआ है, मुख्य मन्दिर के शिखर पर भगवान विष्णु का श्री चक्र स्थापित है इस आठ कोणों के चक्र को “नीलचक्र” भी कहतें है जो अष्टधातु का बना है। यह मन्दिर अपने उच्च कोटि के शिल्प एवं अदभुत

उड़िया स्थापत्यकला के कारण भारत के भव्यतम मन्दिरों में गिना जाता है। मुख्य मंदिर के चारों ओर परिसर में करीब ३० छोटे-छोटे मंदिर हैं, जिनमें विभिन्न देवी-देवता विराजमान हैं। और वे अलग-अलग समय में बने है। मंदिर के बारे में एक रोचक तथ्य यह भी है कि यहाँ विश्व का सबसे बड़ा रसोई घर है जहाँ भगवान को अर्पण करने के लिये भोग तैयार किया जाता है जिसे ५०० रसोईये तथा उनके ३०० सहयोगी पूर्ण मनोयोग से तैयार करते हैं। खास बात यह भी है की इस भोग को तैयार करने में किसी धातु पात्र का प्रयोग नहीं होता है वरन् मिट्टी के पात्रों में ही सामग्री पकाई जाती है। यूं तो शास्त्रों में खंडित प्रतिमाओं की पूजा निषिद्ध बताई गई है परन्तु जगन्नाथपुरी में असंपूर्ण विग्रह की सेवापूजा व दर्शन होते है। यहाँ पर भगवान जगन्नाथ, भगवान बलभद्र एवं देवी सुभद्रा की मुर्तियाँ एक रत्न मण्डित पाषाण चबूतरे पर गर्भ गृह में स्थापित है। इतिहास के अनुसार इन मूर्तियों की अर्चना मंदिर निर्माण के कही पहले से ही की जाती रही है। इस मन्दिर के महत्व का पता इस बात से ही चलता है कि महान सिक्ख सम्राट महाराजा रंणजीत सिंह जी ने स्वंर्ण मन्दिर से भी ज्यादा सोना इस मन्दिर को दान दिया था। आज भी विश्व के कोने कोने से हिन्दु श्रद्धालु लाखों की संख्या में यहाँ आकर भगवान के दर्शन कर बड़ी मात्रा में चढ़ावा चढ़ाते है।

2- द्वारिका धाम

द्वारिका हिन्दुओं का प्रमुख तीर्थ स्थान है। द्वारिका भारत के पश्चिम में समुद के किनारे सौराष्ट्र प्रान्त में बसी है। यह चारों धामों में एक है। आज से हजारों वर्ष पूर्व भगवान श्री कृष्ण ने इसे बसाया था। भगवान श्रीकृष्ण का जन्म मथुरा में हुआ, गोकुल में वह पले बड़े परन्तु शासन उन्होंने द्वारिका में ही किया, पहले मथुरा ही श्री कृष्ण की राजधानी थी परन्तु कालान्तर में उन्होंने मथुरा को छोड़कर द्वारिका को अपनी राजधानी बनाया। यही से उन्होंने सारे देश की बागडोर संभाली, धर्म की रक्षा की, अधर्म का नाश किया, पापियों को दंडित किया। द्वारिका एक छोटा कस्बा है, कस्बे के एक हिस्से में चहारदीवारी के अन्दर बड़े बड़े दिव्य मंदिर है। द्वारिका की सुन्दरता अद्वितीय है। द्वारिका के बारे में कहा जाता है कि इस नगर की स्थापना स्वयं विश्वकर्मा देव ने अपने हाथों से की थी तथा उन्ही के कहने पर श्रीकृष्ण जी ने तप करके समुद्रदेव से भूमि के लिये प्रार्थना की थी तथा प्रसन्न होकर समुद्रदेव ने उन्हें बीस योजन भूमि प्रदान की थी। यहाँ भगवान श्रीकृष्ण का द्वारिकाधीश मंदिर सुन्दरता एवं वास्तुकला का अदभुत उदाहरण है। चूँकि भगवान श्रीकृष्ण को सम्पूर्ण जगत का स्वामी माना गया है इसलिये द्वारिकाधीश मंदिर को जगत मंदिर भी कहते है। यह मंदिर लगभग २५०० वर्ष पुराना है तथा इसके गर्भगृह में भगवान द्वारिकाधीश की स्थापना है। यहाँ उनका काले रंग का विगृह चर्तुभुज विष्णु का रूप है। इस भव्य मंदिर का भवन पाँच मंजिला है तथा यह भवन ७२ खम्बों पर टिका है, यह मंदिर लगभग ८० किट ऊँचा है। गुम्बद पर सूर्य एवं चन्द्रमा के चित्र अंकित लम्बी पताका लहराती रहती है। यह अति सुन्दर मंदिर आशचर्यजनक रूप से गोमती नदी एवं अरब सागर के संगम स्थल पर स्थित है। इस मंदिर में एक बहुत ऊँचा शानदार दुर्ग और श्रद्धालुओं के लिये एक विशाल भवन भी बना है। मंदिर में दो खूबसूरत प्रवेश द्वार बने है। इसके मुख्य द्वार को मोक्ष द्वार तथा दक्षिणी द्वार को स्वर्ग द्वार कहते है। यहाँ से मात्र १२ कि0मी0 की दूरी पर नागेश्वर महादेव जी का मंदिर है जो भगवान शिव के १२ ज्योतिलिंगों में एक माना जाता है। इसके अतिरिक्त गोपि तालाब, रूकमणि मंदिर, निश्पाप कुण्ड, रणछोड़ जी मंदिर दुर्वासा और त्रिविक्रम मंदिर, कशेश्रर मंदिर, शरदा मठ, चक्र तीर्थ, भेट द्वारिका, कैलाश कुण्ड, शेख तालाब आदि अति पर्वित्र एवं दर्शनीय स्थल है।

3- बद्रीनाथ धाम

बद्रीनाथ मन्दिर भारत के उत्तराखण्ड राज्य में स्थित है, यह पवित्र तीर्थ स्थल हिन्दुओं के चारों धाम में एक है। भगवान बद्रीनाथ धाम में विष्णू भगवान का मन्दिर है। बद्रीनाथ धाम चारों ओर से बर्फ से ढ़की पर्वत श्रंखलाओं से घिरा है। इस धाम का हिन्दु धर्मशास्त्रों, पुराणों में कई स्थान पर उल्लेख हुआ है। यह इतना पवित्र धाम है कि यह मान्यता है कि स्वयं भगवान ब्रह्मा ने यहां पर मानव एवं देवताओं के लिये पूजा का समय निर्धारित किया है। यहां पर देवता वैषाख माह के प्रारम्भ होने पर मनुष्यों को पूजा का भार सौंपकर अपने स्थान पर चले जाते है फिर कार्तिक माह में मनुष्यों से पूजा का भार पुनः ग्रहण करते है। यह मन्दिर अप्रैल में खुलकर नवम्बर में बन्द हो जाता है क्योंकि तब यहां पर सिर्फ बर्फ ही बर्फ जमी रहती है। हिन्दु धर्म की मान्यता के अनुसार मन्दिर का पट बन्द होने से पूर्व यहां पर ६ महीने के लिये नहाने, खाने एवं भगवान बद्रीनाथ के लिये दातून की व्यवस्था की जाती है तथा ६ माह के लिये अखण्ड दीपक प्रज्जवलित किया जाता है जो ६ माह के बाद भी यहां पर जलता हुआ मिलता है। भगवान बद्रीनाथ की मूर्ति को जगत गुरू शंकराचार्य ने ११ वर्ष की उम्र में नारद कुण्ड से निकालकर उसे स्थापित किया था। यह दिव्य मूर्ति एक मीटर लम्बी है, यह अद्‌भुत मूर्ति स्वयं निर्मित है इसे किसी ने भी नही बनाया है। वर्तमान में नम्बूरीपाद एवं डिमरी ब्राह्मणों द्वारा भगवान बद्रीनाथ की पूजा अर्चना की जाती है। मन्दिर के कपाट खुलने के बाद हर वर्ष लाखों लोग विश्व के कोने-कोने से अपने अराध्य देव के दर्शनों के लिये यहां आते है तथा अपनी समस्त इच्छाओं की

पूर्ति की कामना के लिये प्रार्थना करते है। बद्रीनाथ के निकट ब्रह्म कपाल, संतोपथ सरोवर, चरण पादुका, शेषनेत्र, व्यास गुफा, भविष्य बदरी, आदि बदरी आदि अन्य पवित्र एवं अति दर्शनीय स्थल है।

4- रामेश्वरम धाम

रामेश्वर हिन्दुओं का एक अत्यन्त पवित्र तीर्थ है जो भारत के तमिलनाडु के रामनाथपुरम जिले में स्थित है। रामेश्वरम नाम से ही पता लगता है कि यह कितनी पवित्र जगह होगी। रामेश्वरम अर्थात (राम + ईश्वर) कहते है कि भगवान राम ने लंका विजय के बाद अनगिनत योद्धाओं के मारे जाने एवं रावण जैसे चारों वेदों के ज्ञाता एवं शिव भक्त की मृत्यु से लगे ब्रहम हत्या का पाप धोने के लिये यहाँ पर शिवलिंग की स्थापना की थी। स्वयं भगवान राम द्वारा यह शिवलिंग स्थापित करने के कारण यह स्थान अत्यन्त पवित्र एवं मनुष्यों के सभी पापों का नाश करने वाला है। यहाँ स्थापित शिवलिंग १२ ज्योर्तिलिंगों में एक माना जाता है तथा रामेश्वर धाम की गणना हिन्दुओं के पवित्रतम चारो धामों में की जाती है। कहते है जिस प्रकार उत्तर में पवित्र नगरी काशी का स्थान है वही मान्यता दक्षिण में इस अति पूजनीय तीर्थ को प्राप्त है। रामेश्वर धाम चेन्नई से दक्षिण-पूर्व में लगभग ४२५ मील की दूरी पर स्थित है। यह शंख के आकार का अति सुन्दर द्वीप है जो हिन्द महासागर तथा बंगाल की खाड़ी से चारों ओर से घिरा है। प्राचीन काल में यह भारत की मुख्य भूमि से जुड़ा था लेकिन धीरे-धीरे समुद्र की लहरों ने इसे काट दिया और यह एक टापू बन गया। यही पर भगवान राम ने नल नील तथा वानर सेना के सहयोग से एक पुल बनाया था जिस पर चड़कर लंका पर विजय प्राप्त की थी परन्तु बाद में यह पुल धनुषकोटि नामक स्थान पर विभिषण के कहने पर तोड़ दिया गया था। आज भी इस पुल के अवशेष सागर में दिखायी देते है। रामेश्वर का मंदिर अत्यन्त भव्य सुन्दर एवं विशाल है। यह मंदिर भारतीय वास्तु एवं शिल्प कला का उत्कर्ष नमूना है यह मंदिर ६ हेक्टेयर में फैला है, इसके प्रवेशद्वार का गोपुरम अत्यन्त भव्य एवं विशाल है तथा यह ३८.४ मीटर ऊँचा है मंदिर के अन्दर और प्राकार में सैकड़ो विशाल खम्भें है जिन पर अलग-अलग अति सुन्दर बेल-बूटे उकेरे गये है। इस मंदिर का गलियारा विश्व का सबसे बड़ा गलियारा माना जाता है। इस मंदिर में कई लाख टन पत्थर लगे है मंदिर के अन्दर भीतरी भाग में चिकना काला पत्थर लगा हैं कहते है यह पत्थर लंका से नावों पर लादकर लाये गये थे। रामेश्वरम से लगभग ३३ मील दूर रामनाथपुरम नामक स्थान है। कहते है मंदिर को बनाने एवं इसकी रक्षा करने में यहाँ के राजाओं का प्रमुख योगदान रहा है। यहाँ के राजभवन में एक काला पत्थर रखा हुआ है मान्यता है कि यह पत्थर भगवान राम ने केवटराज के राजतिलक में उसके चिन्ह के रूप में प्रदान किया था। इस लिये श्रद्धालु इस पत्थर के दर्शन के लिये यहाँ जरूर आते है। यहाँ पर इसके अतिरिक्त विल्लीरणि तीर्थ, सेतू माधव, बाइस कुण्ड, एकांत राम, सीता कुण्ड, आदि सेतु, राम पादुका मंदिर, कोदण्ड स्वामी मंदिर आदि प्रमुख एतिहासिक, पवित्र एवं दर्शनीय स्थल है।

।। जीवन मे शुभ चार धाम ।।

जीवन मे शुभ चार धाम धन, आनन्द मँगल मौद बढावे।
माँ ममता की गौद सदा शुभ, बहिन की राखी मौद ही लावे।।
सतगुरू शिक्षा पालन तीर्थ, पतिव्रता नारि सो पूण्य कमावे।
रामप्रकाश मिले यह जाहि को, धन्य धन्य वह जीव कहावे।।१।।
सुख साधन सम्पन्न भाग्य शाली वह, धन्य मानव है जग माँही।
किन्तु परम भाग्यशाली वो ही है, भोजन भूख लगे तन ताँही।।
सेज नींद रु धन धर्म हो, विशिष्टता शिष्टता है नित वाँही।
रामप्रकाश है वन्दन योग्य वही, लोक परलोक है सुख राही।।२।।

।। चार प्रकार के जीव (रामानुज स्वामी के मत से) ।।

बद्ध जीव सँसृति में आनन्द, गृह कलित में सुख मनावे।
मुमुक्षु जीव मोक्ष हितार्थ, साधन सहित सतगुरू ढिग जावे।।
जीवन्मुक्त विदेह को पावत, मुक्त स्वरूप हो ब्रह्म समावे।
नित्य मुक्त हो रामप्रकाश सो, तुरियातीत मे एक रहावे।।१।।

।। चार प्रकार के भक्त ।।

आर्त दुःख में ईश्वर मनावत, अर्थार्थी धन सुत चाहत चावे।

जिज्ञासु मुक्ति का इच्छुक, गुरू मुख से वर श्रवण लावे ।।
साधन सहित ज्ञानी पद मुक्तक, पाँच प्रयोजन निश्चित पावे ।
रामप्रकाश भक्त यह चार ही, ईश्वरीय भक्ति से लाभ उठावे ।।१।।
दुःख बन्धन मे भजनादि करे, आर्त भक्त सो मुक्ति चावे ।
धन सुत आदि से कामना ध्यावत, अर्थार्थी सो भक्त कहावे ।।
आतम ज्ञान प्राप्ति कारण, हरि गुरू शरण जिज्ञासु जावे ।
रामप्रकाश ब्रह्म लक्ष कियो जिन, ज्ञानी भक्त यह चार बतावे ।।२।।

।। चार प्रकार की दीक्षा ।।

दीक्षा चार प्रकार से होवत, सतगुरू का उपदेश लखावे ।
शाब्दिक मान्त्रिक साम्भवी जानहू, कार्मिक प्रत्यक्ष ज्ञान लखावे ।।
स्मरण दृष्टि शब्द स्पर्श से, सतगुरू भव से पार पठावे ।
रामप्रकाश हरि से समर्थ, सतगुरू भव से पार लँघावे ।।१।।
स्मरण से दीक्षा कछुआ सम जानहू, सतगुरू समृति शब्द पकावे ।
दृष्टि से दीक्षा मछली सम जानहू, सतगुरू दर्शन से फल पावे ।।
शब्द से दीक्षा कुररी पक्षीवत, भ्रमण सतसँग ज्ञान सधावे ।
स्पर्श से दीक्षा मयूरी वत मानहू, रामप्रकाश मस्तक हाध धरावे ।।२।।
मान्त्रिक मन्त्र सिद्धि कर मानव, साधक गुरू भेद को पावे ।
साम्भवी दीक्षा क्रिया कर साधत, देव विद्या अनूपम लावे ।।
ब्रह्म दीक्षा दुर्लभ अति पावत, ज्ञान रु ध्यान के मार्ग जावे ।
रामप्रकाश यह गुप्त भेद है, परम जिज्ञासु युक्ति समावे ।।३।।
मान्त्रिक दीक्षा सतगुरू जन देवत, भावुक भक्ति के मार्ग लागे ।
साम्भवी दीक्षा साधन शक्ति है, साधन योग या ज्ञान के धागे ।।
अनुबन्ध चार धरे चित पूरण, ब्रह्मवेता ब्रह्म दीक्षा में जागे ।
रामप्रकाश गुरू ज्ञान के सागर, अधिकारी बिन देवे नही सागे ।।४।।

।। चार प्रकार के पुरुष ।।

कनिष्ठ पुरुष पुकारत है नित, तेरा है सो मेरा ही सारा ।
मध्यम कहै तेरा तेरे पास रहे, मायावृत है मेरा मेरे वारा ।।
उतम पुरुषोत्तम वाचत है यह, मेरा है सो भी तेरा ही प्यारा ।
रामप्रकाश ज्ञानी जन बोलत, तेरा मेरा नही यह नाशनहारा ।।१।।

।। चार प्रकार के नर ।।

कहै रु करे सहतूत समान है, करे रु कहै एक आम समाना ।
केवल कहै पर करे नही कछु फूल गुलाब सुगन्ध सुहाना ।।
कोई कहै नहि रु करे नही कछु, बाँस समान व्यर्थ है जग में आना ।
रामप्रकाश नर चार प्रकार के, आवत जावत गावत गाना ।।१।।
पुष्प अवान्तर फल ही आवत, आम समान कहै रु कमावे ।
पुष्प रु फल सँग सहतूत मे, कहना करना साथ दिखावे ।।
फल विहीन गुलाब सुगन्ध है, केवल कह नही काम करावे ।
रामप्रकाश कोई बाँस समान है, पुष्प रु फल एक ना आवे ।।२।।

।। चार प्रकार के नुगरे ।।

जो सतगुरू शरण में जावत, आज्ञा पालन नेक ना माने ।
गुरू की निन्दा होवे कहिं ठोर में, सुने नही प्रतिकार को ठाने ।।
सतगुरू बेमुख होय रहे वह, या गुरू बिन होय के आयु बितावे ।
रामप्रकाश यह चार प्रकार के, है नुगरे जन कोईक जाने ।।१।।
सन्त हृदय नवनीत समान है, सठ सुधर ही सतसँगत पाई ।
काहु की सुन खल ईर्षा करही, तिन परि हरहु श्वान सम लाई ।।
मूरख हृदय न चेतत कबहूँ, गुरू विरँची सम मिले जो आई ।
रामप्रकाश चार विधि मानव, सन्त शास्त्र यों देत लखाई ।।२।।

।। चार प्रकार के अज्ञानी मानव ।।

अज्ञानावृत जन चार प्रकार के, होवत स्वभाव सब न्यारे न्यारे ।
मूढ भाव से जीवन वर्तित, मोहनी लोभ में प्रपँच धारे ।।
आसुरी निशँक हिंसक होवत, राक्षसी पृवृति पाप पिटारे ।
रामप्रकाश यह नास्तिक मानव, हरि भक्ति से बेमुख सारे ।।१।।

।। चार प्रकार के साधुजन ।।

चार प्रकार के साधु जग होवत, सता है बाल योगेश्वर जाने ।
मता मति जब उपजत है घट, सतसँग गुरू मुख खोज लगाने ।।
तता तँग होवत व्यवहार में, कुल परिवार कह्यो नही माने ।
रामप्रकाश हता हत सम्पति, नारि मुँई घर त्याग बगाने ।।१।।
सता साधु होवत है साधक, ब्रह्मचर्य वृत वेद सँभारे ।
मता मति उपजे जब हृदय, सतसँग साधन श्रद्धा उर सारे ।।
विवेक वैराग मुमुक्षुता धारक, सतगुरू सम्मुख ज्ञान विचारे ।
रामप्रकाश ब्रह्मवेता होवत, सार्ष्टिता मुक्ति के भेद सुधारे ।।२।।
मता रु हता साधु जो होवत, जीवन यापन सुख उपावे ।
घर के मोह परिवार के बन्धन, छूटे नही भव भीतर भावे ।।
भोजन पावत बात सुनावत, मौन सधावत धन कमावे ।
रामप्रकाश हो हरि शरणागत, आनन्द से वह भोजन पावे ।।३।।

।। चार प्रकार के खानि के जीव ।।

अण्डज है अण्डे से उत्पन्न, पिण्डज तन के सँग से आवे ।
उद्भिज्ज भूमि से जीवा योनिज, स्वेदज सोई स्वेद से पावे ।।
चार खानि के जीव चराचर, लाख चौरासी योनि धरावे ।
रामप्रकाश ज्ञान बिन मानव, वारम्वार इन मे भटकावे ।।१।।

।। चार प्रकार की बाणी ।।

परा वाणी नाभि सँकल्प से, ऋगवेद शूक्ष्म गति गावे ।
पश्यन्ति हृदय अँकुरित यजुर, वाणी विमल भाव दिखावे ।।
मध्यमा कण्ठ दो पात विचार में, साम को ज्ञान हृदय उपजावे ।
वैखरी मुख मे अथर फैलावत, रामप्रकाश भावावेग लखावे ।।१।।
भावावेग पँचम वाणी गत, सर्व शरीर में व्यापक बोले ।

हाथ पाँव आँख आदि गत, प्रकट होवत अन्तर खोले ।।
चार वाणी चार स्थान में, निश्चित कारज सोई तोले ।
रामप्रकाश मानस तन वाचक, परम परमार्थ आनन्द ओले ।।२।।
वाणी वैखरी थकने पर जो, परा के भाव पश्यन्ति थावे ।
पश्यन्ति मध्यमा बढ न सके वह भावावेग से बाहर आवे ।।
हाथ पाँव रु चक्षु शीस से, बाहर आकर भेद बतावे ।
रामप्रकाश यह पँचम वाणी है, गुरू गम बिन भेद न पावे ।।३।।
परा नाभि वृत अनुभव दर्शित, गुप्त बीज हो उत्पन्न होवे ।
पश्यन्ति अँकुरित हृदय वृत बिच, परम पुरषोत्तम आप ही जोवे ।।
मध्यमा कण्ठगत डाल रूप हो, प्रेरित परम विचार को पोवे ।
रामप्रकाश वैखरी विस्तृत, डाल पात फल फूल फैलावे ।।४।।
नाभी में बीज स्वरूप परा लख, सँकल्प शूक्षम ज्ञान भण्डारी ।
पश्यन्ती ज्ञान उपार्जन अँकुर, अन्तस विवेक जगावन वारी ।।
मध्यमा शुभाशुभ दोय पातवत, वाणी विवेक विचारन हारी ।
रामप्रकाश है वैखरी बिखरत, डाल पात फल देवन हारी ।।५।।
वाणी चार है भ्यानक रोचक, वैखरी यथार्थ ज्ञान फैलावे ।
मध्यमा कण्ठ विचार विषयगत, अनुभव मूल कथे मन भावे ।।
पश्यन्ती हृदय गत करे विवेक ही, वेद यथार्थ बोध बतावे ।
परा नाभी में रामप्रकाश सो, शब्द ब्रह्म का रूप लखावे ।।६।।
परा ऋग्वेद पूर्व दिशा माही, दिशा का बोध आदि दरशावे ।
मन्त्र यजुर्वेद उतर मानव, देवत्व स्वरूप सदा सुख पावे ।।
साम सँगीत मय वेद बतावत, दक्षिण ज्ञानामृत बोध बढावे ।
रामप्रकाश अथर में तान्त्रिक, पश्चिम बोध सदा गुण गावे ।।७।।
त्रिकाल त्रिमुखी वैखरी भाषत, विविध विविधता बोध फैलावे ।
माया मुखी विस्तार प्रसारण, प्रक्रिया खोलत ज्ञान बतावे ।।
जीव मुखी है मन मुख्यालय, पृकृति बोध के विषय कमावे ।
गुरू मुख ज्ञान कथे ईश्वर मय, रामप्रकाश ब्रह्म रूप लखावे ।।८।।
ऋग्वेद सूर्य ऋषिवर, प्रज्ञानमानन्द वाक्य दरशावे ।
यजुर्वेद अग्नि ऋषि कर, अहँब्रह्मास्मि महावाक्य गावे ।।
सामवेद वरूण तत्वमशि, महावाक्यका अर्थ लगावे ।
अथर्ववेद अयमात्म ब्रह्म, रामप्रकाश वायु ऋषि भावे ।।९।।

।। पंचम बानी भावावेग का स्वरुप ।।

कर घुटने शिर चक्षु ते, सैन समझावत भाव ।
चारों वाणी से परे, भावावेग स्वभाव ।।१।।

।। चार प्रकार की मौन ।।

इन्द्रिय संयम हो तन की मौन है, वाणी की मौन गूंगा गम पावे ।

वासना त्याग करें मन मानस, तीन हूं मौन से मुनि कहावे ।।
ज्ञान की मौन है ब्रह्मज्ञानी गम, अष्ठपुरी सब संयम कहावे ।
मौन है चार प्रकार बखानत, रामप्रकाश यों शास्त्र गावे ।।१।।

।। चार प्रकार के आश्रम ।।

गायत घर में एक नारी व्रत, ब्रह्मचर्य का नियम निभावे ।
ब्राह्म मासिक ऋतुदान दे, गृहस्थ धर्म को खूब सँभावे ।।
प्रजापात्य परिवार पालक, वानप्रस्थ ले बोध कमावे ।
नैष्ठिक रामप्रकाश ले जीवन, ज्ञान रु ध्यान से वेद द्रढावे ।।१।।

।। गृहस्थ आश्रम के अंतर्गत षट् प्रकार के ग्रहस्थी ।।

गृहस्थ धर्म अतिशय वर सुन्दर, जन निभावत धर्म को कोई ।
यती सती साधु सन्त सब, ब्रह्मचारी रु वानप्रहस्थ जोई ।।
सन्यासी सब जपी तपी जन, ज्योतिष देखन हार हो सोई ।
रामप्रकाश पूण्यात्म जीवन, विरले मुक्त नशे से होई ।।१।।
ग्रहस्थी षट् प्रकार बखानत, पावन जीवन बोध सजावे ।
वार्ताक और शालीन, यायावर, सन्यासिक, उच्छवृति, बतावे ।।
अयाचक यह नाम गुणावत, नारद उपननिषद में यही लखावे ।
भारती समाज दर्शन गावत, रामप्रकाश जो लक्षण गावे ।।२।।

।। चार प्रकार के वानप्रस्थ आश्रम ।।

वानप्रस्थ चार प्रकार बखानत, वैखानिस घर वास बसावे ।
औदुम्बर मठ मन्दिर धारक, परोपकारिक जीवन को पावे ।।
बालखिल्य वनवास करे वह, खेती चून चुन कर लावे ।
फैनप रामप्रकाश है पावन, पति पत्नि सन्यास कमावे ।।१।।
टिप्पणी - फैनप अर्थात विक्षिप्त अवस्था मे पागल मस्ती मे भ्रमण करके फल फूल से वनवासी जीवन बिताता है

।। चार प्रकार के सन्यास कथन ।।

कुटीचक आश्रम वास है उतम, जन जनार्दन सेवा करावे ।
सन्यास बहुदक अरण्यवास हो, करे फलाहार नदी तट आवे ।।
हँस भिक्षा वृत्ति बोधिक जीवन, नित्य पाँच घर भिक्षा पावे ।
रामप्रकाश मय परमहँस हो, प्रारब्ध से जीवन लावे ।।१।।
कुटिचक आश्रम धाम बनावत, मानव धर्म उपकार कमावे ।
बहुदक तीर्थ वास करे नित, हँस भिक्षावृत भोग लगावे ।।
परिव्राजक परमहँस वही वर, ज्ञान अवस्थ परम निभावे ।
रामप्रकाश ब्रह्मच वृत, पुनरावृति पद मोक्ष को पावे ।।२।।
कुटीचक सन्यास को धर्म स्वरूप है, आश्रम मठ रु कुटीया बनावे ।
जन के जागरण काम करे शुभ, धर्म प्रचार सतसँग सुनावे ।।
पुरुषार्थ सँग परमार्थ में, साधन योग रु ज्ञान जगावे ।
अच्युत रामप्रकाश बखानत, शास्त्र नीति सद् ग्रन्थ लखावे ।।३।।

बहुदक सन्यास को धर्म कहै यह, जल जगदीश को इष्ट उर लावे।
कृषि खलिहान से अन्न भिक्षावृत्ति, नदीयों तट पर वास बसावे।।
नाम जपे रु तपे तन योग में, त्याग में आपनो जीवन बितावे।
रामप्रकाश तजे भ्रम दैहिक, शास्त्र नीति सद् ग्रन्थ लखावे।।४।।
हँस सन्यास को विचित्र धर्म है, जप तप त्याग रु योग कमावे।
पाँच घरों नित भिक्षावृत्ति कर, जीवन को गुजरान चलावे।।
नहीं मिले तब दूसरि दिन में, गुजरान हेतु भिक्षाटन जावे।
रामप्रकाश अग्रावत भाषत, शास्त्र नीति सद् ग्रन्थ लखावे।।५।।
जो परमहँस सन्यास बखानत, अति कठिन तप त्याग को लावे।
दश कदम दूर दृष्टि नही डालत, एक निष्ठ को इष्ट निभावे।।
साग पात फल फूल को पावत, नदी से जल कर पात्र बनावे।
रामप्रकाश को साधत योग में, शास्त्र नीति सद् ग्रन्थ लखावे।।६।।
प्रबल वैराग्य विवेक सहित हो, शम दम तितिक्षा साधन लावे।
द्रढ अपरोक्ष कियो द्रढ निश्चय, आतम ज्ञान में मस्त रहावे।।
हर्ष रु शोक द्वन्द्वात्मक हानि हो, प्रारब्धवश भू जीवन पावे।
रामप्रकाश सो विद्वत सन्यास है, शास्त्र सन्त सिद्धान्त लखावे।।७।।
जो जन विरक्त लेत सन्यास ही, विवेक वैराग्य साधन पुट पावे।
मुमुक्षु भाव से सतगुरू सम्मुख, समर्पित प्रेम से शीश नमावे।।
श्रवण मनन करे निदिध्यासन, उत्कृष्ट नियम चित निभावे।
विविदिषु सन्यास कहावत, रामप्रकाश नैष्ठिकता लावे।।८।।
मन्द प्रारब्ध कुटिचक धारत, मध्यम वैराग्य बहुदक आवे।
हँस सन्यास सो पाँच घरो सन, भिक्षुक भोजन जीवन पावे।।
कर्म करे शुभ अशुभ निवारत, अध्ययन कर स्वाध्याय सधावे।
रामप्रकाश वह विरक्त भावुक, साधन रत सदा ही रहावे।।९।।
अशक्त कुटिचक धारत साधन, आध्यात्मिक चिन्तन पूण्य कमावे।
शिष्य शोक मिटावत सँशय, साधन सहित सो ज्ञान लखावे।।
काम्य कर्म रु निषिद्ध त्यागत, शुभ धर्म की नीति निभावे।
रामप्रकाश मरियाद रखे वह, शास्त्र रीति से लोक सिखावे।।१०।।
वृद्धावस्था आवन के पर, वानप्रस्थ रीति निभाई।
होय वैराग्य मृत्यु समीप ही, निमित आतुर वैराग्य कहाई।।
नित्य नैमित्तिक कर्म प्रायश्चित, ईश उपासन चित लगाई।
रामप्रकाश अनिमित भेद से, क्रम सन्यास कह्यो इमि गाई।।११।।

।। चार प्रकार के प्रलय ।।

ब्रह्मा कल्प पर नित्य प्रलय होवत, अर्ध आयु नैमित्तिक कहावे।
ब्रह्मा आयु जब होय समापन, महाप्रलय तब धूम मचावे।।
तीन प्रलय सृष्टि महि व्यापत, चतुर्थ ज्ञानी के हेतु बतावे।
रामप्रकाश कारण कार्य लय, जरा मरण में फेर न आवे।।१।।

।। कल्प का वर्णन ।।

हिन्दू समय चक्र की बहुत लम्बी मापन इकाई है।

- ३६० दिन = १दिव्य अहोरात्र
- दिव्य १२००० वर्ष= १ चतुर्युगी
- ७१ चतुर्युगी= १ मन्वन्तर
- १४ मन्वन्तर/ १०००चतुरयुगी = १ कल्प

वैदिक हिन्दू ग्रन्थों का उल्लेख

सृष्टिक्रम और विकास की गणना के लिए कल्प हिन्दुओं का एक परम प्रसिद्ध मापदंड है। जैसे मानव की साधारण आयु सौ वर्ष है, वैसे ही सृष्टिकर्ता ब्रह्मा की भी आयु सौ वर्ष मानी गई है, परंतु दोनों गणनाओं में बड़ा अन्तर है। ब्रह्मा का एक दिन 'कल्प' कहलाता है, उसके बाद प्रलय होता है। प्रलय ब्रह्मा की एक रात है जिसके पश्चात् फिर नई सृष्टि होती है। चारों युगों के एक चक्कर को चतुर्युगी अथवा पर्याय कहते हैं। १,००० चतुर्युगी अथवा पर्यायों का एक कल्प होता है। ब्रह्मा के एक मास में तीस कल्प होते हैं जिनके अलग-अलग नाम हैं, जैसे श्वेतवाराह कल्प, नीललोहित कल्प आदि।प्रत्येक कल्प के १४ भाग होते हैं और इनभागों को 'मन्वंतर' कहते हैं। प्रत्येक मन्वंतर का एक मनु होता है,इस प्रकार स्वायंभुव, स्वारोचिष् आदि १४ मनु हैं। प्रत्येक मन्वंतर के अलग-अलग सप्तर्षि, इद्रं तथा इंद्राणी आदि भी हुआ करते हैं। इस प्रकार ब्रह्मा के आज तक ५० वर्ष व्यतीत हो चुके हैं, ५१ वें वर्ष का प्रथम कल्प अर्थात् श्वेतवाराह कल्प प्रारंभ हुआ है। वर्तमान मनु का नाम 'वैवस्वत मनु' है और इनके २७ चतुर्युगी बीत चुके हैं, २८ वें चतुर्युगी के भी तीन युग समाप्त हो गए हैं, चौथे अर्थात् कलियुग का प्रथम चरण चल रहा है ।

युगों की अवधि इस प्रकार है - सत्युग १७,२८,००० वर्ष;
त्रेता १२,९६,००० वर्ष;
द्वापर ८,६४,००० वर्ष
कलियुग ४,३२,००० वर्ष

अतएव एक कल्प १००० चतुर्युगों के बराबर यानी चार अरब बत्तीस करोड़ (४,३२,00,00,000)मानव वर्ष का हुआ।

चार लाख बतिस हजार वय, कलियुग वरस की आयु बितावे ।
आठ लाख चौंसठ हजार वर्ष, द्वापर से युग चार यों आवे ।।
सतरह लाख अठाइस हजार से, त्रेतायुग की आयु कहावे ।
इकीस लाख रु साठ हजार पर, रामप्रकाश तब सतयुग पावे ।।२।।

।। चतुर्युग का अन्यार्थ।।

मानव जीवन के सँग चतुर्युग, सदा सत्य सँग रहते है ।
शयन आलस्य कलियुग है, जागत द्वापुर तब कहते है ।।
कर्मोद्यत तब त्रेता आवे, कर्मशील ही सतयुग चहते है ।
रामप्रकाश हरि नाम जपो तब, बिगड़े काम सब ठहते है ।।१।।

कलि श्यानों भवति संजिहानस्तु द्वापर:।
उतिष्ठंस्त्रोता भवति कृतं संपद्यते चरन॥
चरैवेति। चरैवेति। -(ऐतरेय ब्राह्मण)

अर्थात् कलयुग का अर्थ है सोए होना । जग जाना द्वापर है। उठकर खड़े हो जाना त्रेता है।और चल देना कृतयुग-सतयुग है। अत: व्यक्ति, देश जाति को जागृत होकर चलते रहना चाहिए।

।। वर्ण विशेष मानव धर्म।।

यज्ञोपवीत हो दर्भ रु रेशम, विप्र की यह पहिचान लखावे ।

क्षत्रिय ऊन जनेऊ को राखत, सूत जनेऊ वैश्य को पावे ।।
मूँज जनेऊ शूद्र ही पहनत, स्मृति शास्त्र प्रमाण बतावे ।
रामप्रकाश मानव हित कारक, तीन ही ऋण को सोई चुकावे ।।१।।
ब्राह्मण के हित वसन्त ऋतु दर्भ, क्षत्रिय हेमन्त रु ग्रीष्म उनावे ।
वैश्य के सूत शरद ऋतु मानत, शूद्र वर्षा ऋतु मूँज बनावे ।।
भारद्वाज गृह्य सूत्र में यह, गरुड़ पुराण प्रमाण बतावे ।
रामप्रकाश सनातन शास्त्र, मानव धर्म है स्पष्ट दिखावे ।।२।।

।। चार प्रकार के मानव ।।

मानव चार प्रकार पुकारत, पामर विषयी जिज्ञासु उचारा ।
पामर पशु समान उचारत, विषयी लोक परलोक सुधारा ।।
जिज्ञासु जन है मोक्ष का साधक, वासना मुक्त गुरू ज्ञान विचारा ।
रामप्रकाश ज्ञानी ब्रह्मरूप में, सँशय रहित जगत से न्यारा ।।१।।
पामर पुरुष अज्ञान में झूलत, भवसागर में भटकत सारा ।
विषयी मानव शुभ कर्म लागत, शास्त्र नीति विधि अनुसारा ।।
जिज्ञासु निष्काम कमावत, परम धर्म पुरुषार्थ प्यारा ।
रामप्रकाश मुक्ति मय ज्ञानी, जग में मानव चार प्रकारा ।।२।।

।। चार प्रकार के पापी ।।

पापाचरण मे पापी राजत, नराधम कुटिल पाप मनावे ।
मतिहीन सो पामर कृतघ्न, आसुरि पृकृति पापी ही गावे ।।
मूढ नराधम ज्ञानहृत रु पापी चार ये विधि बतावे ।
रामप्रकाश यह पापी चार ही, शास्त्र सन्त यही साख सुणावे ।।१।।

।। पामर और बांस के चार अवगुण ।।

ऊंचा लंबा बढ़ा रहे बांस हि, नम्र भाव झुकना नहीं पावे ।
पौरी पौरी में गांठ कपट की, पोल भरी गुण ठहर न लावे ।।
जैष्ठ में वायु ते घर्षण पावत, आप जले दव और जलावे ।
रामप्रकाश पामर के लक्षण, सत्संग जाय के लाभ न आवे ।।१।।
चन्दन काट करीर को बोवत, गँगाजल आन के सींचत भाई ।
भैंस को बेच खरिया को लावत, ऊपर साज बनात उढाई ।।
ऊषर खेत में बीज ही बोवत, ऐसी बुद्धि खल हृदय उपाई ।
रामप्रकाश यह मानव भयो पर, पामरता के लक्षण याई ।।२।।

।। चार प्रकार से मानव विकास की अवस्था स्तर ।।

देह में जीवे सो पशु का जीवन, मन में जीवे सो मनुष लहिये ।
बुद्धि में जीवे विद्वान कहावत, आतमा ज्ञानी ब्रह्मनिष्ठ सो कहिये ।।
मानव विकास अवस्था स्तर, विश्व में विधि चार ही चहिये ।
रामप्रकाश विवेक कियो तब, मौन धारण कर शान्ति से रहिये ।।१।।

।। चार प्रकार के वाद्ययन्त्र ।।

साज सँगीत मे वाद्ययन्त्र सो, चार प्रकार में सब ही आवे ।
तत में तार सतार वीणादिक, आनद्ध खाल डफ ढोल बजावे ।।
सुषिर वायु शँख बँशी बजावत, घन अर्धताल में झाँझादिक गावे ।
छः राग छतीसों रागिन, रामप्रकाश जो गाय सुनावे ।।१।।

टिप्पणी- अमरकोश में चार प्रकार के बाजे बताये गये हैं संसार के सभी प्राचीन और अर्वाचीन उन्हीं के अन्तर्गत है उनके नाम इस प्रकार है ।
१तत- वह बाजा है, जिसमें तार का विस्तार होजैसे वीणा-, सितार आदि।
२मृदंग-जिसे चमड़े मढाकर कसा गया हो वह आनद्ध कहलाता है जैसे-आनद्ध-, ढोल,नगाड़ा, आदि
३-सुषिर-जिसमे छेद हो और उसमें हवा भरकर स्वर निकाला जाता हो जैसे बंशी शंख बिगुल हारमोनियम आदि
४- घन-कांसे के झांझ आदि ।

।। चार प्रकार के प्रेम ।।

सात्विक प्रेम मे सतगुरू ईश्वर, सत्य का भाव ना लेवन देवन हारा ।
राजस प्रेम है मोह भरा जीवन, लेत रु देत रहे क्रम सारा ।।
तामस प्रेम में कलह रु लालच, क्रोध रु मोह बढावत हारा ।
रामप्रकाश है विशुद्ध निष्काम से, परम कल्याण दिलावन वारा ।।१।।

।। परमात्म प्राप्ति के चार साधन ।।

प्रभु भक्ति को प्राप्त कारक, चार उपाय है प्रसिद्ध भाई ।
हो निष्काम करो शुभकर्म ही, जप तप सँध्या वँदन दाई ।।
नित सतसँग यथार्थ चिन्तन, ब्रह्म ज्ञानी सँग बोध बढाई ।
सतत साधन भगवत् प्रेम से, रामप्रकाश हरि भक्ति सुहाई ।।१।।

।। हठयोग, मन्त्रयोग, लययोग, राजयोग और ज्ञानयोग का वर्णन।।

यम नियम रु आसन आदिक, प्राणायाम हठयोग पुकारे ।
सुमिरण तीन रु जप सँख्यात्म, मन्त्रयोग लययोग उचारे ।।
हरदम श्वास उश्वास मे लय हो, राजयोग सहजे नाम विचारे ।
रामप्रकाश ब्रह्मज्ञान के साधन, ज्ञानयोग वेदान्त सुधारे ।।१।।

।। किसी कार्य में मन की पृवृति के चार कारण ।।

त्रिगुण प्रभाव ते क्रिया हो जाग्रित, देह इन्द्रिय गत भाव बतावे ।
जन्म स्वभाव गुण हो प्रकट, वर्ण धर्म मय जाति गणावे ।।
ताहि ते नाना सम्बन्ध बन्धन, मन पृवृति के कारण गावे ।
रामप्रकाश इन चार कारण से, विविध कर्म में जीव बन्धावे ।।१।।

।। चार प्रकार की सेवा ।।

पशु पक्षी सब जीव जन्तु गण, सेवा से बहु होवत राजी ।
ज्ञानी और अज्ञानी भी मानत, सेवा ज्ञान रू योग्यता का साजी ।।
नर नारायण जन जगदीश भी, सेवा है सब साधन बाजी ।
रामप्रकाश श्रद्धा सँग सेवा है, बिना सेवा के पण्डित पाजी ।।१।।

धन से सेवा धनी करे बहु, रजो तमो अरु सतो विचारे।
मन से सेवा श्रद्धालु करे कोई, वाणी से सेवा कोई कीर्ति पसारे।।
तन से सेवा श्रद्धा वाणी बिन, मन बिना नही होवत प्यारे।
चार प्रकार की सेवा है प्रशिद्ध, रामप्रकाश यह सन्त पुकारे।।२।।
परोक्ष अपरोक्ष रु दूर नजदीक ही, धन की सेवा करे वहाँ जोवे।
गरीब अमीर करे श्रद्धा वश, भेंट करे मन सेवा में सोवे।।
धनवान हो या धन हीन होवे वह, दूर रहे मन वाणी में पोवे।
रामप्रकाश मन धार श्रद्धा नित, कीर्ति रामप्रकाश की होवे।।३।।
धन नही पर लग्न सच्ची मन, श्रद्धा पूरण हरदम हरि सागे।
वाणी विमल कीर्तन यश गावत, समयबद्ध तन से वह भागे।।
तन मन वाणी समर्पित भावुक, सेवा मे आवत जावत लागे।
रामप्रकाश सतसँग गुरु सेवक, भाग्य सँयोग सदा ही आगे।।४।।

।। चार प्रकार की कथनी और करनी ।।

पुष्प अवान्तर फल ही आवत, आम समान कहै रु कमावे।
पुष्प रु फल सँग सहतूत मे, कहना करना साथ दिखावे।।
फल विहीन गुलाब सुगन्ध है, केवल कह नही काम करावे।
रामप्रकाश कोई बाँस समान है, पुष्प रु फल कहै न दिखावे।।१।।

।। चार प्रकार के मुखी ।।

मन मुखी मन प्रपंच की, संकल्प विकल्प बात सुनावे।
माया मुखी सो पृकृति जाल की, भव की चर्चित जाल बिछावे।।
जीव मुखी कहै जीव की महिमा रु, ईश्वर मुखी उपासना गावे।
रामप्रकाश हो तत्त्ववेत्ता गुरू, सामर्थ ब्रह्म का भेद लखावे।।१।।

।। भुक्ति, युक्ति, उक्ति, मुक्ति का अर्थ ।।

भौतिक लोक परलोक परम सुख, भुक्ति शब्द यह ज्ञान लखावे।
शास्त्र वेद पुराण द्रष्टान्त में, युक्ति कथन कर ज्ञान बतावे।।
गुरुकृपा साधन युक्ति कर, उक्ति अनुभव भेद उठावे।
पांच प्रयोजन सिद्ध जो होवत, रामप्रकाश वह मुक्ति कहावे।।१।।

।। चार प्रकार की योग विधि ।।

अष्टांग आसनादि हठयोग कर्म है, मन्त्रयोग गुरू शब्द रटावे।
राजयोग में हरदम सुमिरण, जीव ईश्वर से लग्न लगावे।।
वृति समावत लययोग में, द्वन्द मिटे तब मुक्ति समावे।
चार प्रकार की योग विधि यह, रामप्रकाश गुरू युक्ति लखावे।।१।।

।। ग्रन्थ के चार दोष ।।

कर्णापाटव इन्द्रिय दोष है, लेखन टँकण शोधक मांई।
आलस्य वश जो त्याग प्रमाद है, भ्रम वर्णाक्षर बीच समाई।।
लोभ में धर्म रु कर्म बिके सब, ग्रन्थन में यह दोष लखाई।

रामप्रकाश विद्वान गुरु मुख, ग्रन्थ पढो हित चित लगाई ।।१।।
धर्म शास्त्र वेदान्त विचारक, पढो गुनो सब गुरु मुख कोई ।
अक्षर अर्थ में दोष भरे रह, चार हूँ दोष में कोयक होई ।।
गुरू विद्वज्जन बोध करावत, दोष निवारत बुद्धि सुध जोई ।
रामप्रकाश जिज्ञासु चेतावत, होवत ज्ञान अज्ञान को धोई ।।२।।
कवि वक्ता गण लेखक पाठक, कर्णापाटव दोष को धारे ।
भ्रम प्रमाद गुणी जन टारत, परम पुरुषार्थ साधक हारे ।।
वेद विदूषक लोभ के भीतर, आपनो कर्म भुलावत सारे ।
रामप्रकाश है ग्रन्थ में चार हूँ, हो बुद्धिमान यह दोष को टारे ।।३।।

।। चार प्रकार के शास्त्रीय दोष ।।

शास्त्रीय दोष है चार प्रकार के, नास्तिक भाव हृदय बिच आवे ।
यौक्तिक बाधा के संग उपावत, अपरोक्ष दृष्टिगत दोष भी लावे ।।
बाधक दोष मिथ्यापन भाषण, मुमुक्षु होय सो दूर हटावे ।
रामप्रकाश गुरुमुख साधक, सावधान होय के बोध कमावे ।।१।।

।। कलयुग में हरी के चार स्वरुप ।।

नाम जपे भव ताप कटे सब, रूप का ध्यान किये हरि पावे ।
हरि अवतार लीलामृत गावत, चरित्र सुने मन वाञ्छित पावे ।।
धाम साकेत गोलोक वैकुण्ठ की, महिमा गावत पूण्य कमावे ।
रामप्रकाश हरि चार स्वरूप में, दर्शन कलियुग मांहि दिखावे ।।१।।

।। चार प्रकार की उपासना ।।

तुच्छ गुण सम्पदा वृहत आरोप, धातु आदि के रूप बखाने ।
प्रतीकोपासना अप्रतीक बने युग, अभ्यास उद्गीथ आरोपित जाने ।।
अधिष्ठान प्रधान में सगुण निर्गुण, प्रणव उपासना भेद यह माने ।
रामप्रकाश हो तन मन निश्चल, गावत पावत गुरू मुख आने ।।१।।
इष्ट सामीप्यता होवत है जब, सही उपासना वही कहावे ।
पूजा अपराध को त्याग करे सब, आन उपासना चित न लावे ।।
एक निष्ठ चित प्रणव साधत, अन्य शोभा मन नाहि सरावे ।
रामप्रकाश हो सत्य उपासक, नीति पालन से फल वह पावे ।।२।।

टिप्पणी- उपासना में उप+आसना दो पद हैं । उप माने समीप आसना माने बैठना । अपने ईष्टदेव का सान्निध्य प्राप्त करना उपासना है ।
उप + आस् + युच् + टाप् । सेवा , तत्पर्य्यायः वरिवस्या ,शुश्रूषा , परिचर्य्या , उपासनम् । इत्यमरः
"शिव-गीता" में भगवान् शंकर श्रीराम जी को उपदेश करते हुए कहते हैं "राम ! उपासना चार प्रकार की है ।
१. सम्पदा = थोड़े गुणों का अधिक रूप में चिन्तन करना सम्पदा है । जैसे एक मन होने पर भी वृत्ति-भेद से अनेक है, अतः "अनन्तम् वै मन:" कहा गया है । अनन्त रूप में मन का चिन्तन सम्पदा है।
२. आरोप=यही सम्पदा मूर्ति-पूजा के रूप में , धातु-पत्थर आदि की मूर्ति में इष्टदेव की भावना करने से प्रतीकोपासना कहलाती है , वह भी दो प्रकार की है-आरोप प्रधान सम्पत्ति -जैसे सगुण-मूर्ति का चिन्तन।अधिष्ठान प्रधान अभ्यास -अर्थात् अधिष्ठान को उद्द्येश्य करके आरोपित का ध्यान करना । जैसे सगुण ब्रह्म के चिन्तन करते हुए निर्गुण ब्रह्म का अनुसन्धान करना आरोप है । इसमें विधि-

विधान से इष्ट की पूजा, मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण तथा मूर्ति में ब्रह्म-बुद्धि आरोप कहा गया है । जैसे प्रणवाक्षर उद्गीथ है । अर्थात् प्राणों की उपासना उद्गीथ उपासना है । प्रणवाक्षर का उच्चारण करते हुए की गई उपासना उद्गीथ है तथा प्रधान रूप से जिसका विधान किया जाए उसे विधि कहते हैं । देवताओं के अङ्गों में उनकी शक्ति का आरोप= जैसे जब भगवती सती ने दक्ष के यज्ञ में योगाग्नि से अपना शरीर जला दिया, भगवान् शंकर उनके शरीर को उठाकर रोते घूमने लगे। विष्णु भगवान् ने उनका मोह भङ्ग करने के लिए सुदर्शन से काटकर भगवती के शरीर के अङ्ग-प्रत्यंगों को यत्र-तत्र डाल दिया । वे ५२ स्थानों पर गिरे और ५२ शक्तिपीठों के रूप में प्रसिद्ध है। किसी-किसी ग्रन्थों में १०८ शक्तिपीठ बताये गये हैं । उनके अङ्गों में शक्ति-बुद्धि उपासना है ।
३.अध्यास= बुद्धिपूर्वक जो आरोप किया जाता है , उसकी विधि अध्यास विधि है । जैसे वेद आज्ञा देता है - 'आदित्यो वै यूप:' अर्थात् खैर की लकड़ी के बने हुए खूंटे में जिसको छीलकर, मनुष्य जैसा आकार बनाकर यज्ञशाला में पशु बाँधने के लिए गाड़ा जाता है , उसे यूप कहते हैं । वेद आज्ञा देता है कि उस यूप की सूर्यबुद्धि से उपासना करें । यह अध्यास उपासना है । वह लकड़ी होने पर भी उसमें सूर्य की भावना का आरोप किया जाता है ।
४. सम्वर्ग उपासना= क्रिया-योग द्वारा अर्थात् पूर्ण सामग्री से की गई इष्ट-पूजा सम्वर्ग उपासना है । जैसे प्रलयकालीन प्रचण्ड वायु सभी प्राणियों को अपने वश में करती है , वैसे ही समस्त प्राणियों को वश में करने के लिए अनेकों उपचारों से की जाने वाली इष्ट की उपासना सम्वर्गोपासना कहलाती है। सद्गुरुओं द्वारा प्राप्त ज्ञान से इष्ट में अभेद-बुद्धि से इष्ट की पूजा विशेष उपासना है । वह मूर्ति आदि में होने के कारण बहिरङ्ग उपासना कही जाती है । मल-विक्षेप-आवरण -इन तीन दोषों से रहित बुद्धि द्वारा श्रवण आदि से देवत्त्व के समीप पहुँचकर "मैं ब्रह्म हूँ" इस प्रकार की ब्रह्म-विषयिणी बुद्धि द्वारा उपासना करना अन्तरङ्ग उपासना है । आत्मज्ञान से विजातीय विषयाकार वृत्ति को हटाकर सजातीय ब्रह्माकार वृत्ति से जीव-ब्रह्म की एकता का नाम अन्तरङ्ग उपासना है। इस अन्तरङ्ग उपासना में सफलता सम्पदादि उपासना के सिद्ध होने पर ही प्राप्त होती है।
"मेरा भक्त मेरा ध्यान किस प्रकार करे ?" - इसे बताते हुए भगवान् शिव कहते हैं "राम ! मैं अचिन्त्य - अव्यक्त - अनन्त - अमृत - शिव - अविनाशी - परम् शान्त - सर्वकारण - सवव्यापी - चिदानन्द - अरूप - अजन्मा आदि अद्भुत गुणों से युक्त होने पर भी अपने भक्तों की भावना के अनुरूप कोटि सूर्य के समान तेजस्वी, शुभ्र-स्फटिक मणि के समान अर्द्धनारीश्वर, कोटि चन्द्रमाओं के समान शीतल तथा सूर्य-चन्द्र-अग्नि आदि तीन नेत्रों वाले मेरे सगुण स्वरूप का भक्त ध्यान करें।

।। चार प्रकार के वचन ।।

ब्रह्मज्ञानी तत्त्ववेत्ता जन, निश्चय निर्णय अटल अपारा ।
है कहै तो दीखत ना पर है ही, नहीं कहै तब है भी सारा ।।
नहीं नहीं में है है पूर्ण, नहीं नहीं में व्यापक न्यारा ।
रामप्रकाश है चार वचन में, अलग अपेची निर्गुण वारा ।।१।।

।। अध्यास का स्वरुप कथन ।।

अन्त:करण की वृत्ति प्रमाता रु, इंद्रिय द्वार प्रमाण कहावे ।
सादृश्य वस्तु रज्जु प्रमेय हो, वस्तु अधिष्ठान रहावे ।।
तीन ही अंश अधिष्ठान सहित हो, भ्रान्ति सामग्री अध्यास उपावें ।
रामप्रकाश यह भेद अनन्त हो, मत मतांतर भ्रम बढ़ावे ।।१।।

।। दोहा।।

अंतःकरण उपाधि ते, चार सामग्री जान ।
याते सब अध्यास है, मिले पंचम अधिष्ठान ।।१।।
अंतस्थ चेतन चार हो, प्रमेय प्रमा प्रमाण ।
प्रमाता चेतन मिले, अधिष्ठान अध्यास में जाण ।।२।।

।। भगवान शब्द के पाँच अक्षर का अर्थ ।।

भूमि गगन रु व से वायु है, अ अग्नि न नीर बखानो।
पाँच तत्व में भगवान शब्द में, रमणीय राम सो आप समानो।।
घट रु मठ में जीव चराचर, व्यापक राम है सुन्दर जानो।
रामप्रकाश यह युक्ति से जानत, सन्त ज्ञानी जन मुक्ति लखानो।।१।।

।। दोहा ।।

भूमि गगन वायु अनल, नीर सहित यह खास।
पाँच अक्षर भगवान के, व्यापक रामप्रकाश।।१।।

।। ईश्वर के पांच स्वरूप ।।

पर स्वरूप है ब्रह्म सनातन, व्यूह इच्छा भीड़ भू आवे।
ऐश्वर्य रूप में अवतरित विभव, प्रभु सर्वेश्वर आप सुहावे।।
अन्तर्यामी हृदय महि स्फुरित, अर्चावतार हो मूर्ति समावे।
रामप्रकाश यह पांच स्वरूप है, लीला हरि स्वयं आप रचावे।।१।।

।। पाँच प्रकार की प्रतिमा ।।

अर्चा विविध धातु मय होवत, ताहि के भेद कहे सन्त भाई।
स्वयँ व्यक्त रु देव उपार्जित, सैध सिद्ध स्थापित थाई।।
पूजन योग्य है पूरण सामर्थ, मानव ग्राम्य रु गृह में लाई।
रामप्रकाश अर्चना हेतु, रूप ईश्वरीय मानत आई।।१।।
विभव युग युगान्तर आवत, योग माया से कर्म रचावे।
भक्त भक्ति के कारण होकर, नाना कार्य दिखावत जावे।।
विविध लीला कर मानवता पर, भूमि पर अवतार कहावे।
रामप्रकाश कला दिखलावत, ईश्वर रूप धरा पर आवे।।२।।
व्यूह अवतार ईश्वर का होवत, षट् भाग्य भगवान कहावे।
पालन पोषण रक्षण कारक, शत्रुघ्न रूप में योग मिलावे।।
व्यापकता है पर दीखत नाहिन, अपर ब्रह्म का रूप धरावे।
रामप्रकाश यही ईश्वर का, साक्ष्य भगवत भाव बतावे।।३।।
सर्वग्राही गुणों से भावित, अन्तर्यामी अवतार कहावे।
व्यापत व्याप्य रमणीय सोई, राम शब्द से आप रमावे।।
सर्वश्रेष्ठ सो प्राण त्राण मय, रक्षण शिक्षण अक्षर आवे।
रामप्रकाश परब्रह्म पाँचवाँ, यह सब भाति सरूप पूजावे।।४।।

।। पाँच प्रकार की मुक्ति कथन ।।

सालोक्य इष्ट लोक बसावत, सामीप्य दास भाई ज्यो राखे।
सारूप्य पुत्र सखा सम पावत, सायुज्य चतुर्भुज प्रभाखे।।
पँचम ज्ञानी की मुक्ति सँभावित, सार्ष्टिता दो भेद ही दाखे।
विदेह जीधन के भेद को जानत, रामप्रकाश मुक्ति पँच आखे।।१।।
मन के भाव मिटे सब मूल ते, भाव अभाव रहे नही कोई।
चित का चिन्तन आप ही खोवत, वासना सहित अष्टपुरी खोई।।
यही है मोक्ष रु मुक्ति कहो भल, मोह का क्षय होवत होई।

रामप्रकाश हो मोह गति मय, मुक्ति के लक्षण जानहूँ सोई ।।२।।
मुक्ति पाँच सकार उचारत, सालोक्य सामीप्य भक्ति मन धारे ।
सारूप्य सायुज्य सगुण चार ही, भक्ति करे मन हरि के प्यारे ।।
सार्ष्टिता भेद ते दो विधि भाषत, ज्ञान ते जीवन विदेह उचारे ।
रामप्रकाश गुरु मुख खोजत, दुविधा के द्वन्द सभी मन जारे ।।३।।
सालोक्य मुक्ति इष्ठ लोक में, सामीप्य दास भृत्य ज्यों जानो ।
सारूप्य मुक्ति पुत्र सखा सम, सायुज्य चतुर्भुजी रूप पिछानो ।।
भक्त जन पावत इष्ट आराधन, ज्ञानी की मुक्ति भिनन्ता आनो ।
रामप्रकाश सार्ष्टिता पावत, ज्ञानी जन को पूरण म्यानो ।।४।।
धर्म से सालोक्य मुक्ति को पावत, शुभ काम अर्थ से सामिप्य पावे ।
निष्काम से शुभ कर्म किये, भक्त सारूप्य मुक्ति को जावे ।।
चार अनुबन्ध के पालन किये पर, मोक्ष पदार्थ सहज ही आवे ।
रामप्रकाश हरि हेत किये से सब, स्वस्तिक सृष्टि चक्र बनावे ।।५।।
सार्ष्टिता मुक्ति के भेद को जानत, आनत मानत ज्ञानी आचारा ।
प्रारब्ध अशेष भोगे जब पूरण, विदेह मुक्ति तब पावत प्यारा ।।
प्रारब्धवश जीवन भोग रहा तब, जीवन्मुक्ति की पावत धारा ।
रामप्रकाश हो वासना मुक्त ही, अज्ञान भ्रम का मूल उखारा ।।६।।
टिप्पणी- सार्ष्टिता के दो भेद है , जीवन और विदेह।

।। जीवन्मुक्ति का लक्षण ।।

जनम अनेक के सँचित कर्मन, जले वह ज्ञान अग्नि कर सारे ।
क्रियमाण होवे अन इच्छित, ऐषणा तीन त्रिगुण की जारे ।।
प्रारब्ध शेष रहे वह भोगत, सुख रु दुःख को मन ते हारे ।
रामप्रकाश यह जीवन्मुक्ति लक्षण, अष्ठपुरी गत द्वन्द्व प्रहारे ।।७।।
सद्गुरु कृपा रु विधिवत साधन, स्थित प्रज्ञ की वृति साधक पावे ।
श्रुति ज्ञान की स्वतः अभिव्यक्ति, नित्य एकान्त विद्यालय आवे ।।
मौन का पाठ पढे हित चित से, अनुत्पन्न आनन्द जीवन उपावे ।
रामप्रकाश निष्ठा सत चित में, जीवन्मुक्ति पद मौज मनावे ।।८।।

।। विदेह मुक्ति का लक्षण ।।

सँचित कर्म अनेक जन्म के, ज्ञान अग्नि कर साधन जाले ।
प्रारब्ध भोग रहे नही शेष ही, राग रु द्वैष सभी द्वन्द डाले ।।
ऐषणा तीन अतीत है जीवन, वासना सहित अष्ठपुरी टाले ।
रामप्रकाश विदेह मुक्ति लक्षण, देह गले पँच तत्व मे गाले ।।९।।
पँच क्लेश रु चित भुमि युत, अविद्या द्वन्द्व अज्ञान विलावे ।
त्रिगुणात्मक एषणा त्याग करी अरु, तत्वमसि ब्रह्मनिष्ठ दृढावे ।।
प्रारब्ध अशेष विदेह मुक्ति अरु, शेष से जीवन्मुक्ति कहावे ।
रामप्रकाश यह सार्ष्टिता भेद में, मुक्ति दोय प्रकार बतावे ।।१०।।
ब्रह्मज्ञान भयो उर पूर्ण, दृढ़ अपरोक्ष चित भ्रम विलायो ।
संचित रहे नहीं क्रियमाण ही, प्रारब्ध भोग रहे नहीं गायों ।।

मुक्ति विदेह भयो वह निश्चित, आवागमन को मूल मिटायों।
रामप्रकाश यदि प्रारब्ध शेष है, जीवन मुक्ति पथ वह कहलायो ।।११।।

।। कर्मों के पाञ्च विपाक (फल) ।।

मन वञ्छित पदार्थ उत्पति रु, पदार्थ प्राप्ति के योग बनावे।
पदार्थ विकृति से होय विकार जु, संस्कार होय के पास रहावे ।।
समय पाय विनाश ही होवत, प्रारब्ध कर्म के संग कहावे।
रामप्रकाश पंच कर्म विपाक यह, प्राणी आप प्रारब्ध थे पावे ।।१।।

।। यह छँद ~पाँच पदार्थ पोय के फुलमाल बनाई ~ का उतर है ।।

शम सँतोष स्वभाव हो सीतल, सँयम साधन पुष्प सजाई।
यह फुलमाल गुरु शरणागत, राखत समर्पित शीश चढाई ।।
तब सतगुरू उपदेश करे वर, समता शान्ति सदा उर छाई।
रामप्रकाश रहे नित मोद में, सच्चिदानन्द के बीच समाई ।।१।।
शील सँतोष रु सँयम साधन, शम सुविचार रु सीतल ताई।
पाँच सकार के पुष्प लिये शुभ, सतगुरू शरण गहे शिष्य आई ।।
तन मन वाणी रु शीश धरे तल, करते दण्डवत अष्ठाँग सुहाई।
रामप्रकाश गुरु हाथ धरे शिर, शिष्य के दारिद्य दोष नशाई ।।२।।

।। पाँच प्रयोजन ।।

सर्व दुःखन की निवृति जो होवत, परमानन्द पद पावत ज्ञानी।
ज्ञानरक्षा सतसँग के साधन, तप तितिक्षित होय परमानी ।।
शास्त्र सँशय समूल विच्छेदन, ताहि विसँवादा भाव बखानी।
रामप्रकाश यह पाँच प्रयोजन, ब्रह्मनिष्ठ की यही निशानी ।।१।।
जीवन मुक्ति के प्रयोजन पाँच ही, ब्रह्मवेता पद पावत ज्ञानी।
ज्ञानाग्नि प्रकट भयी उर अन्तर, अष्ठपुरी जब भस्म हो भानी ।।
हर्ष न शोक रह्यो नही अन्तस्थ, नित्य ब्रह्मानन्द मस्त निशानी।
रामप्रकाश हो सँशय निवृत, ज्ञान भूमिका पावत जानी ।।२।।
सतगुरू ब्रह्मनिष्ठ परमानन्द, ब्रह्मवेता सुख रूप सदाई।
तन धन वाणी के अनिच्छुक, सतगुरू पाँच प्रयोजन ध्याई ।।
साधन सहित अधिकारी पावत, ब्रह्मविद्या का पाठ पढाई।
रामप्रकाश उतम गुरू शरण में, परम पदार्थ निश्चय पाई ।।३।।
अनुबन्ध अटे न डटे नही मन, मोह घटे नही जग से सारो।
श्रुति रटे न कटे भव बन्धन, फटे नही कर्म जाल को भारो ।।
पटे नही प्रयोजन पाँच ही, हटे नही अज्ञान हमारो।
रामप्रकाश सतगुरू कृपा तब, ज्ञान खटे चित चेतन प्यारो ।।४।।

।। पांच प्रकार के पालन (कर्तव्य) ।।

प्राप्य क्या है जीवन में नित, प्राप्त करना क्या है भाई।
साधन उपाय लखो हित चिन्तन, प्रयोजन क्या है जीवन माई ।।
बन्धन रूप क्या साधन के बिच, बन्धकाभाव लखो मन लाई।
रामप्रकाश यह पाँच है पालन, जाने माने भवतारक थाई ।।१।।

अर्थ पंचक को हृदय लाय के, सत्संग सन्तन संग न मान्या।
गूरू की शरण सानिध्य नही बैठा है, मुमुक्षु साधन हृदय नहीं आन्या।।
पंच संस्कार लिये नहीं गुरू गम, त्रय रहस्य भेद न जान्या।
रामप्रकाश वेदान्त पढ्यो पर, पोहन भ्रम को नाहि हान्या।।२।।

।। पांच प्रकार के जीव ।।

भव में भटकत बद्ध जीव है, बुभुक्षु भोगन में भटकावे।
मोक्ष इच्छा कर मुमुक्षु साधन, विवेकादि धार गुरू ढिग आवे।।
ब्रह्मज्ञानी हो मुक्त स्वरूप सो, समय पाय के जीव जगावे।
रामप्रकाश वर नित्यमुक्त यह, पांच प्रकार के जीव कहावे।।१।।
भव भ्रमत पामर पापी ही, बद्ध भवसागर गोता खावे।
बुभुक्षु भोगत भौतिक भोग में, मुमुक्षु मुक्ति की इच्छा बतावे।।
ज्ञानी मुक्त अवस्था पावत, वर वरियान होय के आवे।
रामप्रकाश जो नित्यमुक्त है, निर्णय ब्रह्मानन्द माहि विलावे।।२।।
बद्ध जीव है पाप पहार में, भव भीतर है भव भीत रदा।
मोक्ष हितार्थ मुमुक्षु भागत, मुक्त ज्ञानी जन होय कदा।।
ब्रह्म स्वरूप समाय रहे वह, नित्य मुक्त गुरू उतम सदा।
चार प्रकार के जीव सदा जग, रामप्रकाश विशिष्टाऽद्वैत वदा।।३।।

दोहा-

बद्ध बुभुक्षु मुमुक्षु हो, मुक्त जीव को जोय।
नित्यमुक्त ब्रह्म रूप है, जीव पांच विधि होय।।१।।

।। पांच प्रकार के भेद ।।

योग रु रोग सुभोग अनन्त ही, पांच हि भेद वेदान्त बतावे।
भेद अनन्त भरे जग भीतर, वेद में भेद भरे मन भावे।।
भेद असंख्य है मत मतान्तर, सो सब ही प्रपंच कहावे।
प्रपंच रहित जीवेश्वर ब्रह्म है, रामप्रकाश अभेद रहावे।।१।।

।। पञ्च वस्तु अपवित्र भी पवित्र ।।

गौ पय उच्छिष्ट, शिव निर्माल्य सो, गँग सुचँग जल पावन पावे।
शहद मख्खी का पुष्प रस, श्रेष्ठ सदा सब शास्त्र बतावे।।
कीट ते रेश्मी पट उपावत, काक विष्ठा से वट उपावे।
पाँच वस्तु यह अपावन पावन, रामप्रकाश के काम ही आवे।।१।।

।। पञ्च शस्त्र ।।

सुमिरण दृढता शैल सी पालन, ज्ञान दुधारी तलवार ही धारो।
धीरज ढाल धर्म पद धारण, प्रेम कटार कमर कस सारो।।
अनुभव तोप साधन बारूद से, पाँच शत्रुन सँग युद्ध में मारो।
रामप्रकाश ब्रह्मज्ञान साम्राज्य में, शस्त्र पाँच सहायक प्यारो।।१।।

।। पाञ्च प्रकार के यज्ञ ।।

प्रातः उठ हरि नाम जपे वर, इष्ट नमे ब्रह्मयज्ञ कहावे।
स्नान रु ध्यान इष्ट का पूजन, आरती करे देवयज्ञ गावे।।

मात पिता गुरू नमन करे नित, सेवा सहित पितृयज्ञ जनावे।
रामप्रकाश अतिथियज्ञ पूरण, प्राणी सेवा यज्ञ भूत सुहावे।।१।।

।। षट् उर्मी ।।

जनम रु मरण उर्मी यह देहिक, शूक्ष्म सो स्थूल से दूर भगावे।
हर्ष रु शोक उर्मी मन धर्म है, भूख प्यास दो प्राण लगावे।।
षट् उर्मी यह मिथ्या पृकृति है, आत्म तत्व सो भिन्न रहावे।
रामप्रकाश साक्षी है चेतन, सो नित ही निर्लेप कहावे।।१।।

।। वेद के षट् अंग ।।

छन्द है चरण रु कल्प हाथ है, ज्योतिष चक्षु के रूप है भाई।
निरुक्त श्रवण शिक्षा घ्राण है, व्याकरण मुख के रूप सुहाई।।
वेद के अँग छः ज्ञान के रूपक, विद्या समुह सँसार में छाई।
रामप्रकाश चले विद ज्ञान ये, शास्त्र सन्त कहै समझाई।।१।।
शिक्षा उद्भव विकास उच्चारण, व्याकरण प्रत्यय मुख बतावे।
श्रोत गृह्य धर्म सूत्र कल्प है, निरुक्त वेदार्थ को कर्ण सुनावे।।
त्रिकाल प्राकृतिक चक्षु है ज्योतिष, उष्णिक गायत्री छँद पाद बखानो।
रामप्रकाश यह षट् वेदाँग है, सम्पूर्ण ज्ञान दिवाकर गानो।।२।।
इतिहास देवासुर धर्म सम्प्रदाय है, छन्द प्रबन्ध नियताक्षर मानो।
पुनर्जन्म दर्शन मोक्ष गत शास्त्र, योग युक्त सँस्कार उपानो।।
हृदय आस्था सगुण निर्गुण, भक्ति युक्ति युत ईश्वर पानो।
रामप्रकाश यह जीवन पद्धति सो, धर्म सनातन रूप बखानो।।३।।

।। षट् भ्रम ।।

कोई तप करे कोई जप करे, कोई स्वाध्याय सजावता है।
कोई षट् शास्त्र विगतावत है, कोई बहु साज बजावता है।।
कोई वेदान्त सिद्धान्त पढे, पर मुक्ति कोई नही पावता है।
रामप्रकाश देह भ्रम मिटे बिन, व्यर्थ उपाय करावता है।।१।।
जाहि भ्रम कहै जग जाहिर, होवे नही अरु दीखत सारो।
नाम जाति कुल गौत्र देह में, वर्ण आश्रम षट् भ्रम विचारो।।
रज्जू में सर्प रु सीप में भोडल, ऐसे ही भ्रम में जगत दीदारो।
भ्रम को भूत टूटे नही तब तक, साधू हुयो नही भयो धूतारो।।२।।
रज्जू में भूमि दरार तरुजर, जल रेखा भ्रम आभास भरे।
जो होय नही अरु दीख परे, वही भ्रम का रूप इह धरे।।
नाम जाति कुल गौत्र वर्णाश्रम, यही देह षट् भ्रम भय करे।
रामप्रकाश यह मोह हटे बिन, दुर्लभ मुक्ति दूर टरे।।३।।
सत्य नही पर दीखत है जो, भ्रम कहै उसे ग्रन्थ बतावे।
देह मे षट् भ्रम नाम जाति कुल, आश्रम वर्ण रु गौत्र को गावे।।
जग भ्रम रु देह भ्रम नाशत, ताही को ज्ञानी वेद सुनावे।
भ्रम की व्याख्या रामप्रकाश है, ब्रह्मज्ञानी सन्त भ्रम विलावे।।४।।
भूमि दरार रु सर्प रज्जु बिच, दीखत है पर है कछु नाही।

चाँदी भोडल कागज सीप में, है नही पर ज्यों दरसाही ।।
नाम जाति कुल गौत्र वर्णाश्रम, देह में भ्रम जनावत ताही ।
रामप्रकाश यह भ्रम तजे बिन, ज्ञानी सन्त कहाय वृथाही ।।५।।
अन्य में अन्य हो प्रतिभासित, ताही कहै भ्रम शब्द सदाई ।
जाग्रत में स्वप्न रु स्वप्न में भाषित, अन्योन्याभाव के रूप दिखाई ।।
ऐसे ही देह में षट् भ्रम रूपक, ब्रह्म में जगत भाव बताई ।
रामप्रकाश यथार्थ ज्ञान में, उतम गुरू गम ये दरसाई ।।६।।

।। षट् लिंग ।।

षट् लिंग बिना शास्त्र शून्य है, तीन ग्रन्थी बिन ग्रन्थ रचाने ।
अनुबन्ध धारण बिन वेदान्त सिद्धान्त सो, वाचन व्यर्थ है लाभ न जाने ।।
वाचन लेखन दोष चतुर गण, व्यर्थ प्रलाप विलाप बखाने ।
रामप्रकाश जो नीति ना जानत, मानव जीवन में व्यर्थ उपाने ।।१।।

।। षट् रस ।।

खान रु पान मे रसानन्द लावत, षट् रस स्वाद है मुख बतावे ।
मधुर लवण रु तिक्त कटु वत, अमल काषाय यह भोज लखावे ।।
लेह्य पैय रु चौस्य औ खाद्य है, भोज्य रु भक्ष्य यह भोज कहावे ।
रामप्रकाश यह पाक रसायन, पाक शास्त्री ज्ञान रचावे ।१।।

षट प्रकार के दुःख

गर्भ दुःख रु जन्म को दुःख है, रोग वृद्धाश्रम जरा को भारी ।
बुभुक्षा दुःख है जीवन को दुःख, षट् विकार यह स्थूल में धारी ।।
आधि व्याधि उपाधि अनेक हि, दैहिक भौतिक आध्यात्म क्यारी ।
रामप्रकाश तृष्णा दुःख रूप है, जगत जीवन है दुःख अपारी ।।१।।
टिप्पणी-षट् घोर दुख = गर्भ - दुःख , जन्म - दुःख , रोग - दुःख , जरा - दुःख , बुभुक्षा , मरण - दुःख।

।। छः सँबँधी - ज्ञानी का परिवार ।।

धर्म पिता रु दया मेरी मात है, ज्ञान पितामह धैर्य सत चारी ।
शीलता दादी रु शान्ती प्रिया उर, कविता राघव की है अति प्यारी ।।
श्रद्धा मौसी बुआ भावना, हरि भक्ति है बहिन हमारी ।
रामप्रकाश परिजन का भावुक, मेरे सहायक जीवन धारी ।।१।।

।। क्रोध का परिवार ।।

दादा है द्वैष रु उपेक्षा मात ही, पिता है इच्छित भोग को धारी ।
अहँकार अग्रज रु भय है भायल, निन्दा सुता रु कटुता वारी ।।
हिंसा है पत्नी रु सुत वैरभाव ही, घृणा पोती बहु ईर्षा प्यारी ।
रामप्रकाश यह नर्क के द्वार पे, तैयार खड़ा रह क्रोध परिवारी ।।१।।

।। जिनको छ प्रकार का ज्ञान है वह संत या गुरू भगवन कहलाने का अधिकारी है।।

विद्या अविद्या के गुण स्वरूप को, क्रिया शक्ति का भाव बतावे ।
ज्ञान अज्ञान को भली विधि जानत, कार्य प्रयोजन भेद लखावे ।।

सृष्टि उत्पत्ति प्रलय के युत, आत्म अनात्म ज्ञान जनावे ।
रामप्रकाश लखे षट् ऐश्वर्य, संत गुरु भगवान कहावे ।।१।।

।। सात प्रकार विभुति ।।

मेधा, क्षमा, श्री, स्मृति, कीर्ति, धृति, वाक ।
सात विभुति ईश की, रामप्रकाश है धाक ।। १।।

।। ज्ञान की सप्त भूमिकाएं (सीढ़ियाँ) ।।

शुभ इच्छा में श्रवण साधन, सुविचारणा है मनन की धारा ।
तनुमानसा शुक्ष्म निदिध्यासन, ज्ञान भूमि का निर्णय सारा ।।
सत्वापति अशँशक्ति यह, ब्रह्मज्ञानी की लक्षण पारा ।
रामप्रकाश पदार्थाभाविन, तुरियपद ब्रह्म स्वरूप विचारा ।।१।।
प्रथम सतसँग नियम हो पालक, विवेकादिक साधन चित उपावे ।
हो निष्काम रु निष्कलँक जीवन, सतगुरु सानिध श्रवणादिक लावे ।।
चित में चेतन चिन्तन हो तत, निष्प्रह विरति स्वभाव मे आवे ।
रामप्रकाश हो निरन्तर अध्ययन, ज्ञान भूमि का स्तर बढावे ।।२।।
सतगुरु की आज्ञा वृत पालक, हो निष्काम निष्प्रह रहावे ।
आशक्ति रहित करे शुभकर्म ही, सतसँग से नित प्रेम लगावे ।।
तीर्थ व्रत यज्ञ याग करे नित, नीति के शुभ नियम निभावे ।
रामप्रकाश ज्ञान के स्तर, भूमिका के पथ चरण बढावे ।।३।।
शुभ इच्छा, सुविचारण दूसरि, तनुमानस सत्वापति कहावे ।
अशँशक्ति अरु पदार्थाभावनी, सप्तम तुरिय भूमि लखावे ।।
निरन्तर साधन अध्ययन रत हो, आतम चिन्तन द्रढता लावे ।
रामप्रकाश नित ज्ञान भूमि तर, ब्रह्मनिष्ठ तत रूप द्रढावे ।।४।।
स्नान रु सुमिरण करे जन कबहुक, तीर्थागमन करे मन भाई ।
हो निष्काम करे शुभ दान रु, स्थिर निश्चय होवत नाई ।।
मल निवृति हेतु शुभकर्म ही, विपरीत भावना दूर भगाई ।
शुभ इच्छा भूमि प्रथम जान हू, रामप्रकाश जिज्ञासु कनिष्ठ कहाई ।।५।।
ऊठत बैठत सत्य विचारत, असत्य त्याग की वृति उपाई ।
तीर्थ दान स्नान उपासन, उपाँसु सुमिरण नाम जपाई ।।
सतगूरू शरण रु सतसँग चाहत, असँभावना विक्षेप भगाई ।
सुविचारणा दूसरि भूमि यह, रामप्रकाश जिज्ञासु मध्यम कहाई ।।६।।
विवेक श्रद्धा युत सतसँग पूरण, नित निष्काम हो नाम जपाई ।
शम दम रु तितिक्षा उपरति, तीव्रतम वैराग्य उपाई ।।
प्रणिपात हो सतगूरू शरणागत, विधिवत ज्ञान उपार्जन लाई ।
तनुमानसा तीसरि भूमि यह, रामप्रकाश जिज्ञासु उतम कहाई ।।७।।
सतगूरू सान्निध्य वास करे वर, हो निष्काम निष्प्रह रहाई ।
साधन सहित ज्ञान का निश्चय, सत्वापति ब्रह्म विद् कहाई ।।
ब्रह्माकार वृति द्रढ निश्चिन्त, सत उपदेश करे मन भाई ।
रामप्रकाश यह ब्रह्म ज्ञानी वर, नित अवतार सन्त हो आई ।।८।।

सत्य ब्रह्मात्म निष्ठावान वह, अशँशक्ति पँचम भूमि सुहाई।
ब्रह्म विद्वरियान प्रश्न पर उतर, नीति शास्त्रोक्त देवत भाई।।
सतसँग स्वाध्याय करे नित उज्वल, व्यवहार परमार्थ दोहु सजाई।
रामप्रकाश यह ब्रह्मज्ञानी सत, नैमित्तिक अवतार धराई।।९।।
पदार्थाभाविनी षष्ठम भूमि यह, तन मन से व्यवहार भुलाई।
देह उपराम सदा चित चेतन, श्रवण कथन उपराम सदाई।।
पुनर्जन्म नही आवत है वह, ब्रह्ममय विद्वरिष्ठ कहाई।
रामप्रकाश यह उतम श्रेणी पद, ज्ञान निष्ठा ब्रह्म रूप समाई।।१०।।
भावाभाव रहे नही कारण, कार्य सर्व का मूल विहाई।
ब्रह्म माया जीवेश्वर नाहि न, द्वैत अद्वैत का द्वन्द विलाई।।
वरिष्ठाति वरिष्ठ भूमिका सप्तम, तुरियातीत समावत जाई।
रामप्रकाश ब्रह्म स्वरूप हो, आवागमन का मूल मिटाई।।११।।
प्रथम द्वितीय तृतीय भूमि यह, तीन जिज्ञासु की भूमि है भाई।
चतुर्थ पञ्चम षष्ठी भूमि यह, वर वरियान रु वरिष्ठ कहाई।।
कनिष्ठ मध्मम उतम कहावत, ज्ञान भूमिका तीन कहाई।
रामप्रकाश तुरिय सप्तम कहि, ज्ञानी की देह रहावत नाई।।१२।।
साधन सतसँग सतगूरू सानिध्य, शनैः शनैः अभ्यास बढाई।
शास्त्र अध्ययन सन्तन की सँगत, शमदमादि विवेक उपाई।।
तीव्र वैराग्य पावे घट भीतर, मोहादिक विकार मिटाई।
रामप्रकाश पावे जन सहज ही, जिज्ञासु जन ज्ञान समाई।।१३।।
तीन स्तर जिज्ञासु के साधित, कनिष्ठ मध्यम उतम ताई।
हो निष्कलँक निष्काम उपासन, मल विक्षेप आवर्ण विलाई।।
ज्ञान के साधन श्रवणादिक तीन हुँ, साधत ही ब्रह्मज्ञान उपाई।
रामप्रकाश उतम नर पावत, साधन सहित कोई ज्ञान समाई।।१४।।
मानव जनम रु सतसँग सतगूरू, भाग बिना नर पावत नाही।
ज्ञान के हेतु यह मुख्य है कारण, परम पुरुषार्थ आप की लाही।।
श्रद्धा विश्वास अभ्यास धरे चित, मानव जीवन में लाभ उठाही।
रामप्रकाश धन्य वह धन धन, परमार्थ पद हेतु बहाही।।१५।।
मानव देह दुर्लभ अति गावत, पूर्व प्रबल पूण्य कमाई।
दुर्लभ है हरि भक्ति सतसँग, महा दुर्लभ सतगुरु लखाई।।
मुमुक्षुत्व भाव जगे बहु दुर्लभ, ज्ञानी मिले जो होय कमाई।
रामप्रकाश जग में अति दुर्लभ, परम पुरुषार्थ कारण पाई।।१६।।
मानव देह मिली महा दुर्लभ, करो पुरुषार्थ सतसँग भाई।
साधन सँग विवेक उपाय के, त्याग असत की भूमिका ताई।।
शमादिक साध मुमुक्षा धारण, सतगुरु शरण में श्रवण थाई।
रामप्रकाश मनन मान के, निदिध्यासन मे लेट लगाई।।१७।।
सत्वापति में वर ब्रह्मज्ञानी हो, वेदोक्त उपदिष्ठा पूछे बिन होई।
पँचम भूमि सत वक्ता अबूझे, वरियान विरक्त साधन सँग जोई।।

छठी पदार्थाभाविनी भूमि में, वरिष्ठ मौन सर्व रस खोई।
रामप्रकाश त्रिविध है ज्ञानी, मुक्ति मय हरि सम भोई।।१८।।

।। चिदाभास की सात अवस्था।।

हर्ष १ रु शोक २ से सुख दुःख मन में, परोक्ष ३ अपरोक्ष ४ इन्द्रिय गत भासे।
अज्ञान में भ्रम वृत भ्रान्ति ५ है, अस्तवा ६ अभाना ७ पादक खासे।।
शूक्ष्म देह में अष्टपुरी गत, अवस्था सात चिदाभास प्रकाशे।
रामप्रकाश ब्रह्मात्म साक्ष्य, स्थूल शूक्ष्म गत देह निवासे।।१।।

।। सात वस्तु सदैव पवित्र मानी जाता है ।।

गौ पय उच्छिष्ट रु शिव निर्माल्य गंग जु, काक विष्टा फल उत्तम माने।
मधु वमन रु शव पट कीट को, अश्पृस्य हो्वत कोई ना जाने।।
गोरोचन घनसार भी अनुत्तम, स्वार्थ में गुण लोक पिछाने।
रामप्रकाश वस्तु यह सात हि, महा पवित्र सभी घर आने।।१।।

तहां प्रमाण-

उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यं वमनं शवकर्पटम्।
काकविष्टा ते पञ्चैत पवित्राति मनोहरा॥

।। संस्कार बनने के सात कारण का ।।

पूर्व पूण्य १ प्रताप मिले शुभ, मात २ पिता शुभ चाल बतावे।
कुल परिजन ३ रु शिक्षक से ४ वर, बाल सखा ५ सतसंग मिलावे।।
श्रवण किये ते ६ बोध मिले शुभ, चक्षु दृश्य ७ व्यवहार सिखावे।
रामप्रकाश संस्कार शुभाशुभ, सात प्रकार से मानव पावे।।१।।
पूर्व प्रारब्ध लोक से आगत, माता के गर्भ से जन्म उपायो।
पिता संस्कार दिये कुल कारण, शिक्षक से मन भाव जगायो।।
संग प्रभाव रु श्रवण से सुन, नैनन ते जग रूप दिखायो।
रामप्रकाश संस्कार शुभाशुभ, सात प्रकार ले जग में आयो।।२।।

।। सात प्रकार के स्वर ।।

ताल धमाल बाजे सब बाजत, हारमोनियम तबला साजे।
नारद की वीणा में बोलत, तार सतार मधुरता बाजे।।
षड्ज ऋषभ गाँधार मध्यम, पँचम धैवत निषाद सुराजे।
शारद सरस्वती बीण बजावत, रामप्रकाश स्वर सात बिराजे।।१।।
सात स्वर का एक है सप्तक, सा रे ग म प ध नी गावे।
सब का कम्पन विधिवत होवत, आरोह रु अवरोह कहावे।।
मोर रु गौ बकरी क्रोंच से, कोयल अश्व रु हाथी से आवे।
कोमल तीव्र के भेद जनावत, रामप्रकाश सँगीत में गावे।।२।।
नासा कँठ रु उर दन्त तालव, जिभ्या से उच्चरित षड्ज गावे।
नाभि से सिर तक गति है ऋषभ, सभी स्वर गल कण्ठ से आवे।।
सा रु प शुद्ध स्वर भाषत, शेष सभी तीव्र कोमल आवे।
रामप्रकाश सँगीत में गान्धर्व, देव कला मन को अति भावे।।३।।
ताल स्वर रु कण्ठ राग बिन, देश काल नही ज्ञान कला को।

समय रागनि वेष रु आसन, मुख्य राग पति भेद भला को ।।
अलाप कलाप विलाप भरे दम, भेद नही निज आप गला को ।
रामप्रकाश क्यों गावन बैठत, गुरू बिना वह एक खला को ।।४।।
गायन वादन नृत्य अँग है, छतीस रागिन छ राग सुहावे ।
कर्ण प्रिय रु नाद से उत्पति, ताल स्वर सँगीत कहावे ।।
उदात्ततर उदात अनुदान ही, स्वरित श्रुति स्वर को पावे ।
रामप्रकाश सँगीत भेद मे, राघव की कविता कवि गावे ।।५।।
महादेव रु सूर्यदेव हनुमन्त, रावण वेद्यक सँगीतज्ञ मानो ।
पुष्पदन्त रु चित्ररथ गान्धर्व, सँगीताचार्य अनादि जानो ।।
साज समाज ताल लय स्वर से, चौसठ कला विद्या मुख आनो ।
रामप्रकाश साहित्य सँगीत बिन, मानव नही वह मान हेवानो ।।६।।

।। अज्ञान की सात भूमिका ।।

निज जाग्रत रु जाग्रत जानहू, महाजाग्रत में कल्मष सीजे ।
जाग्रत स्वप्न रु स्वप्न जाग्रत, स्वप्न सुषुप्ति अज्ञ भनीजे ।।
ज्ञान माहि अज्ञान विराजत, प्रकाश के मूल अंधेर रहीजे ।
रामप्रकाश अज्ञान माहि यह, सात अवस्था पोहन भीजे ।।१।।

।। सात प्रकार के चेतन ।।

अन्त:करण में व्याप्त अविच्छिन्न, कुटस्थ प्रमाता चेतन सोई ।
वृति इन्द्रिय गत शक्ति प्रसारित, चेतन प्रमाण कहै जन जोई ।।
अन्तस्थ वृति वस्तु ग्रहण शक्ति, प्रमेय चेतन कहियत वोई ।
रामप्रकाश उपयुक्त वृति त्रिय मिल, वस्तु रस लख प्रमा होई ।।१।।
महतत्व पृकृति के शुद्ध सात्विक, माया विशिष्ट कुटस्थ ईश्वर होई ।
महतत्व पृकृति मलीन सात्विक, अविद्या विशिष्ट चेतन जीव भनोई ।।
शुद्ध है सत चित आनन्द परब्रह्म, निष्क्रिय अद्वय अधिष्ठान है सोई ।
रामप्रकाश यह तीन ही चेतन, गुरूमुख जानत ज्ञानी जन कोई ।।२।।
ईश्वर चेतन सृष्टि नियमावक, उत्पति पालन प्रलय होई ।
जीव चिदाभास चेतन है जग, कर्म क्लेश वश भ्रमत वोई ।।
प्रमेय प्रमाण प्रमाता होवत, प्रमा उपाधि जीव गत सोई ।
शुद्ध स्वरूप अधिष्ठान व्यापक, रामप्रकाश ब्रह्म घन जोई ।।३।।
पाँच चेतन है शूक्ष्म शरीर में, चिदाभास बहु रूप बनावे ।
अन्त:चार उपाधि नभ धारत, घट इन्द्रिय जा वस्तु को ध्यावे ।।
एक सतो है उपाधि ते कुटस्थ, ईश्वर चेतन ब्रह्मण्ड रचावे ।
शुद्ध सनातन रामप्रकाश है वह, ब्रह्म निरुपाधि अनूप सुहावे ।।४।।

।। सप्त पुरी नाम ।।

राम भूमि अयोध्या को जानत, कृष्ण भूमि सो द्वारिका गावे ।
काशी उज्जैन सदाशिव गावत, काँची मथुरा देव सम पावे ।।
हरिद्वार हरि हर छानत, मोक्ष के मार्ग पुरी पठावे ।
रामप्रकाश जो नाम रटे नित, सप्तपुरी पद मोक्ष में जावे ।।१।।

।। सप्त दीर्घजीवी ।।

परशुराम हनुमान विभीषण, अश्वत्थामा बलिराज बतावे।
वेदव्यास भिलनी सुत जानहूँ, पुराण अष्टादश स्मृति को गावे।।
कृपाचार्य गुणनिधि बखानत, चिरँजीव यह सात कहावे।
रामप्रकाश जो नाम रटे नित, पूण्य पदार्थ अभूत कमावे।।१।।

।। सप्त ऋषि ।।

विश्वामित्र वशिष्ठ रु यमदग्नि, द्रोणाचार्य और कण्व कहावे।
भारद्वाज अत्रि सप्त ऋषि जन, मँत्रवेता युग पुरुष बतावे।।
सात ही नाम रटे जन प्रात ही, दारिद्रय दोष रु पाप मिटावे।
रामप्रकाश हो पूण्य भी प्रकट, काल के जाल प्रपँच विलावे।।१।।

वैस्वत मनु काल ~

वशिष्ठ कण्व रु विश्वामित्र लख, अत्रि भारद्वाज रु शौनक जानो।
विश्वामित्र सँग ऋषि सत जानहू, कल्प कल्प के भेद बखानो।।
नीति रीति व्यवहार सिखावत, शास्त्र ज्ञान रु ध्यान रहानो।
रामप्रकाश यह सप्त ऋषि जन, नाम सहित परिचय भे बतानो।।२।।

सातवें मन्वनतर में ~

वशिष्ठ कश्यप यमदग्नि गौतम, विश्वामित्र भारद्वाज अत्रि जोई।
अन्यत्र मरीचि अँगिरा, पुलस्त्य पुलह क्रतु सोई।।
सप्त ऋषिगण भेद को छानत, सन्त श्रद्धा कर नाम वदोई।
रामप्रकाश बखानत गावत, नाम रटे फल पूण्य को होई।।३।।
ब्रह्मर्षि रु देवर्षि लख, महर्षि, परमर्षि भेद से जानो।
काण्डर्षि औ श्रुतर्षि वर, राजर्षि जन भेद पिछानो।।
सप्त प्रकार के सप्त ऋषिगण, पर्ति युग भिन्नता आनो।
रामप्रकाश पर मन्वन्तर मे वह, शास्त्र माँहि नाम लखानो।।४।।
मरीचि, अत्रि, अँगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य वशिष्ठ मनु मन्वन्तर मानो।
ऊर्ज्ज स्तम्भ वात प्रण पृषभ, निरय परिवान स्वरोचिष जानो।।
पृथु काव्य चैत्र, वनक, अग्नि, ज्योतिर्धर्मा, पीवर तामस मन्वन्तर मे आनो।
रामप्रकाश उतम मन्वन्तर में, वशिष्ठ पुत्र भये सप्तर्षि थिनो।।५।।
रैवत मन्वन्तर में हिरण्य रोमा लख, ऊर्ध्वबाहु, वेदबाहु को मानो।
सुधामा, वेदश्री पर्जन्य औ महामुनि, सप्तर्षि जन लोक पिछानो।।
युग मन्वन्तर मे प्रति समय में, सप्त ऋषियों के काल को जानो।
रामप्रकाश सृष्टि क्रम निश्चय, शास्त्र प्रमाण युक्ति कर पानो।।६।।
हविष्मान, सुमेधा, विरजा, उतम, मधु, अतिनामा जानो।
सहिष्णु, चक्षुष मन्वन्तर में, सप्तर्षि यह प्रकट मानो।।
कश्यप, अत्रि वशिष्ठ रु गोतम, यमदग्नि भारद्वाज को थानो।
विश्वामित्र लख रामप्रकाश यह, वर्तमान मे ऋषि पहिचानो।।७।।
अष्टम सावर्णी रु नव दक्ष सावर्णी, दशमब्रह्म सावर्णी मन्वन्तर जानो।
एकादश धर्म सावर्णी रु द्वादश रुद्र सावर्णी, त्रयोदश सावर्णी को धर्म पिछानो।।
चतुर्दश इन्द्र सावर्णी जानहू, रामप्रकाश यह नियमित गानो।

ब्रह्मा तिथि में सप्त प्रकार के, ऋषिगण होवत आये मानो ।।८।।
शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थों में भाषित, भिन्न विभिन्न है नाम बखाने ।
महाभारत रु कौटिल्य शास्त्र में, नाम स्वरूप युग भेद बताने ।।
विश्व अनन्त अनन्त काल में, अनन्तों ऋषि मुनि जन सन्त महाने ।
रामप्रकाश युग भेद अनन्त है, शास्त्र प्रमाणित नाम बखाने ।।९।।

।। प्रेम के अष्टसात्त्विक भावों का वर्णन ।।

हरि गुरू के नाम जपे जब, मानसिक पूजन भाव बढावे ।
गुरू कृपा जब दर्शित है तब, स्तम्भन स्वेद स्वरभंग दरसावे ।।
नैन अश्रु तन व्याकुल कम्पन, व्यग्रता लक्षण आय दिखावे ।
रामप्रकाश कछु भाव हो प्रकट, स्वीकृति के यह लक्ष बतावे ।।१।।
प्रेम प्रभाव जा घट उपजत, ता घट आठ प्रभाव जनावे ।
प्रश्वेद कम्प स्वरभँग कोई भी, रोमाँच अश्रुपात समय पर आवे ।।
विवरण मूर्च्छा रु लय को जानत, चतुर प्रेम की अवस्था गावे ।
रामप्रकाश परमार्थ स्वार्थ, भक्त के भाव को सन्त सरावे ।।२।।

।। आठ प्रकार के संयोग जन्य सुख ।।

शब्द रु स्पर्श रूप रस गन्ध जु, ईर्षा मत्सर और बड़ाई ।
आठ हूं प्रियता जब तक भावत, आश्रय आकर्षण मन में भाई ।।
संयोग जन्य यह सुख बाधक, आठ प्रकार उपाधि है गाई ।
रामप्रकाश यह त्याग करो मन, हरि भक्ति गुण बढे सवाई ।।१।

।। आठ प्रकार के वृद्ध ।।

आज वृद्ध जग में सब मानत, तिन ते वृद्ध धनवान बखाने ।
तिन ते जाति से वर्णाधिक जानहू, ताहि ते विद्या विद्वान बखाने ।।
आश्रम वृद्ध ते धर्म वृद्ध मान्य है, ज्ञानी साधन युत वेद को छाने ।
रामप्रकाश है ब्रह्मज्ञानी वर, सर्व श्रेष्ठ यह शास्त्र प्रमाने ।।१।।

।। आठ जगह हमेशा अपूर्ण ।।

सिन्धु श्मशान रु तृष्णा को जान लो, ब्राह्मण, यम को मान लो भाई ।
राज कोषागार अग्नि रु उदर, घर की माँग बढे नित आई ।।
आठ हूँ ठोर अपूर्ण रहे नित, भरते रहे पर रीते ही थाई ।
रामप्रकाश यह अजूबा खेल है, राम भरे नही रीत सदाई ।।१।।

।। अष्ठ धातु ।।

स्वर्ण चाँदी रु सीसा ताम्बा घन, राँगा जस्ता अरु लोहा को जानो ।
पारद सहित अष्ठ धातु यह, प्राकृतिक सम्पति है धरा की मानो ।।
कष्ट से प्राप्त मूल्यवान है सब, खनिज पदार्थ भूमि से आनो ।
रामप्रकाश धन्य यह भारत, शास्त्र सन्त सब महिमा बखानो ।।१।।

।। चुम्बन के अष्ठ प्रकार ।।

चुम्बन अष्ठ प्रकार के होवत, आशिश रूप से प्रेम प्रभारी ।
मात पिता गुरू सुत शिष्य रु, लघु मित्र पर भाव विचारी ।।

ग्रहस्थ व्यवहार में प्रिया प्रियांशु के, कर कपोल ललाट सँभारी।
रामप्रकाश है प्रेम प्रतीक मे, मन के भाव स्वभाव सुधारी।।१।।

।। लक्ष्मी।।

आदि लक्ष्मी रु धान्य श्री युत, धन लक्ष्मी धान्य को लावे।
धैर्य लक्ष्मी रु गज लक्ष्मी वर, विद्या लक्ष्मी विजय दिलावे।।
ऐश्वर्य लक्ष्मी विष्णु प्रिया वह, पृकृति होय के सृष्टि रचावे।
रामप्रकाश यह लक्ष्मी मन्त्र जप, ता घर संकट दूर नसावे।।१।।

।। अष्ट सिद्धि ।।

अणिमा अणुवत अद्रश्य होवत, महिमा देह विशाल बनावे।
लघिमा हल्कापन तीव्र धावत, प्राप्ति अद्रश्य गमन करावे।।
पराकाम्य मन की गति जानत, ईशित्व अधिपत्य दिलावे।
वशित्व विजय वशीकरण कर, रामप्रकाश गरिमा भार बढावे।।१।।

।। गौण अष्ट सिद्धि ।।

अनुर्मित्व, दूर श्रवण दर्शन, मनोजवम्, काम के रुप दिलावे।
परकाया प्रवेश स्वछन्द रु, मृत्युनञ्जय देव क्रीड़ा करवावे।।
सँकल्प सिद्धि अप्रतिहत गति वह, पूरण पुरुषत्व शक्ति दिलावे।
रामप्रकाश इच्छा मृत्यु यह, अष्ठ सिद्धि सँग आप ही आवे।।१।।

।। अष्ठ सिद्धि अन्तर्गत्त अन्य सौलह सिद्धियों के नाम।।

प्रज्ञा विशोका रु पूरण पुरुषत्व, दूर श्रवण दिव्य क्रिया करावे।
सर्वगुण सम्पन्न जल गमन सो, काया कल्प को आयु बढावे।।
वायुगमन रु सम्मोहन शक्ति सो, इच्छामृत्यु रु गुरुत्व पावे।
रामप्रकाश अद्रश्य करण यह, सिद्धि निद्धि के अन्तर्गत आवे।।१।।

।। नवधा भक्ति ।।

श्रवण स्मरण कीर्तन अर्चन, पद सेवन प्रभूचरण सँभारे।
भाव सखापन और दासापन, वन्दन प्रार्थना नित्य उचारे।।
आतम निवेदन सर्वस समर्पण, नवधा भक्ति यह नाम उचारे।
रामप्रकाश यह भक्ति पथ भेद है, भक्त करे हरि लोक पधारे।।१।।
श्रवण कथा यश हरि का रुचि कर, स्मरण नाम उर हरदम सारे।
कीर्तन ताल बजाय करे नित, पदसेवन मे हरि पाँव पखारे।।
अर्चन पूजन विधि विधान से, वन्दन वारम्वार उचारे।
सख्य भाव रु दास्य नम्र हो, रामप्रकाश समर्पण सारे।।२।।
श्रवण परीक्षित सुमिरण प्रहलाद जु, शुकदेव मुनि कियो कीर्तन भारी।
पदसेवन लक्ष्मी रु अर्चन पृथ्वी पति, दास्य भाव को हनुमन्त धारी।।
वन्दन अक्रूर रु सख्य में अर्जुन, आत्म समर्पण बली कियो सारी।
नवधा भक्ति के भये अधिकारी सु, रामप्रकाश फल मुक्ति विचारी।।३।।

।।अनन्य भक्ति लक्षण।।

माता न तात न भ्रात नहि पर, मीत परिवार से नेह न धारे।
तन मन वाणी हरि पद समर्पित, कर्तव्य कर्म हरि हित सारे।।

सुपनें हूं वृति आन न भावत, दृढ़ विश्वास हो इष्ट हमारे।
रामप्रकाश अनन्य भक्ति लक्षण, शास्त्र सन्त यों वेद पुकारे।।४।।
तन मन धन वाणी सही, समर्पित हरि के नाम तुम्हारे।
सुपनें हु में मति न टरें कछु, आन देव नहीं भासत सारे।।
एक हरि मय विश्व को देखत, दृढ विश्वास श्रद्धा उर धारे।
रामप्रकाश अनन्य भक्ति लक्षण, हरि समर्पण काज हमारे।।५।।

।। नव निद्धि ।।

हादी सो भूख रु प्यास मिटावत, कादी ऋतु प्रभाव से हीन रहावे।
वायुगमन रु मदलसा मानत, इच्छाशक्ति देह बनावे।।
कनकधार में धन असीम हो, प्रक्य किसो कहिं गर्भ पठावे।
सूर्य विज्ञान मे तत्व विलावत, मृत सँजीवनी जीवन पावे।।१।।

।। गौण नव निद्धि ।।

पद्म रु महापद्म नीलनिधि, मुकुन्द राजसी ठाठ दिलावे।
मकर नन्द रु कच्छप यह निद्धि, अक्षय धन भण्डार बढावे।।
शँख गर्व सो अक्षय सम्पति, कर्ययोगी जन कोई कमावे।
रामप्रकाश यह सिद्धि निद्धि नव, लोक प्रशँसित काम सधावे।।१।।

नव प्रकार की सृष्टि का वर्णन

दानव मानव दनुज दैत्य लख, खेचर पक्षी वृत पखेरू जानी।
सर्प वर्गादि गौ महिषादिक, पशु चौपाये सृष्टि आनी।।
जलचर थलचर नभचर योनिज, पावत लाख चौरासी खानी।
रामप्रकाश कश्यप ऋषि यह, सृष्टि नौ विधि खोल बखानी।।१।।

।। नौ प्रकार के संसार ।।

ज्ञेय वस्तु को ज्ञाता सो जानत, वस्त अवस्तु को ज्ञान को छाने।
भोग्य वस्तु के भोग को भोगत, व्यवहार परमार्थ दोहु पिछाने।।
कारण वस्तु को करण इन्द्रिय से, कर्ता पुरुषोत्तम भेद को जाने।
रामप्रकाश ध्येय ध्याता को, सँसृति नौ विधि ध्यान को माने।।१।।

।। नव प्रकार की रात्रि ।।

महारात्रि, शिवरात्रि जानलो, अहोरात्रि नव वरष को जानी।
कालरात्रि, मोहरात्रि, पर्व, साधन, अविद्या मसिक मानी।।
विशेष आपति काल मे जागत, ऋतुरात नौरात बखानी।
रामप्रकाश नौ रात है उतम, जागत है सो पावत प्रानी।।१।।
अहोरात्रि नव वर्ष की जानिए, महारात्रि ऋतुरात्रि को जानो।
कालरात्रि पर्वरात्रि भेद है, शिवरात्रि प्रति मास मे मानो।।
महा शिवरात्रि फागुन महीने, मोहरात्रि जग मोहित आनो।
रामप्रकाश आविद्यारात्रि यह, नौरात्री जागे सिद्ध स्यानो।।२।।
नौरात्री में सोवत नर मूरख, जागत रहे सोई फल पावे।
महारात्रि ऋतुरात्री में जागे, साँसारिक सब मानव गावे।।
शिव - महा दो भक्त गण जागत, अविद्या - मोह को ज्ञानी ढावे।

रामप्रकाश सोवे नर गाफिल, जो सोवत वो गोता खावे ।।३।।
मोहरात्री से निर्मोही जागत, अविद्या रात मे ज्ञानी जन जागे।
ऋतु - महारात्रि साँसारिक जागत, पर्वरात्री मे सज्जन लागे ।।
शिव के भक्त मासिक मे जागत, कालरात्रि में कोइय भागे।
रामप्रकाश बड़भागी सु जागत, नौरात्री में अहोरात्र सागी ।।४।।

।। शरीरस्थ नौ अंग में नौ गृह का निवास।।

नाभि शनिश्चर गुरू रक्त में, शुक्र वीर्य मे वास करावे।
बुद्ध हृदय राहू मुख में, चक्षु में मँगल वास कहावे ।।
केतु कण्ठ शशि भृकुटी, भँवर गुफा रवि गृह रहावे।
रामप्रकाश नौ ग्रह तन में, दशवें में गुरूदेव कहावे ।।१।।

।। नौ प्रकार के रस ।।

श्राव्य काव्य दृश्य गायन में, श्रवण बोध में आनन्द बढावे।
पठन पाठी मे मौद हुलासित, कवि की लक्षणा वृति दृढावे ।।
अलौकिक आनन्द अनुभूति लावत, काव्य कविता रस बढावे।
रामप्रकाश वह नौरस गावत, कवि की कविता मौद दिलावे ।।१।।
श्रृँगार में रति रु हास्य में हँसित, करुणा में हृदय शोक बढावे।
भ्यानक में भय प्रद रौद्र में रस, क्रोध कथा रस वाद फैलावे ।।
भरे उत्साह वीर रस पूरण, विभत्स जुगुप्सा निन्दा कहावे।
रामप्रकाश अद्भुत विस्मय कर, नौ रस कविता के गुण गावे ।।२।।
रस अलँकार भरे छन्द काव्यन, चतुर कवि नौरस को गावे।
अर्थालँकार मे अर्थ अलौकिक, श्लेष यमक के भेद बतावे ।।
ज्ञानालँकार मे ज्ञान बढावत, कवि की कविता मौद बढावे।
रामप्रकाश साहित्य कथे यह, नौरस कीरति आनन्द लावे ।।३।।
उक्ति युक्ति कर बोध बढावत, आश्चर्य श्रृँगार हास्य रस गावे।
वीररस में भुजा उठाकर, ललकार करे वह वीरता पावे ।।
रौद्र भ्यानक क्रोध भयावह, शान्त रस में ज्ञान बढावे।
रामप्रकाश अद्भूत में आश्चर्य है, कवि की चतुर वृति कहावे ।।४।।
य स र त हो कवि ग्रन्थ रचावत, अर्थव्यवस्था कर काव्य छपावे।
देखा देखी कर ईर्षा काम्यार्थ, पिगल ज्ञान बिना बरकावे ।।
म न भ य में ले युक्त मुक्त हो, गुरु गम लेकर ग्रथ रचावे।
रामप्रकाश रचना रस बाढत, परहित निज का बोध बढावे ।।५।।
जिन की रचना नियम बिना वह, ग्रन्थि तीन बिना बचकानी।
पिँगल बोध रति नहि आवत, गण अगण दद्धाक्षर आनी ।।
रस अलँकार के ज्ञान बिना कथ, कागद बोझ अखण्ड बढानी।
रामप्रकाश ईर्षा वश मूरख, कवि की होड करे मन मानी ।।६।।
बाँझ को पूत जनावत है कैयक, कविता मोल खरीदत लावे।
अर्थ रु अक्षर ज्ञान नही वृत, कविता के गुण दोष विलावे ।।
भेष की आड में होड हलावत, कवित ज्ञान बिना हुलरावे।

रामप्रकाश कहै कवि राघव, शास्त्र बोध बिना बर्रावे ।।७।।
राग को गावत समय शुद्धि कर, बाग लगा तोय खाद पिलावे।
बाला पढाय के काम सिखावत, वस्त्र भाति अनेक बुनावे ।।
षटरस पाक बनावत चातुर, नौरस कवि गण खूब रचावे।
रामप्रकाश करे कोई और रु, आनन्द को फल और ही पावे ।।८।।

।। विक्रमादित्य के नौ रत्न ।।

धन्वन्तरि क्षपणक वेताल भट्ट रु, घटखर्पर वररुचि जानो।
कोशकार शँकु अमरसिंह, वराहमिहिर खगोली मानो ।।
कालीदास महाकवि सहित ये, नौ रत्न महासभा प्रमानो।
विक्रमादित्य की सभा में सोभित, रामप्रकाश विद्वान सुजानो ।।१।।
धन्वन्तरि आयुर्वेद के जाणक, क्षपणक नीतिज्ञ ज्योतिष शँकु जानो।
वेताल भट्ट थे तान्त्रिक ज्ञानी, घटखर्पर कवि वररुचि मानो ।।
कोशकार अमरसिंह जानहु, वराहमिहिर खगोल विज्ञानी।
रामप्रकाश विक्रमादित्य के, कालीदास कवि रत्न खजानो ।।२।।

।। नौ तृप्त नहीं होते हैं ।।

ब्राह्मण अग्नि यमराज क्षुधारत, भूप का कोष भरे नही कोई।
सिन्धु में नदी अनन्त समावत, उदर का कभी भरण नहिं जोई ।।
गृह विभाग भरा नही कबहुंक, श्मशान तृष्णा कब पूरण होई।
रामप्रकाश नौ तृप्त नही होवत, रचना अद्भुत देखत सोई ।।१।।

।। जीव तीन जगह से संसार में आता है और नौ प्रकार से जाता है।।

स्वर्ग से आवत नर्क से आवत, मानव लोक ते आवत प्राणी।
स्वर्ग रु नर्क मानव लोक में, तीन ही प्रकार प्रत्येक गवाणी ।।
तीन ही आय के नौ विधि जावत, पाप रु पूण्य सँस्कार परमाणी।
रामप्रकाश पृकृति है न्यायिक, भवसागर मे पावत जाणी ।।१।।
नाक से आवत पूण्य कमावत, स्वर्ग भूतल नर्क सिधावे।
मानव लोक मे कर्म किये फल, नरक भूमीतल नाक में पावे ।।
नरक से आय के कर्म परिणाम जु, भूमि नरक रु नाक कमावे।
रामप्रकाश जो कर्म यथा संग, त्रय विधि आय के नौ विधि जावे ।।२।।

।। शरीर के दश द्वारों में से प्राण का त्याग उससे संबधित योनी की प्राप्ति।।

लिंग द्वार ते नव लक्ष योनिज आ, एकादश कीट गुदा से पावे।
घ्राण तीस लाख, श्रवण चार लाख, मुख से बीस लाख को लावे ।।
चक्षु गोलक से दश लक्ष पक्षी, दशवे से कोई मोक्ष समावे।
रामप्रकाश ज्ञानी निर्बन्धन सो, जीवित मुक्ति स्वरूप समावे ।।१।।

।। दश प्रकार के पक्षीयों में रँग भेद की विविधता ।।

उल्लू गीध रु हँस काग जो, नीलकण्ठ रु गरुड़ जानो।
बुगला कबूतर तोता लेख हूँ, गौरेया सहित पक्षी गण मानो ।।
दश प्रकार पक्षी यह प्रकट, विविध भेद रु रँग पिछानो।
रामप्रकाश पृकृति गुण गावत, रचना अनुपम भेद बखानो ।।१।।

।। धर्म के दश लक्षण ।।

धृति क्षमा अहिंसा दम शौच धी, शम विद्या सत शील को धारो।
अक्रोध सन्तोष धारणा मानसिक, धर्म सनातन लक्षण सारो।।
आदि अनादि युगादि पुरातन, जीव ओ ब्रह्म अध्यात्म वारो।
रामप्रकाश धारो मन निश्चय, परम सुखद यह जीवन प्यारो।।१।।
धैर्य रखो मन क्षमा का धारण, तन मन वाणी कौ शुचि बनावे।
मन का दम रु इन्द्रिय सँयम, सतसँगत ते बुद्धि बोध बढावे।।
ब्रह्मविद्या पढ शान्ति धरो उर, सत्य की शोद्ध अक्रोध उपावे।
रामप्रकाश यह धर्म के लक्षण, सनातन स्वरूप मानव का पावे।।२।।

।। बारह आभुषण ।।

शील लज्जा रु मधुर भाषण, सरल स्वभाव दृढता जानो।
विनयशीलता सुहृदभाव रु सन्तोष पवित्रता तन मन मानो।।
हृदय शुद्धि रु क्षमा चित में, गुरूजन की सेवा मन आनो।
रामप्रकाश यह बारह आभुषण, धारण करे पुरुषोत्तम पानो।।१।।

टिप्पणी-बारह आभूषण-१शील-, २लज्जा-, ३मधुर भाषण-, ४दृढता-, ५सरल स्वभाव-, ६पवित्रता-, ७ -सन्तोष, ८सुहृदभाव-, ९विनय-, १०क्षमा-, ११हृदय की शुद्धता-, १२गुरुजनों की सेवा-

।। समुद्र मंथन से प्राप्त चौदह रत्न ।।

कामधेनू उचैश्रवा विष रु अमृत, कौस्तुभमणि ऐरावत सारे।
लक्ष्मी रम्भा कल्पवृक्ष रु सारँग, पाञ्चजन्य रु चन्द्रमा भारे।।
धन्वनतरि वारुणी चौदह रत्न यह, सिन्धु मँथन ते पावन वारे।
रामप्रकाश पुराण बखानत, प्रशिद्ध शास्त्र सन्त पुकारे।।१।।

।। दोहा।।

सुधा धेनु धन लक्ष्मी, रम्भा अश्व विष चन्द।
मद्य पादप मणी शँख धनु, चौदह रत्न गयन्द।।१।।
गज धेनु मंणि शंख शशि, रम्भा अश्व धनु वैद्य।
श्री तरु विष सुधा मधु, चौदह रत्न अभेद्य।।२।।

।। चौदह रत्न वितरण ।।

शशि विष हर पास में, छ : नाक हरि चार।
देव सुधा सुरा असुर, चौदह रत्न विस्तार।।१।।
गज धेनु रम्भा तरु इन्द्र को, विष शशि शिव को शुभ दीनो।
लक्ष्मी मणि शंख धनु हरि, देव सुधा धन्वन्तरि जग चीनों।।
अश्व प्रभाकर, वारुणी असुर, चौदह रत्न वितरण यों कीनो।
रामप्रकाश सिन्धु मंथन करि के, देवासुर में लाभ यह लीनो।।२।।

।। माया के पन्द्रह नाम ।।

माया अविद्या पृकृति शक्ति, सत्या मूला तूला छान्यो।
अव्यक्त योनि अजा तुच्छा, अव्याकृत अज्ञान प्रमान्यो।।

अनिर्वचनीया तम युत त्रिगुण, पन्द्रह माया के नाम बखान्यो।
रामप्रकाश ईश्वरीय शक्ति यह, नियन्ता शासक ईश प्रमान्यो ।।१।।

।। ईश्वर की सौलह कला ।।

अन्नमया रू प्राण मनोमया, विज्ञान आनन्दमया अतिशयनी राजे।
विपरिनाभिमी संक्रमिनी रु, प्रभवि कुँथनी विकासिनी साजे ।।
मर्यादनी सन्हालादिनी आह्लादिनी, परिपूर्ण स्वरूपवस्थित काजे।
रामप्रकाश यह कला अलौकिक, देहधारी तन माँहि बिराजे ।।१।।
नभ वायु जल तेज भूमि मन, प्राण श्रद्धा तप अन्न कहावे।
लोकान्तर इन्द्रिय कर्म जानहूँ, मन्त्र वीर्य जप नाम बतावे ।।
ऐश्वर्य धारक ईश्वर कुटस्थ है, ब्रह्म नही पर ब्रह्म लखावे।
रामप्रकाश समान है व्यापक, ब्रह्मा पिपीलिका एक दिखावे ।।२।।
आकाश वायु तेज रु जल भू, श्रद्धा दशेन्द्रिय मन अन्न जान्यो।
बल तप मन्त्र कर्म रु, हिरण्यगर्भ लोक नाम सच मान्यो ।।
ईश्वरीय प्राकृतिक शक्ति प्रबल, सृष्टि क्रम दृश्य को ठान्यो।
रामप्रकाश यह सौलह कला कह, शास्त्र प्रमाणित ईश बखान्यो ।।३।।
एक कला उद्भिज में राजत, स्वेदज दो, अण्डज त्रय राजे।
चार जरायुज मानव में लख, पाँच से आठ कला सुख साजे ।।
नौ से सौलह कला अवतार में, सर्व कला युत सामर्थ ताजे।
रामप्रकाश उतम गुरू पावत, सर्व कला ब्रह्म रूप बिराजे ।।४।।

।। जीवन्मुक्त ज्ञानी की सौलह कला ।।

क्षमा शान्ति रु दम मननता, निर्भय निशँक अक्षोभ रहावे।
दया और निर्लोभ निद्धिध्यासन, दाता अक्षोभ उपराम जनावे ।।
विवेक वैराग्य युत जितेन्द्रिय, स्वयँ साक्षी ब्रह्मज्ञान लखावे।
रामप्रकाश जीवन्मुक्त हो ज्ञानी, सौलह कला में मौद मनावे ।।१।।
भँवरा वृत्ति ले मेले गाँव जा, तप आठ कला क्षय थावे।
शहर गली इन्द्रियन के रस में, निज चार कला रह जावे ।।
वैराग्य हीन घर घर पँचायत, माँग खाय सो कला गमावे।
रामप्रकाश ज्ञान बिन भेषी, जीवन वृथा खो भव को पावे ।।२।।

।। सौलह शृँगार ।।

जाहि शृँगार कहै जग विद्वत, दोय प्रकार बतावत भाई।
कृतिम किये कराये जावत, शोड्ष भाँति से करे लुगाई ।।
अकृतिम प्राकृतिक ईश प्रदत है, बदल सके नही लाख उपाई।
रामप्रकाश यह विधि अलौकिक, समझ लेवे कोई मति लगाई ।।१।।
अँगशुचि मँजन माँग महावर, चिम्बुक मेंहदी केश सँवारे।
वसन चिम्बुक मेंहन्दी भूषण, मिसी काजल तिलक सारे ।।
अरगजा बीरी सुगन्ध को धारत, विविध रूप स्वरूप सुधारे।

रामप्रकाश शृँगार कृतिम यह, नारि पुरुष यह धारत प्यारे ।।२।।
केश स्तन भौं तीन काले यह, दन्त रु नख दो उज्वल होई।
पिण्डी दोय कलाई गर्दन, पतले पाँच थन सघन दोई ।।
कोमल साथल बाहु चार हूँ, सौलह शृँगार अकृतिम सोई।
रामप्रकाश भाग्य से पावत, नारि पुरुष हो भावे कोई ।।३।।
कण्ठी माला भाल तिलक युत, मन्त्र शास्त्र वसन रँग लोई।
साज रु वाज सजावट बहुत ही, राग रु बाग सुपात्र जोई ।।
छड़ी छतर युत होय पीठाधीश्वर, परिकर भीड़ जुड़ावन होई।
रामप्रकाश यह भक्ति के साधन, कृतिम सौलह शृँगार है सोई ।।४।।
पाँच यम रु पाँच नियम युत हो, विवेक वैराग्य शमादिक जोई।
शील सँतोष दया रु आर्जव, भक्ति वत श्रद्धा दयालु होई ।।
सतगुरू शरणागत हरि के अर्पित, ज्ञान सिद्धान्त में देह भ्रम खोई।
रामप्रकाश यह भक्ति के साधन, अकृतिम सौलह शृँगार है सोई ।।५।।
ईश्वरीय कृपा वश प्रारब्ध उतम, भाग्य प्रबल जाहि के होई।
युक्तियुक्त साधन सहित हो साधु रु, नारि पतिवृत शीलवँत कोई ।।
अकृतिम शृँगार सौलह सो पावत, गुरू कृपा से भक्ति युत जोई।
रामप्रकाश ये कृतिम अकृतिम, दो युत हो पद वन्दनीय सोई ।।६।।
चक्षु स्तन रु केश काले यह, नख रु दन्त दो उज्वल भाई।
पींडी कलयी रु कण्ठ पतले पंच, बाहु रु जांघ करण चव गाई ।।
सघन उरोज दोय गणन कर, सामुद्रिक शास्त्र भेद बताई।
रामप्रकाश यह भौतिक शृंगार में, अकृत्रिम सौलह भेद लखाई ।।७।।
मांग महावर केश वसन तिल, अंग शुचि काजल मंजन भारी।
तिलक भाल भूषण मेहंदी वर, चिंबुक मिस्सी बीरी को सारी ।।
अरगजा सुगन्ध साथ सजाकर, सौन्दर्यवर्धक देह संवारी।
रामप्रकाश यह भौतिक शृंगार में, कृत्रिम सौलह भेद विचारी ।।८।।
वसन तिलक कण्ठी हीरा वर, माला कमण्डल झोली धारे।
ब्रह्मगाती कफनी काषाय में, मन्त्रोच्चारण आसन वारे ।।
छड़ी छत्र आश्रम काषाय में, गद्दी बैठक वाणी उतारे।
रामप्रकाश यह अध्यात्म शृंगार में, कृत्रिम भाव के भेद उचारे ।।९।।
विवेक वैराग्य रु शम दम भक्ति जु, तितिक्षा उपराम रु श्रद्धा उपावे।
ज्ञान रु योग में अनुभव विवेचन, गुरू सेवा हरि कृपा को पावे ।।
मुमुक्षुता त्याग रु कवित शक्ति गुण, गुरू कृपालु की उक्ति दिखावे।
रामप्रकाश प्राकृतिक शृंगार में, अकृत्रिम सौलह भेद बतावे ।।१०।।

।। अट्ठारह वनस्पति भार ।।

दश करोड रु सप्त लाख ही, छिहतर लक्ष वनस्पति भारा।
चार भार सफल चार हि, भार लता पुष्पादि षट भारा ।।
कँटक चार ही भार बखानत, कुल अट्ठारह भार है सारा।
रामप्रकाश यह लख चौरासी में, सर्व वनस्पति भाति विचारा ।।१।।

।। चौपाई छन्द ।।

वनस्पति सँसार में जेती, अट्ठारह भार कही वह तेती ।
भार तोल की व्याख्या भाई, प्राचीन भाषा साख बताई ।।१।।
दश करोड़ लक्ष सात बताई, छियतर हजार का भार कहाई ।
यह लख चौरासी माही गावे, पापी प्राणी योनी पावे ।।२।।
चार भार फल वाली जानो, चार लता पतों की मानो ।
षट भार है फूलों वाली, चार भार है काँटों हाली ।।३।।

टिप्पणी- एक भार की संख्या इस प्रकार है ।

धीकोटि स्त्रिणी लक्षाणि वस्वशीतिसहस्रकम् ।
एतानि द्विगुणी कृत्य भारमेकं जगुर्बधाः ।।

अर्थात - पांच करोड़ ,तीन लाख अटठासी हजार के दूना करने से जितना होता है, उतने को पण्डित जन एक भार कहते हैं अर्थात दश करोड़ सात लाख छिहतर हजार प्रकार की वनस्पतियां संसार में है ।

।। जाग्रत अवस्था में जीव के भोग के उन्नीस तत्व (मुख) ।।

पाँच ज्ञानेन्द्रीय पाँच कर्मैन्द्रिय, चार अन्तःकरण साथ मिलावे ।
पाँच प्राण मिल उन्नीस तत्व यह, जाग्रत अवस्था भोग भोगावे ।।
विश्व जीव ईश्वर कृत साधन, चक्षू में नित बास बसावे ।
रामप्रकाश माण्डूक्य भाषत, वेदान्त ग्रन्थ सन्त यो गावे ।।१।।
जीव सँकल्प कृत तत्व उन्नीस ही, हिता नाड़ी मे स्वपन दिखावे ।
अनन्त जन्म के देखे भोगे, सँकल्पित सँस्कार उपावे ।।
सुख दुःख रु हानि लाभ भय, कण्ठ में शूक्ष्म भाव दिखावे ।
रामप्रकाश द्वन्द में भाषत, यों उपनीषद् वेदान्त बतावे ।।२।।

।। सताईस स्मृति ।।

हारीत अंगिरा यम कात्यायन, वृहस्पति पाराशर व्यास बखानी ।
दक्ष गोतम रु वशिष्ठ संवर्त, आपस्तंम्ब शंख की लिखित कहानी ।।
औशनस शतातप देवल, दक्ष रु गोतम, अत्रि सुहानी ।
याज्ञवल्क रु विष्णु सताविस, स्मृति रामप्रकाश बखानी ।।१।।

।। अड़सठ तीर्थ ।।

इकावन शक्ति पीठ को जान हूँ, सप्तपुरी चव धाम पिछानो ।
काशी रु पुष्कर गँगोत्री प्रयाग हूँ, काशी केदार मिल अडसठ जानो ।।
सतगूरू चरण में है गँगा सागर, अर्चन कर नित वन्दन ठानो ।
रामप्रकाश निश्चय द्रढ धारत, श्रद्धा को फल पाय प्रमानो ।।१।।

।। चौरासी लख योनी ।।

जलचर थलचर जीव चराचर, व्योम अचर चर बहुत कहावे ।
अण्डज पिण्डज उद्भिद स्वेदज, चार खानि मे आवत जावे ।।
लाख चौरासी में पाप को भोगत, दुःख अपार चिदाभास भोगावे ।
रामप्रकाश धारे बहु योनिज, यथा कर्म फल जीव हि पावे ।।१।।
नव लख जल के दश लक्ष पक्षी, स्थावर लख बीस कहावे ।

ग्यारह लक्ष है कीट भृँगादिक, तीस लाख पशु योनि बतावे।।
देव दनुज गन्धर्वादिक मानव, चार लाख भू नाक रहावे।
रामप्रकाश यह लाख चौरासी, भोगत जीव बहुत दुःख पावे।।२।।
नव लाख है जल के जीव जन्तु गण, दश लख पक्षी पँख उडावे।
ग्यारह लाख है कीट पतँग रु, बीस लाख स्थावर भावे।।
तीस लाख है पशु चतुर्खुर, देव भूतगण चार ही पावे।
जलचर थलचर नभचर योनि में, रामप्रकाश लख चौरासी ये गावे।।३।।
जो जन अभी चौरासी को भोगत, कूकर शूकर पशुवादिक सारी।
पूर्व जनम मे थे कभी मानव, समय अभाव ना भज्यो मुरारी।।
सो अब वही समय को काटत, गली गली घर घूमत बारी।
रामप्रकाश पायो पद प्रभुत्व, खोयो जनम प्रपँच में भारी।।४।।

।। आवागमन का कारण ।।

तन्मात्रा अज्ञान तमोगुण, रजो सतो तज याहि ते जावे।
ज्ञानैन्द्रिय रु अन्तःकरण यह, सतोगुण सामग्री कहलावे।।
कर्मैन्द्रिय रु प्राण पंचक, रजोगुण सामग्री संग रहावे।
रामप्रकाश जनम रु मरण यह, गुण मिलन विच्छेद कहावे।।१।।
कर्म ज्ञान युग इन्द्रिय पंचक, अन्तःकरण रु प्राण पंच जानो।
सतो रजो संग तमो अज्ञान हो, प्राकृतिक पंच उपाधि मानो।।
संचित क्रियमाण कर्म जीव के, वासना संग अष्टपुरी छानो।
रामप्रकाश यही आवागमन है, मूल प्राकृतिक कारण हानो।।२।।
अन्तःकरण ज्ञानैन्द्रिय सात्विक, ताहि मे चिदाभास प्रकाशे।
कर्मैन्द्रिय पँच प्राण रजो मिल, अज्ञान तमो युत जीव ये भासे।।
जन्म अनेक से सँचित कर्म ही, वासना से क्रियमाण उजासे।
रामप्रकाश इस कारण से यह, जनम मरण भव माहि प्रभासे।।३।।
स्थूल रु शूक्ष्म रु कारण कार्य, रज सत से तम विलगावे।
अथवा अष्टपुरी तन त्यागत है तब, यही जनम रु मरण कहावे।।
आत्म तत्व अभेद अछेद अजन्म है, चिदाभास सो देह छिटकावे।
रामप्रकाश अहँब्रह्म चेतन, है ज्यों का त्यो स्थिर रहावे।।४।।

।। आत्मा प्रमात्मा और अनात्मा का ज्ञान ।।

द्रश्य पदार्थ नाम रु रूप में, अद्रष्ठ शूक्ष्म तन सामग्री जानो।
कर्म विपाक तनमात्रा यह, सभी अनात्म माया जानो।।
अविद्या रचित रु माया रचनात्मक, सभी अनात्म परिवर्तन खानो।
रामप्रकाश है साक्षी सत चेतन, वही परमार्थ ब्रह्म पिछानो।।१।।

।। नाम से पूर्व १०८/ १००८ विषय पर ।।

क्यों लगावत? कौन लगावत? अर्थ सँकेत बता दो भाई।
श्री युत अर्थ सहित अँकाक्षर, योग्य गणित का भेद लखाई।।
अधिकारी कौन के लक्षण क्या है? गुरु गम बिन कौन लखाई।
रामप्रकाश के चार प्रश्न यह, योग्य उतर दो सज्जन आई।।१।।

देखादेखी में होड लगी बहु, एक हजार रु आठ लगावे।
जो पूर्णांक मानत हो तब, एक शून्य फिर क्यों न उपावे।।
तत्व भेद लखे बिन मूरख, अष्ठोत्तर श्री व्यर्थ लिखावे।
घट में ब्रह्म लखे बिन मानव, रामप्रकाश मद में सो भटकावे।।२।।
ज्ञान ध्यान बिन डोलत है जन, भगवाँ पहन के सन्त कहावे।
मौनधरी मुख बोल न आवत, भोजन भेंट को भटकत जावे।।
साँग फकीर के पहन लजावत, भेद बिना भव मे भटकावे।
रामप्रकाश अनुबन्ध बिना वह, श्रीयुत के पद कैसे सुहावे।।३।।
रुद्राक्ष नाना चन्दन मणि लख, तुलसी सूत की माला अनन्ता।
शैव प्रमाणित मणि अष्ठोत्तर, रँग विभिन्नता आदि न अन्ता।।
एक शतक पर होय अठ्टावीस, अखण्ड विष्णु माल भनन्ता।
सूत अनव्य रामप्रकाश है, व्यतिरेक मणके गावत सन्ता।।४।।
श्री शतक अष्ठोत्तर जानिय, शास्त्र प्रमाणित तर्क विचारी।
ज्योतिष योग वेदान्त रु पिँगल, ज्ञान विज्ञान गणित आचारी।।
ब्रह्म शून्य पर अष्ठधा पृकृति, बिना बोद्ध सठ लिखे अनारी।
आठ रु सहस्र मूढ लगावत, रामप्रकाश यह खोज हमारी।।५।।
एक हजार रु आठ श्री युत, एक सौ आठ श्री है प्यारा।
अँक अर्थ सँकेत अध्यात्म, अधिकारी कौन क्या लक्ष्य उचारा।।
पूरणाँक है सबही जानत, बिना भेद मूढ है सारा।
रामप्रकाश दे उतर सँतोषी, सतगुरू सोई आदि हमारा।।६।।
श्री युत सीताराम ब्रह्म पूरण, राधाकृष्ण श्री शब्द सँसारा।
पिंगल ज्योतिष योगिक स्वर में, पिण्ड ब्रह्मण्ड रवि लख सारा।।
उतमराम सतगुरू समझाया, अध्यात्म ज्ञान का साधन प्यारा।
रामप्रकाश युक्ति से लिखता, गुरू दिया अधिकार हमारा।।७।।
एक हजार रु आठ श्री श्रीयुत, मूरख लोग डफोल लगावे।
एक सौ श्री आठ लगावत, भेद बिना अँक कौन जगावे।।
अँक गणित क्या भेद यही कह, कौन अधिकारी कौन बतावे।
योग्य लक्षण बिन मूढ लिखे यह, रामप्रकाश यह प्रश्न गावे।।८।।
श्री श्री युत भेद बता अँक, गिरा अर्थ जल बीचि लखावो।
कौन अधिकारी भाष्य लखे बिन, अनजाने में मत लगाना।।
देखा देखी अधिकार बिना सब, त्यागी गृहस्थ का ज्ञान बताना।
रामप्रकाश यह समझ नही जन, अर्थ लखे बिन मूढ कहाना।।९।।
सीता माया पृकृति अविद्या, नारी मात्र सब एक विचारी।
राम रमणीय रमता ब्रह्म है, सीताराम मय सृष्टी सारी।।
नारी पुरुष मय सब पुरुषोत्तम, रवि रश्मि सम एक हमारी।
रामप्रकाश अष्ठोत्तर पूरण, यथार्थ ज्ञान लखे ब्रह्मचारी।।१०।।
चन्द्र सूर्य रु राशि नक्षत्र अँश, मानव श्वास गति ज्ञान लखावे।
सीताराम रु राधाकृष्ण को, ब्रह्म ओम को घट मे पावे।।

पिँगल वेदान्त सँसार उपनिषद, ब्रह्मवेता हो पढे पढावे।
रामप्रकाश वह समर्थ ज्ञानी, अष्ठोत्तर की पदवी पावे।।११।।
सिद्धान्त शास्त्र गीता पुराण रू, अष्ठाँग दण्डवत अँग जमावे।
मुक्ति रूप भगवान को जानत, प्रणव सँसार को लखे लखावे।।
सीताराम सकल में व्यापक, ब्रह्मवेता निज भेद बतावे।
रामप्रकाश वह समर्थ ज्ञानी, अष्ठोत्तर श्री भले लगावे।।१२।।
शतक अष्ठ श्री यशस्वी ध्यावत, समुचित युक्ति के भेद लखावे।
अधिक विस्तार जो शब्द भेद सो, सुखराम दर्पण खोल बतावे।।
समूह ज्ञान रु श्वास ध्यान को, ब्रह्म तत्व को घट मे पावे।
रामप्रकाश वह समर्थ ज्ञानीजन, अष्ठोत्तर अधिकारी पावे।।१३।।

।। अक्षौहिणी सेना ।।

इक लख नौ सहस्र तीन शतक है, पैदल पेंसठ फोज तैयारी।
पेंसठ हजार छः सौ दश फोज में, अश्वारोही युवा बलवन्त भारी।।
ग्यारह हजार आठ शत ऊपर, सतर होत गजारोही सवारी।
इकतीस हजार आठ सौ सतर, रामप्रकाश अक्षौहिणी भयारी।।१।।

टिप्पणी- अक्षौहिणी सेना = ऐसी सेना जिसमें - 109 , 350 पदाति , 65 , 610 अश्वारोही , 31 , 870 रथी और 11 , 870 गजारोही हो।

।। श्वास की गणना ।।

एक श्वास है चार सोकिण्ड मे, एक मिनिट में पन्द्रह जावे।
नौ सौ श्वासा एक घण्टे भर, सौ सताइस पहर मे गावे।।
इक्कीस हजार छः सौ श्वास ही, आठ पहर मे आयु बीतावे।
रामप्रकाश वृथा नर खोवत, भजन बिना सब भव में जावे।।१।।
एक महिने मे श्वास ही जावत, छः लाख अड़तालिस हजारे।
सतहतर लाख रु छहतर हजार जु, एक वंर्ष की आयु बितारे।।
सतहतर कोटि रु छिहतर लाख, सौ वर्ष गये आयु मे धारे।
रामप्रकाश वृथा नर खोवत, भजन बिना सब यूँ ही गुजारे।।२।।

।। चिदाभास, कुटस्थ और अधिष्ठान का विचार ।।

तुम हो वही मैं पूर्ण, रञ्चमात्र नही भेद हमारा।
बून्द सिन्धु रु सूर्य रश्मिवत, शशि कला नही भेद विचारा।।
ब्रह्म नहीं पर ब्रह्म ही भासत, कथन करे यह कुटस्थ तुम्हारा।
रामप्रकाश ब्रह्म का वाचक, ईश्वर का अधिष्ठान हूं प्यारा।।१।।
जनम मरण रु भव दुखः हारण, आवागमन का कारण सारा।
अधिष्ठान हूं शूक्ष्म देह का पूरण, कुटस्थ है अधिष्ठान हमारा।।
चिदाभास की अरज सुनो प्रभु, पार करो भव सागर भारा।
रामप्रकाश अनुपम रहस्य, जान सके कोई गुरूमुख प्यारा।।२।।
कुटस्थ से चिदाभास है चेतन, चिदाभास अन्तस्थ मन प्रकाशे।
मन ते ज्ञानैन्द्रिय प्राण है चैतन, कर्मैन्द्रिय शूक्ष्म देह में भासे।।

शूक्ष्म से स्थूल तन है चेतन, कारण शरीर अज्ञान निवासे।
रामप्रकाश ब्रह्म व्यापक चेतन, ताहि ते सब चेतन खासे।।३।।
तुम हो वही मैं पूर्ण, रञ्चमात्र नही भेद हमारा।
बून्द सिन्धु रु सूर्य रश्मिवत, शशि कला नही भेद विचारा।।
ब्रह्म नहीं पर ब्रह्म ही भासत, कथन करे यह कुटस्थ तुम्हारा।
रामप्रकाश ब्रह्म का वाचक, ईश्वर का अधिष्ठान हूं प्यारा।।४।।
शुद्ध ब्रह्म अक्रिय अनाश्रित, रश्मि कुटस्थ सम ब्रह्म बतायो।
देह पात्र पञ्च ज्ञानैन्द्रिय संग, अन्त:करण जल सात्त्विक आयो।।
रश्मि चमक चिदाभास भयो जीव हि, देह संग आतम राम कहायो।
रामप्रकाश पृकृति वायु संग, हिले डुले जरा मरण में आयो।।५।।
ब्रह्म रु कुटस्थ यथावत स्थिर, रश्मि चिदाभास अन्त:करण आयो।
सात्त्विक जल सम शुद्ध में दर्शित, जीव स्वरूप प्रकाश दिखायो।।
ठण्ड उष्मा संग जल हिले गिले, सो चिदाभास तपे न तपायो।
रामप्रकाश अक्रिय भयो आतम, क्रियमाण जल बिम्ब कहायो।।६।।
गले न जले वह हटे न दटे कब, शस्त्र छेद सके नहि भाई।
जरा मरण रु सुख दु:ख भोगता, चिदाभास अनुरूप कहाई।।
कुटस्थ प्राकृत ईश्वर नाम से, पृकृति नियन्ता होय रहाई।
रामप्रकाश परब्रह्म है चेतन, और उपाधि ते भाषत भाई।।७।।

।। विवृतोपादान का स्वरूप ।।

कारण आप ही सर्व स्वरूप में, ज्यो का त्यों यथार्थ भावे।
रज्जु मैं सर्प दिखाया परे पर, कारण रज्जु पलट नहीं जावे।।
विवृतोपादान ताहि को भाखत, कारण रूप हो अटल रहावे।
रामप्रकाश निमितोपादान हो, अपनों आप ही सो दरसावे।।१।।
टिप्पणी-निमितोपादान एवं विवृतोपादान एक ही है ,कोई अंतर नहीं है केवल कहने मात्र अंतर है।

।। आध्यात्मिक प्रश्न ।।

कौन सृष्टि से उत्पति आये, कौन सृष्टी मे रहत हो भाई।
योगपट ओ प्रेमपट क्या, शरणागत का मन्त्र भनाई।।
गुरु मन्त्र औषधि मन्त्र भी, तीर्थ परिक्रमा कौन सी गाई।
रामप्रकाश गुरू मुखि परिचय, सन्तन से पूछत हूँ आई।।१।।
किस घर सोवत किस घर जागत, किस घर साधन साधत भाई।
भोजन किस घर जल कौन से, निशिदिन में कहाँ रहत हो जाई।।
कहाँ से आये कहाँ गन्तव्य, लक्ष्य कहा की करो कमाई।
रामप्रकाश साधक से पूछत, सतगुरू कैसी युक्ति बताई।।२।।
उपादान ईश्वर सृष्टि का कारण? निमित कारण कौन कहावे?
उपादान जीव सृष्टि का कारण, निमित कारण कौन रहावे?
शास्त्र प्रमाणित भेद लख दो, प्रश्न जिज्ञासु पूछन चावे।
रामप्रकाश बोध हित पावत, गुरूमुखि यह ज्ञान लखावे।।३।।

गुण रहित को निर्गुण भाषत, गुण युत सर्गुण कहत हो भाई।
तीन गुण फिर कहाँ से आये ? जासे सर्गुण सृष्टि रचाई।।
निः समूह गुणन भण्डार है निर्गुण, रामानन्द ने मत बताई।
रामप्रकाश अनुबन्ध युत पाया, उतमराम गुरू युक्ति लखाई।।४।।

निर्गुण में गुण है नही, अर्थ कहै सब कोय।
गुण त्रिगुण कहाँ ऊपजे ? समाधान दो मोय।।१।।

निर्गुण को गुण हीन लखावत, गुण बिन निर्गुण ब्रह्म बतावे।
शँका गुण का स्वामी कौन है ? पूरण, त्रिगुण उत्पत्ति कहाँ से आवे।।
निः शब्द समूह का वाचक, गुण सागर भण्डार लखावे।
गुणातीत सो रामप्रकाश है, गुण प्रभाव में सत्य न आवे।।५।।
शास्त्र पढ कर शास्त्री जानत, पद पदार्थ रटता सारा।
भेष भेद का गुप्त है परिचय, अलिख गुरू गम सन्त भण्डारा।।
राम भजन अधिकार दिया सब, हरि भज भवजल उतरो पारा।
रामप्रकाश गुरू का बाला, परम सैलानी लखता प्यारा।।६।।
जीव की समष्ठि स्थूल सृष्टि, मिल ईश का वैराट बनावे।
जीव की शूक्ष्म सृष्टि मिल, हिरण्यगर्भ ईश कहावे।।
कारण अज्ञान जीव का समष्टि, आव्यकृत व्यष्टि ईश का गावे।
कैसे शुद्ध हुवा वह ईश्वर, रामप्रकाश यह शँका उठावे।।७।।
जीव समष्टि सृष्टि मिल कर ही, व्यष्टि ईश को वेद बतावे।
जीव नही तो ईश नही हो, यह कल्पित कर ईश बनावे।।
जीव आधार से ईश बन्यो फिर, श्रेष्ठ कहो किस भाति कहावे।
शँका रामप्रकाश का प्रश्न, ज्ञानी हो सो उतर बतावे।।८।।
एक ब्रह्म सकल में व्यापक, सत चित आनन्द वेद बतावे।
शून्य सदा भव नाश कहावत, अष्ठ पृकृति सृष्टि रचावे।।
पाँच तन्मात्रा मन बुद्धि चित, एक भिन्नाभिन्न सृष्टी बनावे।
रामप्रकाश जाने यह ज्ञानी, गुरू मुखी लख भेद जनावे।।९।।
एक ब्रह्म परिपूर्ण सनातन, व्यापक सर्वदा चित रहावे।
शून्य स्वरूप धुन्धुकार ब्रह्मण्ड मे, अष्ठधा पृकृति जाल फैलावे।।
मन बुद्धि रु चित तन्मात्रा, तमो सतो मिल सृष्टि रचावे।
रामप्रकाश लखे चित चेतन, ज्ञान बिना नही मुक्ति पावे।।१०।।
अष्ठ धर्म ईश्वरीय ज्ञान लख, आठ जीव धर्म मेल बैठावो।
एक सर्वज्ञ रु एक अल्पज्ञ, सर्व शक्ति रु अल्प शक्ति गावो।।
समर्थ असमर्थ आदि मेल मिलावत, गन्दे नाले जा समुद्र समावे।
रामप्रकाश समर्थ है ईश्वर, उतर ज्ञानी यही बतावे।।११।।
सर्व नाली होवे तो या ना होवे तो, सिन्धु यथावत नेक रहावे।
सर्व नाले अल्पज्ञ मिल कर, जाय समुद्र माँहि समावे।।
अल्पज्ञ जाय सर्वज्ञ मे सामिल, पावन होय वृहद गति पावे।
या विधि रामप्रकाश जीव सभी, मिल ईश्वर को मान बढावे।।१२।।

वैदिक सँहिता और अरण्यक, ब्राह्मण ग्रन्थ उपनिषद् गाई ।
चार अँग वेद अन्त के, पढे बिना वेदान्त न भाई ।।
केवल उपनिषद श्रुति रटी मन, बन्यो वेदान्ती पूरण भाई ।
रामप्रकाश युक्ति रु उक्ति सूक्ति, सतगुरू उतम देत लखाई ।।१३।।
तीन शाखा है वेदान्त ज्ञान की, द्वैत अद्वैत विशिष्ट कहावे ।
द्वैत मध्वाचार्य अद्वैत है शँकर, विशिष्ठाद्वैत रामानन्द ये गावे ।।
और अनेक वेदान्त सिद्धान्त के, चिन्तक मनीषी सन्त बतावे ।
रामप्रकाश सतगुरू की गम जानत, सोई वेदान्त की युक्ति पावे ।।१४।।
ईश्वर रवि की भाति है समर्थ, सभी सुखावत मेल भगाई ।
ईश्वर सुरसरि प्रवाह समान हो, नदी नाले ले जाय बहाई ।।
पावक सभी जलावत है, वह शुद्ध करे दुर्गन्ध हटाई ।
समष्ठि जीव मिले ईश ही, रामप्रकाश हो समष्ठि विलाई ।।१५।।
अनन्त सृष्टि का एक सँचालक, पृकृति नियन्ता ईश कहाई ।
जीव चराचर पिण्ड रु ब्रह्मण्ड, शासक प्रशासक एक रहाई ।।
सर्व समर्थ सर्व शक्ति वृत, माया विशिष्ट इक ईश गोसाँई ।
रामप्रकाश समष्ठि का व्यष्टि है, रवि रश्मि वत भासक थाई ।।१६।।
रवि किरण रु शशि रश्मि सम, गिरा अर्थ जल बीचि बखाने ।
सीताराम रु जीव ईश्वर सब, भिन्नाभिन्न स्वरूप लखाने ।।
समष्टि व्यष्टि के भेद लखे बिन, आतम ज्ञान स्वरूप न जाने ।
रामप्रकाश गुरूमुखि जानत, भेदाभेद की युक्ति को आने ।।१७।।
ब्रह्मज्ञानी सन्त ब्रह्म स्वरूप है, ब्रह्म लीन हो ब्रह्म समावे ।
नित अवतार सन्त धर आवत, सगुण रूप हरि आप ही आवे ।।
अब न आऊँ भव मांहि यों, सन्त वाणी में सन्त फरमावे ।
रामप्रकाश शँका यह उपजी, कौन आय को? आय न जावे ।।१८।।
चतुर्थ भूमि मे वर ज्ञानी सो, वारम्वार सन्त बन आवे ।
पँचम भूमि वरियान सो आवत, निमित अवतार की भूमि निभावे ।।
षष्टम सप्तम के वरिष्ठ ज्ञानी जन, ब्रह्मलीन हो आय न जावे ।
रामप्रकाश पा परम प्रयोजन, जीवन्मुक्त यह सभी कहावे ।।१८।।
सर्व दुःखन की निवृत्ति पाकर, परमानन्द की प्राप्ति पावे ।
ज्ञानरक्षा सतसँग हरिचर्चित, तप तितिक्षित जीवन लावे ।।
सन्त वाणी साधन रु शास्त्र, निःशँक विसँवादाभाव कहावे ।
रामप्रकाश यह पाँच प्रयोजन, जो पावे सो ब्रह्म समावे ।। १९।।
पँच ज्ञानेन्द्रिय अन्तःकरण चव, सतोगुण की सृष्टि रचावे ।
पँच कर्मेन्द्रिय पँच प्राण सो, रजोगुण सामग्री लावे ।।
पँच तन्मात्रा तमो मिले तब, जीवाभूति चिदाभास मिलावे ।
रामप्रकाश मिल जन्म कहावत, बिछुड़े मृत्यु भाव बतावे ।।२०।।
कूकर वमन सम लौकिक सुख है, करे परिश्रम लोभ लगायो ।
काग विष्टा सम स्वर्ग के सुख, पूण्य परिश्रम वृथा भायो ।।

जनम मरण पुनरावृति कर, भव सागर को मोह लुभायो।
परम जिज्ञासु त्याग करे वह, रामप्रकाश मन सतसँग पायो।।२१।।
माया सत है जड़ रु नित्य, परिवर्तन शील स्वभाव बतावे।
जीव अनादि सत चित केवल, आनन्द बिना भव दुःख पावे।।
ब्रह्म सत चित आनन्द है, यही विशेषण शास्त्र गावे।
रामप्रकाश रामानन्द मानत, विशिष्टाद्वैत को यों समझावे।।२२।।
कौन पुण्यात्मा कर्म ले आवत, नित्य अवतार सन्त भेष धरावे।
कौन किस के कर्म से आवत, निमित अवतार समय पर आवे।।
हरि के पाप पुण्य नही लागत, ब्रह्मज्ञानी कर्म हीन कहावे।
रामप्रकाश कौन कर्मन ले, भव में आयके जीव जगावे।।२३।।
समष्ठि जीव से व्यष्टि बनावत, स्थूल शूक्ष्म कारण लाई।
वैराट हिरण्यगर्भ आव्यकृत आदिक, जीव उपाधि से ईश ठहराई।।
जीव बड़ो या ईश्वर कह दो, अज्ञान से आवृत ईश्वर थाई।
रामप्रकाश प्रश्न यह भाषत, ज्ञानी उतर लखा दो भाई।।२४।।
ओम स्वरूप मात्रा भाखहुं, अर्थ सहित कहो सन्त ज्ञानी।
कैसे त्रिगुण की उत्पति मानत, माया स्वरूप बखानी।।
देश काल वस्तु क्या कहिये, जीव ईश की कहो कहानी।
रामप्रकाश पूछत है? साधुन, पिण्ड ब्रह्मण्ड की बात सुहानी।।२५।।
योगी जपे नित ओम अर्ध बिन्दु, तीन मात्रा त्रिगुण त्यागे।
तत त्वंपद और अस्सीपद, ज्ञानी सोहम् स्वरूप में लागे।।
रमणीय रमता रंरकार सो, राम भक्त घट हरदम सागे।
ध्यानी ज्ञानी भक्त जपे नित, रामप्रकाश हरदम अनुरागे।।२६।।
परम जिज्ञासु श्रद्धा भाव से, सतगुरू वचन सत्य कर माने।
मानत जानत साधन शोधन, वाद विवाद शँका नही आने।।
काहिल कृतघ्न मति तुच्छ चाहत, ग्रन्थ प्रमाणिक उतर माने।
रामप्रकाश श्रद्धा से श्रवणित, अधिकारी सो उतम जाने।।२७।।

।। मैं कौन हूँ, कहां से आया? ।।

हे गुरूदेव भेव बता मोहि कौन हूं मैं अरु कहां चलि आया।
कहां से आया रु क्यों आया जग, संशय मन में अतिशय छाया।।
कहां जाने से फेर न आवत, आवागमन का भय मिटाया।
सतगुरू शरण में आय जिज्ञासु ने, रामप्रकाश यों प्रश्न उठाया।।१।।
हे जिज्ञासु भाव लगा सुन, शुद्ध चेतन स्वरूप से आया।
पृकृति वश त्रिगुण बन्धन, अविद्या के अन्धकार बन्धाया।।
अन्तस्थ चिदाभास संचित वश, प्रारब्ध वासना से चलि आया।
रामप्रकाश साधन गुरू कृपा वश, जहां से आया वांहि समाया।।२।।

।। गुरू, सत्य बाणी, वेद और ग्रंथ की निंदा कौन करता है? ।।

उत्तर-

प्रभुत्व ऐश्वर्य बोद्ध युक्ति बल, रचना की समता जो ना पावे।

सोई विरोध करे अनचाहत, द्वैष बुद्धि कर निन्दा फैलावे ।।
अपने सम बोध युक्ति बिन, मिल कर एक जमात बनावे ।
रामप्रकाश भू पास खड़े वह, सूर पे धूर वृथा बरसावे ।।१।।

।। वह ब्रह्म कहाँ है ? ।।

उत्तर-
सत चित आनन्द सर्व दिशा मय, सर्वमुख सर्व शिर रहावे ।
सर्व ग्रीवा रु सर्व अन्तस्थ में, सर्व व्यापक में स्वयँ समावे ।।
चेतन सर्वगत शिव स्वरूप में, उतम पुरुष पुरुषोत्तम गावे ।
रामप्रकाश वो प्रेरक प्रेरित हो, नाना विधि का खेल दिखावे ।।१।।
व्यापक माहि वृति नित व्यापत, व्याप्य स्वरूप सदा थिर थानी ।
है नित निष्प्रह निसँग असँग ही, सो निर्लेप निर्द्वन्द निरवानी ।।
आप अनूप अरूप अखण्डित, ज्ञेय रु ज्ञान में ज्ञाता विलानी ।
रामप्रकाश सो एक अद्वय, तुरिय में नाम रु रूप थकानी ।।२।।
भावार्थ : वह भगवान सर्व मुखोंवाला, सर्व शिरोंवाला और सर्व ग्रीवाओं वाला, सर्व जीवों के अंतःकरण में स्थित और सर्वव्यापक है । अतः वह सर्वगत और शिव है । वह महान,प्रभु,पुरुष, इस निर्मल प्राप्ति के लिए अंतःकरण को प्रेरित करनेवाला, सबका शासक, प्रकाशस्वरूप और अव्यय है।

।। कौन क्या है ? ।।

नम्रता शीलता साधना से साधु, ब्रह्म निष्ठा से ब्राह्मण होवे ।
वैरागी भौतिक राग बिना होवत, स्वध्याय मौन ते मौनी को जोवे ।।
मोह ममत्व त्वँता को मेटत, सोई सन्यास के पद मे सोवे ।
रामप्रकाश जप तप में तापित, तपस्वी वही जो क्रोध को खोवे ।।१।।
शास्त्र स्वाध्याय रु सतसँग श्रवण, करत ही आत्म ज्ञानी हो जावे ।
सतगुरू साधन मनन किये बिन, समाधान की होड मचावे ।।
निदिध्यासन के किये बिना कछु, ब्रह्मानन्द की मौज ना आवे ।
रामप्रकाश यूँ वाच्यार्थ में बहु, लोग वाचाली जीभ्या चलावे ।।२।।
अर्थात् -अंत: करण की मनोभूमि के लक्षणों के आधार पर साधक अपनी व अन्य की पहचान कर सकता है | संतों की भाषा में, जिसमें साधुता हो वही महात्मा है, जिसको ब्रह्म का ज्ञान है वही ब्राह्मण है ,जिसने रागों से मन बचा लिया है ,वही वैरागी है , जो स्वाध्याय में ,मनन में लीन रहता हो वही मुनि है ,जिसने अहंकार को ,मोह - ममता को त्याग दिया हो वही सन्यासी है ,जो तप में प्रवृत हो वह तपस्वी है।

।। परमात्मा से ही सब ज्ञान ।।

ज्ञान शक्ति उपलक्षण है यह, परम प्रभु के चक्षु है भाई ।
आँख में देखत कान ते श्रवण, त्वचा ते स्पर्श वही कराई ।।
रसना स्वाद सर्व उपलक्षण, चिदाभास मन भोगत याई ।
रामप्रकाश ज्ञाता स्वयँ आप ही, उपाधि ते भोगत दीखत नाई ।।१।।
भावार्थ : ज्ञान शक्ति का उपलक्षण है चक्षु । जितने भी ज्ञान हो रहे हैं सब परमात्मा का ही ज्ञान है । आँख में आकर वही देख रहा है, कान में आकर वही सुन रहा है, त्वचा में आकर वही छू रहा है, रसना में आकर वही रस ले रहा है । और, विश्वतोमुखः सर्व भोग का उपलक्षण है । जितने भी भोग्य हो रहे हैं :

भोक्ता भोग्यं प्रेरितारं च मत्वा...
'भोक्तैव भोग्यभावेन सदा सर्वत्र सन्निष्ठितः ।'

भोक्ता ही भोग्यरूप से सर्वत्र अवस्थित है, वही भोक्ता है, और कोई दूसरा भोक्ता नहीं है। कोई दूसरा ज्ञाता नहीं है, वही ज्ञाता है। ज्ञानेन्द्रियों की उपाधि से वही ज्ञाता है, वही मन और इन्द्रियों की उपाधि से भोक्ता है।

।। जग मिथ्या को अंग ।।

मावस चँद रु दर्पण दर्शन, बँझ्रया सुत नभ के फूल सुहावे।
रज्जु मे सर्प रु सीप में भोडल, मृगतृष्णा जल देख न पावे।।
स्वप्न सँसार मनोहर भासत, शब्द सँसार को यूँ ही सरावे।
ऐसे ही जग यह दीख परे सब, रामप्रकाश मृषा सन्त गावे।।१।।
स्वप्न चित्र रज्जु से सर्प ज्यों, सीप में भोडल जग बतायो।
बाँझ को पूत रु नभ पुष्प रस, रवि में छाया ना दरशायो।।
उतमराम के आयो शरणागत, सतगुरू ने जग झूठ लखायो।
रामप्रकाश निश्चय कर चित मे, मोह को बन्धन दूर हटायो।।२।।
मृदु विकार से बर्तन है सब, कनक विकार से भूषण प्यारे।
रूई तन्तु विकार पट वस्त्र, पूतरी नाना रूप सँवारे।।
लोह विकार ते शस्त्र होवत, तादात्म्य अन्योन्याश्रित सारे।
ऐसे ही प्रपँच ईश्वर ब्रह्म आश्रित, रामप्रकाश यों भ्रम विडारे।।३।।
सीप माँहि सब भ्रम से भासत, कागज रूपा भोडल सारा।
मन्द प्रकाश ते रज्जू मे भासत, साँप भूजल रेख दरारा।।
मृगतृष्णा जल भासत है तिमि, भासत जगत यह चित मँझारा।
रामप्रकाश अधिष्ठान बिना सब, दीखत सो भ्रम है कछु न्यारा।।४।।
दर्पण में मुख होवत नाहिन, दीखत है मन मोहक सारा।
ऐसे ही जग के सुख भी भासत, है नही पर भासत भारा।।
मृगतृष्णा जल प्यास ना जावत, नभ के पुष्प सुगन्ध न प्यारा।
रामप्रकाश जप हरि का सुमिरण, लोक परलोक में होय सुधारा।।५।।
दर्पण में मुख रु सँसार को सुख सो, दीखत है पर होवत नाही।
सीप में भोडल रूपा रु कागद, सूर्य रश्मि ते वे दरशाही।।
रज्जु मे साँप रु भमि दरार सो, मन्द प्रकाश ते दीखत ताही।
रामप्रकाश ज्ञान मे अज्ञान ज्यों, रहत है पोहन पूरण छाही।।६।।
जगत मिथ्या कहते जन सब ही, दीखत है यह साफ सदाई।
जनम से पूर्व रू जनम बाद मे, मरण बाद भी रहता आई।।
झूठा कैसे कह समझावो, ज्ञानीजन बतलावो भाई।
रामप्रकाश भ्रमज्ञानी समझावे, बातों मे अलुझावत जाई।।७।।

।। गुढार्थ सवैया ।।

हेम सुता पति पूत परिजन युत, होय नमन हर बार हमारी।
सिन्धु सुत भ्रात की अनुजा के पति, ताहि को वन्दन बारम्बारी।।
शैल सुता सुत वाहन का अरि, स्वामी पिता को नमन विचारी।
रामप्रकाश उतम सँग पूजत, गुरू कृपा नित होय तुम्हारी।।१।।

अर्थ-गणेश , विष्णु , शिव का वन्दन ।। १।।

जलधि सुता पति ताहि के बान्धव, ताहि बन्धु को वन्द हमारी ।
अज सुत सुत पूत इष्ट है, ताके सुत सो विघ्न विडारी ।।
अवनी सुत अरि जानत हो सब, भूमि सुता पति होय मुरारी ।
रामप्रकाश करे नित वन्दन, विघ्न विलाप को दूर विडारी ।।२।।

अर्थ-श्रीकृष्ण , गणपति , कृष्ण की वन्दना ।।२।।

यमदग्नि की पत्नी भगनी पति, रिपु गर्वहारी को नमन हमारी ।
दधि सुता पति के भूषण, तात सुता पति वन्दन वारी ।।
दधि सुता वर पूत के मीत ही, कष्ट हरण है देव बिहारी ।
रामप्रकाश सब को कर वन्दन, जन्म सफल कर देह सुधारी ।।३।।

अर्थ-श्रीराम ,विष्णु , कृष्ण की वन्दना ।।३।।

कुम्भ अरि भ्राता स्वामी शिष्य, इष्टदेव को नमन हमारी ।
कर्क सुता पति गल का भूषण, ता अरि के पति वन्दन वारी ।।
तुल तनया पति मिथुन सखा वर, मेष धन पर कर्क रहारी ।
रामप्रकाश पूज्य वर सब ही, आशिस हरदम रहे तुम्हारी ।।४।।

अर्थ-श्रीराम ,कार्तिक , हनुमानजी , वन्दन ।।४।।

।। विपर्यय का अंग ।।

दाता भोग रु रोग को भोगत, कृपण आनन्द मौज मनावे ।
सूम सदा सुख पावत है अरु, दाता सोई नरक सिधावे ।।
मुरदा अमर भया युग भीतर, जीवत सोई नरक भोगावे ।
रामप्रकाश की कविता उलटी, सन्त सोई जन सुलट सुनावे ।।१।।

विपर्यय टीका~ इन्द्रियादिक को रस भोगों का जो प्राणी देने वाला दाता है वह सँसारी जीवन रोग (भवसागर) को भोगता है और जो सँयम करके इन्द्रियों को भोगों का दान देने मे कँजूसी करता है, वह लोक परलोक में आनन्दित रहता है । उपरोक्त कृपण सदा सुख पाता है और उक्त प्रकार से दाता है वह नरक मे जाता है । जो जीवनमुक्त (अज्ञान जनित द्वन्द के विकारों से परे) मरजीवा है, वह अमरत्व पद ब्रह्म मे लय होकर सँसार के भव चक्र के आवागमन रहित होगया और जो द्वन्द के सँसृति में जीवित है, वह बारम्बार जनम मरण मे आता रहता है । यह कवि राघव की उलटी (विपर्यय वाणी) कविता है, सँशय रहि सन्त उलट कर अर्थभाव से सीधी करके सुनाते है ।

एक पुरूष की नारि नियन्ता, निशा अन्धकार में लागत प्यारी ।
चौमुख पुरुष हो तीन दण्ड युत, ज्ञान भानु से होवत न्यारी ।।
सुगरे से मन रूठ गया अब , नुगरे से खूब लगी है यारी ।
नागे के सँग नागा मिलत ही, रामप्रकाश भयो आनन्द भारी ।।२।।

विपर्यय टीका ~ ईश्वर नियन्त्रित माया का तामसी रुप अविद्या अन्धकार मे सब को प्यारी (अच्छी) लगती है और जब कोई चार साधन वाला जिज्ञासु श्रवणादिक तीन दण्डे लेते ही उस से सर्वथा अलग (भिन्न) हो जाती है । ऐसा पुरुषोत्तम पुरुष की गुणों सहित साकार सँसार (सर्गुण) से उपरामता लेता है , तब त्रिगुण वस्त्र रहित निर्गुण से प्रीत लग जाती है । ऐसे त्रिगुण के वस्त्र रहित नागे से जब प्रपँच रूप वस्त्र रहित ज्ञानी जब एकाकार होता है तब अमोघ सुख सच्चिदानन्द स्वरूप होजाता है ।

गर्भ मे था तब बोल रहा था, अब बाहर आया तब बोलत नाही।
मुरदा अमर भया निःसँशय, कीड़ी गिल्यो नाग बल शाही।।
मुरदा काल को खावत है अरु, जीवित है वह नरक सिधाही।
रामप्रकाश की यह उलटी वाणी, सन्त समझे सो उलट समाही।।३।।

विपर्यय टीका ~माया - जब तक प्राणी अविद्या के भीतर (गर्भ) में था तब जीव भाव से द्वैत की बाणी बोलता था और जब अविद्या के प्रभाव से बाहर ज्ञान दशा मे आया तब एकाकार (अद्वैत) होने से बोलने की बाणी बन्द (मौन) हो गयी। माया के मोह ममता त्वँता और अहँता से मुक्त (मुरदा-मरा) ज्ञानी हुआ, तब वह जनम ~ मरण से रहित अमर हो गया। ज्ञान काल की बुद्धि द्वारा बलशाली मायिक अहँकार के नाग (हाथी) को निगल (खा) गयी ।जीवन मुक्त (ज्ञान भुमि में स्थित) ज्ञानी मृत्युभय (अभिनिवेश) क्लेश को नष्ट (खा) कर गया और जो अभिनिवेश काल ग्रस्त जीवित है, वह जनम ~ मरण की यातना के नरक मे जाता है। राघवप्रसाद कवि की यह उल्टी वाणी है जिसे सँसय रहित ज्ञानवान सन्त आध्यात्मिक अर्थ भाव से समझ कर उलट अपने आत्म स्वरूप मे समाहित हो जायेगे।

अब व्यभिचारिणी भई पतिव्रता, और दिशा से नेह विसारयो।
शीलवान सन्त भयो व्यभिचारी, हर घर नारी से नेह निहारयो।।
हाथी को चुहिया ले बैठी रु, चुहिया सिंह को जन्म दे डारयो।
रामप्रकाश आश्चर्य यह देखत, जनम रु मरण को भाव विसारयो।।४।।

विपर्यय टीका ~साधक की मनोवृति सँसार के नाना रस विषयों को चिन्तन करती (व्यभिचारिणी) थी, वह अब एक गुरू शब्द के पीछे लग कर पतिव्रता हो गयी। तब अन्येतर विभिन्न विषयों के विचारों के प्रेम भाव को भूल गयी। राम के प्रकाश (रचनाकार) विवेकी पुरुष ने ऐसा आश्चर्य देख कर भव भ्रमण के भाव को भूल कर परम परमार्थ परमानन्द को प्राप्त कर लिया। मन मस्त हाथी को विवेक बुद्धि रूप ने पकड़ कर एक निश्चय से बाँध दिया ,और उस बुद्धि ने तत्वज्ञान (ब्रह्म विचार) के विचार रूप सिह को उत्पन्न कर लिया। साधक सँशय मे तर (अज्ञान में डूबा हुआ) अपनी मूढ मति मे रहने वाला एकाकी बुद्धि को त्याग कर अब अनेक ज्ञानी ध्यानी योगी सन्त जनों की साधनाओं से भरी बुद्धि (मति) का सँग करने लगा अर्थात् प्रत्येक सशँय से तरने वाले सन्तों की निश्चल वृतियों से प्रेम करने लगा।

उल्टा चले सो पहले ही पहुंचत, सीधा चले भव मांहि सिधावे।
सुगरा त्याग के नुगरा ध्यावत, जीवित ओढत मूंआं बिछावे।।
तीन पांच का त्याग करें वह, अद्दष्ट भरोसे अद्दष्ट रहावे।
रामप्रकाश का विपर्यय वाचन, पढे समझ कर मोक्ष सिधावे।।५।।

विपर्यय टीका ~ जीवात्मा अपने ब्रह्म स्वरूप से कर्मों वश होकर संसार में आया था, त्रिगुणात्मक मार्ग से उलट कर वापिस उसी दिशा में चले वह अपने स्वरूप में शीघ्रता से स्थिति प्रप्त कर लेता है और जो सीधा त्रिगुणात्मक संसार के मार्ग पर सीधा चलने वाला भवसागर के भ्रमण में गोता लगाता रहेगा। सुगरा (गुणवत्ता युक्त संसृति) संसार को त्याग कर निगुणा (गुणातीत) जो त्रिगुणात्मक प्रभाव से रहित परब्रह्म का ध्यान करता है और जीवित (जो स्वर चलता है) उसे ऊपर रख कर शयन करें तथा मूंआं (जो स्वर बन्द है) उसको नीचे दबा (बिछोना करके शयन) करे। तीन गुण और पांच तत्व अर्थात अपरा माया की पांच तन्मात्रा और मन बुध्दि चित की क्रियाओं का त्याग करके अद्दष्ठ (प्रारब्ध कर्म) नहीं दिखने वाले अज्ञात के आधार जीविका रखते हुए अद्दष्ठ (परब्रह्म) जो ज्ञानी नहीं दिखने वाले सर्वज्ञ निर्गुण की निष्ठा में मुक्त रूप से रहता है, वही धन्य है। ऐसा

रामप्रकाश "राघव" का विपर्यय (उल्टा) वाचन (कथन) कहना जो सन्त पढ कर समझ (पालन कर) लेगा, वह मोक्ष के स्वरूप में समाहित हो जायेगा ।

।। आरती का विधान और महत्व ।।

प्रात शाँय मे आरती करत है, चार बार हरि चरण की होवे ।
नाभि प्रदेश की दोय बार हो, एक बार मुख मण्डल जोवे ।।
पुनश्च सर्व अँग की होवत, सात वार सब ताप को खोवे ।
आरती विधान सर्वोत्तम सुन्दर, रामप्रकाश प्रमाणित सोवे ।।१।।
शूद्र चरण अँग आरती पावत, चार वार घुमावत भाई ।
दोय वार हो शाहू की सोभित, ब्रह्मण अँग की इक वार कहाई ।।
करो विचार पण्डित जन पूर्ण, कौन बड़ो जन कैसे बताई ।
रामप्रकाश चरण रज पूजत, मुख के लार की कौन बड़ाई ।।२।।
आरत भाव से विधि आरती, चार वार चरण की होती ।
दो वार में नाभी प्रदेश की, एक वार मुख मण्डल की ज्योती ।।
देह अँग में शूद्र पाँव है, नाभी वैश्य वर्ण में गोती ।
रामप्रकाश ब्राह्मण मुख जानत, शास्त्र प्रमाण के यही है मोती ।।३।।

तहां प्रमाण-

आदौ चतु:पाद तले च विष्णोर्दिवो नाभि देशे मुख बिम्बं एकम् ।
सर्वेषु वांग्ङेषु च सप्त वारा नारात्रिक भक्त जनस्तु कुर्यात्।। ~पूजा पद्धति

आरती के महत्व की चर्चा सर्वप्रथम "स्कन्द पुराण" में की गयी है,आरती की थाल को इस प्रकार घुमाएं कि ॐ की आकृति बन सके,आरती को भगवान् के चरणों में चार बार,नाभि में दो बार, मुख पर एक बार और सम्पूर्ण शरीर पर सात बार घुमाना चाहिए, आरती के उपरान्त थाल में रक्खे हुए फूल देने चाहिए और कुंकुम का तिलक लगाना चाहिए।

।। गायत्री मंत्र ।।

गायत्री का जप मुर्द्धन्य है, सूर्य नारायण की स्तुति भारी ।
उज्वल बुद्धिमान बने के हित, उपासक प्रार्थना कर सारी ।।
यजुर्वेद अध्याय छतीस मे, मन्त्र तीसरा उतम कारी ।
रामप्रकाश सब जानत है इन को, गायत्री नाम से दुनिया सारी ।।१।।
गायत्री अनष्टुप छन्द है सुन्दर, यजुर्वेद की मन्त्र रचना प्यारी ।
भाषाओं की जननी समझो, गुरु मन्त्र है सुख कारी ।।
अधिकार सनातनी सब को है, पहिचान मानव की हितकारी ।
रामप्रकाश पुकारत है इन को, गायत्री नाम से दुनिया सारी ।।२।।

गायत्री मंत्र एवं उनका अर्थ

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

भावार्थ:- उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अन्तःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करे।

कठिन-शब्दार्थ

गायत्री – पंचमुख़ी देवी है, हमारी पांच इंद्रियों और प्राणों की देवी मानी जाती है.
ॐ = प्रणव (वह शब्द, जिससे ईश्वर की अच्छी प्रकार से स्तुति की जाये– ॐ)
भूर = मनुष्य को प्राण प्रदान करने वाला
भुवः = दुख़ों का नाश करने वाला

स्वः = सुख़ प्रदान करने वाला
तत = वह, सवितुर = सूर्य की भांति उज्जवल
वरेण्यं = सबसे उत्तम
भर्गो = कर्मों का उद्धार करने वाला
देवस्य = प्रभु
धीमहि = आत्म चिंतन के योग्य (ध्यान)
धियो = बुद्धि
यो = जो
नः = हमारी
प्रचोदयात् = हमें शक्ति दें (प्रार्थना)

।। कर्म योग विधि वर्णन ।।

योग के प्रकार व् क्रियाएं-

योग विधिगत भेद अनेक ही, हठ मन्त्र लय राज कहावे।
कर्म योग रु भक्ति योग जु, ज्ञान योग कहि भेद बतावे।।
शास्त्र अनेक बखानत है विधि, सतगुरू बिना नही गम लखावे।
रामप्रकाश गुरू युक्ति बिना नही, मुक्ति की भुक्ति है दुर्लभ भावे।।१।।
यम है पाँच रु नियम पाँच ही, शौच सँतोष तप जान हूँ सारो।
स्वाध्याय अपरिग्रह अहिंसा शम रु, दम दया को हृदय बिच धारो।।
आसन प्राणायाम प्रत्याहार है, धारणा ध्यान समाधि विचारों।
रामप्रकाश है साधन दुर्लभ, योग गति अति शूक्ष्म प्यारो।।२।।
नेति रु धौति बस्ती है त्राटक, नौली गजकरणी क्रिया बखानो।
जलनेति रु सूत्रनेति लख, तेल घृतादि के भेद को छानो।।
बारह प्रकार के भेद धोति जब, षट् क्रिया यह योग की जानो।
रामप्रकाश अष्ठाँग के साथ ही, देह शुद्धता योग से आनो।।३।।
अश्वनी क्रिया करे जन कोईयक, गृहस्थ साधत है जन योगिक जाने।
क्रिया वज्रोली है साधन कठिन, जल पय घृत लिंग ते पाने।।
श्वास प्रश्वास को कण्ठ ते खेंचत, मूर्द्धन्य स्थान ते पावत छाने।
रामप्रकाश है दुर्लभ क्रिया यह, जानत मानत योगी पिछाने।।४।।
युक्त त्रिवेणी को भेद लख्यो नही, मुक्त त्रिवेणी की साधन नाही।
इडा पिंगला सुषुम्ना साधन, अर्ध रु उर्ध की गम विलाही।।
युक्तबँक की गम करी नही, मुक्तबँक की बात सुनाही।
रामप्रकाश यह योग गति अति, शूक्ष्म को माग लखे विरलाही।।५।।

स्वरोदय विचार-

इडा पिंगला सुषुमन साधन, षट्कर्म शुद्धिकरण तन धारो।
प्राणायाम त्रिकूटी महल में, ज्योतिर्मय दर्शन मन प्यारो।।
झिलमिल झिलमिल दीपन दरसे, चित वृति सँयम कर सारो।
रामप्रकाश एकान्त साधन से, हरदम में ध्यान सुधारो।।६।।

इडा वाम चन्द्र स्वर वर, अचर कार्य कर साधन लावे।
पिँगला दाहिनी सूर्य साधन कर, चर कार्य की सिद्धि करावे।।
गँग यमुन के बीच सुषुम्ना, हरि भजन को सिद्ध बनावे।
रामप्रकाश करे कोई साधन, स्वरोदय कारज सिद्धि दिलावे।।७।।
इडा गँगा रु पिँगला यमुन, सुषुम्ना सरस्वती बीच कहावे।
घर मे साधन नित्य स्नान में, सबही कारज सिद्धि दिलावे।।
स्वर का साधन सरस सर्वोत्तम, सरल सन्तन के मन को भावे।
रामप्रकाश करे कोई साधन, अष्ठ सिद्धि घर बैठे ही पावे।।८।।
सतगुरू मुख से दीक्षित सानिध्य, वास करे स्वर साधन लावे।
नित्य नियम से विथि कर साधन, अध्यात्म ज्ञान रू ध्यान लगावे।।
जीवित ओढत मूँआँ बिछावत, सो योगी जन आयु बढावे।
रामप्रकाश करे कोई साधक, भौतिक अध्यात्म सुख को पावे।।९।।
भोजन भोज्य पदार्थ पावत, सूर्य नाड़ी का ध्यान रखावे।
पैय पदार्थ पीवन हो जब, चन्द्र स्वर का पालन लावे।।
पूर्व उतर गमन रवि बल, दक्षिण पश्चिम चन्द्र दृढावे।
रामप्रकाश योगी सिद्ध साधत, साधन निशिदिन मन में भावे।।१०।।

।। योग के आठ अंग ।।

यम नियम रु आसन प्राण में, योग विधि कर ध्यान विचारो।
पूरक इडा कर मूल बंध में, उड़ियान जालंधर कुंभक सारो।।
रेचक करो युक्ति कर साधन, तीन हुं बंध को धीर निवारो।
रामप्रकाश हो धारणा ध्यान में, जाय समाधि में ईश सम्भारो।।११।।
यम नियम आसन के आगे, प्राणायाम प्रत्याहार करावो।
पूरक कुम्भक रेचक विधि से, धारणा ध्यान का साधन लावो।।
षट् क्रिया शुद्ध समाधि साधन, निर्विकल्प करके पावो।
रामप्रकाश यह कर्म योग विधि है, ईश्वर सानिध्य पावो।।१२।।
यम नियम रु आसन जानहु, प्राणायाम कर युक्ति पावे।
पूरक कुम्भक रेचक से कर, प्रत्याहार धारणा ध्यान कहावे।।
सविकल्प रु निर्विकल्प ये, दोय विधि समाधि की गावे।
रामप्रकाश यह अष्ठांग योग के, साधन पातञ्जलि सन्त बतावे।।१३।।
इडा पिंगला हठयोग जो, गुरू शब्द से मन्त्र योग दृढावे।
प्रतिक्षण जपत राजयोग में, श्वासोच्छवास मे धुनि लगावे।।
सुरत शब्द का मेल करे मन, श्वासा सहित लय योग मे जावे।
रामप्रकाश भक्ति रु कर्म में, ज्ञान योग का मर्म कहावे।।१४।।

।। यम का वर्णन ।।

तन मन वाणी से अहिंसा पालन, सत्य का धारण नित्य ही धारो।
अष्ठ मैथुन से दूर रहो नित, ईश उपसना अध्ययन न्यारो।।
सँग्रह त्याग वृति का पालन, तन मन वाणी से चोरी नकारो।
प्रथम अँग यम पाँच प्रकार सो, रामप्रकाश कर्मयोग सुधारो।।१५।।

।। नियम का वर्णन ।।

तन मन वाणी को पावन रखिये, व्यशन सात दश दोष निवारो।
तृष्णा त्याग सँतोष का धारण, तीतिक्षा से तप तेज विचारो।।
वेद शास्त्र स्वाध्याय करो नित, ईश्वरीय उपासना ज्ञान सँभारो।
रामप्रकाश यह द्वितीय नियम सो, पाँच प्रकार को योग मे प्यारो।।१६।।

।। आसन का वर्णन ।।

सिद्धासन पद्मासन जान हूँ, वज्रासन कर योग सुधारो।
यही आसन सिद्धि के दायक, जप तप करके ज्ञान विचारो।।
और आसन सब रोग निवारक, मुख्य चौरासी गणित अचारो।
तृतीय अँग योग के साधन, रामप्रकाश सन्त शास्त्र सारो।।१७।।

।। प्राणायाम का वर्णन ।।

पूरक श्वास को ऊपर खेंचन, उतम मध्म कनिष्ठ कहावे।
कुम्भक श्वास ठहराय करे वह, अष्ठ भेद गुरू भेद सिखावे।।
बाह्य आभ्यान्तर भेद है कुम्भक, प्राण रेचक में बाहर आवे।
रामप्रकाश यह अँग चतुर्थ, कर्मयोग की विधि बतावे।।१८।।

।। प्रत्याहार व् धारणा का वर्णन ।।

सर्व वासना त्यागत है नर, आशा रु वासना सकल बिसारे।
वृति खेंच सँसृति सँसार से, बाहर से मन अन्तर धारे।।
सो प्रत्याहार कहै सन्त सामर्थ, दृढ विश्वास धारणा वारे।
पँचम षष्ठम अँग बखानत, रामप्रकाश कर्मयोग उचारे।।१९।।

।। ध्यान का वर्णन ।।

मनोयोग से चितवृति मय, शब्द सुरति को एक मिलावे।
अर्ध उर्ध के बीच में आसन, प्राणायाम को खूब सधावे।।
वृत दोष प्रतिहार करे सब, ध्यान बीच परमेश्वर ध्यावे।
रामप्रकाश यह सप्तम साधन, कर्मयोग के शास्त्र गावे।।२०।।

।। समाधि का वर्णन ।।

सविकल्प और निर्विकल्प समाधि -

राजयोग मय स्थिर आसन, चेतन वृति से ध्यान समावे।
सविकल्प समाधि ताहि कहै वर, शास्त्र विधि से भेद लखावे।।
सँकल्प विक्लप मन के मेटत, चित वृत्ति शुन ध्यान लगावे।
रामप्रकाश यही है निर्विकल्प, अष्ठम समाधि अँग लखावे।।२१।।
सविकल्प समाधि चेतनता थिर, हरदम श्वासा सुमिरण सारे।
राजयोग मे स्थिर आसन, कर्मयोग यह सन्त पुकारे।।
निर्विकल्प समाधि जड़ता पूरक, शून्य शिखर गढ ध्यान को धारे।
रामप्रकाश तन इन्द्रिय सँयम, मन बुद्धि सब लय विचारे।।२२।।
श्वासा का साधन इडा रु पिँगला, अर्ध रु उर्ध का योग कहावे।
सुरत रु शब्द की एकता पूरण, वृति निरोध समूह करावे।।
जीव रु ईश का सानिध्य वास हो, कर्मयोग का लक्ष लखावे।
रामप्रकाश यह योगीजन जानत, भोग को त्याग के योग कमावे।।२३।।

।। पाँच प्रकार की कर्मयोग मुद्रा ।।

शरीर स्वास्थ के साधन कर्म में, अष्ठोत्तर मुद्राएं कही है आगे।
कर्म उपासना पूजा साधन, मुद्रा इक्कीस कही जन जागे।।
कर्मयोग उपासना साधन, योगी जन मुद्रा पाँच के सागे।
रामप्रकाश लखे ब्रह्मज्ञानी जन, द्वैत अद्वैत की मुद्रा एक ना लागे।।२४।।
कर्मयोग भूमिका जान हूँ, वाणीलय मनोलय मानो।
बुद्धिलय रु अहँकार लय, कर्म क्षय कर उपयुक्त जानो।।
रसास्वाद काषाय विक्षेप लय, चार विघ्न समाधि मे हानो।
रामप्रकाश साधन है दुर्लभ, दुर्गम जानत गुरू गम म्यानो।।२५।।
कर्मयोग मुद्रा पाँच प्रकार की, अष्ठादश पूजा की धारा।
अर्चन मुद्रा चौवीस जो कहिए, अष्ठोतर मुद्रा स्वास्थ्य सारा।।
योग रु भोग अष्ठोतर मुद्रा, शारीरिक स्थिति अर्थ सुधारा।
रामप्रकाश पण्डित क्या बूझे, मुद्रा और अनेक प्रकारा।।२६।।
हेम मुद्रा चल राज मुद्रा तप, कूट मुद्रा देव की जानो।
अभयमुद्रा सतगुरू की होवत, मुद्राँक सदा सताबल आनो।।
मुद्रणालय प्रकाशन पावत, मुद्रा नाम स्थिति को मानो।
रामप्रकाश पण्डित क्या बूझे, मुद्रा और अनेक हि छानो।।२७।।
तर्क अभय मुद्रा कहि धातु ही, तप्त भाव सु मुद्राक्षर हेमा।
राज मुद्रा रु साज मुद्रा लख, मुद्रांकित पत्र रु शास्त्र नेमा।।
मुद्रणालय मुद्रक जानहु, मुद्रांकित पत्र मुद्राध्यक्ष खेमा।
रामप्रकाश मुद्रणालय लेख रु, मुद्रा विशिष्ठ स्थिति सेमा।।२८।।
खेचरी जिह्वा रु भूचरी नासिका में, चांचरी चक्षु में मुद्रा साजे।
अगोचरी श्रवण उन्मुनी मूर्द्धनी, पांच मुद्रा यह योग की राजे।।
विधि विधान योग कला विद, योग गुरू बिन नाहि अंदाजे।
रामप्रकाश कहै सन्त रु शास्त्र, मुद्रा देह सुधा रस काजे।।२९।।

।। दृष्टान्त सिद्धांत वाटिका ।।

(फल)

एक फल को एक ने देखा रु, दूजा गया तब तीजे ने लाया।
चौथे ने पाया रु पाँचवे लिया वह, सब को दिया तब दोषी है भाया।।
छठे पर आकर मार पड़ी तब, आँख आँसु भर एक को आया।
रामप्रकाश यह कर्म फल पावत, प्रेरक होवे सोई दुःख बताया।।१।।
एक आँखने फल को देखा तब, दूजे पाव ने वहाँ पहुँचाया।
तीजे हाथ ने तोड़ मुँह चौथे दिया वर, पाँचवे जीभ ने चख सब को ही दिलाया।।
छठे शिर पर मार पड़ी तब, एक आँख में आँसु भर आया।
रामप्रकाश प्रेरक आँख ही, रोवत वह कर्म फल पाया।।२।।

(१० बकरी)

दश अजा रु छाग एक वर, एक धनी धनपाल रखाये।
ताही क्षुधा तृप्त करे जन, ता सँग कन्या देहुँ विहाये।।

कई हार गये वर घास चरा कर, एक ज्ञानी वर ठुँठ दिखाये।
रामप्रकाश उन तृप्त किये रुद्र, कन्या विवाह कर मौद मनायें।।१।।
दश इन्द्रिय अजा रु मन ही छाग को, चिदाभास धनी ने पाल रखाये।
तृष्णा भोग रसे तृप्ति नाहिन, ज्ञानी यति ठुँठ साधन लाये।।
वासना विमुक्त भये सब छागल, कुटस्थ के घर शान्ति को लाये।
रामप्रकाश सन्त कोई साधक, आनन्द मँगल मोद मनाये।।२।।

(१९ ऊंट)

एक व्यक्ति ने वसियत लिखी वर, उनींस ऊँठ की सम्पति सारी।
आधी सम्पति छोटे पूत को, चौथाई मध्यम बैटे को प्यारी।।
पाँचवा भाग बड़े बेटे को देकर, आप गये वह स्वर्ग सिधारी।
रामप्रकाश अब न्याय करो सब, कैसे बाँटोगे विभूति हमारी।।१।।
एक बुद्धिमान जो ऊँठ सवार हो, आया समझ कर बुद्धि उपाई।
आपना ऊँठ मिला कर बीस किये, अरु आधे दिये दश छोटे को भाई।।
पाँच मध्य को चार छोटे को, आपनो एक थो लियो बचाई।
रामप्रकाश द्रष्टान्त अध्यात्म, समझ विचार करो मति लाई।।२।।
पाँच ज्ञानैन्द्रीय पाँच कर्मैन्द्रिय, दश छोटे तमोगुण मिलाई।
प्राण दिये पँच रजोगुण को अरु, चार अन्तस्थ चिदाभास बधाई।।
शेष अशेष रह्यो ब्रह्म कुटस्थ जु, ता बिन न्याय होवे नही भाई।
रामप्रकाश रह्यो ब्रह्म न्यायिक, चेतन आप हि रह्यो बचाई।।३।।
पाँच ज्ञानैन्द्रीय रु पाँच कर्मैन्द्रिय, पाँच ही प्राण अन्त:करण चारे।
यह उन्नीस भये सब मिलत ही, जीवन की उलझन हो रही सारे।।
ब्रह्मातम ऊँठ मिले बिन नाहिन, जीवन अध्यात्म सुख न धारे।
रामप्रकाश त्रिगुण महि बाँटत, आनन्द होवत मौज हमारे।।४।।
पूर्वाचार्यं ने लिखी वसियत, अपने ज्ञानी शिष्य को भारी।
कुटस्थ स्वरूप ने न्याय कियो गुरू, गुण सामग्री बाँट दी सारी।।
भौतिक तमो अविद्य कृत तज कर, आपने ऊँठ चिदाभास को टारी।
रामप्रकाश न्याय कर सतगुरू, जिज्ञासु जन को लियो उभारी।।५।।
पूर्वाचार्य ब्रह्मलीन भये तब, द्विगुण चिदाभास उतराधिकारी।
सतगुरू कुटस्थ माया ऊँठ ले, न्याय ब्रह्म विद्या का धारी।।
बाँट दीये ऊँठ वसियत के, चिदाभास निज ऊँठ उभारी।
उतम ज्ञानी जिज्ञासु जन को, रामप्रकाश का ज्ञान दियारी।।६।।

टिप्पणी-

१९ ऊंट की कहानी

एक गाँव में एक व्यक्ति के पास १९ ऊंट थे। एक दिन उस व्यक्ति की मृत्यु हो गयी।
मृत्यु के पश्चात वसीयत पढ़ी गयी। जिसमें लिखा था कि मेरे १९ ऊंटों में से आधे मेरे बेटे को,१९ ऊंटों में से एक चौथाई मेरी बेटी को, और १९ ऊंटों में से पांचवाँ हिस्सा मेरे नौकर को दे दिए जाएँ। सब लोग चक्कर में पड़ गए कि ये बँटवारा कैसे हो ? १९ ऊंटों का आधा अर्थात एक ऊँट काटना पड़ेगा, फिर तो ऊँट ही मर जायेगा। चलो एक को काट दिया तो बचे १८ उनका एक चौथाई साढ़े चारसाढ़े - फिर .चार? सब बड़ी उलझन में थे। फिर पड़ोस के गांव से एक बुद्धिमान व्यक्ति को बुलाया गया।

वह बुद्धिमान व्यक्ति अपने ऊँट पर चढ़ कर आया, समस्या सुनी, थोडा दिमाग लगाया, फिर बोला इन १९ ऊंटों में मेरा भी ऊँट मिलाकर बाँट दो। सबने सोचा कि एक तो मरने वाला पागल था, जो ऐसी वसीयत कर के चला गया, और अब ये दूसरा पागल आ गया जो बोलता है कि उनमें मेरा भी ऊँट मिलाकर बाँट दो। फिर भी सब ने सोचा बात मान लेने में क्या हर्ज है।
१९+१=२० हुए।
२० का आधा १०, बेटे को दे दिए।
२० का चौथाई ५, बेटी को दे दिए।
२० का पांचवाँ हिस्सा ४, नौकर को दे दिए।
१०+५+४=१९
बच गया एक ऊँट, जो बुद्धिमान व्यक्ति का थावो उसे लेक...र अपने गाँव लौट गया।इस तरह १ उंट मिलाने से, बाकी १९ उंटो का बंटवारा सुख, शांति, संतोष व आनंद से हो गया।सो हम सब के जीवन में भी १९ ऊंट होते हैं।
५ ज्ञानेंद्रियाँ (आँख, नाक, जीभ, कान, त्वचा(
५ कर्मेन्द्रियाँ (हाथ, पैर, जीभ, मूत्र द्वार, मलद्वार(
५ प्राण (प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान(और
४ अंतःकरण (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार(
कुल १९ ऊँट होते हैं । सारा जीवन मनुष्य इन्हीं १९ ऊँटो के बँटवारे में उलझा रहता है।और जब तक उसमें गुरु रूपी ऊँट नहीं मिलाया जाता यानी के दोस्तों के साथसंबंधियों के साथ -सगे .... जीवन नहीं जिया जाता, तब तक सुख, शांति, संतोष व आनंद की प्राप्ति नहीं हो सकती।

(कृतघ्नी की हड्डी)

कृतघ्नी की हाडकी, पीपल सूखो जाय ।
कन्या गर्भ योगी कलंक, बिना किये फल पाय ।।१।।

शब्दार्थ ~कृतघ्नी= किये उपकार को नहीं मानने वाला अपकारी । भावार्थ ~ एक कृतघ्न की हड्डी कौए ने लाकर किसी पीपल के वृक्ष पर डाल दी जिससे मैं पीपल सूख गया और उस पीपल की लकड़ी को एक तपस्वी ने अपने धुणे में जलाई । वहां पर गांव के लोग दर्शनार्थी आते थे उनमें एक कन्या भी माता-पिता के साथ आती थी महाराज ने उस धूणे की विभूति को प्रसाद के रूप में उस कन्या को दी जिससे कन्या गर्भवती हो गई वह कलंक तपस्वी के ऊपर पड़ा जबकि तपस्वी और कन्या आचरण से शुद्ध थे, परंतु उस कृतघ्न की हड्डी के प्रभाव से तीनों को संकट भोगने पड़े ।

।। ग्रंथ रचियता का अनुसन्धान (खोज) ।।

पाँच मुक्ति रु पँच वाणी पद, ज्ञानी के कर्म को वितरण भारी ।
खण्ड ब्यालिस सात द्वीप में, नदी सिन्धु गिरि वर्ण चारी ।।
मुक्त ज्ञानी है तीन प्रकार से, नित्य नेमितिक जो अवतारी ।
रामप्रकाश पूर्वाचार्य कृति से, अध्ययन में रही खोज हमारी ।।१।।
प्रारब्ध तीन प्रकार के वितरण, आगामी ज्ञानी के दोय विचारी ।
कर्म प्रस्तार विविधता पूरण, शँका अनन्त मन दूर निवारी ।।
नौ द्वारे से देह त्यागी जिन, किस योनि में जा देह धारी ।
रामप्रकाश पूर्वाचार्य कृति से, अध्ययन में रही खोज हमारी ।।२।।
गुरू परम्परा आदि से अद्यावधि, सुबोध चरितामृत कृति भारी ।
अध्यात्म दर्शन शब्द विविधता, लाख वर्ष कलैण्डर धारी ।।
ज्योतिष और छन्द शास्त्र में, रही नवीनतम विधिक विचारी ।
रामप्रकाश पूर्वाचार्य कृति से, अध्ययन में रही खोज हमारी ।।३।।
पिचहतर सन्तन की कृतियाँ, सँशोधित सेवा हुई उपकारी ।

अस्सी पर सात ग्रन्थन की रचना, सन्त प्रसाद गुरू कृपा सारी ।।
वर्ष छतीस सतगुरू का सानिध्य, भाग्य साधना हरि सुधारी ।
रामप्रकाश पूर्वाचार्य कृति से, टीका बहुत रही श्रम हमारी ।।४।।
सन्त वाणी रु वाद कोश नव, वाणी रु छन्द बहु विस्तारी ।
पँच मात्रा भेष यष्ठिका, राश्यार्थ गूढार्थ और ही सारी ।।
वेदान्त दोहावली और छन्दावली, पूर्वाचार्य गुरु कृति प्रसारी ।
रामप्रकाश पूर्वाचार्य कृति से, अध्ययन में रही रुचि हमारी ।।५।।
पूर्व गुरू स्मृति हरिराम बगेची, तीस समाधि दशा सुधारी ।
उत्थापित गुरु गद्दी गरिमा, पुनर्स्थापित विधि विचारी ।।
द्वाराचार्य श्री धाम पधरावण, गुरूजनों मरियादा सारी ।
रामप्रकाश गुरू पीढि परम्परा, अध्ययन में रही खोज हमारी ।।६।।
पूर्वाचार्य सतगुरू सहित सब, हरिराम बगेची नाम धरायो ।
तीस स्मृति स्थल जीर्णोद्धार मे, उतम आश्रम व्यवस्था को पायो ।।
मेला चार वर्षीयाँ अब तक, विजयनंगर में काम चलायो ।
रामप्रकाश भक्तों की श्रद्धा धन, आयो ज्योहि शुभ काम लगायो ।।७।।
भाषा के भाव उदाहरण पूरण, हृदय के जो उदगार हमारे ।
चर्चित लोक हितार्थ उपकृत, सन्तन के रव प्रचलित सारे ।।
लोकोक्ति अरु दन्तकथा कही, गद्य को पद्य मे धारत सारे ।
रामप्रकाश विचार लिखे वह, कविता को गुरूदेव सुधारे ।।८।।

।। ग्रंथ रचियता के जीवन की बात ।।

प्राकृतिक नियति कारण से चल, निर्गुण सें सगुण हो आये ।
भक्त जिज्ञासु के शुभ कर्मन से, वर ज्ञानी को भूमि पठाये ।।
कारण से कारज भये सुलभ, जन हित में शुभ काज कमाये ।
रामप्रकाश ज्ञानी नित मुक्तक, कर्मन ते निर्लेप कहाये ।।१।।
प्राकृतिक नियम निभावण कारण, नित्यावतार में हम चलि आये ।
वर अवस्था ज्ञानी के थे हम, सो नित्य के नियम निभाये ।।
अति सर्व त्याज्य होवत, सो हम जन हित कर्म कमाये ।
रामप्रकाश खरीद किये बहु, रोग भये तन तेज घटाये ।।२।।
ईश्वर नियम पृकृति सँसरण, पूर्व प्रारब्ध भक्तों हित आये ।
नित्य अवतार नियम के पालन, समय दिया जग हित सुभाये ।।
लेखन और वाचकता पूर्ण, प्राण रक्षा भी भूल भुलाये ।
रामप्रकाश अनिमियता कारण, देह में रोग अचानक आये ।।३।।
मस्त फकीर के जीवन मे कुछ, गाँठ नही था पास हमारे ।
आनन्द अपार पाया पद पूरण, गाँठ बिना सब ठाठ बनारे ।।
पढा लिखा कुछ कहा गया वह, जन हितार्थ मनोर्थ सारे ।
रामप्रकाश सब बात कही शुभ, ताहि में आनन्द रूप निहारे ।।४।।
जन के ताप निवारण कारण, बहुत दियो उपदेश सदाई ।
सुविधा बिना सब समय दियो नित, स्वास्थ्य चिन्तन दियो भुलाई ।।

कुछ सज्जन ने लाभ लियो भल, मूरख बहु अनजान रहाई।
रामप्रकाश आनन्द रता रह, जन हितार्थ करी भलाई।।५।।
उतम फकीर से पाठ पढ्यो यह, ठाठ रह्यो उर आनन्द छाई।
गाँठ नही पर ठाठ सभी नित, सिंह गर्जन की वेदान्त पढाई।।
गीदड़ भाग रहे नित दूर ही, सन्त भये रु सिद्धान्त न पाई।
रामप्रकाश पायो गुरू उतम, उतमराम से दियो मिलाई।।६।।
भक्तों की शुद्ध भेंट भण्डार मे, कमी नही गुरू देव सहाई।
चन्दो चिठो नही लाग पँचायत, जात समाज की धाक न भाई।।
ईश कृपा गुरूदेव दयावृत, अक्षय भण्डार कमी नही काई।
रामप्रकाश रहे रामशरण में, गुरू कृपा वर रहे सदाई।।७।।
स्नान रु ध्यान बिना सब कारज, नियम बिना सब किये सुचारी।
सतसँग जागरण नीन्द बिना सब, भागम भाग लगी रही भारी।।
लेखन बोलन समय दियो बहु, स्वास्थ्य ध्यान रख्यो नही जारी।
रामप्रकाश प्राकृतिक दण्ड है, प्रारब्ध शिर बोझ विचारी।।८।।
भक्तों की सात्विक भावना भेंट से, शुद्ध कमाई से जो कुछ आया।
आश्रम धर्म सम्प्रदाय के कारज, धर्म ग्रन्थ प्रकाशन लाया।।
राजस भेंट भोजन भण्डार में, तमोगुणी भेट से रोग भोगाया।
रामप्रकाश सन्त निर्लेप है, भक्तों के भाव को ठीक लगाया।।९।।
जनता जनार्दन प्रसन्नता कारण, जागत रहे रात भर सारी।
चार चार घण्टे बोलत रहे नित, प्रश्नोत्तर मे समय गुजारी।।
साहित्य अर्थ शब्द के शोधन, जन शिक्षार्थ बोध विचारी।
रामप्रकाश सन्त के कारज, किये भये अब सँयम सँचारी।।१०।।
उतम प्रारब्ध गुरू कृपावश, जीवन समर्पित हरि के भाये।
भौतिक वाचन लेखन शौद्ध के, सम्प्रदाय कार्य यथावाधि थाये।।
आयु के शेष में कुछ भी कारण, प्राकृतिक पात जो तन का आये।
रामप्रकाश हरि की शरण है, निश्चय आतम दृढ विचार सजाये।।११।।

।। उपसंहार ।।

हर विषय गत चर्चित चर्चा, शास्त्र ज्ञान वो नही सिखलाये है।
महा मानव रु ऋषि सन्तो ने, बहु प्रमाणित ग्रन्थ रचाये है।।
ब्रह्मवेता है ब्रह्म समान ही, ताकी वाणी ही वेद लिखाये है।
रामप्रकाश की भाषा स्वयँ ही, प्रमाणीकरण बताये है।।१।।
भक्ति रु नीति रीति गुरु गम, शास्त्र सन्त की वाणी बखाणी।
अनुभव साधन वेद विधिवत, वेदान्त सिद्धान्त विधैय कहाणी।।
सतगूरू कृपाघन सन्त महिमा वर, ज्ञान रु ध्यान विचार परमाणी।
रामप्रकाश जो मानव कल्याणक, कथन किये वह लखे सुजाणी।।२।।
भेद उपभेद भक्ति वैराग्य को, साधन ज्ञान सहित बखान्यो।
लोक शिक्षार्थ नीति रीति कहि, परम पुरुषार्थ भेद लखान्यो।।
ग्रन्थ यथार्थ साहित्यिक कवि वर, सरल वेद विधि खोल के जान्यो।

रामप्रकाश छन्दावली शास्त्र, परम परमाणित रूपक आन्यो ।।३।।
पारसमणी कल्पवृक्ष चिंतामणि, शब्द प्रमाण बतावत भाई ।
ग्रन्थ अनेक पठन संग्रह कर, समय कम सब दुर्लभ थाई ।।
यही छन्दावली एक अनमोल है, सर्व विषय फल सुलभ दाई ।
रामप्रकाश ले भ्रमर वृति रस, ग्रन्थन अनेक मति पुष्पन पाई ।।४।।
कवि रु कविता छन्द प्रबन्धन, गण अगण गुण एक हूं नांही ।
ज्ञान नहि गुणवान नहीं कछु, वेद वेदान्त को जानत काही ।।
गुरुकृपा निज मन के कारण, परहित होय के बोध बढाही ।
रामप्रकाश की रचित छन्दावली, सर्व ग्रन्थन को सार लखाही ।।५।।

।। दोहा छन्द ।।

ब्रह्मवेता उतमराम जी, सतगूरू अति दयाल ।
रामप्रकाश शुभ भाग्य से, पाये परम कृपाल ।।१।।

।। सवैया छन्द ।।

तन की लिखते पार न आवत, मन की लिखत शब्द थक पावे ।
साच लिखूँ तो अपने रूठ ते, झूठ जरा भी कहा नही जावे ।।
अकथ कथूँ कोई समझत नाही, अनुभव की गति मति थकावे ।
रामप्रकाश सन्त मस्त रहे नित, आपनो आपने माहि समावे ।।६।।
उतमराम गुरू वर उतम, उतम ही उपदेश बतायो ।
सनातन धर्म अनादि श्री वैष्णव, सत्य अध्यात्म पाठ पढायो ।।
ज्योतिष छँन्द वेदान्त इत्यादिक, शास्त्र अध्ययन अध्यापन पायो ।
रामप्रकाश भाग्य वर अच्युत, बालयोगी हो शरण में आयो ।।७।।

।। दोहा छन्द ।।

दो हजार पिचहतर में, वसन्त पँचम रवि वास ।
रामप्रकाश कृत छन्द यह, सँकलन जेठूदास ।।२।।
रामप्रकाश छन्दावली, वय कृत उन्नासी साल ।
रचना अति मन भावनी, ईश्वर करे प्रतिपाल ।।३।।
पढे सुने जन सीख ले, पाठ करे युग याम ।
ताप हरे मुक्ति करे, रक्षक सतगूरू श्याम ।।४।।

।। तृतीय खण्ड के अन्तिम छन्द ।।

मदिरा मोद सुभद्रक चकोर ही, मतगयन्द सुमुखि गाती ।
किरीट दुर्मिला मुक्त गँगाधर, हरा अरसात लवँग की माती ।।
सुख सुन्दरी अरविन्द है यह, भेद उपभेद सवैया थाती ।
पिंगल कविता रामप्रकाश में, कथित छन्दावली खोजत जाती ।।१।।
सवैया छन्द की अष्ठ जाति है, इन्द्रविजय रु इन्दवादि मानी ।
नीति बोध विवेक वैराग्यादिक, साधन योग वेदान्त बखानी ।।
जीवन अनुभव देखे सुने बहु, शास्त्र ज्ञान अनूप ही जानी ।
मिश्रित अँग अनेक विविधता, रामप्रकाश छन्दावली आनी ।।२।।

तृतीय भाग के अध्यात्म ज्ञान में, विशिष्ठाद्वैत वेदान्त बखान्यो।
सतगुरू ज्ञान रु बुद्धि अनुसार ही, शास्त्र मत अनुभव उर आन्यो।।
सात सौ बयालीस सवैया छन्द हि, वेद वेदान्त अध्यात्म जान्यो।
रामप्रकाश छन्दावली ग्रन्थ में, ज्ञानी जन के मन मोद को मान्यो।।३।।
दैनिक नूतन छन्द बनावत, मोबाईल ते नित प्रेषि पायो।
संकलन विषय गत शोधन कर, जिसने ग्रन्थ को रूप बनायो।।
शिष्य जेठूदास भक्त ने, प्रेरक प्रसंग सुहृद सुहायो।
राघव प्रसाद रहे वर पूरण, रामप्रकाश की आशिष छायो।।४।।
दैनिक क्रम में लेखन स्वभाव सें, चलत दूरभाष के यन्त्र पठायो।
टंकण संकलन कार्य कियो जिन, दूरभाषक यन्त्र सरसायो।।
ऐसे भक्त है जेठूदास जो, बोध वेदान्त को हित चित लायो।
रामप्रकाश की आशिष पूरित, राघव प्रसाद से भाग्य सवायो।।५।।
सँवत युग नभ धातु वेदाँग ही, मकर मास शिव वार बखान्यो।
नवमी उतम शुक्ल तिथि पूरण, जेठूदास सँकलित आन्यो।।
दूरभाष यन्त्र ते टँकण, वृद्धावस्था मन भाव ते जान्यो।
समय उपयोग में रामप्रकाश ने, छन्दावली नित पाठ पठान्यो।।६।।

-----ॐ शान्ति ॐ शान्ति ॐ शान्ति-----

तीन ताप की शान्ति हो, त्रिकाल रहे वह शान्त।
तीन लोक मे शान्ति हो, मिटे भ्रम तम भ्रान्त।।५।।

इति श्री रामप्रकाश छन्दावली अन्तर्गत “वेदान्त सिद्धान्त का विनोद”
नामक तृतीय खंड समाप्त

।।इति श्री रामप्रकाश छन्दावली समाप्त।।

।। ग्रंथ रचियता का परिचय ।।

उतमराम श्री सतगुरू, रामप्रकाश तन नाम ।
राघवप्रसाद उपनाम से, कागा जोधपुर धाम ।।१।।

सवैया छन्द

जीवन परिचय जानना है तो, कार्यक्रम जान लो काज हमारे ।
साहित्यिक अनुभव वही है साधन, सतगुरू सानिध्य आयु सँवारे ।।
गुरु साहित्य रु निजी कृत ग्रन्थ सु, टीका काव्य रु भाषा कृत सारे ।
रामप्रकाश रचनात्मक कारज, सामाजिक बोद्धिक ज्ञान विचारे ।।२।।
सिन्ध प्रदेश विभाजित भारत, मीरपुर खास शहर थर जानो ।
अग्रावत कुल वैष्णव परिजन, मात पिता गुरू भक्त बखानो ।।
सतगुरू उतमराम को पावत, विद्वत विरक्त जीवन आनो ।
देह को भाषत रामप्रकाश है, राघवप्रसाद को पाय अघानो ।।३।।

----जन्म ----

श्री वैष्णव कुल अग्रावत, जन्मभूमि-मीरपुरखास (अविभाजित भारत) में विक्रम सम्वत १९८७ (ईस्वी सन १९३०)

----गुरूदीक्षा----

मवक्रम सम्वत १९९२ मार्गशीर्ग शुक्लपक्ष को श्री श्री १०८ श्री स्वामी उतमराम जी महाराज" वैरागी" संस्थापक: उतम आश्रम (सिन्ध मीरपुरखास) एवं जोधपुर

----भेषदीक्षा----

श्री वैष्णव रामानन्दीय अग्रद्वारस्थ वैरागी गुरू परम्परा में विक्रम सम्वत १९९९ में विरक्त साधु (बाल वैरागी) शाखोच्चार 'अच्युत' गौत्र ।

----आचार्य गद्दी पदासीन----

जोधपुर-विक्रम सम्वत २०३४(ईस्वी सन १९७७)

----कार्यकाल----

सन १९५५ से अद्यावधि पर्यंत

श्री रामप्रकाश दोहा संग्रह

श्री रामप्रकाश दोहा संग्रह

मात पिता गुरू नमन कर, सब की लो आशीष ।
आयु ऐश्वर्य बल बढे, यश देवे जगदीश ।।१।।
गुरु गम ज्ञान रु ध्यान धर, कर्म करो शुभ आप ।
व्यवहार लोक परलोक के, नाश होवे सब पाप ।।२।।
ओम शब्द को धनुष कर, प्रणव त्वँचा को खींच ।
जीवात्म शर लक्ष्य करो, ब्रह्म तन्मय के बीच ।।३।।
लिखी लिखी सब ही पढे, अलिख पढे ना कोय ।
अलिख लिखता जो पढे, सतगुरू कहिए सोय ।।४।।
अलिख लखावे जो लिखे, घट में करे उजास ।
भ्रम मिटावे युक्ति दे, सतगुरू रामप्रकाश ।।५।।
तन मन निर्मल सुखद हो, राष्ट्र भक्ति हरि नेह ।
उज्वल जीवन प्रेम का, मँगल कामना एह ।।६।।
रामप्रकाश या जगत में, सौदे बहुत सँसार ।
सुख को बेचत ना दिखे, दु:ख खरीदन हार ।।७।।
रामप्रकाश या जगत में, सौदे बहुत सँसार ।
दु:ख खरीदत ना दिखे, सुख को बेचन हार ।।८।।
सौदे देखे बहुत से, विविध भाति व्यवहार ।
दु:ख लेत सुख देत ना, रामप्रकाश सँसार ।।९।।
सतगुरु मति जानी नहीं, भटक रहा अनजान ।
संतन की मति ना लखी, सो मूर्ख नादान ।।१०।।
कोटिक यज्ञ तीर्थ करे, चार धाम फिर आय ।
वेद पुराण उपनिषद पढ़ें, गुरू बिन भ्रम न जाय ।।११।।
मूर्ख के हृदय घने, पल में मते हजार ।
संशय माहि डूबता, रामप्रकाश अविचार ।।१२।।
संतन के उपदेश से, तर गये जीव अनेक ।
आगे तरेंगे अब तरे, रामप्रकाश विवेक ।।१३।।
जग में जो उपदेश है, सो सब गुरू को जान ।
रामप्रकाश सुगरा लखे, संत मत ले पहिचान ।।१४।।
नाम जाति कुल गौत्र षट्, वर्ण आश्रम भ्रम जान ।
रामप्रकाश सन्त है वही, त्यागे यह अभिमान ।।१५।।

भगवें में मद ले चले, षट् भ्रम मोह महान ।
रामप्रकाश दम्भी महा, ठगे जगत भगवान ।।१६।।
जग में जो उपदेश है, सो सब गुरू को जान ।
रामप्रकाश सुगरा लखे, संत मत ले पहिचान ।।१७।।
सर्व सुलभ सब ग्रंथ मत, सुलभ ज्ञानी वेदान्त ।
पालन हम करते नहीं, चित चिंता मति भ्रान्त ।।१८।।
कविता राघव की सदा, देती यह सन्देश ।
नित पावनता से रहो, भौतिक मिटे कलेश ।।१९।।
समय विकट स्थिति बनी, सँयम कर बैठ ।
हरि भजन शुभ चिन्तन कर, मत दिखावो ऐंठ ।।२०।।
समय देख कर चालणो, यह नीति दरसात ।
धैर्य धरो सँतोष लो, सब होवे कुशलात ।।२१।।
रात जाय सूरज उदय, दुःख जावे सुख होय ।
वृक्ष फले कुछ देर से, कर्म तुरन्त दरसाय ।।२२।।
जल थल नभ के रास्ते, बन्द पड़े सब ठाठ ।
देश विदेश प्रदेश में, मच रही बारह बाट ।।२३।।
वैश्विक महामारी मची, बन्द रहो घर माँहि ।
हरि हर सतगुरू इष्ट ही, जप तप करे सहाहि ।।२४।।
वैश्विक अशान्ति दौर में, घर मे रहिये मीत ।
गरम जल लो काम में, रहो निरोगी जीत ।।२५।।
चना गूगरी खाय के, गरम जल पीओ मीत ।
तप करो घर मे रहो, समय जायगा बीत ।।२६।।
सर्व रूप परमात्मा, घट घट आनन्द होय ।
कविता राघव की करो, मँगल कामना जोय ।।२७।।
तन मन इन्द्रिय वश करो, दोष चँचलता त्याग ।
ध्येय ध्याता हो ध्यान मय, तन्मय तत्पर लाग ।।२८।।
सन्त ब्राह्मण बेचन लगे, कथा कीर्तन पाठ ।
त्याग सिखावे जगत को, आप सजावे ठाठ ।।२९।।
धर्म बिकाऊ हो रहा, बेचत धर्मी लोग ।
नाम सनातन रह गया, यह चिन्तन के योग ।।३०।।
आसन प्राणायाम से, स्वस्थ रहे शरीर ।
रामप्रकाश हरि भजन से, नाश होवे सब पीर ।।३१।।
परधन की चर्चा करें, मन में करें गुमान ।
महामूर्ख ताको कहै, रामप्रकाश विद्वान ।।३२।।
गुरू के वसन श्वेत है, शिष्य काषाय महान ।
देवे मान्यता ताहि को, नीति बिना विद्वान ।।३३।।
गुरू परम्परा भिन्न से, मान्यता पद की धार ।

गोद जाय पर बैठते, करता गर्व गंवार ।।३४।।
मन वाणी ना लख सके, यह अनुभव गुरू सेन ।
बुद्धि बोध ना कर सके, वचन विलासी बेन ।।३५।।
कर्म धर्म सब सतगुरु, नियम मर्म गुरु प्राण ।
महान जहान है सतगूरू, समझे शिष्य सुजाण ।।३६।।
सत्संग चर्चा ज्ञान की, करना सहज में होय ।
जीवन में हो धारणा, दुर्लभ जानो दोय ।।३७।।
बिना सुगंध सोभित नहीं, सुंदर टेसू फूल ।
धर्म बिना मानव नहीं, रामप्रकाश अनुकूल ।।३८।।
मनसा वाचा कर्मणा, मन श्वासा का शुद्ध होय ।
रामप्रकाश निर्भय रहो, गंज सके ना कोय ।।३९।।
धर्म अंग धारण करो, दशो दोष छिटकाय ।
रामप्रकाश हरि नाम जप, पाप कर्म कट जाय ।।४०।।
आन भजे इष्ठ को तजें, नहीं पावे सुखरास ।
व्यभिचारी भक्ति यही, लक्षण रामप्रकाश ।।४१।।
मनसा वाचा कर्मणा, मन श्वासा शुद्ध होय ।
रामप्रकाश निर्भय रहो, गंज सके ना कोय ।।४२।।
धर्म अंग धारण करो, दशो दोष छिटकाय ।
रामप्रकाश हरि नाम जप, पाप कर्म कट जाय ।।४३।।
राम नाम बिनु बावरे, वृथा आयु खोय ।
रामप्रकाश परलोक में, आदर करे न कोय ।।४४।।
दूर देश में बरसता, कैसा करें सनेह ।
रामप्रकाश तब लाभ है, प्रत्यक्ष बरसे मेह ।।४५।।
पर धन की चर्चा किए, हाथ न मिले छदाम ।
रामप्रकाश करणी बिना, कैसे मिले आराम ।।४६।।
प्रदेशों में बरसते, आंगण भीगे नाहि ।
रामप्रकाश घर बरसते, निपजे खेत सदाहि ।।४७।।
गुरू कृपा से पलटते, प्रारब्ध कर्म विधान ।
आज्ञावर्ती हो शिष्य तब, द्रवहि कृपा निधान ।।४८।।
करुणा निधान श्री सद्गुरु, कृपा करी श्रीमान ।
रामप्रकाश गुरु शब्द दे, तुरन्त कियो कल्यान ।।४९।।
मछली जल से मिलन को, हठ करे जो आय ।
रामप्रकाश समझावते, आत्म घट के मांय ।।५०।।
तन धन से सेवा किये, मन निर्मल हो जाय ।
रामप्रकाश सहजे बने, मानस सुमिरन ध्याय ।।५१।।
जन्म बधाई में बँटे, खूब मिठाई दौर ।
श्राद्धपक्ष में खीर को, खाने वाले भी और ।।५२।।
आयु घटे तृष्णा बढ़े, रामप्रकाश यह जान ।

नहीं बढे ना घट सके, विधि प्रारब्ध परमान ।।५३।।
पढ़ो लिखो बोलो सदा, नमन करो सौ बार ।
मन उज्जवल बिन व्यर्थ सब, रामप्रकाश विचार ।।५४।।
पूजो देवी देवता, भोपा मंदिर मसीत ।
प्रारब्ध भोग मिटते नहीं, अपने कर्म परतीत ।।५५।।
अन्तःकरण त्रय दोष में, अनन्त जन्म के भार ।
रामप्रकाश हरि सुमरते, निश्चय होय उद्धार ।।५६।।
कितनी पढ़ो किताबें सब, सुन लो कथा हजार ।
जो घट में नहीं ऊतरे, तब वह सभी असार ।।५७।।
कम बोलो ज्यादा सुनो, मन वच पालनहार ।
रामप्रकाश फल पावता, शुद्ध करो व्यवहार ।।५८।।
पूजो देवी देवता, भोपा मंदिर मसीत ।
प्रारब्ध भोग मिटते नहीं, अपने कर्म परतीत ।।५९।।
सतगुरु बिन सत्संग ना, नहीं हो शब्द पिछाण ।
शब्द बिना नहीं ज्ञान हो, ता बिन नहीं कल्याण ।।६०।।
सत्संग कर हरि भजन से, लीजे जनम सुधार ।
सेवा सतगुरू सन्त की, होवे ज्ञान निस्तार ।।६१।।
सतसँगतं विद्वान की, करिये नित ही जाय ।
ज्ञान ध्यान मति उज्वल हो, जनम सफलता पाय ।।६२।।
सतगुरु बिन सत्संग ना, नहीं हो शब्द पिछाण ।
शब्द बिना नहीं ज्ञान हो, ता बिन नहीं कल्याण ।।६३।।
सत्संग कर हरि भजन से, लीजे जनम सुधार ।
सेवा सतगुरू सन्त की, होवे ज्ञान निस्तार ।।६४।।
मन की होवे मौन जो, वह समय कुछ और ।
वाणी पांचों संयम हो, ब्रह्मानन्द बिन सौर ।।६५।।
सुमिरन से आयु बढे, घटे रोग अभिचार ।
जीवन सफल गुरू भक्ति से, रामप्रकाश गुरू सार ।।६६।।
शून्य मण्डल गुञ्जार की, वाणी उलट फल देत ।
सुमिरण अपने आप का, रामप्रकाश सुख हेत ।।६७।।
जग चर्चा आयु घटे, बढे रोग अभिचार ।
योग किये आयु बढे, रामप्रकाश विचार ।।६८।।
भोग रोग जग जाल में, घटे आयु गुण ज्ञान ।
रामप्रकाश हरि भजन ते, होवत सुख कल्यान ।।६९।।
जगत जाल प्रपंच सो, महा दुःखन को मूल ।
नाम जपे सुख होत है, रामप्रकाश मत भूल ।।७०।।
रामप्रकाश रहे राम में, आठ पहर मस्तान ।
रामरक्षा की रेख मे, भङक गये सुर आन ।।७१।।
सौ संतन को एक मत, लक्ष्य एक निरवाण ।

रामप्रकाश निश्चय सदा, ब्रह्मात्म परवाण ।।७२।।
नाम जाति कुल गौत्र षट्, वर्ण आश्रम भ्रम जान ।
रामप्रकाश सन्त है वही, त्यागे यह अभिमान ।।७३।।
भगवें में मद ले चले, षट् भ्रम मोह महान ।
रामप्रकाश दम्भी महा, ठगे जगत भगवान ।।७४।।
जड़ चेतन माया सभी, गोकुल गांव शरीर ।
कुटस्थ है चिदाभास में, व्यापक साक्षी अमीर ।।७५।।
द्विज अग्नि यम सिन्धु गृह, उदर तृष्णा रु राज ।
अष्ठ भरो रीते रहे, राप्रकाश महाराज ।।७६।।
विवाद तजें सब लाभ है, तन लाभ तज स्वाद ।
व्यर्थ चिंता के तजें, मिटता सभी विशाद ।।७७।।
शास्त्र में संशय घने, वेद माहि बहु भेद ।
गुरू मुख से अध्ययन किये, चार दोष हने खेद ।।७८।।
ब्रह्मवेता सम वक्ता कहीँ, ब्रह्मज्ञान सम ज्ञान ।
गुरुमुख से अध्ययन किए, तभी मीटे अज्ञान ।।७९।।
आंख सभी कुछ देखती, स्वयं को देखे नाहि ।
कचरा रत्ती भर जो गिरे, तब और न पहिं जाहि ।।८०।।
वैद्य हकीम सब का करें, औषधि इलाज उपाय ।
रोगी होए जब आप ही, तब औरन पे जाय ।।८१।।
जहर सांप के दांत में, बिच्छू के डंक माय ।
मधुमक्खी के शीश में, मानव के मन आय ।।८२।।
विनय विवेक युत जीवनी, गुण सागर भी होय ।
सुधरे लोक परलोक दो, रोक सके ना कोय ।।८३।।
प्रतिष्ठा प्रतिभा देख के, निन्दक ईर्ष्यालू होय ।
पुरुषार्थ समता नहीं, रामप्रकाश जन जोय ।।८४।।
तन मन वाणी शुद्ध करो, दोष दशो परिहार ।
धर्म अँग दश उर धरो, अध्यात्म ज्ञान विचार ।।८५।।
नशा व्यशन सब त्याग के, राम भजो चित्थ लाय ।
भवसागर का भय मिटे, जीवन सुखी हो जाय ।।८६।।
समझ सके नही आश में, समय बड़ा बलवान ।
धीरज रख जीवित रहो, आश पूरे भगवान ।।८७।।
चिन्ता नही चिन्तन करो, हरि गुरू नित साथ ।
घर मे पथ्य व्यायाम कर, जीवन हरि के हाथ ।।८८।।
व्यर्थ बाहर घूमो नही, यह महाभारत का युद्ध ।
परिजन हित सँयम रखो, घर मे रहिये शुद्ध ।।८९।।
कविता राघव की यही, सब से रखिये प्रेम ।
श्रद्धा सेवा साधना, रामप्रकाश के नेम ।।९०।।

राम रखे जिहि हाल मे, समय समय की बात।
उस माँही राजी रहो, समय बीते प्रभात ।।९१।।
कोरोना यह काल है, आयो चीन से आप।
मुलक रुलाया मोकला, पसरयो भू ताप ।।९२।।
समय देख कर चालनो, धर्म आपनो जाण।
इष्ट बिना है भृष्ट सब, मेटो खैंचा ताण ।।९३।।
हरि हर सतगुरू इष्ट को, हरदम राखो याद।
मत मतान्तर फँसनो नही, मेटो वाद विवाद ।।९४।।
रहनो है मजबूत, भक्ति ज्ञान वैराग में।
सन्त है सोई सपूत, शुखदेवा सँसार में ।।९५।।
शुभ चिन्तन का समय है, घर बैठे परिवार।
व्यवहारिक शिक्षा दीजिए, भावी पीढि अनुसार ।।९६।।
समता भाव हृदय धरो, सँगठन प्रेम बढाय।
सँघर्ष जीवन लक्ष्य है, कायर को घर नाय ।।९७।।
दूध दही घी मक्खन में, छाछ एक परिवार।
भाव स्वाद गुण भिन्नता, रामप्रकाश विचार ।।९८।।
द्विज अग्नि यम सिन्धु गृह, उदर तृष्णा रु राज।
अष्ठ भरो रीते रहे, रामप्रकाश महाराज ।।९९।।
स्वाद तजे तन लाभ हो, विवाद तजें सब लाभ।
व्यर्थ चिंता के तजें, मिटता सभी विशाद ।।१००।।
विवाद तजें सब लाभ है, तन लाभ तज स्वाद।
व्यर्थ चिंता के तजें, मिटता सभी विशाद ।।१०१।।
मन की होवे मौन जो, वह समय कुछ और।
वाणी पांचों संयम हो, ब्रह्मानन्द बिन सौर ।।१०२।।
शास्त्र में संशय घने, वेद माहि बहु भेद।
गुरू मुख से अध्ययन किये, चार दोष हने खेद ।।१०३।।
ब्रह्मवेता सम वक्ता कहीँ, ब्रह्म ज्ञान सम ज्ञान।
गुरुमुख से अध्ययन किए, तभी मीटे अज्ञान ।।१०४।।
करणी करते ना डरे, करके क्यों पछताय।
बोवे बीज बबूल का, आम कहां से खाय ।।१०५।।
कर पुरुषार्थ कर्म की, हरदम रह हुशियार।
पाप ताप सब ही कटे, मानव जन्म सुधार ।।१०६।।
प्रपंच सृष्टि ओम से, सूक्ष्म सोहम् से होय।
रमणीय रमता राम सो, रामप्रकाश रट जोय ।।१०७।।
घट मठ जल महाकाश में, रमण करें सत राम।
सुमरे शेष महेश हरि, रामप्रकाश सोई नाम ।।१०८।।

सन्त सरल मन मेल हर, जल तरल तन धोय।
क्रोध गरल भव भय करे, रामप्रकाश कहै जोय ।।१०९।।
दान दें पछुतावते, कुपात्र श्रद्धा बिन दान।
दान महत्व यह नष्ट है, नीति करत बखान ।।११०।।
दाता ग्रहिता उज्वल मति, देश वस्तु वर काल।
छः अंग यह दान के, नीति यही विशाल ।।१११।।
याचक पृछक अति घना, घर घर वन बाजार।
दाता यथार्थ उतर दे, ऐसे दुर्लभ बाजार ।।११२।।
दाता भुक्ता प्रसन्न चित, अनुमोदन प्रिय वाच।
दान सुपात्र में दिये, दान भूषण यह पांच ।।११३।।
सर्व प्रसन्न जन वशीकरण, शत्रु मित्रता पाय।
संकट मिटे भाईपन बढ़े, दुर्व्यशन व्यय हट जाय ।।११४।।
सुपात्र अवहेलना, कुपात्र को दिये दान।
दुरुपयोगी धन दशा, धनी हो नर्क निदान ।।११५।।
त्रिस्कार विलम्ब विमुख, निष्ठुर वाणी पछुताव।
दान के दूषण पांच यह, दूर करो दुरभाव ।।११६।।
याचक देवत सीख यह, देते रहो नित दान।
नहीं दिये मो सम बनो, शिक्षा ले मतिमान ।।११७।।
सत्य मृदु रव धर्म हो, बढ़े धर्म दया दान।
स्थिति क्षमा के संग में, क्रोध विनाशक मान ।।११८।।
धर्मोत्पति सत्य मृदु रव, बढ़े धर्म दया दान।
स्थिति क्षमा के संग में, क्रोध विनाशक मान ।।११९।।
रव वाणी=
रामप्रकाश मरणा भला, मर जाने जो कोय।
एक बार जो मर जीवे, फेर मरण नही होय ।।१२०।।
वह मरना किस काम का, जो बार बार में होय।
रामप्रकाश एकबार में, मर के जीए कोय ।।१२१।।
भोजन चिन्तन क्यों करे, चिन्तन करें सौ बार।
चिन्त न रामप्रकाश को, चिन्ते सिरजणहार ।।१२२।।
फाका करे जो फिकर का, फिकर हरि का जाप।
रामप्रकाश निश्चिन्त रहो, फिकर करे हरि आप ।।१२३।।
श्रद्धा भाव के रँगं लगे, हर घर प्रेम गुलाल।
सँगंठन होय समाज मे, रहे न कोई मलाल ।।१२४।।
आनन्द का त्योहार है, भूलो हो ली हो कोई भूल।
मन के द्वन्द होली जले, रहे न सँशय शूल ।।१२५।।
हृदय धर्म मानव वही, शुद्ध रहे व्यवहार।
धर्म बिना मानव पशु, नीति कहै विचार ।।१२६।।
तन मन वाणी शुद्ध करो, दोष दशो परिहार ।

धर्म अँग दश उर धरो, अध्यात्म ज्ञान विचार ।।१२७।।
धोर्य क्षमा दम अस्तैय, शौच शम मति मान ।
विद्या सत्य अक्रोध यह, धर्म अँग दश ज्ञान ।।१२८।।
सतसँगतं विद्वान की, करिये नित ही जाय ।
ज्ञान ध्यान मति उज्वल हो, जनम सफलता पाय ।।१२९।।
मात पिता गुरू नमन कर, सब की लो आशीष ।
आयु ऐश्वर्य बल बढे, यश देवे जगदीश ।।१३०।।
सुख दुःख सब होत है, अपने कर्म अनुसार ।
पुरुषार्थ करते रहो, भविष्य करो सुधार ।।१३१।।
गूरू जन को नित नमन कर, सब की लो आशीष ।
आयु ऐश्वर्य बल बढे, यश देवे जगदीश ।।१३२।।
जीवन मे उद्यम करो, चार पुरुषार्थ कोय ।
कायर को नही जीवणो, परिश्रम से फल होय ।।१३३।।
हरिगुरू से नित प्रार्थना, यह दीजे वरदान ।
भक्ति ज्ञान युत विश्व का, रामप्रकाश कल्यान ।।१३४।।
कविता राघव की सदा, देती यह सन्देश ।
नित पावनता से रहो, भौतिक मिटे कलेश ।।१३५।।
चन्दन जैसा सम्बन्ध हो, काटे सुगन्ध न जाय ।
रामप्रकाश स्वर्ण बनो, अपने मूल्य बिकाय ।।१३६।।
दिवा शयन निशि जागना, व्यर्थ वार्ता बोल ।
बाधक स्वास्थ्य सुख में, रामप्रकाश कहै तोल ।।१३७।।
कनक कामनी त्यागना, सहज ज्ञान रु ध्यान ।
पोहन वृति ईर्षा, कठिन त्याग अभिमान ।।१३८।।
पावन तन होता नहीं, नहावो तीर्थ में वास ।
पावन कोई करता नही, मन को रामप्रकाश ।।१३९।।
देव पत्थर में मानते, मान्यता सब की जान ।
मानव में मानव नहीं, देखत है मूर्ख निदान ।।१४०।।
शुभ अशुभ के काल को, नहीं प्रयोजन कोय ।
राम स्वयं मंगल महा, अमंगल नहीं होय ।।१४१।।
शुभाशुभ गण अगण, नहीं त्रिगुण त्रयदोष ।
मंगल मूल स्वयं राम है, रामप्रकाश निर्दोष ।।१४२।।
शुभ अशुभ के काल को, नहीं प्रयोजन कोय ।
राम स्वयं मंगल महा, अमंगल नहीं होय ।।१४३।।
राम काज में सर्व शुभ, हरण सकल त्रय दोष ।
रामप्रकाश मंगल स्वयं, हरि हित होय निर्दोष ।।१४४।।
करता भरता आप है, आप ही मंगल रूप ।

रामप्रकाश उतम सदा, मंगल मोद अनूप ।।१४५।।
कोकिल बयनी पतिव्रता, ज्ञानी होय कुरूप ।
तपस्वी क्षमा भूषण ये, रामप्रकाश अनूप ।।१४६।।
गुण प्रियता वासना, मोह जाल से प्रेम ।
रामप्रकाश भव पायके, रहे न कुशल क्षेम ।।१४७।।
गण अगण निर्गुण सगुण, जो कोई जाणत भेद ।
रामप्रकाश एक ही लखे, त्रिगुण जपे अभेद ।।१४८।।
शास्त्र मित्र चिन्तन पथ, जो होवे शुद्ध ज्ञान ।
रामप्रकाश डूबे नही, जग भव के अज्ञान ।।१४९।।
अधिक अँधेरो तब करे, साथ होवे रवि चन्द ।
ज्ञानी अज्ञानी एक मठ, रामप्रकाश वहाँ द्वन्द ।।१५०।।
दोय राजा इक ठोर हो, दोय सिंह इक ठोर ।
रामप्रकाश तहाँ द्वन्द है, निश्चय माचे शोर ।।१५१।।
चन्द्र सूर्य हो सामने, मावस होत अन्धेर ।
दुराजा के राज में, रामप्रकाश बटेर ।।१५२।।
सतसंग रूपी हाट में, हीरा पड़्या हजार ।
पारख बिन कीमत नही, मन्द पड़्या बाजार ।।१५३।।
सरवर सूना हंस बिन, हस्ती सूना बिन दन्त ।
चन्द्र बिना ज्यों मन्द निशि, ज्ञान बिन सूना सन्त ।।१५४।।
मेंढक तराजू तोलिये, अध कचरे विद्वान ।
काण तराजू ना मिटे, रामप्रकाश कहै आन ।।१५५।।
एक म्यान में दो असि, देखी सुनी न कान ।
मन चिन्तित सुत वित को, मुख कथता ब्रह्मज्ञान ।।१५६।।
काचर खटाई तुच्छ दे, सौ मण दूध बिगाड़ ।
रामप्रकाश बचते रहो, देवो काँटों की बाड़ ।।१५७।।
सज्जन की संगत भली, कपटी भलो नही एक ।
पाण्डव पाँच थे न्याय में, कौरव अन्यायी अनेक ।।१५८।।
भीड़ भली ना दुर्जन की, सज्जन भलो नित एक ।
पाण्डव पाँच थे न्याय में, कौरव अन्यायी अनेक ।।१५९।।
नभ ते पतित जल हुआ, सागर जाय समाय ।
रामप्रकाश त्यों प्रणत जन, हरि के अर्पित थाय ।।१६०।।
वाणी आचरण व्यवहार से, दुःख न काहु देत ।
रामप्रकाश हरि भजन वह, सहज स्वभाविक हेत ।।१६१।।
दे जाओ यहाँ छोड़ के, जाना खाली हाथ ।
रामप्रकाश जग नियम यह, कर्म कमाई साथ ।।१६२।।
सूर्य चन्द्र सर्व हित करे, ताते पूजा होय ।

रामप्रकाश उपकार से, मान्य करे सब कोय ।।१६३।।
चील बाज के भाव से, बिकी बाजारों जाय ।
रामप्रकाश गुण देख के, पड़ी थपेड़ा खाय ।।१६४।।
सोना पीतल हंस बक, मिश्री स्फटिक एक ।
रामप्रकाश नही जाईये, जहाँ नहीं विवेक ।।१६५।।
तृष्णा रुलावे जीव को, लज्जा बचावे पाप ।
रामप्रकाश सत्संग में, मिटे सभी संताप ।।१६६।।
सन्तोषी नृप नाश हो, बिन सन्तोष विद्वान ।
लजा युत वैश्या नशे, लज्जा हीन कुलवान ।।१६७।।
परछाई से मत डरो, अर्थ बताती और ।
आस पास में है सही, रामप्रकाश की कोर ।।१६८।।
देखते रहना सीढियाँ, नही पर्याप्त जान ।
रामप्रकाश चढना सही, यही पुरुषार्थ मान ।।१६९।।
केवल कल्पना मत करो, करो पुरुषार्थ काम ।
रामप्रकाश फल देत है, कर्म जन्मान्तर आन ।।१७०।।
आयु कर्म संपत्ति विद्या, मृत्यु सहित यह पांच ।
रामप्रकाश गर्भवास में, लिखे विधाता जांच ।।१७१।।
व्यर्थ अनाधिकृत चेष्टा, करते मूढ महान ।
रामप्रकाश नित दूर है, ज्ञानी सन्त सुजान ।।१७२।।
मन से लगी उपाधियाँ, नही करे कल्यान ।
व्यर्थ चेष्ठा जो करे, यही है मूढ अज्ञान ।।१७३।।
स्वर्ग नर्क सब है यहाँ, सत्य असत्य वर्ताव ।
रामप्रकाश की सात्विकता, सुखिया वही स्वभाव ।।१७४।।
वायु रु ईश्वर सब जगह, छाया मन्दिर विशेष ।
बैठन दर्शन का परम सुख, रामप्रकाश लख रेश ।।१७५।।
समय सृजन में लगत है, विसर्जन में कछु नाहि ।
रामप्रकाश सन्त सृजन कर, विसर्जन दुर्जन पाहि ।।१७६।।
चलते को अति दूर है, ठहरे तो हरि पास ।
चलते ही कयी युग भये, दूरी रामप्रकाश ।।१७७।।
तीर्थ मन्दिर अनन्त में, घूमा देश प्रदेश ।
रामप्रकाश गुरू शरण बिन, पाया बहुत कलेश ।।१७८।।
विभिन्न मूर्ति के वेष में, हरि गुण एक प्रवास ।
गुरू शरणे घट पा लिया, वही घर रामप्रकाश ।।१७९।।
अनब्याही विलखत रहे, ब्याही करे विहार ।
अज्ञानी भटकत रहे, ज्ञानी ब्रह्माकार ।।१८०।।
कृतघ्नी भव भटकता, भूल गया व्यवहार ।

कृतज्ञ पुण्य वृत पावता, सुखी बसे संसार ।।१८१।।
शिला तरे तालाव मे, जोधियासी के गाम ।
पत्ता डूबे पत्थर तरे, महिमा ममें हरि नाम ।।१८२।।
टिप्पणी-रामप्रकाश आश्रम जोधियासी में १२ kg की वजनी रामशिला तालाब मे तैरती है ।
उतमराम सतगुरू मिले, मिट गई भागा दोड़ ।
रामप्रकाश मन थिर किया, हरि पाया इक ठोड़ ।।१८३।।

वर्णाक्षर उपदेश दोहा

अ अहँकार मत करो, आ आलस कर दूर ।
इ इजत सब की करो, ई ईमान हृदय पूर ।।१।।
उ उम्मी नही छोड़िए, ऊ ऊर्जा धारो देह ।
ऋ ऋण नही लीजिए, जीवन का मत एह ।।२।।
ए एक ईश्वर का ध्यान धर, ऐ ऐषणा तज दूर ।
ओ झल मत नही चालिये, औ और मता तज कुर ।।३।।
क कमाल के काम कर, ख खिलाड़ी टाल ।
ग गन्दगी मत करो, घ घट के मल जाल ।।४।।
च चरित्रवान हो, छ छल कपट कर दूर ।
ज जल बचाईये, झ झगड़ा मत कर शूर ।।५।।
ट टाल मटोल मत करो, ठ ठगी सब त्याग ।
ड डरो मत काहु से, ढ ढोंगी मत लाग ।।६।।
त तँग मत कर काहु को, थ थको मत काम ।
द दान्त को साफ रख, ध धन शुभ नाम ।।७।।
न नाखून कर साफ ही, प पौधा लगवाय ।
फ फालतू सादक त्याग, ब बुद्धि वर थाय ।।८।।
भ भला कर सबन का, म महान के काम ।
य यश कमाईऐ, र राह शुध कर धाम ।।९।।
ल लालच नही कीजिए, व वन रक्षक हो जीव ।
श शम को धार के, षट् कर्म कर शीव ।।१०।।
स संयम कर साधना, ह हरदम हरि ध्यान ।
क्ष क्षय करो विकार का, त्र त्रय दोष कर हान ।।११।।
ज्ञ ज्ञानी चित को करो, वर्णाक्षर को देख ।
रामप्रकाश मन स्थिर हो, लगे रेख में मेख ।।१२।।

मानक कहानी (दोहावली)

एक समय इक सिंह को, भारी लागी भुख ।
वन वन फिरियो ढुंढतो, वनचर देख्यो रूंख ।।१ ।।
वनचर लग पहुंचा नहीं, सिंह विचारी ऐह ।
कपट सांग साधु बण्यो, फुंक फुंक पग देह ।।२।।

कपि वचन विचार

नहीं खाडो नहीं खोबचो, नहीं कांटो नहीं झार ।

फुंक फुंक पग देत हो, स्वामी कौन विचार ।।३।।

सिंह वचन विचार

मेरे दिल दया घणी, ज्युं दुध में घीव ।
फुंक फूंक पग धरत हूं, नहीं दुःख पावे जीव ।।४।।

कपि वचन विचार

हाथ जोड़ ठाडा रहा, स्वामी पुरूं तोहि आश ।
फल तरुवर का तोड़ के, लाऊँ तुम्हारे पास ।।५।।

कवि विचार

वानर कुछ समझा नहीं, सिंह किसा फल खाय ।
सन्मुख आयो धाय कर, मुख में लिया उठाया ।।६।।

सिंह वचन विचार

मुख पड़ियो वानर हंसे, मोहि अचम्भो ऐह ।
पड़िया काल की झाल में, आई हांसी तो केह ।।७।।

कपि वचन विचार

एक बार जे तुम हंसो, मम दिल प्रश्न होय ।
गुंज मांहिली वारता, कहे समझाऊँ तोय ।।८।।

वेदान्त संबधित कुछ दोहे

गुरु व्यवहारिक ज्ञान दे, सतगुरू शब्द प्रमाण ।
परम गुरू से जा मिले, रामप्रकाश सुजाण ।।१।।
लौकिक गुरू उपदेश दे, सतगुरू अलौकिक भास ।
अलौकिक ब्रह्मनिष्ठ कह, चर्चा रामप्रकाश ।।२।।
वेदान्त ग्रन्थ है दोय विधि, प्रक्रिया विषय अपार ।
सिद्धान्त दृढ़ अपरोक्ष का, वर्णन करें विचार ।।३।।
एक प्रक्रिया का ग्रन्थ है, विविध जीव विधि ईश ।
समष्टि व्यष्टि सांख्य संख्या, समझे ज्ञान मनीष ।।४।।
एक ग्रन्थ सिद्धान्त का, ब्रह्मनिष्ठा निरधार ।
जीव जगत उपाधि ते, ईश रु कुटस्थ विकार ।।५।।
विचार चंद्रोदय पंचदशी, विचार सागर प्रमाण ।
यह प्रक्रिया ग्रंथ है, रामप्रकाश सत जाण ।।६।।
योग वशिष्ठ सिद्धान्त का, ग्रन्थ वेदान्त का जाण ।
अध्यात्म दर्शन कह्यो, युगल सु मत बखाण ।।७।।
ज्ञान सामान्य विशेष के, रज्जु में सर्प आभास ।
ज्ञात अज्ञात के कारणे, भ्रम है रामप्रकाश ।।८।।

पूर्व ज्ञान संस्कार से, रस्सी होय अधिष्ठान ।
मन्द प्रकाश रज्जु सर्प हो, रामप्रकाश हो भान ।।९।।
जन्म अनन्त संस्कार से, मन्द ज्ञान अज्ञात ।
अधिष्ठान चित में लखे, रामप्रकाश जग जात ।।१०।।
रस्सी मोटाई अटपटी, होय सर्प आकार ।
रामप्रकाश जागे तभी, मन्द प्रकाश संस्कार ।।११।।
ब्रह्म ब्रह्म सब ही कहे, ब्रह्म न चीन्हे कोय ।
रामप्रकाश ब्रह्म को लखे, कहन सुनन नहीं होय ।।१२।।
मै कहूं तो मैँ नहीं, तूं कहे तो नाहि ।
मैं तूं दोनों एक है, रामप्रकाश दरसाहि ।।१३।।
रूई धागा वस्त्र में, व्यापक ब्रह्म समान ।
त्यों तादात्म्य जगत में, रामप्रकाश ब्रह्मज्ञान ।।१४।।
अधिष्ठान के विवृत में, अविद्या का परिणाम ।
रज्जु ब्रह्म में नाग जग, रामप्रकाश भ्रम काम ।।१५।।

सत्संग की परिभाषा

गुरू कहै मुमुक्षु सुने, तीजा चहिये नाहि ।
कहना सुनना समझना, सत्संग कहिये ताहि ।।१६।।

सत्संग के प्रकार

सन्त प्रसंग चेत सदा, सत्संग ज्ञान आधार ।
जड़ संग सदग्रन्थ सब, सत्संग दोय प्रकार ।।१७।।

तीन अवस्था प्रस्तार बारह स्वरूप

जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति, यह वर्तित अनुरूप ।
मूल अवस्था तीन को, जानत सब स्र्वरूप ।।१८।।
जाग्रत चक्षु स्थान में, तत्व ब्यालिस भोग ।
व्यवहारिक सँसार में, जानत है सब लोग ।।१९।।

जाग्रत अवस्था का तीन स्वरूप

जाग्रत मे जाग्रत रहे, ज्ञान अवस्था लाग ।
ज्ञानी सोई जागत रहे, मोह नींद से जाग ।।२०।।
जाग्रत मे रह कर करे, मन सँकल्प बहु भ्रान्त ।
जाग्रत में स्वप्ना यही, जानत है मन शान्त ।।२१।।
जाग्रत मे रहते सदा, ज्ञानी सन्त महान ।
जगत दिशा से सुषोप्ति, सँकल्प रहित निदान ।।२२।।

स्वप्न अवस्था का तीन स्वरूप

मूल अवस्था स्वप्न की, कण्ठ हिता सँस्कार ।
कह्यो वेदान्त सँसार हित, जानत सब सँसार ।।२३।।
स्वप्न सँसार में रहत भी, सँकल्प स्वप्ना जोय ।
अज्ञानी की यह दशा, तुच्छ आयु मे होय ।।२४।।

जगत स्वप्नवत है सदा, ज्ञानी लखे सुजान।
स्वप्न में होय सुषोप्ति, लय अवस्था भान।।२५।।

सुषोप्ति अवस्था का तीन स्वरूप

सुषोप्ति मे ज्ञानी रहे, ज्ञान जाग्रति जोय।
उन्मुन मुक्त स्वरूप से, षष्टम भूमि में सोय।।२६।।
सुषोप्ति मे स्वप्न सभी, जीव जन्तु सँसार।
अज्ञान दशा विधि कल्पना, है अज्ञानी व्यवहार।।२७।।
सुषोप्ति में सुषोप्ति, अचेतन मे बेहोश।
गहन रोगी जब होय है, स्मृति रहे नहि रोश।।२८।।
जाग्रत स्वपन सुषोप्ति, तीन तीन स्वरूप।
तीन अवस्था मूल की, बारह स्वरूप अनूप।।२९।।
तीन अवस्था जो कही, उन को बहु प्रस्तार।
बारह रूप को समझ लो, रामप्रकाश विस्तार।।३०।।
अन्न प्राण दो कोश बिन, रहे स्थूल न देह।
समझ वेदान्त की रमझ को, रामप्रकाश कह एह।।३१।।
मनोमय विज्ञानमय, शूक्ष्म देह में मान।
रामप्रकाश आनन्दमय, कारण देह प्रमान।।३२।।

जीवनमुक्ति का और विदेह मुक्ति की परिभाषा

संचित ज्ञान ते जल गये, भये प्रारब्ध क्षीन।
मुक्त भये ते देह तजि, मुक्ति विदेह ले चीन।।३३।।
क्रियमाण संचित मिटे, प्रारब्ध भोग रहे शेष।
ब्रह्मज्ञान निश्चय भयो, जीवन मुक्ति की रेश।।३४।।
कर्म क्लेश फल आश में, भटके जीव स्वभाव।
यह नाशे मुक्ति सदा, ज्ञानी पुरुष लखाव।।३५।।
टिप्पणी-यह जीव के 3 लक्षण है कर्म क्लेश और आशा यह जीव भाव के लक्षण

माया के प्रकार

लीली माया मोह मय, फांसी कुल परिवार।
भव भ्रमण दे सहज में, रामप्रकाश विचार।।३६।।
सूक माया दोय फल, भोग रोग भव धार।
परमार्थ भव तार दे, रामप्रकाश विचार।।३७।।
परमार्थ में तन वित दे, सतगुरू ओ सत्संग।
रामप्रकाश हरि सेवते, होय भ्रम भव भंग।।३८।।

भावावेग बानी का स्वरुप

कर घुटने शिर चक्षु ते, सैन समझावत भाव।
चारों वाणी से परे, भावावेग स्वभाव।।३९।।

ब्रह्म, कुटस्थ और चिदाभास का उदाहरण

रश्मि कुटस्थ रवि ब्रह्म है, अंतस्थ जल चिदाभास।

जीव कह्यो दृष्टान्त में, सन्त कहै रामप्रकाश ।।४०।।

दश दोष

हिंसा चोरी यारि तन, चिन्ता तृष्णा परदोष ।
निन्दा झूंठ कठोरता, मन वाणी दश दोष ।।४१।।

चार भक्त

जिज्ञासु आर्त अर्थार्थी, ज्ञानी चार सपूत ।
रामप्रकाश हरि भक्त यह, नही हरि होत अऊत ।।४२।।

दो मार्ग

गृहस्थ त्यागी उद्यम करे, दगड़ दोहा घर दाम ।
पृवृति निवृति भेद है, रामप्रकाश परिणाम ।।४३।।

चिदाभास का स्वरुप व् प्रकार

चिदाभास जाको कहै, ताकी अवस्था सात ।
शूक्ष्म देह अन्तःकरण में, करे प्रकाश प्रख्यात ।।४४।।
तामस माया अज्ञान से, आवर्ण दोय प्रकार ।
अस्तवापादक अभान है, हर्ष शोक मन धार ।।४५।।
परोक्ष अपरोक्ष इन्द्रिय गने, सुख दुःख रामप्रकाश ।
भ्रान्ति सहित यह सात ही, अवस्था है चिदाभास ।।४६।।
शुद्ध सतो माया जनित, अन्तःकरण उत्पन्न खास ।
सचिदानन्द के बिम्ब ते, कुटस्थ से चिदाभास ।।४७।।

मृत्यु और मुक्ति का स्वरुप

प्राण जाय इच्छा रहे, सोई मृत्यु खास ।
इच्छा नाश रु प्राण रह, मुक्ति रामप्रकाश ।।४८।।
मोह तृष्णा की गति रहे, प्राण सदेह निर्वाण ।
रामप्रकाश निर्वासना, सोई मुक्ति प्रमाण ।।४९।।

मुक्ति का वर्णन

भेद भक्ति से हरि मिले, विविध सुख भण्डार ।
हरि हम एक स्वरूप हो, मुक्ति अभेद विचार ।।५०।।
भेद भक्ति सो चार है, सालोक्य सामीप्य जान ।
सारूप्य सायुज्य पावते, रामप्रकाश हरि जान ।।५१।।
अभेद भक्ति सो दोय विधि, सार्ष्टिता रामप्रकाश ।
जीवन मुक्ति रु विदेह में, मनोवासना नाश ।।५२।।
भक्ति बीज पाताल में, प्रकट वृक्ष आकाश ।
यश प्रयोजन डाल सब, प्रत्यक्ष रामप्रकाश ।।५३।।
देश काल परिच्छेद बिन, सब घट व्यापक एक ।
राम प्रकाश स्वरूप को, स्वयं प्रणाम अनेक ।।५४।।
वट वृक्ष में बीज है, तिन में वृक्ष अनेक ।
डाल पात ब्रह्मण्ड यों, रामप्रकाश है एक ।।५५।।
सिमट रह्या तब एक है, बिखरे होय अनेक ।

वृक्ष बीज विस्तार ज्यों, रामप्रकाश निज एक ।।५६।।

ब्रह्म की व्यापकता विषय दृष्टान्त

बिजली विद्युत तार में, है पर दीखत नाहि ।
सब में रामप्रकाश त्यों, दिख परे कछु काहि ।।५७।।
मेंहदी रँग घृत पय में, मिर्ची में चरकान ।
सब में रामप्रकाश त्यों, देखे सोई विद्वान ।।५८।।
मेंहदी रंग घृत दूध में, मिश्री मे मिठियास ।
छुपा हुआ दीखत नही, यूँ है रामप्रकाश ।।५९।।
रक्त देह रस ईख में, मिर्ची में चरकान ।
भूषण में धातु रमी, रामप्रकाश यूँ जान ।।६०।।

जग मिथ्या पर दृष्टान्त

चाँदी भोडल सीप में, मृग मरीचिका जान ।
मिथ्या रामप्रकाश त्यों, दृश्य सकल जहान ।।६१।।
माला नाग भू रेख जो, रज्जू में दृश्य महान ।
मिथ्या रामप्रकाश त्यों, अविद्या कृत जग जान ।।६२।।
बँझ्या सुत सुगन्ध ले, उपवन पुष्प नभ आन ।
जग मिथ्या त्यों जानिये, रामप्रकाश बखान ।।६३।।

मर्यादा और उसके प्रकार

जीवन निर्वाह की सीम को, कहत मर्यादा ताहि ।
असंतुलन की विभिन्नता, निश्चित रेखा थाहि ।।६४।।

भावार्थ- जीवन निर्वाह के नियमों को संतुलन में रखने वाली निर्धारित सीमा रेखा को मर्यादा कहा जाता है अर्थात जीवन में किसी प्रकार का असंतुलन ना हो ,ऐसे नियमों की निर्धारित रेखा को मर्यादा कहा जाता है।

लोकाचार मर्याद है, सता व्यवहारिक माहि ।
परमार्थ में सहज ही, वेद मर्यादा आहि ।।६५।।
मरियादा से चलत है, जगत जीवन व्यवहार ।
प्रवृति निवृति मरियाद है, प्रकृति दैन संसार ।।६६।।

मुस्लिम धर्म सम्बंधित

नक्शबन्दी रु कादरी, चिश्ती सूफी धार ।
सुहारावर्दी चार मत, रामप्रकाश विचार ।।६७।।
एक सौ पर पचहतर मत, सूफी मुख्य कहै चार ।
ऐकेश्वर के वाद में, रामप्रकाश विचार ।।६८।।

श्री रामप्रकाश छन्दावली के अन्तर्गत

तत्वज्ञ स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज'अच्युत' कृत

भजन सरिता प्रारम्भ

भजन(१) राग झंझोटी पद संगीत

माईरी ! मेरे सतगुरू है घनश्याम ।।टेर।।
हृदय में हनुमान विराजे, रामानंद अविराम ।।१।।
रोम रोम में राम विराजे, मुख मांही हरिराम ।।२।।
जीव माही जीयाराम सुहावे, श्रवण माही सुखराम ।।३।।
अर्थ माही अचलराम जी, उर मे उत्तमराम ।।४।।
पूरण ब्रह्म सच्चिदानंद सोई, सगुण निगुण अभिराम ।।५।।
"रामप्रकाश" अच्युत समायो, भूमा रूप विश्राम ।।६।।

भजन(२) राग झंझोटी पद संगीत

माईरी ! मोरे गुरुधर्म विश्वास ।।टेर।।
अजर अमर सनातन चेतन, श्री वैष्णव अविनाश ।।१।।
शील संतोष श्रद्धा सन्त सेवा, सतसंग मन में खास ।।२।।
अष्ठ शीश अर्पण कर पूरण, प्रणाम अष्ठांग सुखरास ।।३।।
गुरु परम्परा इष्ठ हमारो, शुद्ध सतोगुण आस ।।४।।
तन मन के रोम रोम में, व्यापक रामप्रकाश ।।५।।

भजन(३) राग झंझोटी पद संगीत

माईरी ! मोरे सतगुरू पधारे आज ।।टेर।।
रामानंद श्री अग्रदास जी, नाभादास को नाज ।।१।।
संतदास जी संशय हरता, हरिराम सरताज ।।२।।
जीयाराम जीवों के स्वामी, सुखराम सुख साज।।३।।
अचलराम जी उतमराम जी, एक ही स्वरुप समाज ।।४।।
परम गुरु पुरुषोत्तम आदू, हरदम आनँद राज ।।५।।
"रामप्रकाश" के रोम रोम में, बस रह्या महाराज ।।६।।

भजन(४) राग झंझोटी पद संगीत

माईरी ! मेरे वरिष्ठ सदा गुरुदेव ।। टेर ।।
ब्रह्मा विष्णु शंकर गणपति, शक्ति दिनेश सो देव ।।१।।
सर्वेश्वर महेश्वर सोई, सच्चिदानंद निर टेव ।।२।।
पूरण आप भूमा घन सोई, अटल अगोचर भेव ।।३।।
अचलोत्तम सतगुरु सत सामर्थ, रामप्रकाश के टेव ।।४।।

भजन(५) राग झंझोटी पद संगीत

माईरी ! मोरे सतगुरू उत्तमराम ।।टेर।।
हृदय में हरिराम विराजे, हरिसागर अभिराम ।।१।।
होठों में हनुमान उचारू, मुख में बसे श्री राम ।।२।।

रोम रोम में रमणीय रमता, घन आनन्द घनश्याम ।।३।।
रामप्रकाश नित चरण शरण में, पूरण पायो विश्राम ।।४।।

भजन(६)राग राजेश्वरी, हेली पद संगीत

हेलीए ! निशि दिन हरि सेवा में रहे,
संत सदा सुख धाम ।।टेर।।
तन सेवा मन चिंतन शुभ, वाणी कथा गुण नाम ।
परमार्थ कारज करे, विश्व हित अभिराम ।।१।।
सत उपदेश दे भक्त को, नशा मुक्ति जन आम ।
दुर्व्यशन दूरा करे, हरे मोह मद काम ।।२।।
सनातन जन समाज को, जाग्रति देवे तमाम ।
अज्ञान निवृति उपाय से, साधन ज्ञान आ राम ।।३।।
क्षमावन्त कृपालु वह, द्वैष रहित निष्काम ।
धर्म मर्यादित जीवनी, गुरु भक्तिमय राम ।।४ ।।
परमार्थ में हरदम रहे, वेतन बिना अठयाम ।
"रामप्रकाश" नित संतन को, वारवार प्रणाम ।।५।।

भजन(७)राग राजेश्वरी, हेली पद संगीत

हेलीए ! सन्त सेवा कर लीजिये, जग में कर उपकार ।।टेर।।
तन मन वाणी धन सदा, जानो चार प्रकार ।
मानव देही पाय के, लखिये ज्ञान विचार ।।१।।
तन से सेवा कर पाविये, सर्व श्रेष्ठ उपचार ।
मन से शुभ चिन्तन कर, शास्त्र बोध सुधार ।।२।।
वाणी से शुभ विचार दे, वेद विधि गुण सार ।
दीन दु:खी शुभ चार में, धन सेवा संसार ।।३।।
उतमराम गुरु ज्ञान दे, धारे जिज्ञासु धार ।
रामप्रकाश सन्त साख दे, सेवा किये भव पार ।।४।।

भजन (८)राग आसवरी पद संगीत

साधोभाई ! गुरु कृपा पद पाया ।
साधन सहित प्रयोजन पाँचों, ह्रदय ठीक ठहराया ।। टेर ।।
गुरु स्मृति स्थल की पूजा, निज कर श्रेष्ठ बनाया ।
गुरु ग्रन्थों की सम्पादित टीका, कार्य प्रचार बढाया ।।१ ।।
ग्रन्थ शताधिक्य संत साहित्यिक, सम्पादन रचना ठाया ।
सम्प्रदाय आध्यात्म शोद्ध में, शब्द अनुपम लाया ।।२।।
सात द्वीप में खण्ड बँयालिस, वाणी पाँच विगताया ।
भेद उपभेद मुक्ति पाँचों का, कर निर्णय दरसाया ।।३।।
सामाजिक परमार्थिक दोनो, युक्ति भक्ति मन चाया ।
शास्त्र नीति रीति से, व्यशन जाति छिटकाया ।।४।।
जोधपुर वैष्णव गद्दी उत्थापित, नव स्थापित थरपाया ।

मूल धर्म द्वाराचार्य से, छड़ी छतर घर आया ।।५।।
भक्त संत आश्रम परिकर का, सम्प्रदाय धर्म सम्भाया ।
दीक्षा दिवस सतसंग गुरुपूजा, नियमित कर ठहराया ।।६।।
नशा मुक्ति पाखण्ड का खण्डन, जगत जाल विसराया ।
गद्य पद्य पिंगल का परिचय, सब ही को समझाया ।।७।।
उतमराम सतगुरु प्रसाद से, पुरुषार्थ रंग रंगाया ।
रामप्रकाश "अच्युत" का जीवन, इस विध खोल बताया ।।८।।

भजन (९)राग आसवरी पद संगीत

मनरे ! सज्जन आचरण धारो ।
जीवन सुखद परम गति धारक, जग मे सुयस वारो ।।टेर।।
तृष्णा त्याग अभिमान रहित हो, क्षमा को हृदय धारो ।
विकर्म अकर्म पाप सब त्यागो, दुर्व्यशन दूर निवारो ।।१।।
निन्दा चुगली झूँठ तज बाणी, वृथा मत उचारो ।
सत्य मृदु बाणी गुण धारो, वेदिक वचन सँभारो ।।२।।
सज्ज्न धर्म अनुकरण करना, विद्वजन संग सुधारो ।
संत सेवा सानिध्य सतसंग, सतगुरु वचन विचारो ।।३।।
सम्मानित जन का करो सन्माना, नम्रता शील अंग सारो ।
दु:खियों पर दया नित राखो, शत्रुता दूर प्रहारो ।।४।।
सदा अनुग्रहित पूर्ण भावना, सज्जन धर्म हमारो ।
उतम रामप्रकाश वह जीवन, मानवता गुण वारो ।।५।।

भजन (१०)राग आसवरी पद संगीत

साधोभाई ! सन्त स्वभाव कोई जाने ।
परम जिज्ञासु सेवक साचा, मन मर्यादा माने ।।टेर ।।
धीरजवन्त क्षमा उर संयम, ज्ञान वैराग्य उर आने ।
शास्त्र बोध सतगुरु परवाणा, हरदम हरि मुख गाने ।।१।।
द्रढ प्रतिज्ञा वज्र धारणा, मोहादि कर काने ।
चित नवनीत कोमल दयालु, नीति बोध नित छाने ।।२।।
कुल की कान आन जग भव की, दूर करी दुर्मति दाने ।
निर्मोही निष्प्रह निर्फन्दी, एक अखण्ड लिव लाने ।।३।।
उतमराम अवधूत वैरागी, ब्रह्म निष्ठ ब्रह्म माने ।
"रामप्रकाश" ऐसा मन भावे, भवसागर भ्रम भाने ।।४।।

भजन (११)राग आसवरी पद संगीत

साधोभाई ! गुरु का भेद अपारा ।
शास्त्र संत अनन्त बखानत, पावत ना कोई पारा ।।टेर ।।
गुणातीत गुरु गुप्त अनादी, निरअक्षर निरधारा ।

रूपातीत गुरु शब्द सनातन, सोहम् ओम उचारा ।।१।।
सृष्टी भेद अनन्त उपाया, त्रिगुण तत्व विस्तारा ।
पृकृति नाना रूप बनाया, सतगुरू सब से न्यारा ।।२।।
जल में रवि निर्लेप सदाई, नही हल्का नही भारा ।
सब मे रमता दीखत नाही, गुरु शब्द निस्तारा ।।३।।
उतमराम सतगुरू गुण सागर, निर्गुण एक विचारा ।
"रामप्रकाश" अनामी चेतन, घननामी सन्त पुकारा ।।४।।

भजन (१२)राग आसवरी पद संगीत

साधो भाई ! सतगुरू शब्द विचारा ।
सब उत्पति उन्ही से कहिए, जानत गुरु मुख प्यारा ।।टेर ।।
गुरू है अभेद अनादी आदू, सच्चिदानन्द अपारा ।
पृकृति पुरुष उन्ही की छाया, आप अपेची न्यारा ।।१।।
गुरु है गुप्त रूप भी नाही, सगुण निगुण निरधारा ।
ज्ञानी ध्यानी पूर्ण बखाने, वेद भेद निस्तारा ।।२।।
सत्य सनातन सतगुरू चेतन, सब तिनका विस्तारा ।
भिलता नाही भेला रहता, जल कमल वत सारा ।।३।।
उतमराम सतगुरू निरञ्जन, ज्यों उदक मे तारा ।
"रामप्रकाश" सोई है सामर्थ, शास्त्र सन्त पुकारा ।।४।।

भजन (१३)राग आसवरी पद संगीत

साधोभाई ! सतगुरु महिमा सारी ।
परम जिज्ञासु पर से पूरण, लखता नही संसारी ।।टेर।।
जो उपदेश जगत में सात्विक, शास्त्र संत पुकारी ।
सोई है सतगुरु की वाणी, उस बिन सभी असारी ।।१।।
ग्रन्थ पन्थ रु मत मतान्तर, गुरु गुण सभी सुधारी ।
गुरु बिन भुक्त युक्त नही दरसे, गुरु मुक्ति दातारी ।।२।।
सर्गुण निर्गुण सतगुरु दाता, योग युक्ति भण्डारी ।
शब्दावली शब्द रुप मे, साक्षी सोऽहम कारी ।।३।।
सतगुरु उतमराम सब गावे, ऋषि मुनि अवतारी ।
"रामप्रकाश" हरि हर अज गावे, मानत नही अनारी ।।४।।

भजन (१४) राग आसवरी पद संगीत

साधोभाई ! सतगुरु की सब वाणी ।
नाम रुप विश्व में जेते, सब गुरु के अगवाणी ।।टेर।।
अगम निगम सन्त वर शास्त्र, सिद्धांत वेदान्त सुजाणी ।
मत मतान्तर सब गुण गावे, अकथ अपार बखाणी ।।१।।

जो जो शिक्षा शुभ उपदेशी, सो सतगुरू की जाणी।
या विधि समझ्या भक्त जिज्ञासु, सो परस्या परवाणी ।।२।।
संसारी अज्ञानी मूर्ख, जानत नही अजाणी।
समझ्या सोई परम पद पावे, प्रकट यही शैलाणी ।।३।।
अनुभव वेता उतमराम जी, गुरु धर्म परसाणी।
"रामप्रकाश" सतगुरु शरणागत, पाया पद अबाणी ।।४।।

भजन (१५)राग रामगिरी प्रभाती पद संगीत

शुद्ध चेतन अविकारा पूर्ण शुद्ध चेतन अविकारा ।।टेर।।
सत्य सनातन चित अविनाशी, आनन्द परम अपारा।
अस्ति भाति प्रिय एक अखण्डित, निर्गुण गुण भण्डारा ।।१।।
अचल अगोचर अटल महाना, व्यापक ब्रह्म निराधारा।
जीव ईश पृकृति नही बाधा, नही द्रश्य संसारा ।।२।।
अद्रष्ठ आप अधिष्ठान अधिष्ठाता, नही प्रपञ्च विस्तारा।
नाम रूप नही विधि निषेधा, एक दोय नही वारा ।।३।।
उतमराम स्वयं शुद्ध भूमा, अजर अमर निरवारा।
"रामप्रकाश" द्वंद नही द्रष्ठा, परा अपरा मन हारा ।।४।।

भजन (१६) राग रामगिरी प्रभाती पद संगीत

शुद्ध अद्वैत अपारा चेतन शुद्ध अद्वैत अपारा है ।।टेर।।
वाणी खाणी द्वन्द नही कछु, प्रपञ्च नही पसारा है।
परा अपरा पृकृति नाही, गो गोचर सब हारा है ।।१।।
कुटस्थ और चिदाभास का, नही कल्पनाकारा है।
जीव ईश माया ब्रह्म नाही, अद्वय में जीत ना हारा है ।।२।।
शब्दातीत में शब्दकोश का, नही रञ्च विस्तारा है।
इन्द्रिय कोश अँत:करण का, नहीँ प्रपञ्च करारा है ।।३।।
योग न योगी भोग ना भोगी, रोग न रोगी लारा है।
उतम रामप्रकाश है चेतन, सच्चिदानंद विचारा है ।।४।।

भजन (१७)राग आसवरी पद संगीत

साधोभाई! गुरु शिष्य का नाता।
समझे सन्त सो परम जिज्ञासु, वही परम पद पाता ।।टेर।।
पूर्वाचार्य सन्त भये जग माँहीं, सो भये परम विख्याता।
विधि निषेध का साधन करके, पाया पद अख्याता ।।१।।
मात पिता भव भव मे मिलते, लख चौरासी दाता।
जगत जाल के मोह अलुझावे, भवसागर भरमाता ।।२।।

स्वामी सेवक बदलते रहते, कर्म धर्म का खाता।
पति पत्नी का साँसारिक नाता, भव मे सम्बध कहाता ।।३।।
तीनों सम्बध भ्रम के माँहीं, नित्य बदलता जाता।
गुरु शिष्य का आध्यात्मिक नाता, सत का धर्म निभाता ।।४।।
अविद्या रात अज्ञान अँधेरा, मोह की नींद जगाता।
असँख्य युगों के सूते जीव को, सतगुरु मोक्ष पठाता ।।५।।
सतगुरू बारम्बार धिकारे, द्वार छोड़ नही जाता।
शब्द स्नेही इष्ट निभावे, जिज्ञासु शिष्य कहाता ।।६।।
जीव ब्रह्म ज्यों सतगुरु पूर्ण, उतमराम अग्याता ।
रामप्रकाश शरणागत आया, पूरा धर्म निभाता ।।७।।

भजन (१८) राग आसवरी पद संगीत

साधोभाई! सब में मैं हूँ छाया।
चार वेद रु सन्त स्मृति, सब चेतन यश गाया ।।टेर।।
पाँच तत्व पृकृति की रचना, सृष्टि खेल रचाया।
त्रिगुण का विस्तार नाना विधि, चेतन सता उपाया ।। १।।
पच्चीस पृकृति अँश उपार्जित, सगुण खेल खिलाया।
पाँच ज्ञानैन्द्रिय पाँच कर्मेन्द्रिय, पाँचों प्राण समाया ।।२।।
चार अन्तकरण चिदाभास से, चेतन जीव कहाया।
कुटस्थ ब्रह्म व्यापक विभुवत, सब चेतन की छाया ।।३।।
पृकृति सञ्चालक माया विशिष्ठ सो, ईश्वर रूप बताया।
उतमराम साक्षी घट रमता, रामप्रकाश अमाया ।।४।।

भजन (१९) राग आसवरी पद संगीत

साधोभाई! ऐसा देश मस्ताना।
व्यापक एक अगोचर पूर्ण, ज्ञानी सन्त पिछाना ।।टेर।।
सबका साथी संग में रहता, भूला भ्रम अज्ञाना।
ज्ञानी भेद छेद भ्रम भ्रांति, पहुँचे ठेठ ठिकाना ।।१।।
साधन संग सतगुरु की कृपा, पुरुषार्थ परमाना।
ज्ञानी जन पहुंचे निश्चयकर, भटकत फिरे अभाना ।।२।।
नानक पीपा संत अनेकों, गोरख कबीर का ज्ञाना।
हरिराम वैरागी आदि, परख्या आप अबाना ।।३।।
अचलराम जी उतमराम जी, असल पाया परमाना।
"रामप्रकाश" राही पथ मत का, पाया परम अस्थाना ।।४।।

भजन (२०) राग आसवरी पद संगीत

शिष्य को! ऐसा गुरू भव तारे।
आत्मज्ञानी संयम साधे, सत उपदेश उचारे ।।टेर।।
इन्द्रिय जीत सत्य का वक्ता, जतमत बोध संवारे।
ब्रह्मवेता ब्रह्मनिष्ठ परमार्थ, सत चित एक विचारे ।।१।।

व्यवहारिक परमार्थिक सुधरे, शिष्य का जीवन सुधारे ।
शास्त्र शोद्ध बोद्ध दे युक्ति, शंका दूर निवारे ।।२।।
गुरु परम्परा मर्यादा पालन, नीति रीति को धारे ।
जगत विकार को दूर भगावे, व्यशन नशे प्रहारे ।।३।।
युक्ति ज्ञाता भजन मे राता, साधन सहित रतारे ।
ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मनिष्ठ उतम गुरु, रामप्रकाश उचारे ।।४।।

भजन (२१) राग आसवरी पद संगीत

साधोभाई ! योगी साधे प्यारा ।
कर्मयोग की विधि अनोखी, समझे साधक प्यारा ।।टेर।।
पहले है यम पाँच तरह के, अहिंसा सत्य की धारा ।
अपरिग्रह शील स्तेय को पाले, शुद्ध करे व्यवहारा ।।१ ।।
पाँचों नियम शौच सन्तोष तप, ईश्वर प्रणिधान विचारा ।
शास्त्र स्वाध्याय नित्य की क्रिया, तन मन पावन वारा ।।२।।
आसन विविध भाति चौरासी, सिद्ध पद मुख्य आचारा ।
प्राणायाम युक्ति कर साधे, लोम विलोम प्रकारा ।।३।।
विषयोंसे मन निग्रह कर, मन एकाग्रता वारा ।
प्रत्याहार साधन कर पूरा, प्रतिबन्धकाभाव सुधारा ।।४।।
द्रढ धारणा निश्चय करते, ध्यान ध्येय इकतारा ।
सविकल्प समाधि ज्ञानी साधे, निर्विकल्प योगी न्यारा ।।५।।
पूर्ण योगी उतमरामजी, सतगुरु भेद उजारा ।
"रामप्रकाश" ईश्वर अनुरागी, योग विधि विस्तारा ।।६।।

भजन (२२) राग आसवरी पद संगीत

सतगुरु ! अपनी टेक निभावो ।
समर्थ आप सकल के स्वामी, शिष्य को मत शरमावो ।।टेर।।
महिमा सुनत शरण में आयों, ह्रदय अति उमावो ।
दीन जान अपनो कर लेवो, दया की द्दष्टि लावो ।।१।।
दीन बन्धु शरणागत रक्षक, प्रणतपाल कहलावो ।
पापी समझ टेव मत त्यागो, शरणार्थी मत छिटकावो ।।२।।
सन्त ऋषि अवतार अवलिया, सब के मन उमावो ।
पीर फकीर अनेकों तारे, पुण्यात्मा बल पावो ।।३।।
मैं पापी कृतघ्नी अपराधी, अवगुण देख घबरावो ।
दीन दयालु प्रणतपाल के, अपने नाम हटावो ।।४।।
"उतमराम" अरजी सुनो स्वामी, अन्तर्यामी आवो ।
" रामप्रकाश" अब मरजी आपकी, भव से पार लँघावो ।।५।।

भजन (२३) राग आसवरी पद संगीत

सतगुरु ! अरज सुनी मन भाई ।

प्रणतपाल गुरु दीन दयालु, नाम की टेव निभाई ।।टेर।।
बाल विनय सुनत कर कृपा, लीयो आप अपनाई ।
शरणागत की रक्षा कीनी, भव का भय मिटाई ।।१।।
अपराधी कृतघ्नी की क्रिया, दुर्मति दूर हटाई ।
सद्‌बुद्धि परमार्थ अरप्या, आत्म ज्ञान लखाई ।।२।।
भवसागर में भूला भटका, अनँत जन्म दुःखदाई ।
सतगुरु दया परम पद परस्या, ऐसी दया दिखाई ।।३।।
"उतमराम" ब्रह्मवेत्ता सतगुरु, ब्रह्मविद्या परखाई ।
" रामप्रकाश" अपनायो पूर्ण, परमानन्द परसाई ।।४।।

भजन (२४) राग आसवरी पद संगीत

साधो भाई ! महिमा काल की भारी ।
तीन लोक और तीन गुणों में, प्रकृति पाँव पसारी ।।टेर ।।
राव रँक राजा भिखारी, हरि हर अज वारी ।
समय पाय सब आवे जावे, वश में दुनिया सारी ।।१।।
कहीं हँसावे कहीं रुलावे, हर्ष शोक दातारी ।
कहीं परमहल अटारी कर दे, कहीं पर कुटिया झारी ।।२।।
चाहे तो विद्वान बनावे, चाहे मूर्ख अनारी ।
चाहे जैसा नाच नचावे, नाचत है नर नारी ।।३।।
दृष्ट अदृष्ट सब जड़ चेतन में भी, काल ने भुजा पसारी ।
उत्पत्ति प्रलय सृष्टि समय पर, काल करे रखवारी ।।४।।
"उतमराम " अवधूत वैरागी, ब्रह्मज्ञानी मुक्त मँझारी ।
"रामप्रकाश" परमानन्द चेतन, आवागमन निवारी ।।५।।

भजन (२५) राग आसवरी पद संगीत

साधो भाई ! भक्त सदा भव हरता ।
प्रभु कृपा से आनन्द माही, कछु चिन्ता नही करता ।।टेर।।
पूरण भरोसा हरि का चित में, अनन्य भक्ति जरता ।
जरणा धारे साधन सारे, हरि का सुमिरण ररता ।।१।।
परमधर्म की इच्छा चित में, हरि गुरु शरणे सरता ।
आशा तृष्णा दूर निवारी, दुर्व्यशन से टरता ।।२।।
कर्मधर्म पुरुषार्थ साची, श्रद्धा राम की धरता ।
शर्मधर्म और आनधर्म को, मन में नाही झरता ।।३।।
"उतमराम" का शरणा साचा, पाप ताप सब हरता ।
" रामप्रकाश" हरि गुण गावत, यम से नाही डरता ।।४।।

भजन (२६) राग आसवरी पद संगीत

साधोभाई ! कैसे कवि कथ गावे ।
पिंगल डिंगल के ज्ञान बिना वह, मन मरजी तुक मिलावे ।।टेर ।।
भजन सन्तों के अनन्त पूर्व से, सो मन नही भावे ।
अपनी कविता से राजी होवे, हँस हँस गाय सुनावे ।।१।।

तुकबन्दी अनमेल अक्षर से, होड कवि की लावे।
गण अगण शुभाशुभ दद्धा, ज्ञान बिन गोता खावे ।।२।।
दोहा दगड़ अरु दाम जोड़ना, हर एक को ना आवे।
ईश्वर गुरू कृपा पूर्व के, भाग उदय जब थावे ।।३।।
शास्त्र बोध की अनुभव की युक्ति, उक्ति उर उकतावे।
उतम गुरू प्रसाद सन्तन की, रामप्रकाश पद पावे ।।४।।

चोला (शरीर) का भजन

भजन (२७) राग लावणी, प्रभाती पद संगीत ।

इस भजन में चोले का वर्णन है चोला दो तरह का होता है , एक कपड़े का चोला जो कफनी (हमारे पहनने का फकीरी भेष) कहलाता है , जो स्थूल शरीर पहनता है और एक पंच भौतिक शरीर का चोला (कफनी) शूक्ष्म शरीर पहनता है याने भौतिक स्थूल शरीर का चोला सूक्ष्म शरीर पहनता है । जो जीव मात्र सभी योनियों में पहना जाता है, उस में मानव योनि भी चोला है

धन धन मस्त फकीरी पाई, पहन फकीरी चोला है।
गुरु कृपा अलमस्ती आई, लिया संतन का ओला है ।।टेर।।

भावार्थ- *धन्य हो धन्य हो ऐसी मस्त फकीरी प्राप्त की जो फकीरी चोला अलफी पहनकर अर्थात स्थूल शरीर प्राप्त करके, सद्‌गुरु की महान कृपा हुई तब अलमस्ती दोनों बात में याने कफनी से स्थूल शरीर में और सूक्ष्म शरीर को स्थूल शरीर में भी अलमस्ती आ गई, फिर संतों का ओला याने संतों की शरण लेली ।*

चोला कईयक पाकर त्यागे, चौरासी लख घोला है।
सर्व गुणों का पाया नहीं तब, चित में भया बिनोला है ।।१।।

भावार्थ- *~ सूक्ष्म शरीर ने ८४००००० योनियों में अनेक प्रकार के चोले पहने यानी शरीर धारण किये परंतु ऐसा सही चोला नहीं मिला ,इस स्थूल शरीर में भी कई कुर्ता कमीज पहन पहन कर के छोड़े गये, पर आनंद नहीं मिला परंतु इस कफनी के चोले जैसा अथवा ८४ लाख में ऐसा गुणवान मानव चोला नहीं मिला , तब चित में बड़ा विश्मय याने बिनोला दुःख हुआ ।*

लंबा छोटा मोटा होता, चद्दर चोला पोला है।
पहनू ओढूं चाहे बिछाऊं, सभी काम में सोला है ।।२।।

भावार्थ- *सूक्ष्म शरीर ने ८४००००० योनियों में कई शरीर पहने परंतु ऐसी मानवता जैसी सुविधा नहीं मिली ,जैसे इस चोले में मिली, ऐसा ही एक कपड़े का चोला है जो कफनी के नाम से जाना जाता है, जो फकीरों के पहनने का होता है, वह भी ऐसा ही है लंबा भी होता है छोटा भी होता है मोटा भी होता है, चद्दर भी होती है बिछाकर बैठ जाओ चाहे ओढ लो चाहे पहन लो और जैसा क्या हो जैसा काम चाहो वैसे ही काम ले लो सभी काम में सरल है सीधा है मानव शरीर में भी और कपड़े के शरीर में भी , स्थूल शरीर में भी और कपड़े के शरीर में भी सुख देने वाला है।*

नक्षत्र तिथि ग्रह करण योग से, चोला बना अमोला है।
परम पंचांग हाथ पांव सों, भेद गुरु गम खोला है ।।३।।

भावार्थ- ज्योतिष के तिथि वार नक्षत्र करण योगादी पंचांग श्री १०८ और शरीर के प्राण और लंबाई चौड़ाई भी १०८ से शरीर बना है और कपड़े का चोला भी इतना ही अंगुल नाप में है, यह दोनों प्रकार के भेद गुरु की गमले करके बताया है, स्थूल शरीर के पहनने का और सूक्ष्म शरीर के पहने का , इन दोनों का भेद गुरु कृपा से खोल कर बताया है।

परा अपरा के माही बुनिया, त्रिगुण तत्व तन गोला है।
उपनिषद माला गुण कर से, गुरु गुण पाया झोला है ।।४।।

भावार्थ- *यह स्थूल शरीर परा ब्रह्म तत्व और प्रकृति अपरा (अष्ठ प्रकार के पृकृति गुण) के मेल (१०८) से बना है , ऐसे ही स्थूल शरीर के लिए कपड़े का डोरे की सिलाई कपड़े के साथ तैयार हुआ है। यह त्रिकोण तत्व मिलकर के गोला गोलाकार का कपड़े वाला और दूसरे वाला तैयार हुआ ऐसे यह १०८ उपनिषद १०८ माला का मनका गुणा करके सतगुरु के गुणों से दोनों (कपड़े का चोला (तीन तन्तु से बनने वाले डोरे {गुण} के धागे) से बना कपड़े का चोला और तीन गुणो से बना स्थूल शरीर का चोला) ज्ञान से झोला भरा हुआ है।*

राधाकृष्ण मय चोला है यह, सीताराम से तोला है ।
ब्रह्म आप है मुक्ति स्वरूप सो, अष्टोत्तर से घोला है ।।५।।

भावार्थ- *राधा कृष्ण, सीताराम ,ब्रह्म, मुक्ति स्वरूप, यह सब शब्द 108 के प्रतीक है, कपड़े का चोला फकीरी सांग से और स्थूल शरीर परा (१) अपरा (८) के ज्ञान की गरिमा से भरे हुए हैं।*

ज्ञान विज्ञान युक्ति जग भुक्ति, गुरू युक्ति से बोला है ।
उक्ति मुक्ति के सब गुण पूर्ण, लखे नहीं जग भोला है ।।६।।

भावार्थ- *यह कपड़े का चोला और स्थूल शरीर के यह दोनो चोले ज्ञान विज्ञान की युक्ति और जगत के सुखों मे भुक्ति की खान है । यह युक्ति संसार के लोग बुद्धि और गुरु की युक्ति सहित मोक्ष (मक्ति) के सारे गुणों से पूर्ण है, परंतु भोला जगत इसको जानता नहीं है।*

लख कर पावे सत समावे, बिना लखे बहु रोला है ।
रामप्रकाश उतम गुरू धोया, पाप ताप कर होला है ।।७।।

भावार्थ- *दोनों चोलों का ज्ञान प्राप्त कर ले तो वह सत्य स्वरूप भेष फकीरी और ज्ञान फकीरी को प्राप्त कर लेता है । जब तक इन के भेद को नहीं जाने तब तक बहुत रोला अर्थात अड़ंगेबाजी का बहुत बिखेरा है । कवि लिखता है कि सतगुरू स्वामी उत्तमरामजी की उतम (श्रेष्ठ) गुरु कृपा से राम के प्रकाश (ज्ञान) से धोया और त्रिगुणी ताप सहित समूह पापों के मूल अज्ञान मेल को धोकर उज्जवल कर लिया अर्थात जन्म मरण से रहित कर लिया है ।*

नोट-हमारे पहनने वाले इस फकीरी चोले की बनावट जो कपड़े का चोला और मानव शरीर का चोला, यह दोनों की बनावट अजब गजब की है ,तब दोनों के गुण धर्म मिलान करके देखा तब यह भजन बनाया

भजन(२८) राग छन्द भेरवी पारवा पद गाने का

ब्रह्मज्ञानी कहो समझाय के सतसँगी समझे सारा ।।टेर।।

ईश्वर स्वरूप कैसा कहाँ रहता, ईश्वर धर्म बताओ महता ।
ईश्वर को ईश्वर क्यों कहता धर्म यथार्थ गाय के ।
प्रश्न बड़ा है प्यारा ।।१।।

जीव आतमा एक या दोई, यदि एक है नाम क्यो होई ।
प्रक्रिया जीव की हद है सोई, सब खोलो भेद बताय के ।
समझे प्रेमी सँसारा ।।२।।

शास्त्र को शास्त्र क्यो भाखे, कुटस्थ स्वरूप कैसा क्रायो राखे ।
चिदाभास कहाँ रहता साखे कितनी अवस्था मे आय के ।
दरसावत विस्तारा ।।३।।

उतमराम बिन कौन बतावे, रामप्रकाश समझ मे आवे ।
मन ज्ञानी सब नही समझावे, ब्रह्मज्ञानी बैठे सब आयके ।
जिज्ञासु करत विचारा ।।४।।

भजन (२९)राग छन्द भेरवी पारवा पद गाने का

कोई कहो ज्ञान समझाय के, मन माने बात हमारा ।।टेर।।
आदि स्वरूप माया का कैसा, कितने भेद गुण उपजे लेसा।
अविद्या कितने भेद है तैसा, सतसँगी सुनते आयके।
यह लाभ उतम है सारा ।।१।।
कारण अज्ञान जीव तन बोले, समष्ठि कारण मिल ईश्वर खोले।
समष्ठि अज्ञान आव्यकृत तोले, सो शुद्धता कैसे है गायके।
समझा के कहो विचारा ।।२।।
समष्ठि व्यष्टि भेद बतावे, कारण कार्य विधि चार कहावे।
तत्व चार के माहि बसावे, कोई जाने छाने आयके।
यह सुन पावे निस्तारा ।।३।।
रामप्रकाश उतम का चेला, सब से न्यारा सब के भेला।
कौन उज्वल कोन है मैला, साची विधि दरसाय के।
कहो शास्त्र अनुसारा ।।४।।

भजन (३०) राग लूहर फाल्गुन पद

होली आई रे हाँ रे होली आई रे। पखण्डियों धूम मचाई रे।
होली आई रे ।।टेर ।।
वाचक ग्यानी हो रहे महँगा ब्रह्मज्ञानी हो रह्या सस्ता।
सन्त शास्त्र की सीख ना माने, ले उलटा रस्ता रे।
होली आई रे ।।१।।
ग्यानी गुरु की सूणै ना समझे, मनमुखी बाताँ करता रे।
जन्तर मन्तर खर दुनिया में, फिरे धन को हरता रे।
होली आई रे ।।२।।
मन आवे ज्यूँ अर्थ बतावे, भोला ने भरमावे रे।
सुणी सुणाई बात सन्तो की, सब ने बतावे रे।
होली आई रे ।।३।।
साधनहीन भेख टेक बिन, गले मे गमछा राखे रे।
रामप्रकाश सुणलो भाई भक्तों, साची भाखे रे।
होली आई रे ।।४।।

भजन (३१)राग लूहर फाल्गुन पद

फाल्गुन आयो रे, पाखण्डियों रोल मचायो रे, हारे फाल्गुन आयो रे ।।टेर ।।
गाँजा भाँग घर अमल तमाखू, चिलम चाय नित पावे रे।
धूम धड़ाके नागा नाचे खोटा गावे रे हारे फाल्गुन आयो रे ।।१।।
आडा टेडा भजन गावता, बहुत बात बणावे रे।
मन मरजी सूँ भेख बाँध ले, शर्म न आवे रे।
हारे फाल्गुन आयो रे ।।२।।

गुरू मरियादा सारी खो दी, तिलक छाप लगावे रे।
बिना किराए आवे जावै, बातों घणी बणावे रे।
हारे फाल्गुन आयो रे।।३।।
अलियो धान काँकरा माँही, एङो धान कुणाल खावे रे।
ज्ञान ध्यान साधन बिन सूना, जग भरमावे रे।
हारे फाल्गुन आयो रे।।४।।
साच सुणतों दोरी लागे, कुण याने समझावे रे।
गली गली में फिरे भटकता, माँगन जावे रे।
हारे फाल्गुन आयो रे।।५।।
साध सन्तो री साची सतसँग, याँरे मन नही भावे रे।
रामप्रकाश सन्त साची कहताँ सौर मचावे रे।
हारे फाल्गुन आयो रे।।६।।

भजन (३२) राग आसावरी पद

जिज्ञासु ! संशय सभी उडायो।
विवेक सम्पुट वैराग्य मुमुक्षु, साधन सहित होय आयो।। टेर।।
ब्रह्म जल अविद्या ठण्ड बर्फी, जीव अष्टपुरी गुण लायो।
चिदाभास ले सात अवस्था, ग्रन्थी आप बन्धायो।।१।।
व्यापक ब्रह्म अटल अविनाशी, जन्म मरण नहीं छायो।
माया जाल भ्रम जल भासे, मृगतृष्णा भरमायो।।२।।
कारण अविद्या सब जग छाई, तूला तूल बिछायो।
मूला हृदय चार विधि कर, अपनों जाल फैलायो।।३।।
त्रिविध ताप पाप कुल संगी, या विध जीव कहायो।
सतगुरू शरण श्रवण कर युक्ति, महावाक्य गुण गायो।।४।।
मनन मान निदिध्यासन करके, अपनो आप दृढायो।
उतमराम आप को जाण्या, रामप्रकाश निज पायो।।५।।

भजन (३३) राग आसावरी पद

अविगत से चलि आया साधो, हम अविगत से चलिए आया।।टेरा।।
पूर्वाचार्य ब्रह्मज्ञानी जन के, प्राकृत कर्म सजाया।
ता कारण भक्तों हेतु से, धरी भूमि पर काया।।१।।
नीति निभावण कारण लेकर, सतगूरू शरण जचाया।
उतम ज्ञान ध्यान के साधन, सतगूरू मोहि बताया।।२।।
जिन जीवों ने श्रद्धा धारी, श्रवण हित प्रेम लगाया।
गुरू युक्ति मुक्ति के मार्ग, भव से पार लंघाया।।३।।
मोह बान्ध संसारी मान्या, वे जन नर्क सिधाया।
उतमराम की उक्ति युक्ति, रामप्रकाश निज थाया।।४।।

।।भजन सरिता समाप्त।।

उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ)

का नवीन जीवनोपयोगी उत्तम साहित्य

उत्तम प्रकाशन -सूची पत्र

१-आचार्य सुबोध चरितामृत(सचित्र) सम्प्रदाय शोध ग्रंथ
२-सन्तदास अनुभव विलास
३-हरिसागर मूल एवं टीका सहित
४-वाणी प्रकाश
५-अचलराम भजन प्रकाश (गुटका, मंझला और बड़ा-तीन साइज में उपलब्ध)
६-उतमराम भजन प्रकाश
७-अवधूत ज्ञान चिन्तामणि
८-भारतीय समाज दर्शन
९-अचलराम ग्रंथावली(१-२-३-४) चार भागों में सटीक
१०-हिन्दू धर्म रहस्य
११-कामधेनू
१२-सर्वदर्शन वाद कोश
१३-विश्वकर्मा कला दर्शन
१४-नशा खण्डन दर्पण
१५-रामरक्षा अनुष्ठान संग्रह
१६-रामायण मंत्र उपासना
१७-नित्य पाठ नवस्त्रोत
१८-पिंगल रहस्य(छन्द विवेचन)
१९-ज्योतिष दोहावली(मूल) व ज्योतिष दोहावली सटीक
२०-रामप्रकाश शब्दावली
२१-रामप्रकाश शब्द सुधाकर
२२-गुढार्थ भजन मंझरी
२३-एक लाख वर्षिय कैलेण्डर
२४-रत्नमाल चिन्तामणि
२५-उत्तम स्वर योग
२६-उत्तमराम अनुभव प्रकाश
२७-सन्ध्या विज्ञान
२८-सुगम चिकित्सा(प्रथम भाग)
२९-सुगम चिकित्सा(द्वितीय भाग)
३०-सुगम उपचार दर्शन
३१-तिलक प्रबोध दर्शन
३२-उत्तमरामप्रकाश भजन प्रदीपिका
३३-सुखराम दर्पण(सटीक)
३४-सन्तवाणी शब्दकोश

३५-स्वाध्याय वेदान्त दर्शन
३६-वेदान्त भुषण वैराग्य दर्शन
३७-दैनिक चिन्तन दैनन्दिनी
३८-रामप्रकाश भजन प्रभाकर
३९-सुबोध टीका दर्पण
४०-अध्यात्म दर्शन-(प्रथम खण्ड)
४१-अध्यात्म दर्शन-(द्वितीय खण्ड)
४२-उतम योग
४३-अचलराम सैलाणी
४४-स्वप्न फल दर्पण
४५-नासकेत गीता (टीका सहित)
४६-उत्तम ज्ञान कटारी(सटीक)
४७-अवधूत गीता ज्ञान दर्शन
४८-भारत का व्यास
४९-सावधान (व्यास पीठ के वक्तागण सावधान, साधु और सन्त समाज सावधान, गीता रसायन आदि)